

धरती धन न अपना

जगदीशचन्द्र

धरती

धन

न

अपना



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली ६

पटना-६

© जगदीशचंद्र

मूल्य १६००

प्रथम संस्करण १९७२

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८ फज्ज बाजार, दिल्ली ६

मुद्रक विनोद प्रिंटिंग सर्विस द्वारा
शाहदरा प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली ३२

आवरण इमरोज

सोम आनन्द को
जिनके सहयोग ने
मेरी सो रही सृजन-चेतन को
पुनर्जागृत करके
यह उपयास लिखने
के लिए प्रेरित किया

मेरी ओर से

मेरा यह उपन्यास मेरी विशोरावस्था को कुछ अविस्मरणीय स्मृतियाँ और उनके दामन में छिपी एक अदम्य वेदना की उपज है।

मेरी विशोरावस्था मेरे ननिहाल के गाँव रल्हन (पंजाब) में बीती। गाँव का एक हरिजन परिवार मेरे नानाजी की जमीन जोतता था और इसी सिलसिले में मुझे उनकी बस्ती में जाना पड़ता था। हरिजनों की बस्ती में जाने पर कोई पाबंदी तो नहीं थी परन्तु कुछ मर्यादाएँ थीं, कुछ परम्पराएँ और सीमाएँ थीं जिनमें बँधकर ज़रूर चलना पड़ता था। गाँव का दौहित्र होने के कारण मुझसे इन मर्यादाओं का कड़ाई से पालन करने की अपेक्षा की जाती थी। मेरा किशोर मन बघना की इस झीनी-सी दीवार का ताड़कर हरिजनों की छोटी छोटी सीलन भरी अँधेरी कोठरियाँ में छिपे रहस्यों को जानने के लिए हरदम व्यग्र रहता था। लोगो की आँख बचाकर मैं उनमें गया भी और मन भर कर मैंने उन बघना को तोड़ा। गाँव में चले रहे इस भेदभाव को देखकर मेरे किशोर मन में विद्रोह की ज्वालाएँ भड़क उठीं। परन्तु इन्हें अभिव्यक्ति देने का कोई माग दिखाई न देता था। उपन्यास लिखने जैसी किसी चीज़ से तो मैं बिल्कुल ही परिचित नहीं था।

इसी दौरान पढ़ाई और बाद में नौकरी के सिलसिले में मुझे शहर जाना पड़ा परन्तु वध में एकाध बार झुट्टियाँ में मुझे अपने ननिहाल जाने का भी अवसर मिलता रहता। मैं हर साल यही देखता कि गाँव में मर्यादाओं की सीमाएँ टूटनी तो दूर रही, उनकी जकड़न दिनोदिन सख्त होती जा रही है। अथशास्त्र का छात्र होने के कारण मुझे इस सामाजिक दुरावस्था के पीछे छिपे आर्थिक कारणों का भी

पता चलने लगा । मैं यह सब देखकर बहुत ही उद्विग्न होता था कि आर्थिक अभावों की चमकी म युगयुगांतरों से पिस रहे हरिजन अब भी मध्यकालीन यातनाओं को भोग रहे हैं । जिस भूमि पर वे रहते थे जिस जमीन को वे जोतते थे यहाँ तक कि जिन छप्परा में वे रहते थे, कुछ भी उनका नहीं था । इन्हीं बातों का देखकर मेरे निःशोर मन की वेदना सहसा अपने सभी बाँध तोड़कर फूट निकली और मैंने उपभूत हरिजनों का जीवन का चित्रण करने का सकल कर लिया । प्रस्तुत उपन्यास लिखने का मूल प्रेरणा बिन्दु यही है ।

अपनी जातिगत संस्कारों तथा सामाजिक मान्यताओं की कठोर जकड़ों के कारण मैं हरिजनों का जीवन की कटुताओं का स्वयं तो नहीं भोग सका परंतु फिर भी मुझे अपने दुस्साहस के कारण उनका जीवन को बहुत निकट से देखने का अवसर मिला है । मैंने सबथा निरपेक्ष रहकर भारतीय जीवन के इन कटे हुए सदस्यों का चित्रण किया है और कहा भी अपना मत थोपने अथवा अपनी विचारधारा को लादने की चेष्टा नहीं की है ।

—जगदीशचंद्र

काली जब गाँव के निकट पहुँचा तो पौ फट झुकी थी। वह एक रड-मुड वृक्ष के पास खड़ा होकर गाँव की ओर देखने लगा जो सुबह के मलगजे अँधेरे में बहुत बड़ी गठड़ी की तरह नजर आ रहा था। गाँव से बाहर एक हवेली में एक दिया टिमटिमा रहा था। पास ही एक खेत में हल चल रहा था और थोड़े थोड़े समय के बाद तुत तुत टक टक तरे जनन वागे को चोर ले जाएँ चल पुत्रा गेर की तरह छाती के बल पर चल' की आवाजें आती और साय ही घुघरू खोर से छनछना उठत। काली ने सिर से द्रव और कंधे में लटक रहा विस्तर उतारकर रख दिया और वृक्ष के तने के सहारे बैठकर सोचने लगा कि शायद चौधरी फत्तू के खेत में हल चल रहा है शायद उसका बेटा प्यारू हल चला रहा है शायद सावनी के लिए खेत तयार कर रहा है।

काली का ध्यान फिर गाँव की ओर चला गया और वह आँख फाड़ फाड़ कर वृक्षा की आँट में छिप हुए मकाना की आर दखन लगा। गाँव की एक गली में कोई कुत्ता भौंक उठता तो उसके उत्तर में दूसरी गलियाँ से कई कुत्ता के भौंकने की आवाजें आने लगती और फिर थोड़ी देर के बाद गाँव में ऐसी खामोशी छा जाती जैसे कोई आदमी स्वप्न में बुदबुदान के बाद करवट बदल कर सो जाए। वहाँ बड़े-बड़े काली को भय महसूस होने लगा। उसके दिल में छ साल के पश्चात गाँव लौटने की खुशी खत्म होने लगी और उसका जी चाहा कि वह उल्टे पाव कानपुर वापस चला जाए। उसे याद हो आया कि जब वह गाँव के लिए चला था तो कितना प्रसन्न था और उसने चाहा था कि उड़कर वहाँ पहुँच जाए जोर अब वह गाँव के बहुत निकट है सिर्फ पाँच-सात खेत दूर है तो वह लौट जाना चाहता है। फिर उस अनायास ही चाची का कथाल आया और उसकी आँखें भर आईं। उसने सोचा, क्या पता वह ज़िन्दा भी होगी या नहीं। हो सकता है उसके गाँव छाटने के थोड़े दिन बाद ही मर गई हो। यह भी सम्भव है कि वह ज़िन्दा हो। क्या पता किस हालत में हो।

जब मुग ने बाग दी तो काली हड़बड़ाकर उठ बठा और सामान उठाकर जल्दी जल्दी गाँव की ओर चल दिया। जब वह पहली हवेली के पास पहुँचा तो एक कुत्ता कान फड़फड़ाकर उठा और भौंकता हुआ उसके आगे आगे चलने लगा। उसने कुत्ते की आवाज़ को पहचानने की कोशिश की लेकिन दूसरे ही क्षण अपने इस प्रयास पर उसे हँसी आ गई। वह अपने दाएँ बाएँ मकानों को पहचानने की कोशिश करता हुआ तेज़-तेज़ कदम उठाता रहा। उसने देखा कि बड़ा रास्ता पहले से काफी नीचा हो गया है। शायद पिछले कुछ वर्षों में बहुत जोर की बरसातें लगी होंगी। गाँव की अभिन गद्य उस कदम-कदम पर अपने से परिचित करा रही थी और वह नयुने फुला फुलाकर उसे सूँघ रहा था। जब वह किसी मकान या हवेली के सामने पहुँचता तो उसके मस्तिष्क में कई तस्वीरें उभरती। लेकिन वह उनसे आँखें चुराता हुआ आगे बढ़ जाता।

चौधरिया के मुहल्ले के बाद स्कूल आ गया। चार कक्षाओं में इस स्कूल में काली ने भी कुछ समय तक मुशी के पाँव दबाए थे उँगलियों के पटाखे निकाल थे और खड़े खड़े थे। वह रककर स्कूल की ओर देखने लगा और मुशी शिवराम के बारे में सोचने लगा जिसके लिए जाटों के लडके साग गन गाजरें मूलियाँ इत्यादि लाते थे और कमिया के लडके उनके घर पहुँचाते थे। स्कूल की हालत पहले जसी ही खराब दिखाई देती थी और उसके आँगन में बड़े बड़े वृक्ष की घनी परछाइयाँ ने रात के अंधेरे को और भी गहरा कर दिया था। स्कूल की बिल्डिंग के पीछे एक तीन मंजिला मकान घमंडी आदमी की तरह अक्का खाड़ा था। काली के मन में चौधरी हरनामसिंह की याद का बस्ता खुल गया और वह उन यादों को झटकता हुआ आगे बढ़ गया।

स्कूल से कुछ दूर जान पर उसे मंदिर का कल्या नजर आया। मंदिर के चारों ओर गाँव के दूकानदारों के चौपारे थे। वह पण्डित सगराम के बारे में सोचने लगा जो हरिजनों को दखकर दूर से ही दुर-दुर करना शुरू कर देता था। वह थोड़ा और आगे बना तो उसकी नज़रें गिरजाधर के बच्च की बाँहा की तरह फले हुए फ्रांस पर गड़ गड़ और गाँव के पादरी का ममकीन चहरा आँखों के सामने घूम गया।

थाड़ी दूर और आगे जान पर उस जार की टोकरें लगीं और वह गिरत गिरत बचा। गाँव के तड़ बन्दू न उम घमान्डी (हरिजनों की बस्ती) के निकल ही जाने का सबक लिया। उस स्थान पर बना रामना काफी गहरा हो गया था क्योंकि गाँव में बरमान का मारा पानी इसी रामन में हाकर था में जाता था। कुछ धारा के बाद ही वह घमान्डी के बाहर कुछ पर पहुँच गया। कुछ के गिर गन

पानी और कीचड़ की छपड़ी बनी हुई थी। वह कुछ क्षणा के लिए रूक गया और सामने छोटे छोटे कच्चे मकाना को देखने लगा। फिर वह कुएँ के गिद चक्कर काटकर उम जगह पहुँच गया जहाँ से मुहल्ले के अन्दर जाने वाली गली शुरू होती थी। वह गली के मुह पर रूक गया और सामने गन्दे पानी की छपड़ी को पार करने की तरकीब सोचने लगा। उसके जेहन ने उसे वह तरकीब बताई और अपने आप ही उसका पाव पानी में डूबी इटा को टटोलने के लिए उठ गया और दूसरे ही क्षण वह उस छपड़ी को पार करके गली में घुस गया।

गली में कई कुत्ता न मिलकर उसका स्वागत किया। दूसरी ओर से भी कुत्ता ने उत्तर में भौंकना शुरू कर दिया और इतना शोर मचाया कि काली को यह आशका होने लगी कि इस गली में शायद कबल कुत्ते ही रहते हैं। परन्तु जब वह एक टूटे हुए मकान के सामने रूक गया तो कुत्ते आहिस्ता आहिस्ता इधर उधर खिसकने लगे। काली टूटे किवाड़ को देखता हुआ सोचने लगा कि पता नहीं चाची अभी जीवित है या मर गई है। उसके दिल में हौल सा उठा और उसने जल्दी से अपना हाथ साकल की ओर बढ़ा दिया। बाहर की साकल खुली थी। उसने किवाड़ को धीरे से दबाया तो वह अंदर से बंद महसूस हुआ। खुशी के मारे उसका दिल उछलने लगा और वह साकल खटखटा कर बहुत तेज घड़कत दिल से उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। जब कोई उत्तर न आया तो उसने तबारा साकल खटखटाई। जब फिर भी कोई उत्तर न आया तो उसका दिल डूबने लगा। उसने किवाड़ को ज़ोर से थपथपाया और आहिस्ता से कहा

‘चाची !

कुछ क्षणा के बाद अन्दर से खाँसने की आवाज़ आन लगी। काली फिर खिल उठा। वह किवाड़ के बिल्कुल पास खड़ा होकर अंदर से खाँसने की ओर हे रूक जाँ तेरा ही आसरा की आवाज़ों को ध्यान से सुनने लगा। इतने में पड़ोस का दरवाज़ा आहिस्ता में खुला और एक आदमी जगली कबूतर की फुत्तों से अँधेरे में खा गया। केवल उसके जूत की ची ची की आवाज़ सुनाई देती रही। काली उस दरवाज़े की ओर देखने लगा। उसके जेहन में कुछ आलुआ जसी नम और स्वस्थ और कुछ सूखे बर जसी प्राणहीन सी शकलें उभरी। परन्तु अगले ही क्षण खाँसी की आवाज़ के साथ कौन है क प्रश्न ने उम चौंका दिया और वह दरवाज़ से पीछे हट गया। दोना पट खुले ता अँधेरी डयोनी से दुगंध भरी रूवा बाहर निकली और साथ ही दो बुझी-बुझी आँखें उसकी ओर देखने लगी।

‘चाची !’ काली ने भराई हुई आवाज़ में कहा और उसके पाँव की ओर झुक

गया। चाची काली की आवाज पहचानती हुई बोली

‘कौन काली है?’ उसने स्नह और आश्चर्य भरे स्वर में कहा जस उस विश्वास में आया हो। उसने काली के सिर पर हाथ फेरते हुए उस ऊपर उठाया और उसका माथा घूम कर बोली

रख सादर्य दी।

काली जब द्रुक और विस्तर उठाकर अन्दर आने लगी तो चाची ने उस राक लिया और स्वयं कोठड़ी में जाकर सरसा के तल की शीशी तलाश करने लगी। शीशी हाथ लग गई तो उसे याद आया कि उसमें तल नहीं है। वह खाली शीशी लेकर ही वापस आ गई और दहलीज के दोनों ओर एक एक बूद तल टपकाकर काली को इस तरह जदर ले आई जैसे वह सारे सप्ताह पर विजय पाकर लौटा हो। चाची की झुकी हुई कमर एकदम सीधी हो गई। उसकी प्रकाशहीन आँखों को अंधेरे में भी दीखने लगा और वह सोलह साल की मुटियार की तरह फुर्ती से कोठड़ी में घूमने लगी। उसका पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहा था। उसने दियासलाई तलाश करके मिट्टी के तेल का दिया जलाया और काली को खाट पर बठाकर उसका चेहरा अपने हाथों में लेकर दीवानावार घूमती हुई बोली

मेरा लाल वापस आ गया।’ फिर कुछ सोचकर चाची की आँखों में पानी आ गया। काली गुम गुम बठा कोठड़ी में चारों ओर देख रहा था। कोठड़ी की दीवारें शहतीर और कड़ियाँ चाची की तरह बूढ़ी हो चुकी थीं और अपने ही बोझ तले दबी जा रही थीं। काली चाची की ओर ध्यान से देखता हुआ बोला

चाची! कस कटे दिन।’ यह कहकर उसकी आँखों में आँसू आ गए। चाची भी उत्तर में मुबकियाँ लेने लगी। फिर वे दोनों फूट पड़े। काली चाची के घुटना पर सिर रखकर खूब रोया। इस मुहल में दोनों ने जो कष्ट सहन किए थे वे आसुआ की जवान से एक दूसरे को बता दिए। रोते रोते काली को जब हिचकी आने लगी तो चाची उसे चुप कराती हुई बोली

न रो पुतरा। य सब तबदीर का चक्कर था। तेरा चाचा जिंदा होता तो तुम्हें पाताल से भी खोज लाता। तुम्हें गम हवा तक न लगने देता।’ यह कहकर चाची रोने लगी तो काली उसे दिलासा देता हुआ बोला

चाची अब मैं एक पल के लिए भी तरे से अलग नहीं रहूँगा। दिन रात तुम्हारी सेवा करूँगा।

चाची हिचकियाँ लेती हुई बोली

काम तूने भी ता अनय किया। रडी (विधवा) चाची को यूँ छोड़

कर चला गया जैसे तेरा उसके साथ कोई रिश्ता ही नहीं था। मैं तो पहले ही मुमीबता की मारी हुई थी। दिन रात तुझ में खोई रहती। रह रहकर दिल में हौल उठता। जिसने जो उपाय बताया वह किया। खड से विछड़ी हुई वछिया को कभी देख लेती तो रो रोकर मैं अपना घुरा हाल कर लेती और सोचती कि मेरा काली भी परदेस में इसी तरह डावाडोल और खोया-खोया फिरता होगा। दिन रात मैं नीली छत वाले से यही बिनती करती कि मेरा लाल ठीक ठाक हो। मैं उसके हाथों में ही भरूँ।' फिर वह काली को ध्यान से देखती हुई बोली

काका क्या मैं तुम्हें कभी याद नहीं आती थी ?'

काली ने मुह फेर लिया और हँसी हुई आवाज़ में बोला

चाची, तरो याद ही तो मुझे गाव वापस खीच लाई है।' यह कहकर काली ने अपना सिर चाची की गोद में रख दिया। चाची उसके चौड़े कंधे पर हाथ फेरती हुई बोली

आज तेरा बाप जिंदा हाता तो तुम्हें देखकर कितना खुश हाता। उसने तो तुम्हें जी भरकर देखा भी नहीं था कि मौत ने आ घेरा। तेरी मा को प्लेग खा गई। चाचे ने चप्पे गिन गिनकर पाला पोसा लेकिन उस भी हँसे ने खा लिया। तुम्हें तो शायद उसकी सूरत भी याद न हो। सारे खानदान की तू ही तो एक निशानी है।' चाची फिर फूट फूटकर रोने लगी। काली उसकी गोद में सिर रखे हुए उन दिना को याद करने लगा जब छ साल पहले वह दो दिन का भूखा प्यासा पटे हाल घर से चोरी भाग गया था। चाची भी यादा में खोई हुई अपन दुःखा को याद करके बार-बार रो पड़ती। वे दोनों बहुत देर तक गुम मुम बठे रहे। चाची के दिल में जैसे हौल उठा और वह काली का माथा चूमती हुई बोली

'पुस्तारा परदेसी पछी भी उड़ते-उड़ते साल-दो साल बाद फेरा डाल जाते हैं। लेकिन तू तो ऐसा गया कि तरो कोई खबर ही न मिली।' फिर वह अपने आसू पोछती हुई बोली

काका, मुझे सिर्फ तरो ही आसरा है। तरे सहारे उड़ती फिरती हूँ। तू आ गया है तो यह घर भरा भरा मानूम होता है। तू बाहर था तो यह कोठरी मुझे उजाह दिखाई देती थी।

'चाची अब मैं कभी एक पल के लिए भी तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगा। तुम्हें राज कराऊँगा। खाट से नाचे पाँव नहीं धरने दूँगा।'

दिन चढ़ने तक दोनों का मन हल्का हो चुका था। चाची ने काली के

लिए बिस्तर बिछा लिया।

तू घड़ी भर सो ले। पता नहीं कितन दिन का सफर करके आया है। मैं गली में तुम्हारे जान कं वारे में बताने दूँ। यह कहकर वह गली में आ गई परन्तु उल्टे पंरा पलट आई और काली की छाट क पायते बरुता हुई वाली

बाबा मैं सोच रही हूँ कि इस तरह बताने की बजाय गली में चुटकी चुटकी शक्कर बाँट दूँ तो सबका अपन आप ही पता चल जाएगा। और फिर तुम्हारी वापसी की तो मुझे तुम्हारे 'याह' से भी ज्यादा खुशी है। तेरी क्या मर्जी है ?'

चाची जो जी में जाए करो। तुम्हारी मर्जी ही भरी मर्जी है। काली ने यह कहकर करबट बदल ली। चाची चारपाई पर बठी रही तो काली आश्चर्य में पड गया और फिर उसे अस्मात ही जैसे कुछ याद आया, वह जल्दी से उठा और अपने ट्रक का ताला खोलकर कपडा की तह के नीचे से बहुत से नोट निकाले और चाची की ओर बढ़ाता हुआ बोली

ला चाहे शक्कर की बोरी ले आओ।

चाची ने बहुत से नोट दखे तो आश्चर्य से उसकी आँख फल गई और वह उह कपडा की तहा में छिपाती हुई वनावटी गुस्स से बोली

मुझे कोई दूकान खोलनी है ? चार पस द छज्जू शाह की दूकान से सेर-आध सर शक्कर ले आऊँ।

काली ने दस रुपये का नोट चाची के हाथ में थमा दिया ता वह ऊची आवाज में बोली

यह क्या है ? तू मुझे टूटे हुए पस दे।

इससे छाना नोट मर पाम नहीं है। काली ने दम का नोट उसके हाथ में देते हुए कहा। चाची ने नोट को फलाकर देखा और घबराइ हुई आवाज में बोली

सदूक को जल्दी से ताला मारकर वही छिपा दे। यहाँ लोग की नजर बहुत बुरी है। पिछले दिन व्यास पार से बताने की भतीजी आई थी। उसका शादी हुए दा महीने ही हुए थे। उसके गहने-कपड देखकर प्रीतो ने नजर लगा दी। उस बेचारी का सब कुछ उसी रात चोरी हा गया।

काली चाची की बात पर कुछ क्षणा तक हसता रहा और उसके कहन के अनुसार ट्रक को काने में छिपा लिया। चाची दस रुपये के नोट का कई तहा में छिपाकर गली में आत जात लागा की नजरा से बचती शक्कर लेने के लिए छज्जू शाह की दूकान की आर चली गई।

चाची के जाने के बाद काली कुछ समय तक खाट पर लेटा रहा। छ बप के विछोह ने उसमें गाँव और इसके वासिया के प्रति अजनबीपन पदा कर दिया था। यह सोचकर उसे डर लगने लगता कि थोड़ी ही देर में मुहल्ल की सब स्त्रियाँ बच्चे और कुछ मद उसके घर जमा हा जाएँगे और तरह-तरह के प्रश्न पूछेंगे। काली प्रसन्न होने की बजाय बहुत बेचन था जोर चाहता था कि यह घड़ी किसी तरह टल जाए तो अच्छा है।

वह खाट पर लेटा करवटें बदल रहा था। रात भर जागते रहने के बाद-जुद नींद और थकावट उससे कासा दूर थी। जब लटे लट उसका मन ऊब गया और बचनी और भी बढने लगी तो वह उठकर अपने काँठे की छत पर आ गया। बोदी सीढी के आखिरी डबे पर खडा होकर वह सामने दखन लगा। चमादडी के काठा से परे दूर तक खुले पेत फले हुए थे। बाइ जोर चो की चमकती रेत थी। चो के दोना ओर बाँध बना दिए गए थे। इह दखकर काली को हेरानी भी हुई और खुशी भी। चमादडी के पास ही चो के परले किनारे पर बड के वृक्षा और शीसमा सं घिरा हुआ तकिया (चौपाल) था। दाईं ओर मन्दिर और महाजना के मकान और चौबारे थे। उनसे पर स्कूल और नम्बरदारो के मकान और हवलियाँ थीं। पश्चिम में गण्डिया मादिया, मिट्टा और चुनौतिया (मुहल्ला के नाम) के मकान और हवलिया थीं।

काली ने सीढी के पास ही छत पर खडे होकर चमादडी के काठा पर नजर दौडाई। मटमैल रंग के बच्चे और छोटे छोटे कोठे चा के दाएँ किनारे तक फले हुए थे। मुहल्ले के अंदर एक छाटा सा चौगान था जिसके बीचो-बीच एक बेरी थी। चमादडी में एक ही लम्बी और तग गली थी जा सारे मुहल्ले में वही सीधी और वही बल खानर घूम जाती थी। उसमें से केवल एक छोटी-सी गली निकलती थी जा बाय फत्तू, ताय बमत इत्यादि के घरा के सामने से होकर चो में जा निकलती थी। मुहल्ल के बाहर गोबर और कूडे के ढेर थे और एक-दो छोटे छोटे छप्पड थे जिनका पानी मई की धूप से खुस्क हो चुका था।

वह चमादडी के काठा का देखने लगा। पूरे मुहल्ले में एक भी ऐसा काठा नहीं था जिसमें पक्की इट लगी हा। पिछली बरसात के बाद इन पर अभी लेप नहीं किया गया था इसलिए वे कमजोर और उनकी दीवारें खुरदरी नजर आ रही थीं। लगभग प्रत्येक घर से ओपला का कढवा धुआँ अलसाया हुआ

सा ऊपर उठ रहा था। मुहल्ले में सुनहरे के समय भी निस्तब्धता छाई हुई थी जिसे कभी किसी मद की गाली किसी औरत की चीखती हुई आवाज या किसी बच्चे के रोने की चीख तोड़ देती थी।

काली को गली में 'चाची बघाइयाँ' की आवाज सुनाई दान लगी तो वह नीचे उतर आया। यह सोचकर उसका दिल कांपन लगा कि अभी मुहल्ले की स्त्रियाँ जोर बच्चे धावा बोलकर उसके कोठे में घुस आएँगे। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि लोगो के आने पर वह उनसे कैसे और क्या बातें करे। गली में 'चाची-बघाइयाँ' की आवाजें प्रतिगण निकट आ रही थी और उसकी बेचनी बढ़ती जा रही थी।

काली के पास सबसे पहले उसकी पड़ोसन, निक्कू की पत्नी प्रीतो आई। वह गली में ही उस पुकारने लगी

वे काली, वे तू आ गया।'

जब वह अदर आ गई तो काली उसके पाँव की ओर झुकता हुआ बोला 'चाची मर्या टेकता हूँ।

'जुग जुग जियो।' प्रीतो ने उसके सिर पर हाथ फेरना चाहा तो उसने गदन झुका ली।

वह सीधा खड़ा हो गया तो प्रीतो ने उसे भरपूर नज़रा से देखा। काली ने भी उस पर ध्यान से निगाह डाली। प्रीतो का शरीर ढल गया था लेकिन उसके रख रखाव में कोई अंतर नहीं आया था। उसने मसूढो पर रगदार दातन किया हुआ था और व एस दिखाई दे रहे थे जैसे खड के बने हुए हों। नाक में कीचे और ठोडी पर कृत्रिम तिल का रंग फीका पड़ गया था। काली नज़रें दूसरी ओर फेरता हुआ बोला

चाची, ठीक ठीक हो ना चाचा ठीक है लच्छो अमरू और नाथी ठीक है ?

वह यह पूछ ही रहा था कि एक साथ ही सात बच्चे अदर आ गए। उसने उनमें से तीन बच्चा—लच्छा, अमरू और नाथी को तो पहचान लिया लेकिन बाकी उसके लिए अजनबी थे। वह आगे बढ़कर अमरू को बाजुआ में उठाता हुआ बोला

मुना अमरू तू तो बसा-बा-बसा भिसा हुआ है।

फिर उसने लच्छो की ओर दृष्टि डाली

लच्छा क्या हाल है तू तो बहुत बड़ी हो गई है।

लच्छा ने मुसकराते और शरमाते हुए मुह दूसरी ओर फेर लिया।

‘आचा तो वाम पर गया होगा ?’

नहीं, वाम पर वह वहाँ जाना है। वह तो चौधरी है। पचायत म बैठता है। तबिए से उठा तो शाह की दूकान पर जा बठा वहाँ स उठा तो किसी और क घटे पर धरना दे दिया।’ प्रीतो ने नफरत से कहा।

‘क्या उसने अफीम छोड़ दी है ?’

‘वहाँ, अब तो पोस्त भी पीने लगा है। वह साल भर डेरे वाले महता के पास रहा, वहाँ से पोस्त पीना सीख आया।’ प्रीता ने उत्तर दिया।

काली न छान छाने बच्चा पर निगाह डालकर प्रीतो की ओर देखा तो वह हँसती हुई बोली

‘य सारी फीज मेरी ही है। घर से बाहर निकलती हूँ तो मोय लशकर बनाकर मेरे पीछे पीछे आ जात हैं।’

इतनी देर में जीतू और उसकी माँ निहाली आ गई। काली निहाली के पाँव की आर झुकता हुआ वाला

ताई मत्या टकता हूँ।’

फिर उसने जीतू का अपने बाजुआ म लेकर जोर से भीच लिया और कुछ क्षणा के पश्चात उसे छोड़ता हुआ बोला

‘सुना जीतू, ठीक हो ना ?’

हा तू अपनी सुना। तू वहाँ रहा इतनी देर ? हम तो तेरी इतजार म औमियाँ डाल डालकर हार गए।’

जीतू ने काली के तगडे मुडोल और गठे हुए शरीर को देखते हुए कहा। जीतू के सल्ल और प्रौढ शरीर को देखकर काली की एहसाम हुआ कि वाल पन के बाद जीतू पर यौवन और वुत्पापा एक साथ ही शुरू हो गए हैं। प्रीतो काली की ओर प्रशंसा भरी नजरों से देखती हुई जीतू से बोली

‘जीतू तू भी शहर चला जा। काली की तरह मोटा गाजा होकर वापस आ जाना।’

खुराक हो तो गाँव म भी शरीर बन जाता है। रुखी रानी खाकर तो शरीर बनेगा नहीं।’ ताई निहाली ने कहा।

अच्छा काली, मैं घास ले आऊँ। दापहर को आऊँगा।’ जीतू ने काली के कंधे थपथपाते हुए कहा और बाहर निकल गया।

काली के घर म स्त्रिया और बच्चा की भीड़ प्रतिभण बढ रही थी। वह हर औरत के पाँव की ओर झुककर मत्या टकता और बच्चा को बाँहो म उठाकर प्यार करता। जब वतू की पत्नी प्रसिनी आई तो काली उसे पहचान

घरती घन न अपना

न सका। वह उसके पाँव की ओर भी झुका तो प्रीतो उसे डाँटती हुई बोली

फोट, तू यह क्या कर रहा है? यह प्रसिनी है—बतू की घरवाली। तू इसका जेठ लगता है। उल्टा य तरे मत्था टेकेगी। यह मुनकर वाली लज्जित सा हो गया और प्रसिनी न दबी त्बी हँसी के साथ छोटा-सा घूँघट निकाल लिया।

काली औरता के मले कुचले फटे पुराने कपडा और नाक सुत्सुडात नग धडग बच्चा को देखता हुआ सोचने लगा कि वह किस दुनिया मे आ गया है। कई औरता और बच्चा की पलकें गुलाबी थी और उन पर एक भी बाल नहीं था और उनसे पानी बह रहा था। उनके शरीर और कपडो से पसीने की एसी दुगंध आ रही थी जिसस काली अपना परिचय खो चुका था। बच्चे चकित होकर काली को देख रहे थे और जब वह किसी को पुचकारता तो वह शरमा कर अपनी माँ की टागा से लिपट जाता।

‘जा बेटा यह तरा ताया है।

काली ने ये शब्द इतनी बार सुने कि उसे विश्वास सा होने लगा कि इस मुहल्ले में शायद उसके सिवा सबके ‘याह हो चुक है।

चाची प्रतापी शक्कर बाटकर वापस घर पहुँची तो एक बार फिर चाची बधाइयाँ पतापिय बधाइया की कई आवाजें एक साथ गूँज गईं। सब औरता न अपने-अपने दुपट्टे के पल्लू से मुट्ठी भर अनाज खोला और काली के सिर स बार कर उसकी बलाए ली। उसके तगड और जवान शरीर को देखकर कई औरतो का अपनी कवारी युवा भतीजी भानजी बहन या भवने की किसी जवान लडकी की याद आने लगी और उनका जो चाहा कि उसका रिश्ता काली स निश्चित हो जाए।

सब औरता न चोरी छिपे खाट के नीचे पड काली के द्रुक को देख लिया था और वे उसम पडी वस्तुआ के बारे में अपने-अपने अनुमान लगा रही थी। हर एक उसी हिसाब से काली को यह जताने की कोशिश कर रही थी कि उसकी अनुपस्थिति में उसन चाची की बहूत देख रेख की है। ताई निहाली न काली का माथा चूमत हुए कहा कि जीतू और काली आयु में बराबर और भाई हैं तो प्रीतो भी सबको सम्बाधित करती हुई बोली

काली तू तडक ही पढ़ूँच गया था ना?

हाँ चाची।

तुम्हारी आवाज मुनकर मैं सोच में पड गई कि भाभी के साथ कौन वार्ने कर रहा है। जब मैं तरे चाचे की खाट की ओर देखा ता वह खाली थी।

मैंने समझ लिया कि भाभी का हाल चाल और काम-काज पूछने गया होगा ।
रोज सबरे उठत ही वह पहले भाभी के पास जाता है ।

बुजुग स्त्रियाँ काली के ट्रक के वार म खुसर फुसर कर रही थी और अतू
की पत्नी प्रसिनी, नर्दासिह की बेटो पाशा और प्रीतो की बटो लच्छा बाकी
औरता से अलग एक कोने म खडी थी । उन्हान आपस म कोई बात की आर
खिलखिलाकर हँस पडी । पहले तो किसी ने उनकी ओर ध्यान न दिया
लेकिन जब व हँसी के मारे लोट-पोट होने लगी तो प्रीता नाक सिखाडती हुई
बोली

'नो तुम्ह क्या हो गया है । क्या हिडहिड कर रही हो ? जब तीना हँसी
से दाहरी होन लगी तो सबका ध्यान उनकी ओर चला गया और एक साथ बई
आवाजें आई

क्या हो गया है तुम्हें ? प्रसिनी दो बच्चा की माँ बन गई है, तीसरा पट
म लिए घूम रही है लेकिन इसकी छोर-खेल खत्म नहीं हुई ।' प्रसिनी पर
इस बात का कोई असर न हुआ और हँसत-हँसत उसका चेहरा एसा लाल हा
गया जस उसम स छून फूट पड़ेगा । प्रीतो उसके कधा को झकझारती हुई
बोली

नो, अकेली ही हँस रही है, हम भी कुछ बता ।

जब प्रसिनी ने कुछ न बताया तो प्रीतो न अपनी बटो का भिडकत हुए
उसस पूछा

लच्छो का चेहरा शम से लाल हा गया और वह अपन-आपका सिखाडती
और समेटती प्रसिनी की आर सकत करनी हुई वाली

'यह कहती है कि काली का जटनी म-जटनी व्याह कर लेना चाहिए ।'
लच्छा चुप हा गई परन्तु प्रीता समझ गई कि प्रसिनी ने आग क्या कहा होगा ।
उस काध ता बहुत आया लेकिन वह हँसनी हुई उँची आवाज म वाला

ठीक तो है । काली अब व्याह नहीं करगा ता क्या बुडडा हानर बग्गा ।
इसके साथिया व तो तीन-तीन बच्चे हैं ।'

बाहर न जाता तो अब तक शायद उसक चार बच्चे हान ।' दूसरी औरत
ने कहा ।

मेरे जीतू और काली के तो लगन डील हैं ।' ताई निहागी उदाग रवर
म बोली ।

काली अब कहे तो शाम तक इसकी शादी करा दूँ । प्रीता सनना इशारा
करती हुई घालिया गा लगी । उसके साथ बाकी औरत भी मिल गई ।

घरती धन न अपना

प्रसिनी ने अपन पर से लाल रंग का दुपट्टा लहर धाची के गिर पर रख दिया । उहनि चाची को घसीटकर बीच म बिठा लिया और वे गव इग तरह जोश से गान लगी जैसे गचमुच वाली का ब्याह रचा हा ।

प्रीतो न चाची का पानी का पटा पाली कर लिया और टीकरा स पाप देने लगी । ताई निहाली सबको बोल उठाने का सबत परती हुई गान लगी

जिस लिहाटे मेरा वाली नौ जम्मया

सोई दिहाडा भागी भरया ।

(जिस दिन मरे वाली ने जन्म लिया था वह दिन हमारे लिए बहुत शुभ था ।)

सब स्त्रियाँ घडे के गिद बठ गइ और झूम झूम कर गीत गान लगी ।

साडे नमे माजन घर आय सलोनी दे नन भरे ।

सानू की की वस्तू लयाय सलोनी दे नन भरे ।

सानू गरी ल दुआरा लयाय सलोनी दे नन भरे ।

सानू गुडमे दी जोरू लयाय सलोनी दे नन भर ।

वाली गीत सुनकर कभी हँसने लगता और कभी शँपकर मुह छिपा लेता । उसका अजनबीपन दूर हो गया था और वह इस तरह प्रसन्न था जैसे बच्चा अपनी माँ की गोद म बठा लोरियाँ सुनकर प्रसन्न हो रहा हो ।

३

गली मे कई लोग दगड दगड करते हुए गुजर गए तां वाली की आँख खुल गई । उसन एक क्षण के लिए इधर उधर देखा और करवट बदलकर फिर सो गया । लेकिन जब एक साय कई आवाजें आइ और उस पर एक बहुत भयानक चीख छा गई तो वह हडबडाकर उठ बठा । नजदीक ही मकान की छत पर खड़ी एक स्त्री ने ऊँचे स्वर मे कहा

चौकारे वाला चौधरी गालियाँ दे रहा है । पना नही किसकी शमत आई है । सब लोग चौगान म चल गए हैं ।

वाली उठकर चारपाई पर बठ गया और ध्यान से आवाजो को सुनने

लगा। कोई फरर फरर् गालियाँ दे रहा था। फिर किसी के गिडगिडाने की आवाज आई

'चौधरी जी, मेरा कोई कसूर नहीं। आप मुझे 'किसी के सिर पर पटाख-पटाख जूत पड़ने की आवाज आई और साथ ही याचना भरी चीख गूजी

'हाय, मैं मर गया—मुझे बचाओ।'

चमादडी में ऐसी घटना कोई नई बात नहीं थी। ऐसा अक्सर होता रहता था। जब किसी चौधरी की फसल चोरी कट जाती या बरबाद हो जाती या चमार चौधरी के काम पर न जाता या फिर किसी चौधरी के अदर जमीन का मलकियत का एहसास जोर पकड़ लेता तो वह अपनी साख बनाने और चौधर मनवाने के लिए इस मुहल्ले में खला जाता।

जब चीख दोबारा गूज उठी तो काली पाँव में जूता घसीटता हुआ गली में आ गया। चाची उसे रोकती रही लेकिन वह चौगान की आर बढ़ गया।

वह चौगान में पहुँचा तो मुहल्ले के बहुत से मद कमान बनाकर खड़े थे। बीच में चौधरी हरनाम सिंह बाएँ हाथ की दो उँगलियाँ से तह्यद का पल्लू घामे हुए खड़ा गालियाँ दे रहा था। कोठा की दीवारा और दरवाजों के साथ मली कुचली स्त्रियाँ भयभीत बच्चा को छातियाँ से लटकाए या अपनी टागा में दबाए हुए चौधरी और अपने मुहल्ले के मर्दों को देख रही थी। बूढ़े और जवान सब ऐसे सिर झुकाए हुए थे जैसे राजा के दरवार में खड़े हों। उनके मले ताँव के रंग के शरीर मद हवा में हिल रहे पत्ता की तरह काप रहे थे। चौधरी हरनाम सिंह सबका गालियाँ दे रहा था लेकिन उनके मुँह पर ताले पड़े थे।

उनमें से कुछ लोग कभी-कभार गाली सुनकर हँस पड़ते जैसे उन पर फूल फेंका गया हो।

सतू बाकी लोग से जरा आगे सिर झुकाए खड़ा था। चौधरी ने उसे गाली देकर पुकारा तो वह ढिठाई से हँसने लगा। यह देखकर चौधरी का क्रोध और भी बढ़ गया और वह कड़कती हुई आवाज में बोला

इधर आ सतू के पुत्र।'

सतू अपनी जगह पर खड़ा ही बोला

चौधरी जी मेरा कोई कसूर नहीं मैं तो ।

वह अभी अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि चौधरी आगे बढ़ा और उसे घसीटकर आगे ले आया। चौधरी ने उसकी गदन मरोड़कर उसका मोर बना दिया और जूते मारने लगा। सतू बिल्ख उठा

धरती घन न अपना

‘चौधरी जी मेरा थोड़ा बमूर नहीं ।

जब उसके सिर पर दो चार और जूते पड़े तो वह दहाड़ने लगा ।

‘हाय म मर गया । मुझे बचाओ ।’

‘सच बता, जानवरा को मरे खेत की ओर क्या मोड़ा था ।

चौधरी जी, जिसकी जो चाहे सींग-घंटे दो मने यह काम नहीं किया ।’

सतू ने गिडगिडात हुए कहा । चौधरी जब अपना हाथ ऊपर उठाता तो सतू अपने दोनों हाथ सिर पर रखकर जोर-जोर से चीखने लगता । चौधरी को उस पर शायद दया आ गई या वह थक गया, उसने जूता नीचे फेंक दिया और सतू को पाँव से ठोकर मारता हुआ तिरस्कारपूर्ण स्वर में बोला

‘कुत्ते की औलाद, हडबौंग तो ऐसे मचा रहा है जिस सूली पर चढ़ा दिया हो ।

चौधरी चमारों की ओर देखता हुआ दुःख भरे स्वर में बोला

‘दिन रात पानी देकर मकई की अगेतरी फसल उगाई थी । खेत लहलहाने लगा तो किसी भरदूद ने उसमें जानवर हाँक दिए ।’

सब लोग साँस रोके चौधरी की नज़रों से बचने की कोशिश कर रहे थे । बच्चे डर के मारे अपनी माँ के पीछे जा छिपे थे । काली मजमा से हटकर बेरी के नीचे खड़ा काले और मले शरीरों को देख रहा था जो इत्मीनान से गालियाँ और मार खा रहे थे ।

चौधरी हरनाम सिंह ने वहाँ खड़े हर आदमी को सम्बोधित करते हुए कहा

‘सच सच बता दो नहीं तो सारे मुहल्ले को इसी चौगान में लिटाकर जूते लगाऊँगा ।’ मगू जो मजमा से बाहर चौधरी के पास खड़ा था जीतू को देखकर बोला

‘जीतू तू कल दीया-बत्ती के सम वहाँ था ?’

‘जीतू मे मगू की ओर धूरकर दखा और तुनककर बोला

‘तू कौन है पूछने वाला ?’

यह कहकर जीतू सट्टम गया और आहिस्ता आहिस्ता पीछे हटने लगा ताकि चौधरी की नज़रों से आसन्न हो जाए । मगू चौधरी को सम्बोधित करता हुआ बोला

चौधरी जी कल गिन डले मैं जीतू को आपके कुएँ की ओर जाते देखा था । उस समय उसके हाथ में लाठी भी थी ।

यह सुनकर चौधरी मजमा में खड़े हर आदमी पर नज़र दौड़ाता हुआ बोला

‘कहाँ है जीतू ?’ और फिर उसे देखकर क्रुद्ध स्वर में बोला

‘इधर आ जीतू के ।’

जीतू मगू को घणा और त्रोध में देखता हुआ चौधरी की ओर बढ़ा और उनके सामने जा खड़ा हुआ ।

क्या तूने जानवरों को भेत का तरफ मोड़ा था ? उसने राव से पूछा ।
‘दीपा-वत्ती के समय में छञ्जू शाह के लिए बौयला लेने गद्दी के भटठे पर गया हुआ था । आप शाह से पूछ लें ।’ जीतू ने हकलाते हुए कहा ।

‘बौयल के पुत्तर । जो मैं पूछ रहा हूँ उम्का जवाब दे । चौधरी ने उसे मोटो भी गालो दत हुए कहा ।

जीतू ने कोई उत्तर न दिया और मजमे में खड़े एक-एक आल्मी की ओर देखन लगा ताकि उनमें से कोई एक तो हमी भरे कि वह सचमुच गद्दी के भटठे पर गया हुआ था । मजमा से उसकी नजरें बेरी के नीचे खड़े काली पर जा टिकी । वह उस देखकर मुमकराने लगा और यह भूल गया कि वह चौधरी के सामने जवाब तलवी के लिए खड़ा है । वह मुसकराता हुआ काली की ओर बढ़न लगा । लेकिन चौधरी की गालिया की बीछाड न उस चौंका दिया ।

कत्ता चमार यूँ खड़ा है जैसे यहाँ गरदावरी करो आया ही ।’

चौधरी ने आगे बढ़कर जीतू का गदन से पकड़ लिया । उसने गदन अकड़ा दी तो चौधरी गुस्से से फुकारन लगा

कुत्ते के पुत्तर । मेरी फसल में जानवर क्या हाने थे ?’

‘कह जो लिया मन नहीं हाने थे ।

जीतू न उद्दण्ड स्वर में कहते हुए गदन छुड़ाने की कोशिश की । यह देखकर मगू बोला

चौधरी जी आजकल यह पहलवानी भी करता है ।’

पहलवानी का जोर तो एकदम निकाल दूंगा । मशके बाँधकर उलटा लटकाकर चमड़ी उधेड दूंगा ।’ चौधरी न बहुत गुस्से से कहा और हाथ में मजबूती से जूता पकड़कर बोला

‘हराम की आलाद । जानवरा को मेरे खेत में क्या हाना था ?’

चौधरी न अपना प्रश्न दो तीन बार दोहराया ।

जीतू न कोई उत्तर न दिया तो मगू बोला

तू क्या गूंगा हो गया है जो जवाब नहीं देता । चौधरी जी इतनी देर से पूछ रहे हैं ।

मगू के बाद निकलू न भी यही बात कही तो कई और लोग भी बोल उठे ।

लेकिन जीतू फिर भी चुन रहा और इस तरह बचावों से उधर दगना रहा जब लोग उगरी बचाव लगी और न पूछ रहा । चौधरी का जातू की घामोशी बहुत अपमानजनक लगी । उसने आग बझकर उगरी गन्ने मुचानी चाही लेकिन जब जीतू गन्ने भरदान लगा तो चौधरी भट्ट उठा । उसने गालियाँ देते हुए अपने तहबन्द को अच्छी तरह बसकर बांधा और गन्ने गन्ने जीतू की गर्दन मुचनी ली और ताबड-तोड जूत मारना हुआ बोला

‘तरी मोन तुम्हे बुला रही है जो तू मुम अपना जार सिधान लगा है ।

जब चौधरी भारत-भारत थक जाता था जूता नीचे फेंकर हाँपता हुआ प्रछता

‘बता, तूने जिनकरा को भेरे सेत म क्या हाँपता था ?’

फिर वह धुनता हुआ कहता

‘मवई का एक डठ’ तब नहीं बचा । दो घुमाआ का पूरा सेत उजाड दिया ।

जीतू फिर भी कुछ नहीं बोला, बेचल त्रोध भरी नजरों से चौधरी की आर देखता रहा । चौधरी ने उसके सिर पर जूता मारन के लिए फिर हाथ उठाया तो जीतू ने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की । यह दपकर चौधरी आग बगूला हो गया । उसने जीतू को धरना देकर नीचे बिछा लिया और उसके सार शरीर पर टुड मारता हुआ बोला

‘तेरी यह मजाल, सामने हाथ उठाता है ? तरी वाली-वोटी कर दूगा ।

चौधरी टुड मार मारकर थक गया और हाँपता हुआ एक बन्म पीछे हट गया । जीतू ने जमीन पर से मुह उठाया तो वह छन से लपपय था । उसकी नाक और मुह दोनों से खून बह रहा था । खून देखकर चौधरी ठिठक गया लेकिन अपनी घबराहट को छिपाता हुआ रोव से बोला

‘अब मैं तुम्हे छोड देता हूँ । फिर ऐसी हरकत की तो सीधा जेल भिजवा दूगा ।’

जीतू के मुह और नाक से खून की बूद टप-टप गिर रही थी । सब देख रहे थे लेकिन किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि उस उठाकर घर ले जाए । मजमा में किसी ने धीमे स्वर में कहा

‘चौधरी से क्या मुकाबला ? उनके सामने अकट फू कसी ? पाँव पड जाता तो इतनी मार से बच जाता ।’

सब लोग भयभीत से उसकी ओर देख रहे थे । जीतू सिर को दोनों हाथा में पकडकर बठ गया था ।

एक दो औरतें जीतू के घर की ओर भाग गईं और उसकी मा निहाली को बुला लाईं। वह जीतू के नाक और मुह से खून बहता देखकर जार जार से रोने लगी और अपने सिर पर दोहल्यड मारकर धोली

'भोया, तू पदा होते ही क्या न मर गया। अभी तेरे प्राण निकल जाते तो अच्छा होता।' यह कहकर वह सिर पीटने लगी और जीतू को चौधरी के पाँव की ओर धकेलती हुई बोली

चौधरी एक बार ही इसका खात्मा कर दो। रोज़ रोज़ का क्लेश तो मिट जाएगा। किमी की फसल कट जाए तो चोर जीतू। किसी का कार्ड नुकसान हो जाए तो जिम्मेदार जीतू।'

ताई निहाली को चौधरी पर बहुत क्रोध आ रहा था लेकिन वह उसे प्रकट करने में शकसमय थी। बेवसी के एहसास ने उसके धय के रहे सह वध भी तोड़ दिए और वह अपने मृत मा-बाप और पति को याद करती हुई विलाप करने लगी।

ताई निहाली को बुरी तरह राते-पीटत और बावला करत देखकर चौधरी बेजारी से बोली

माई अगर इस हराम की औलाद से इतना ही लाड है तो इस अबल भी दिया कर। इस हराम के सुखम न मेरी दो घुमाआ मक्ई मिट्टी में मिटा दी।

चौधरी के ये शब्द सुनकर मगू भी ताई निहाली को डाटता हुआ बोला

'इस बुड्डी न तो इसे सिर पर चढा रखा है। मा को डरा लेता है तो समझता है कि सारा जहान इससे डरता है। माई ज्यादा टर टर न कर। इस पर ल जा।

प्रीतो मुहल्ले की औरता में सबसे आग खडी थी। वह मटकती हुई बोली

रडी का पूत सौदागर का घोडा, जो कर ले सो ही थोडा। जीतू तो अग का नाल है कही लगाना है तो कही बुझाता है।'

जब चौधरी न जूता पाँव में पहन लिया और तहबद को ढीला कर लिया तो आस-पान खडे लोग समझ गए कि अब वह किसी और की मार पिटाई नहीं करेगा। कुछ लोग न आगे बढ़कर जीतू को सहारा देकर खड़ा किया। ताई निहाली राती और जीतू को गालियाँ दनी हुई उसे घर की ओर ल जान लगी। लागा न एकदम रास्ता छुड़ दिया और कई औरतें और बच्चे उसके आग-पीठे चलने लगे। औरता क झुरमुट में खडी मगू की बहन पानो न तीथी थावात्र में चौधरा को गाली दी तो उसकी माँ जस्मा उसका मुह बंद करना हुई चीखकर वाला

‘रांड क्या ज्यादा जवान लटकाती है। मगू न सुन लिया तो जान स मार दगा।’

लकिन जानो फिर भी चुप न हुई और दबी जवान म चौधरी को गालियां देती रही। फिर वह भयभीत और मुस्साए हुए चेहरा को देपन लगी जा चौधरी की हर बात पर सिर हिला रह थ। जानो न घणा म उनकी जोर दखा जोर सोचने लगी कि इनम से कितो म भी इतनी हिम्मत नही है कि चौधरी को कवल इतना हा कू दे कि वह नाजायज मार पीट कर रहा है आग पर हाथ पकड लना ता बहुत दूर गी बात है।

जानो की नजरें मजमा म छड प्रत्यक् व्यक्ति स होनी हुई वाली तब पहुच गई। उस समय वाली की उसकी आर पीठ थी। उसक पहनावे स उस सगह हुआ कि वह बाहर का आदमी है क्याकि अगर वह इस मुहल्ल का रहन वाला जाना तो वरी क नीचे जकला खा होन की बजाय मजमा मे छडा होगा। यह सोचकर जानो को बहुत शम महसूस हुई कि यदि वह सचमुच बाहर का आदमी हुआ तो क्या सोचगा कि पाडेवाहा क चमार बहुत बगरत हैं, मुह खोले बना ही मार खा लेत है।

मजमा क पास छटा मगू वह चढकर बातें करन लगा तो जानो उस भी गालियां देन लगी। उसकी मां जस्सो उसे घर की ओर धकेलती हुई खुद स्वर म बोली

राड, घर चल, गम चिमटे स तेरी जवान खीचती हैं।

मुटियार बेटी का रांड की गाली नही देनी चाहिए। बवे हुक्मा ने जस्सो को समझाया।

बवे क्या करू, इसकी तो-तो अ दर नही रहती। चौधरी को गालियां दे रही ह। उसने सुन लिया तो हमारी शमत आ जाएगी।

पुतरा, तू चुप रहा कर। मुटियार लडकिया की तो आवाज नों निकलनी चाहिए। बवे ने जानो को समझाया।

बवे, क्या करूं। नाजायज बात देखकर मुझे गुस्सा आता है। चुप नही रहा जाता। जानो ने उत्तर दिया। जस्सो जानो को भला पुरा कहती हुई उसकी आर लपकी तो वह अपन घर की ओर दौड गई।

जीतू को उसकी मां घर ले गई तो चौधरी अपनी फसल की बरबादी की बात करने लगा। ज्यादातर लोग चौधरी के इद गिद खडे थे और उसकी हर बात पर सिर धुन रहे थे। चौधरी ने जब छजू शाह को अपनी ओर आते हुए देखा तो वह आर भी ऊचे स्वर म बोलन लगा। छजू शाह उसके निकट

आकर वाला

'चौधरी जी, मैं चमादही के कुएँ के पास जा रहा था। वहाँ नर्दासिंह न बताया कि आपकी दो घुमाआ अगतरी मकई जानवरा ने उजाड़ दी ह। आपकी आवाज़ सुनकर इधर चला आया।

छज्जू शाह की बात सुनकर चौधरी जस फूट पडा।

शाह दो घुमाआ मकई पर मुनागा फिर गया। पूरा खेत उजड़ गया। दतनी अच्छी फसल थी एक डठल नहीं बचा।

'आहा यह तो बहुत बड़ा नुकमान ह, अनय है। मैं कभी कुएँ की ओर जाता तो फसल देखकर मन प्रसन्न हो जाता।

छज्जू शाह ने खेद प्रकट करत हुए कहा। और फिर आम पास खडे लोगो को समझाता हुआ बोला

'भूखों, क्या ऐसी हरकत करत हा। चौधरिया को फसल उजाड़ोगे तो आप कहा स खाआग। फिर वह बाव फत्तू का सम्बोधित करता हुआ वाला

बाबा फत्तू तू ही इन छाफरा का समझाया कर। जिस थाली म खाना उसी म छेन्न करना शराफत नहीं है।' छज्जू शाह चौधरी हरनाम सिंह का हाथ पकड़ता हुआ बोला

चौधरी जी य लोग आप के कमान हैं। गलती कर बठे हैं, अब इहे माफी द दो।

वह चौधरी को हवली की आर ले जाने लगा तो उसकी नजर बरी के नीचे खडे काली पर पड गइ और साथ ही दस रुपय का नया नोट उसकी आखा के सामन धूम गया। छज्जू शाह चौधरी का हाथ छाडकर काली की आर जाता हुआ प्यार स बोला

बाबू काली दास, मुनाआ कब लौटे ? मुचे तो सबरे तुम्हारी चाची न बताया कि तुम वापस आ गए हा।

काली छज्जू शाह का बदगी करता हुआ बोला

तडबने की गाडी से आया हूँ। फिर वह रककर कहने लगा

रहना कहीं था, शाह जी। वस ही इधर उधर भटकता रहा। आप मुनाओ घर म सब मुख-साँद है।

हा सब ठीक-ठाक है।'

छुट्टी आए हो या यही रहाग ?'

कुछ कह नहीं सकता। गाँव का जो हाल आज दखा है उससे तो जो चाहता है कि रात का गाडी म ही वापस चला जाऊँ। काली न चौधरी की

धरती घन न अपना

ओर देखते हुए कहा ।

यह सुनकर छज्जू शाह मुसकरा दिया और उसके तगडे लम्बे शरीर को देख कर बोला

दुकान पर आना । देस विदेस की बातें सुनाना । तुम तो दुनिया घूमकर आए हो । हम ता कोल्हू के बल की तरह इसी गाँव म घूमते रहते है । बहुत जोर मारा तो साँठ शशमाही के बाद जालंधर या होशियारपुर का चक्कर लगा आए ।

मै ता आपके दशनो के लिए आन घाला ही था ।'

काली यह कहता हुआ छज्जू शाह के साथ चल पडा । उसने चौधरी के पास पहुँचकर उसे बदगी की । चौधरी न बदगी का जवाब देते हुए बहुत खुशक लहजे मे कहा

कब आए हो ?'

तडके की गाडी से जाया हूँ ।

हूँ । चौधरी काली पर एक नज़र और डालकर बोला ।

जाने से पहले चौधरी ने वहा खडे लोगो को धमकात हुए कहा

अगर फिर किसी न फसल का इस तरह नुकसान किया तो सारी चमादडी को ज़मीन पर उलटा बिछाकर पिटवाऊगा ।'

काली को या महसूस हुआ जस यह धमकी उसे दी है । उसने चौधरी की ओर घूरकर देखा । चौधरी को उसका इस तरह देखना बहुत बुरा लगा और वह उसी लहजे म बोला

चमार सिर पर चढत जा रहे हैं । इनका दिमाग खराब हो गया है । इहे सीधा करना ही पडेगा ।

चौधरी जी सारे जमाने की हवा बल्ल गद है । छज्जू शाह ने कहा और व दोना कुएँ की जार निकल गए ।

उनके जात ही लोगो की मूगी जवानें फिर बोलने लगी । काई जीतू को दोप दे रहा था तो कोई चौधरी की ज्यादाती का दगी जवान म रोना रो रहा था । काली छाती पर बाजुआ की कडियाँ बनाएहुए जत्र मगू के घर के सामने पहुँचा ता अटर से जस्ता के गालियाँ देने की जावाज आ रही थी और उत्तर म एक और आवाज गूज रही थी कि वह चौधरा की दाढी म जलती लकडी लगा दगी ।

थोड़ी ही देर के बाद मुहल्ला फिर मामूल पर आ गया जैसे वहाँ कुछ हुआ ही नहीं था। मद अपने काम-बाज के लिए बाहर जा रह थे। बच्चे गली में ठीर रिया में बेलते हुए घम्मा चौकड़ी मचा रहे थे लेकिन औरता में अभी गहमा गहमी थी। वे गली में मुबह की घटना पर टिप्पणी करती हुई वभी आपस में बगड पडती और वभी खुसर फुसर करने लगती।

बाली की समझ में नहीं आ रहा था कि चौधरी हरनाम सिंह न जीतू को क्या मारा। उसने चौधरिया से स्वयं भी लडकपन में कई बार मार खाई थी और वह हर बार उसे मामूली बात समझकर भूल जाता था। उसे कभी शम महसूस नहीं हुई थी। लेकिन जीतू को मार पडने पर उसे बहुत दुख हुआ बहुत शोध जा रहा था। वह घर आकर दीवार के सहारे जमीन पर ही बँठ गया और खोया खोया सा छन की ओर देखने लगा। हाथ एक-दूसरे से उलझने लग और दाइ टाँग अपने आप ही टिप्पण लगी। चाची ने उसे इस तरह बठे दखा तो प्यार से झिडकती हुई बोली

‘पुतरा ऐसे क्या बठा है। खाट ले ले।’

काली ने कोई उत्तर न दिया तो चाची उसे ध्यान में देखकर समझाती हुई बोली

‘इस तरह टाँग नहीं हिलात, नहस हाती है।’

बाली को टाँग हिलनी बन्द हो गई लेकिन उस ने चाची को उत्तर न दिया। कुछ दर बाद चाची फिर बोली

‘जीतू की मा निहाली बहुत दुखी है। मुझे उस पर बहुत तरस आता है। छोटी उमर में ही उसकी माँ मर गई थी। सम्बन्धियों की झिडकिया खाकर टुशियार हुई। ब्याह का चूडा अभी मँला भी न होने पाया था कि रँडापा दखता पडा। आज तक जीतू को देख देखकर जीती रही है। उसे उमीद थी कि बटे का सुख देनेगी पर ऐसा लगना है कि वह भी नसाव में नहीं है।

चाची ने अपनी बात जारी रखत हुए कहा

निहाली जिननी भोली है जीतू उतना ही शतान है। घर आता है ता माँ से रुडता है। बाहर जाता है तो लागा से बगडा मोल लेता है। सात कोस का बल खाकर शगडा करने जाता है। आज उसे चौधरी न मारा। नाक की हड्डी टूट गई है। खून के परनाले वह गए हैं। निहाली बेचारी की रो रोजर आखें सूज गई है। उसे तो जिन्दगी के आखिरी पहर में भी दुख-ही दुख मिला है।’

घरती घन में अपना

चाची परमात्मा को याद करती हुई बाली की आर दखने लगी। वह सोच में डूबा धीरे धीरे सिर हिलाता हुआ बोला

‘चाची, चौधरी न जीतू को नाजायज मारा है। उसका कोई कसूर नहीं था। अगर जीतू की जगह मैं होता तो चौधरी की बांह मरोड़ देता।’

काली की बात सुनकर चाची उसकी ओर भय और आश्चर्य भरी दृष्टि से देखने लगी और जब वह दरवाजे की ओर बढ़ा तो उसे रोकती हुई बोली

‘बाबा तू कहीं चला ? अपने अंदर बैठ। चौधरी और जीतू का थगडा है। हम उस में क्या लेना है।’

परंतु काली दरवाजे से बाहर निकल गया तो वह पीछे जाकर उस दखने लगी। जब वह जीतू के घर की ओर जाने वाली गली में मुड़ गया तो वह घबरा गई और सोचने लगी कि उसने पीछे जाए लेकिन इस छयाल से रुक गई कि घर सूना रह गया तो प्रीतो के बच्चे कोई-न कोई चीज उठाकर ले जाएंगे।

बाली तेज कदम उठाता हुआ चौगान में चला गया। वहां अब कोई नहीं था। केवल बछड़े और बछिया बधी थी जो चौधरिया की दया क रूप में चमारा तक पहुंचती हैं। वे अपने-आपको मच्छर मक्खी से बचाने के लिए बार-बार पाव पटक रही थी और पूछो को पंखे की तरह इधर उधर हिला रही थी।

जब वह जीतू के घर पहुंचा तो दो औरत दरवाजे से बाहर निकल रही थी। बाव फत्तू की पत्नी बब हुरमा जो लाठी क सहार रास्ता टटोल-टटालकर आग बढ रही थी और दूसरी निक्कू की घर वाली प्रीतो जो दो दर्जन क रंगभंग बच्चे जनन के बाद भी रगदार दातुन और तल न सहारे जीवन की सीमाओं में ही रहना चाहती थी। बब हुरमा ने तरह बच्चा का जन्म लिया था। लेकिन उन में से चारह को अपने हाथ से धरती की गोली में लिंग दिया था। वह परमात्मा के डर क कारण कभी शिकायत तक नहीं करती थी। उन का दिल इतना नम हो गया था कि बब कांटे की चुभन को तलवार की काट समझकर अपना बुरा हाल कर लेती थी। जीतू क नाम में घुन बहना दयकर बब हुरमा रो पड़ी और मुबकिया लेती हुई बबल इतना बह सकी कि परमात्मा से डरना चाहिए जा सज्जा जहवार ताडता है।

गली में आती हुई वह प्रीतो का पटी ममता रही थी कि माया का अहवार नहीं करना चाहिए। गरीब का आहता प्लग से भी बुरी हाना है। फिर प्रीता तुनकर वागी

बड़ा रोग है। ऊपर से बीमार रहता है। पभी मारती है तो बभी ताप। थोड़े-न-थोड़े रोग घेरे ही रहता है। बाकी रहा दलीला अपनी मौजूद कर रहा है। महीने दो महीने बाप धरकर लगा जाता है। शहर में जूत बनाने का काम करता है। अपना गुजारा कर रहा है राजी खुशी रह।

यह पहलकर बर हुनमा न ठण्ठी आह भरी जैसे बहुत सी बातों की जवान पर आन से रोम लिया हो। फिर वह क्षेत्र भरे स्वर में बोली

‘निहाली का दुख मुझ में देखा नहीं गया। जीतू तो मार प्यार घाट पर पड़ गया वह बेचारी व्याकुल हो रही है। अच्छा जो बर्षों में लिया है मिल कर रहेगा।

बर की बात सुनकर प्रीतो तुनवर बोली

‘जीतू को चौधरी ने बौन-भा गडासा मारा है। रण्डी माँ के साथ खेलना है। घाट पर यूँ पड़ा है जैसे सिर पर बुरहाडा लगा हो।’

काली ने प्रीतो की ओर ध्यान से देखा और कुछ बड़े बिना आगे बढ़ गया।

जब वह जीतू के घर पहुँचा तो ताई निहाली जीतू के नाक और मुँह से खून साफ करने की कोशिश कर रही थी। जीतू चीपता चिल्लाता हुआ उसने हाथ परे हटा देता। काली को देखकर ताई निहाली जीतू की ओर सनेत करती हुई बोली

काली, देख चौधरी ने इसका क्या हाल कर दिया है। नाक की हाथ लगाती हूँ तो तड़प उठता है। भला इसने चौधरी का क्या बिगाडा था जो इसे पुलसियों की मार मारी है पूरा साल उसकी बेगार करता रहा और इसे सारी मेहनत का यह इनाम मिला है।

ताई निहाली मला सा बपडा लेकर जीतू के मुँह और नाक से खून साफ करने लगी। वह उसकी ओर हाथ बढ़ाती तो जीतू या तो मुँह छिपा लेता या फिर उसका हाथ झटक देता। काली ताई निहाली के हाथ से बपडा लेता हुआ बोली

‘ताई ला मैं खून साफ करता हूँ तू पानी गम करके ला।

ताई निहाली के उठने से पहले ही जानो, जो दरवाजे की ओट में खड़ी थी झट सामने आकर बोली

ताई तू बठ मैं पानी गम कर देती हूँ।

काली ने चौककर जानो की ओर देखा और साथ ही उसकी आँखा के सामने छ साल पहले की वंदाक निडर, झमझानू और खुले बालों वाली जानो घूम गईं जा सारा लिन छाटी उन्न की बछेरी की तरह गलिया में घूमती फिरती थी। वही गमी हो या शादी झगडा हो या फसाद, यह लड़की सारा

ग्नि उसी जगह मँडराती रहती थी । काली ने ज्ञानो की ओर ध्यान से देखा और उसके यौवन और सुडौल शरीर को तकता हुआ बोला

‘नानो, तू तो बहुत बड़ी हो गई है ?’

‘तू भी तो बड़ा हा गया है ।

पानो न बेबाकी से उत्तर दिया और फिर लजाती हुई बाहर निकल गई ।

पाना गम पानी लाकर जीतू की खाट की पायेंती खड़ी हो गई । काली गोला कपडा जीतू के हंठा और नाक के नीचे फेरकर उसे निचाडता तो मुख पानी देखकर ताई निहाली का दिल बठ सा जाता । वह रानी हुई आवाज म बोली

जातू के अदर स लहू के घडे निकल रहे हैं । अगर दो चार बार ऐसी मार पडी तो यह इस दुनिया जहान से जाता रहगा ।’

काली हँसता हुआ कहने लगा

ताई ये खून नहा पानी है । तू क्या इतना घबरा रही है ?’

जीतू के चेहरे से खून साफ हा गया तो काली उसक नाक पर गम पानी की टकीर करता हुआ जीतू के उपर झुककर बोला

‘जीतू, अब तबियत कसी ह ? दद कुछ कम हुआ ?’

उसन कोई उत्तर न दिया । केवल बेगस नजरा से काली की ओर देखता रहा । उसकी आखो म गहरी मटयाली धुध सी छाई हुई थी । वह कुछ क्षणा के लिए काली की आर देखता रहा । फिर उसका हाथ अपन दोना हाथा म दबा कर बोला

‘काली, तू तो इस गाव से चला गया था । दोबारा इस नक म क्या आ गया है ?’

और कहाँ जाता ? आदमी सब जगह से निराश होकर घर की ही लीन्ता है । काली ने जीतू की समझात हुए नमी से कहा । उसन आखें मूद ली और मुह दूसरी ओर फेर लिया । कुछ क्षणा के बाद उसन पलटकर काली की आर दखा जसे उस उसकी बात पर विश्वास न आया हा । उसकी आखा म अविश्वास की झलक देखकर काली भी सोच म पड गया और उसन मुह दूसरी आर फेर लिया । लेकिन जब जीतू ने अपना प्रश्न दोहराया ता वह उसका कधा धपयपाता हुआ बोला

जीतू अपने घर म बठकर दुनिया बहुत बड़ी नजर आती है लेकिन गरीब आदमी के लिए यह हर जगह तग है ।’ फिर वह बात पलटन के लिए ताई निहाली स बोला

घरती घन न अपना

ताई, जीनू को दो घूट चाय के मिल जायें तो इसके अन्दर गरमायश (गर्मी) हो जाएगी ।'

ताई निहाली सोच म डूबी हुई बोली

'घर मे गुड तो है चाय की पत्ती भी मिल जाएगी लेकिन दूध कहाँ स आएगा ? चौधरिया के घरा स नो लस्सी भी बहुत मुश्किल से मिलती है दूध कौन दगा ? गली म मजू के घर मे भस है । वहा से दूध तो क्या खाली बतन भी वापस नहीं मिलेगा ।

नानो को ताई निहाली के ये शब्द बहुत बुरे लग । लेकिन साथ ही उसे यह एहसास हुआ कि ताई न जो कुछ कहा है वह सच है । नानो अभी सोच ही रही थी कि क्या उत्तर दे कि काली चट से बोल उठा

मेरे घर म दूध है । सवेरे चाची वही से लाई थी । मैं दौडकर ले जाता हू । काली के जाने के बाद ताई निहाली परमात्मा को याद करती हुई जानो स कहने लगी

जीनू की तरह काली का बाप भी बहुत छोटी उम्र मे मर गया था । काली बचारे को तो उसकी शक्ल भी याद नहीं होगी । इसका बाप बहुत होसले वाला आदमी था । पहलवानी करता था । इज्जतदार बदा था । चौधरी भी कम ही उसका मुह आत थे । थाना तक उममे डरता था । शरीफो का शरीफ और बदमाशो का बदमाश था । काली की माँ भी उसके बाप के मरने के दो साल बाद चल बसी । प्रतापी बचारी ने चप्प गिन गिनकर पाला है । बहुत थच्छा लडका है । जीनू स तीन महीने बडा है । बाहर से तगडा हाकर आया है । नाना ताई निहाली की बातें बहुत दिलचस्पी स सुन रही थी । जब काली वापस आया तो वह झेंप कर आगन म चली गई ।

ताई निहाली दूध लेकर चाय बनाने के लिए आगन म आ गई । काली दरवाजे म रुक गया और चारों ओर अच्छी तरह देखने के बाद जीनू के पास आ गया । उसने जब स एक बहुत छोटी सी गठडी निहाली और उसमें स छोटी सी शीशी निकालकर जीनू को दिखाता हुआ बोला

अभी तर नाक के अन्दर यह दवाई लगाता हूँ । पढ़ते तो यह पढ़ करेगी, फिर एकत्रम आराम आ जाएगा ।

बाकी न कपड का एक टुकडा शीशी म भिगाकर कुछ बूदें जीनू के नाक म टपका दा । जीनू दूध स बराह्न लगा और हाथ मुह पर रगड़ लिया ।

गप्प कर अभा आराम आ जाएगा । काली न उमका हाथ मुह के ऊपर म उठा लिया । ता चार बूदें नाक म बहकर जीनू के ऊपरी हाठ पर पल गइ

और कुछ गले में उतर गई। उसने ऊँह चाट लिया और बुरा सा मुँह बना कर बोला

‘दाहू (शराब) है ना?’ और फिर एकदम खुश होकर बोला

‘यह तो ठेके की शराब भानूम होती है!’

काली उत्तर में मुसकरा दिया और शीशी को कपड़े में लपेटकर जेब में डाल लिया। जीतू ऊपरी हाथ पर जबान फेरता हुआ बोला

‘यह तो एकदम ठेके की है। देसी का तो स्वाद ही और होना है!’

काली उत्तर में फिर मुसकरा लिया। जीतू उठकर बठना हुआ बोला

‘चाय पीकर क्या करूँगा। इसी के दा घूट दे दो। दद कम हो जाएगा।’

उसने हठ से कहा।

काली ने मुसकराते हुए उसके मुँह पर हाथ रख दिया।

ताई निहाली चाय लेकर आई तो जीतू ने बदिली से दो घूट पिए और फिर लेट गया। ताई उसका सिर दवाने लगी। उसके बूड़े हाथों में इतनी ताकत नहीं थी कि जीतू को राहत पहुँचा सके। काली ने ताई को उठा दिया और स्वयं जीतू का सिर दवाने लगा। नानो खाट की पायेंती खड़ी थी। काली कभी कभी बनखिया से उसकी ओर देख लेता। सोढी दर के बाहर जीतू ने आख जोल दी और एक बार फिर ऊपरी हाथ पर जबान फेरने लगा। गुड की मिठास के स्वाद पर उसने बुरा सा मुँह बना लिया। काली ने जीतू के ऊपर झुकते हुए दबी आवाज़ में पूछा

‘चौधरी के खेत में जानवर क्या तूने हारिंये थे?’

‘नहीं मैं तो उस समय गढी के भटठे पर था।’

‘तो फिर किसने हारिंये थे?’

‘मुझे पता नहीं। जिसकी जी चाहें सौगंध दे दो।’

काली के इन प्रश्नों से जीतू परेशान-सा हो उठा।

‘मगू न तुम्हारा नाम क्या लिया। काली ने पूछा।’

‘मगू का नाम सुनकर नानो चौकन्ती हो गई और जीतू की ओर ध्यान से देखने लगी कि वह क्या उत्तर देता है। वह उठकर बठता हुआ बोला

‘इसलिए कि मैं उसे अच्छा नहीं लगता। मैं उसकी चौधर नहीं मानता। इसलिए वह मेरी जान का दुश्मन बना हुआ है।’

काली चुप हो गया। जीतू लेटता हुआ बोला

‘तुम गाँव में रहोगे तो जल्दी ही मगू के रंग डग देख लगे।’

नानो भयभीत नज़रों से काली के गम्भीर चेहरे को देखती रही। वह नहीं

चाहती थी कि काली और मगू में किसी प्रकार का वैर भाव पैदा हो। वह अपने मन को किसी दूसरी ओर लगाने के लिए जीतू की खाट के नीचे पड़े खून से लिथड़े कपड़े के टुकड़ों को उठाने लगी।

ताई निहाली ने एक दो बार जानो को मना किया लेकिन जब वह उन्हें समेटकर वहाँ शाइलू लगाने लगी तो ताई प्रफुल्लित होकर बोली

‘पुतरा, ख तुम्हें भाग (भाग्य) लगाए। तुम्हें राजा घर मिले। ताई उसे आशीर्वाद दे रही थी कि दरवाजे पर जोर की ठाकर पड़ी और मगू बदमस्त साइ की तरह अन्दर घुसकर जीतू की खाट के पास आ खड़ा हुआ। जानो ने शाइलू वहीं छोड़ दिया और घबराई हुई दरवाजे की ओर बगने लगी। जीतू बेचनी से खाट पर करवटें बदलने लगा।

मगू जानो को देखकर ऊँचे स्वर में बोला

तू यहाँ क्या कर रही है। घर चल तेरे टुकड़े करके जमीन में गाड़ दूंगा। जानो डर से दीवार के साथ सटक गई और उसके साथ साथ रेंगती हुई दरवाजे की ओर बढ़ने लगी। वह नहीं चाहती थी कि काली के सामने मगू उसका अपमान करे। वह मगू के बराबर पहुँची तो उसने लाठी का सिरा उसने पेट में चुभो दिया। जानो चीखती हुई बाहर दौड़ गई। काली को मगू की इस हरकत पर बहुत क्रोध आया लेकिन वह चुप रहा। ताई निहाली मगू को झिटकती हुई बोली

‘कसा वेददी है कसाइ की तरह भारता है। बचारी जीतू का हाल पूछने चली आई थी। फिर वह उसे समझाती हुई बोली।

‘मगू पुतरा देख। बराबर की बहन पर हाथ नहीं उठाना चाहिए। ताई निहाली अभी अपनी बात पूरी भी न कर पाई थी कि वह बीच में ही बोल उठा

‘खुश रह माइ ज़्यादा बातें न बनाया कर। और वह लाठी के सहारे जीतू की खाट पर झुकता हुआ बोला

जीतू क्या मुजर कर रहा है अभी तो कुछ भी भार नहा पड़ी है। अभी तो याने वाँ तरी हट्टिया का मुमा बनाएंगे। फिर उसने ताई निहाली से कहा

भाँ तूने एम मिर पर चड़ा रखा है। उठा इस बजार चारपाई तोड़ रहा है। अगर बात फाँन तू पट्टुच गद तू व मार मारकर इस जिन म तादे और रात का मूरज जिंघा देंगे। चौधरा क खन म बाड लगाइ जा रही है। इस कहा वहाँ चला जाए। चौधरी खुश हो जाएगा।

मगू ने अभी तक काली से कोई बात नहीं की थी। वह उसे ध्यान से देखता हुआ बोला

'सुना काली, तुम्हें तो शहर का राशन घी की तरह लगा है। मरियल बछड़े जसा गया था और साड की तरह पलकर आया है। घर गाव मे रहा तो दो महीने मे ही सारी चरबी ढल जाएगी। यहा किसी को हराम की रोटी नहा मिलती।'।

अगर यहा सब हलाल की रोटी खाते हैं तो मैं भी वही खाऊंगा।' काली ने इतना कहा और चुपचाप बंठा रहा।

मगू थोड़ी दर तक खामोशी से कमरे मे इधर उधर देखता रहा। जब उस की नजर चाय के खाली गिलास पर पडी तो वह जीतू की ओर मो देखने लगा जैसे उसका कोई घोर पाप पकड लिया हो। वह आखें नचाता हुआ घमकी भरे लहजे मे बोला

'ऐस कर रह हो आजकल, चाय पीत हो। दूध वह रौंड दे गई होगी। मैं भी सोचता था कि भस दो बट्टी दूध देती है लेकिन घघूना फिर भी खाली हो रहता है। अभी जाकर उसकी खबर लेता हू।' मगू ने धूरकर सब की ओर देखा और लाठी पटकता हुआ बाहर निकल गया।

उसके जाने के बाद कुछ समय तक सब चुप बठे रहे। काली ने जीतू की ओर देखा और सोच में डूबा हुआ बोला

मगू तो बहुत आगे निकल चुका है।

जीतू ने बहुत कमजोर आवाज मे उत्तर दिया

आप सारा दिन चौधरी की दहलीज चाटता है और यहाँ सब पर रोब गाँठता है। सारे मुहल्ले को गालिया देता है। न बडे की शरम, न छोटे का लिहाज। प्रीतो की लच्छो का दिन दिहाडे गली मे घेर लेता है।'।

यह सुनकर ताई निहाली जीतू के सामने हाथ जोडती हुई बोली

पुतरा, तू चुप रह। मगू जाने, लच्छो के माँ बाप जानें। तुझे क्या लेना है तरे नाक से तो अभी तक सवेरे की मार से खून बह रहा है।'।

कुछ समय के बाद काली उठकर गली मे आ गया। जब वह मगू के घर के सामने पहुंचा ता अदर से जानो की चीखा और मगू की गालियों की मिली जुली आवाजें आ रही था। काली कुछ क्षणा के लिए दरवाजे के सामने ठिठक गया लकिन चीखें और गालिया सुनकर उसके मनप्राण कापने लगे और वह उनसे पीछा छुडाने के लिए तेज-तेज कदम उठाता हुआ अपन घर आ गया।

वाली जब भी बाठडी म लेटता तो उसे यही डर रहता कि छत उसके ऊपर जा गिरगी। दीवारें उसे अपन मलम के नीचे दबा लगीं। छत जगह जगह नीचे की जार चुकी हुई थी और मल मले जाले लटक रहे थे। सरकणी से मिट्टी गिरती रहती थी। शहतीरा को घुन न खा लिया था और सरकडो के ऊपर मिट्टी को चूहा न खोखला करके अपने घर बना लिए थे। छत को खडा रखने के लिए कई लठा का सहारा लिया गया था। पश सीला था और बोठडी म हर समय अधी आख की तरह अधेरा छाया रहता था। दीवारें कुबडी हो गई थी और किसी समय भी छत समेत घडाम से नीचे गिर सकती थी।

वाली न कोठे के अंदर ध्यान से चारा ओर देखा और फिर उठकर छत पर आ गया। छत भी बोदी हो चुकी थी और लेप न होने के कारण उस पर रेत भी बिछी हुई थी। वह सीढी के आखिरी डंडे पर खडा चौधरिया और महा जना के मकाना और पक्क चौमारा को देखने लगा। चमाण्डी के कच्चे कोठा के मुजाबल म व चौमारा और पक्के मकान वजुत ही भले दिखाई दे रहे थे। वह बहुत देर तक उनकी आंग दखता रहा और सोचने लगा कि वह भी अपन कोठे का पण्डवर पक्का मकान बनाएगा। उम पर एक चौमारा भी डालेगा। यह विचार उसके दिमाग म इतनी जल्दी मजबूत हो गया कि वह इसे जल्दी म-जल्दी साकार देखने के लिए बेकरार हो उठा। उसने दिमाग म मकान का नक्शा भी बना लिया और नीचे उतरता हुआ चाची का बहुत ऊंचे स्वर म आवाजें देने लगा। जब चाची न कोई उत्तर न लिया तो वह आवाजें दता हुआ गली म आ गया और प्रीता के घर म चाची का बुलाकर अन्दर ल आया। वाली चाची का खाट पर गिठानर स्वयं उसके पाँव म बठना हुआ बोला

चाची मैं एक बात साची है।

क्या ? चाची न इस ख्याल स मुश हारर कहा कि शायद काला अपनी शानी के बार म बात करना चाहता है।

बापा मैं गाब रहा हूँ कि कोठे का गिराकर पक्का मकान बना लूँ। यह मकान अपना उम्र या भुरा है। वाली न टूट हुए बिवाडा, वाली दोबारा और मुका हुई छत की आर मकान करत हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चाची न हाथ स अन्दर न्य लिया और आँगा म वाली पाटना इद बाग

पुनरा कर बाग गान इमा मकान म रूँ। यहा पग हुए और यही

अपन श्वास पूर किए । उनके सम भ भी कुछ-कुछ टूटना ही रहता था । दीवार गिरी ता नई बना दी । शहतीर टूटा ता उम लठ का सहारा दे दिया । छत स मिट्टी गिरन लगी तो सरकडे बदल लिए और पानी टपकन लगा ता उपर मिट्टी डाल दी । यह दरवाजा भी तर चाचा ने लगाया था बरना पट्टे ता सरकटा की टट्टी ही हुआ करती थी । तू चार पैसे कमाकर लाया ह तो उह सम्भाल कर रख कल को तरी शांती हागी ता काम आएंगे । तू मुझे छप्पड से मिट्टी ला द मैं सार मकान पर लेप कर दूगी ।'

नही चाची मैं नया मकान बनाऊंगा । रुपया खच हा जाएगा ता क्या हुआ, और कमा लूंगा । काली चाची के घुटन पकडकर बाला, चाची, जब तू एक लगाकर पक्क आगन म चर्खा कातगी, तो चौघरानिया भी तर साथ इध्या करेगी ।'

काली की बाता पर चाची खुश थी और साथ ही हैरान भी । वह साच रही थी कि आज छोकरे को क्या हा गया है । यह अनहोनी बातें क्या करन लगा है । भला आज तक इस मुहल्ले म किमी न मकान का पक्की इट्टें लगाई हैं । चाची न मन ही मन म भिन्नत मानी कि काली एसी वानें सोबना छाड द । जब काली न चाची की अनुमति के लिए आग्रह किया ता वह अटेरन उठाती हुई बोली

काका मैं क्या बताऊ । तू जो अच्छा समझता है सो कर । तेरी अक मरा अकल स बडी है ।

काली न चाची को बाजुआ म उठा लिया और उसे दो तीन चक्कर दे लिए । चाची कराहती हुई बोली

हट काका, मरी ता जान निकल गई है । जाड-जोड हिल गया है । मेरे शरीर म अब ताकत नहा रही ।

काली न चाची को खाट पर बिठा दिया और स्वय जूता पहनकर घूमता हुआ दूकाना की ओर चला गया ताकि मकान के बारे म छज्जू शाह से सलाह कर सके । नए मकान का नक्शा उसके दिमाग म भिन्न भिन्न सूरता म उभर रहा था और वह महाजनी की गली म जाता हुआ प्रत्यक मकान को ध्यान से देख रहा था ।

काला छज्जू शाह को दूकान पर पहुंचा तो वहा पर काफी भाड था । शाह सोदा दन म व्यस्त था । वह किवाड के साथ खडा हो गया ताकि छज्जू शाह की नजर उम तक पहुंच सक ता वह उम बदगी कर सक । काली उम काम करत हुए दिलचस्पी से देखन लगा । दूकान पर ग्राहका की भीड बढ़ रही थी

घरती घन न अपना

परन्तु छज्जू शाह की हर एक पर नज़र थी। क्या मजाल कोई सोदा लिए बिना वापस चला जाए या किसी को अपने प्रश्न का उत्तर न मिले। छज्जू शाह को बहुत ज्यादा मसरूफ़ देखकर काली निराश हो गया और वापस जान के लिए किवाड़ स हट गया। छज्जू शाह की नज़र उसकी ओर भी थी। वह क्षट बाल उठा

‘वहाँ चला बाबू काली पास बोरी पर बठो मैं सबको सौना तोल द फिर बैठकर इतमीनान से बातें करेंगे।

काली घड़े पर एक ओर बिछी हुई पटी सी बोरी पर बठ गया। घड़े क दूसरी ओर बनोला और खल की खुली बोरियाँ पडी थी और साथ बडा तराजू और बाट पड़े थे। घड़ के पीछे दालान या जिसके एक कोन म बजाजी की अलमारी थी। उसके सामने एक बहुत मली चादर बिछी हुई थी। अलमारी के साथ लकड़ी की सडूकची और उसके साथ लोह का गज पडा था। दूसरे कोने म कई छोटी-बडी बोरियाँ थी। उनक पीछे टीन के छोटे-बड़े डिब्बो की कमर तक ऊंची बतार थी। दालान क पीछे एक लम्बी और गहरी कोठडी थी जिसके अंदर धुप अघेरा था। शाह जब कोठडी म जाता तो या महमूस होता जस वह किमी गुफा म चला गया था। काली शाह को दयता हुआ सोचने लगा कि स्वभाव स यह आत्मी देवता है। क्या बच्चा क्या बूढा, क्या चौधरी क्या चमार मक्क साथ जी बटकर बान करता है और फिर काम म इतना खुस्त है जस इसक धार हाथ हा।

शाह अपन बाजू स चहरे का पमाना पाछना हुआ घड़ पर आया और पल आपकत म उसन बनोला की कई धडियाँ ताण दा। वह कागी की ओर दग़रर मुमकराया और अन्दर जाकर उमकी आर लम्प का सिगरट और माबिग फेंकता हुआ बोला

‘काली दाग तुम सिगरट पीयो। इननी दर म मैं इनना हिमाय बना दू। फिर निश्चिन हातर बातें करेंगे।

काली सिगरट पीता हुआ मन-ही-मन म छज्जू शाह का चौधरी हउनाम सिह स मुकामना करने लगा। एक काली मिट्टी की तरह नम ना दूमरा सूयी मिट्टी का ताण मरत। काला न ज़ार म सिगरट का काण रीया और अना आर म कुकराया कि शाह जम आत्मी क लिए जान भी बली जाए ता कई हड नरी।

साथ अर क बाण मक्क दावना का निरानकर छज्जू शाह अना इपका उग़रर काण म जरा पर हउरर दद पर आ बैंग। जमन ना धार बाण हुकना

गुडगुडाय़ा और खासता हुआ बोला

‘काली दास, दर हो गई। क्या करूँ, दूकानदारी पशा ही एसा हूँ। लालच रहता है कि ग्राहक आया है, अगर चार पैसे का सौदा ले जाएगा तो कुछ बचत हो जाएगी। दूकानदारी नाम ही आई चलाई का है।’

छज्जू शाह ने अपनी टेंट पर कई बार हाथ फेरा और हुक्के के दो चार लम्बे कश खींचकर उसने नय एकदम परे कर दी जैसे उसे अचानक कुछ याद आ गया हो। वह काली की ओर झुकता हुआ बोला

‘उस दिन चौधरी हरनाम सिंह ने जीतू को नाहक मारा। वह बचारा बेकसूर था। सवरे से शाम तक मेरे काम में लगा रहा था। रात को जब मैं दूकान बढाई तो वह अपने घर गया था।’

‘मुझे तो समय नहीं आता कि लोग मारने का हीसला किस तरह कर लेते हैं और बसूर न होते हुए लोग मार क्या खा लेते हैं।’ काली यह कहकर कुछ क्षणा तक चुप रहा और फिर छज्जू शाह की ओर देखता हुआ बोला, शाह जी, इसमें चौधरी का इतना दोष नहीं जितना मगू का है। वह चौधरी के पान भरता रहता है। मैं छ साल के बाद गांव आया हूँ। मेरा उससे कोई शरीका भाईचारा नहीं है फिर भी मेरे साथ दुश्मनी करने लगा है। जहा मिलता है नाजायज बातें करता है।

‘बाबू काली दास इस गांव का हाऊ मन पूछो। चोरी, यारी नित्य, चुगली बहुत बढ गई है। भलमानसी का जमाना खत्म हो गया और लुच्चा का राज आ गया है।’

छज्जू शाह ने खांस-खांस कर गले में फँसी हुई बलगम निकाली और गली में झुकता हुआ बोला

‘बहो, छुट्टी काटने आए हो या गांव में ही रहने का विचार है।’

इरादा तो गांव में ही रहने का है, आगे जा खज जी को मजूर। शहर में भी हालत क्या अच्छी नहीं है।’

हाँ, शहर में गरीब आदमी मारा जाता है। गांव में तो फिर भी पल जाना है। गांव के लोपा में अभी तक हमदर्दी है लेकिन शहर में तो आदमी सामने तडप-तडप कर जान दे न कोई पानी तक नहीं पूछेगा।’ छज्जू शाह हुक्का गुडगुडाने लगा।

काली उसकी ओर देखता हुआ बोला ‘शाह जी मरा काठा बहुत बोलता हो गया है। पना नहीं कि मैं सम बठ जाए। सोच रहा हूँ कि उस खदेड को पक्का बना दूँ। इसी बार में आपन मलाह करने आया था।’

छज्जू शाह की आँखों के सामने पानी का जल छाय या मोट्टा एन बार फिर घूम गया। वह उठकर अन्दर गया और उसने काली की आर लम्प का एन और सिगरेट फेंक दिया।

‘शाह जी, रहने दो। मैं सिगरेट कम पीता हूँ। इसमें तो हुक्का अच्छा है।’ काली ने कहा।

‘यात तो तुम्हारी ठीक है। मन हुक्के के अलावा दो हुक्के रमे हुए थे। एन जाटा के लिए और दूसरा चमारा के लिए। लेकिन इम दुनिया में भाँत भाँत के लोग हैं। कुछ दिन हुए पार स एन चमार मरे लिए शहर लेनर आया था। उसने पीने के लिए हुक्का माँगा। मन दे लिया लेकिन वह भला मानम जाते सम आँखें बचाकर हुक्का लेकर खिसक गया।’

काली का सिर शम से झुक गया और वह कुछ दर तक सिगरेट को उँगलिया में धामे हुए जमीन का धूरता रहा। छज्जू शाह ने गला साफ करके एन बार फिर बलगम गली में धूब दी और काली से बोला

‘तुम मकान की यात कर रहे थे। बाह बाह बड़ा नेन ख्यात है। तरे सदके चमादडी में भी एक मकान पक्का हो जाएगा। तरो इरजत यत्नेगी। चार गाँव में नाम हो जाएगा कि घाडेवाहा की चमादडी में भी एक पक्का मकान बन गया है।’

शाह जी, इम सम मेरे पाम तीन सौ रुपया है। अगर तीन सौ में काम हो जाए तो मैं बल से ही इमारत शुरू कर दू। कुछ पसा मिलने वाला है लेकिन अभी उसमें कुछ समय लगेगा। काली ने प्रसन्न मुद्रा से कहा।

‘तीन सौ तो कम है। तुम्हारा घर मने देखा हुआ है। तुम्हारे चचा सिद्धू से तो हमारा लेन-देन था। उसने भी एक बार मकान पक्का करने का इरादा किया था। कुछ रुपया भी इकट्ठा किया था। सौ रुपया मुझसे भी उधार ले गया था। लेकिन तकतीर ने साथ नहीं दिया। उस सस्ते जमाने में शायद इतने पसो में मकान बन जाता लेकिन अब पाच छ सौ रुपय से कम में काम नहीं चलेगा। हर चीज महँगी हो गई है।’

यह तो बहुत बड़ी ख़तरा है। इतना रुपया मेरे पास नहीं है। काली ने बहुत निराशा से कहा। छज्जू शाह भी सोच में पड़ गया और हुक्का गुडगुडने लगा। फिर वह हुक्के की नै मुह से हटाता हुआ बोला

बाबू काली दास, मेरी ममझ में तो एक सूरत जाती है। वह यह कि गली वाली दीवार पक्की बना लो। बाकी पक्के स्तून खड़े करके कच्ची दीवारें खड़ी कर दो। छत का सारा बोच पक्के स्तूना पर रहेगा। जब पस हाथ आ जाएँ

तो वे दीवारें भी पक्की कर लेना । मैं भी पन्द्रह साल पहले इसी तरह अपना मकान बनाया था । अब देख लो, भगवान की दया से उसी मकान पर दो मजला चौवारा है ।'

'काली न शाह की योजना का ध्यान से सुना और समझ लिया । उसने एक बार फिर सारी योजना को मन-ही मन म दोहराया । छज्जू शाह हिसाब लगाता हुआ बोला

'इतने गढे के भट्टे से मिल जाएंगी । शहतीर और कडियों का बंदोबस्त हो जाएगा । दरवाजा के लिए शीशम की लकड़ी के फट्टे महाने से ले लेना । मिट्टी पीपल वाले जौहड़ से खोद लेना ।'

उसने सारा हिसाब लगाकर विश्वासपूर्ण स्वर में कहा

परमात्मा का नाम लेकर इमारत शुरू कर दो । महीने भर में मकान खड़ा हो जाएगा ।

काली छज्जू शाह की बदगी करके थके स नीचे उतरने लगा तो शाह न उसे बहुत नम्रता से आवाज दी । काली पीछे मुड़कर उसकी ओर देखने लगा और सकेत पाकर फिर थके पर आ गया । शाह ने बहुत ही गम्भीर स्वर में कहा

'काली दास, तेरे साथ बात करनी तो नहीं चाहिए क्योंकि जो बात गुजर गई हो उसके जिन से क्या फायदा !'

'क्या बात है शाह जी ?' काली न दिलचस्पी से पूछा । छज्जू शाह काली की बात का उत्तर दिए बिना उचककर अदर गया । एक ताक से पुरान बहीखात को यादत-माछता हुआ उठा लाया और पन्ने पलटकर एक स्थान पर उँगली रखता हुआ बोला

'तुम्हारे चाचा सिद्धू ने बारह साल हुए मुझसे मकान बनाने के लिए एक सौ रुपये उधार लिए थे । उसमें ब्याज लेना तो मैंने मुनासिब न समझा क्योंकि वह अपना प्रेमी था । उसने असल रकम में से पच्चत्तर रुपये ही वापस किए थे और अभी पच्चीस रुपये बाकी थे कि उसे मौत न आ घेरा । बचारा बहुत ईमानदार आदमी था । मरा वडे-वडे चौधरिया और साहूकारों से लेन-देन है लेकिन उस जसा ईमानदार आदमी आज तब नहीं देखा ।' छज्जू शाह ने उस पन्ने पर उँगली रख कर बही बंद कर ली और अपमोस भरी आवाज में बोला 'जो मर गया सो मर गया । तुम्हें देखकर मुझे मराल आ गया था । आधिर तू उसी धानदान की निशानी है । जब कभी सिद्धू की याद आती है तो यह बही निवालकर देख लेता हूँ । इसमें उसका जँगूटा लगा हुआ है । छज्जू शाह अपनी बात खत्म कर चुका तो काला बहुत हीसले से बोला

‘शाह जी, उनकी जगह मैं जो बठा हूँ। आपने मुझे पहले बताया होता। मैं आज दिन ढले आपको पसे दे जाऊँगा।’

‘नही नही, ऐसी कोई जल्दी नहीं। रुपये जा जाएंगे। अगर बारह साठ वेतवारी न हुई तो अब दो चार दिन के लिए क्या होगी। जब कभी इधर आओ, दे जाना।’

काली थडे के नीचे उतरने लना तो छज्जू शाह काली को होसला देता हुआ बोला

‘इमारत जल्दी ही शुरू कर दो। बस तो परमात्मा के कामो मे किसी का दखल नहीं है लेकिन हिसाब से अभी बरसात मे दो-पौने दो महीने बाकी हैं। हाँ कमीवैशी होने की सूरत म शर्माना मत। सबके काय करने वाला परमात्मा ही है लेकिन फिर भी बदा बदे का दारू है।’

‘आपकी दया बना रहनी चाहिए। आप जस लोगो के सहारे गाव म इज्जत से दिन काटने की आशा है बरना यहाँ तो हर आदमी काटने को आता है।’ काली यह कहकर थडे स नीचे उतर आया और शाह की बातो पर मुग्ध गदन उठाए हुए अपने घर को जाने वाली गली की ओर मुड गया।

६

सूय पूर्वी शितिज पर छाए हुए बाला म स लिहाफ म छिपे बच्चे की तरह झाँक रहा था। मुबह की हवा गुम सेता म हल्की-सी धूँ उठाती हुई चल रही थी। चमान्डी की रिक्तमाँ और मुटियारें सिरा पर टोकट उठाए हुए चौधरिया के घरा और हवलिया स बूडा जोर गोरर उठाने के लिए घरा स निकल पडी थीं। चमान्डी के मग मग के साफे बाँधे और कमर तक नीची कुडतियाँ पहन हाया म दरानियाँ या खुँ पकडे हुए सेता की ओर जा रहे थे।

काली गली म खडा अपन काटे का ध्यान स दखना हुआ नए पक्के मकान क नक्का क बारे म सोच रहा था। उम ने चाची को नया मकान बनान क बारे म राजी कर लिया था। वह बहुत प्रमन थी रि काली वह काम करल जा रहा है जा उमकी सात पाड़िया म न हो सता था। व चमान्डी म पहला परता

मकान बना रहा है। वह सारे इलाके में अपने बाप दादे का नाम ऊँचा करेगा। कोई पथिक चौबारे को दूर से ही देखकर पूछेगा तो लोग बताएँगे कि वह चौबारा माँके के पुत्र काली का है।

चाची यह सोचकर कुछ उदास सी हो गई। वह मन ही मन में साधने लगी कि काश उस का भी एक बेटा ज़िंदा रहता और वह भी चौबारा बनाता। लोग पूछत तो उन्हें उत्तर मिलता कि वह चौबारा मिट्टू के पुत्र का है। चाची की आँखें भर आई और वह अपने पति और पाँच बेटों का याद करके खूब रोई। जब उसका मन कुछ हल्का हो गया तो उसने अपने आपको यह सोच कर तसल्ली दे ली कि क्या बेटा क्या भतीजा—दाना में कोई फल नहीं होता। और फिर काली तो उसका ही बेटा है। अगर उसे जन्म नहीं दिया तो क्या हुआ, पाला-पासा तो है। गाँव के लोग अब भी यही कहेंगे कि यह प्रतापी के भतीजे काली का चौबारा है।

काली अदर आकर चाची से बतन आर दूसरा सामान समेटने के लिए कहकर स्वयं छत पर जा चढ़ा। उसने छत और मँडरा को अच्छी तरह देखा और नीचे उतर कर सामान पिछड़ी कोठड़ी में रखने लगा। जब सब सामान बाहर निकाल लिया गया तो चाची ने एक थम्मी (लकड़ी का मोटा लठ) के पीछे से एक पोटली निकाली और उसे अपने नेके में छिपा लिया और गली में खाट बिछाकर सूत अटेरने लगी।

काली कुदाल लेकर छत पर जाकर मिट्टी खदडने लगा। छत उसके बोझ और कुदाल की चोटों के तले काँप रही थी। चाची थोड़े थोड़े समय के बाद काली को पुकार कर कहती कि सम्भल कर कुदाल चलाना। छत बानी है। वही एकदम नीचे न जा गिरे।

गली के सब बच्चे चाची के इतने गिद जमा हो गए थे। जिन बच्चा की प्रीतों के बच्चों के साथ दोस्ती थी वे उन के कोठे की छत पर बैठकर बहुत नज़दीक से देख रहे थे। चाची गली में उसके गिद मँडरा रहे बच्चा को सिद्ध-बती हुई पर रहने की ताकीद कर रही थी। काली को छत उखाड़ते देखकर गली की कुछ स्त्रियाँ गोद के बच्चा को कमर से लगाए हुए चाची के पास आ गई। जो भी औरत काम घड़े से वापस आती वह चाची के पास रुककर छत घड़ेन का वारण पूछती। चाची उसे बड़े गव से बताती कि पुराने कोठे की जगह नया मकान बनाने लगा है। पानी उपले धापने के लिए अपनी छत पर आई तो काली को कुदाल चलाता देखकर सोच में पड़ गई कि वह अपने कोठे की छत क्या घड़े रहा है। वह टोकरा फल कर गाँव में भरे हाथा को

मसलती हुई चाची के पास जमा स्त्रियों की भीड़ में जा मिली। चाची लहक लहक कर कह रही थी

‘काली कहता है कि पक्का मकान बनाऊंगा। ऊपर चौबारा डालेगा। इतना ऊंचा कि दो कोस से नजर आए।

ज्ञानो बच्चा को पीछे धकेलती हुई चाची के बिल्कुल पास चली गई और गोबर से लुण्डे हुए हाथों से बाल सवारती हुई बोली

चाची, चौबारे के बाहर चारा ओर लाल रंग करवाना। फिर वह दूर से बिल्कुल चौधरी हरनाम सिंह के चौबारे की तरह दिखाई देगा।’

नानो का सुझाव सुनकर कई स्त्रियाँ हँस पड़ी। प्रीतो घणा-मूण स्वर में बोली

‘रांड सलाह तो ऐसे दे रहो है जैसे काली के चौबारे में इसी का पला विछेगा।’

नानो की माँ जस्तो ने अपनी बेटी की आवाज सुनी तो चीखती हुई बोली

‘ठहर जा सिरमुनिए तरी टागें तोडती हूँ। तुम्हें मैंने उपले थापने के लिए कहा था। तू मुझ से भी पहले यहाँ पहुँच गई।

नानो गोबर में हाथ डकती हुई अपने घर की ओर भाग गई और छत पर जाकर काली का कुत्ता चलात हुए देखने लगी। वह दो उपले थाप लेती और फिर काली की ओर देखने लगती। उसने पुराने शीशम के रंग के मजदून, सुडोल और भरे हुए शरीर से नानो की नजरें हटाने का नाम नहीं लेती थी। फिर वह एक तरह से काली के साथ मुसाबला करने लगी। वह कुत्ता की हर चोट के साथ एक उपला थापने की कोशिश करने लगी। उधर कुत्ता की चोट पड़ती इधर वह उपला थाप कर फर देती। जब काली कुत्ता छोड़कर मुसताने लगता तो नानो भी उपले थापना छोड़ देती। तब से ऊपर चढ़त हुए मूय को देखकर जब काली तब-तब कुत्ता चलाने लगा तो नाना की उपले थापने की गति भी उसी हिमाक से बढ़ गई। नानो ने उपले थाप कर बटारा नीचे फर लिया और काली की आर दखन हुए भरपूर अँगुठार ली। बटोरा गिरने की आवाज सुनकर काली उस की आर दखन लगा और उठी हुई कुत्ता कुछ क्षणों के लिए उग के फिर पर ही दख गई। नाना ने नीचे आकर हाथ मूट घोया और अपनी माँ की आवाज का अनगुना करती हुई गयी म आ गई।

नानो के घर की आर जान हुए उस अज्ञान-सा डर महसूस हुआ। नाना में अपने भाई मगू की पिढरियाँ और गालियाँ गूँजन लगीं। लखिन उतान इस

भय को सिर हिलाकर घट्टा दिया और अपनी कमीज के ऊपर चढाए हुए बाजुआ को खोलती हुई चाची के पास जा खडी हुई ।

उस समय चाची के पास केवल दो तीन बच्चे खडे थे और वह इत्मीनान से अटेरन चला रही थी । ज्ञानो को देखकर चाची बोली, 'कौन, ज्ञानो है ?

इधर आ मरे पास बठ । चाची ने आग्रह करत हुए कहा ।

'चाची, मैं यही ठीक हूँ,' ज्ञानो सामने वाली दीवार के साहरे खडी काली की जोर देखती हुई बोली । चाची ने अटेरन छोडकर कहा

काली पक्की इट का मकान बनाने लगा है । ख इसकी उम्र लम्बी करे ।'

ज्ञानो चाची की वाता स बेपरवा काली का कुदाल चलाते हुए देखती रही । थाडी देर के बाद उस ने कुदाल फर दी और मुडेर पर झुकता हुआ बोला

'चाची प्यास लगी है, पानी पिलाना ।'

चाची अटेरन रख कर उठने लगी तो जानो शट से बोल उठी

चाची ठहर जा । मैं लस्सी लाती हूँ ।

'रहने दे लस्सी । तेर घर मे फिर क्लेश बडेगा ।'

जानो चाची को रोक्ते रोक्ते अपने घर की ओर भाग गई । काली ने फिर पानी मागा तो चाची बोली

'काका, ज्ञानो अपने घर से तुम्हारे लिए लस्सी लेने गई है । बस आती ही होगी ।'

काली ज्ञानो की प्रतीक्षा मे अपनी आखा पर हाथ की छतरी बनाकर गली म देखने लगा ।

थाडी ही देर के बाद जानो गान्नी लस्सी मे नमक मिलाकर लौटा भर लाई आर चाची की आर बढाती हुई बोली

ले चाची, लस्सी । नमक मैंने डाल दिया हूँ ।'

अब तू ही पिला दे । मैं ता उठती उठती दो बल लगा दूगी ।' चाची ने अटेरन उठात हुए कहा ।

ज्ञानो एक हाथ म लस्सी का लोटा और दूसरे हाथ म पीतल का गिलास पकडे सीढी के आधिरी डडे पर जा खडी हुई और झेपते हुए लस्सी से भरा गिलास काली के हाथ म थमा दिया । काली गटामट लस्सी पीने लगा । जाना उस क तखे की तरह चौडे चबले सीने पर वाला म वह रही पसीने की नदी का देखन लगी । उसके सब पट्टे तने हुए थे । वाला पर महीन मिट्टी के कण आम के दूर की तरह बिखरे हुए थे । उसने लस्सी पीकर गिलास झुकामा तो

घरती घन न अपना

नानो की नज़रें भी साथ ही झुक गई। उसन दूसरा गिलास भर दिया। काली चुसकियाँ लेकर लस्सी पीता हुआ बोला

‘ऐसी स्वाद लस्सी जिंदगी में पहली बार पी है। शहर में तो लस्सी पीने का बिल्कुल मजा नहीं आता था।’

नानो उत्तर में मुसकरा दी और धीमे स्वर में बोली

‘अगर लस्सी पीने का इतना ही शौक था तो गांव छोड़कर क्या गया था?’

यह सुनकर काली खिलखिलाकर हस पड़ा। नानो मुसकराती हुई सीढ़ी से नीचे उतर आई और गली में जाकर चाची की पायतल बठ गई।

‘नानो, इधर आकर आराम से बठ। चाची ने अपने सामने पडी सूत की अट्टिया को समेटत हुए कहा।

चाची मैं यही ठीक हूँ। नानो ने कहा। वह कभी काली को कुदाल चलात हुए देखती और कभी सूत के उलचाआ को दूर करने में चाची का हाथ बँटाने लगती।

दोपहर तक काली ने छत का बड़ा हिस्सा गिरा दिया। जब धूप तेज हो गई तो वह नीचे आ गया। उस समय तक उस के नया पक्का मकान बनाने की खबर मुहल्ले में हर आदमी तक पहुँच गई थी। जो भी मद खेतों से घर वापस आता तो उस के घर वाले उसे सन से पहले यही बतात कि काली नया पक्का मकान बना रहा है। वे कुएँ से आत-आते काली के पास रुककर नए मकान के बारे में बातचीत करत। काली को उन के प्रश्नों के उत्तर देकर अजीब सी खुशी महसूस हाती।

काली न भी नहा घोरर खाना खाया और कोठड़ी के दरवाजे में छोटी छोट बिछाकर लेट गया। हवा के झंका से छत पर बिखरी हुई मिट्टी उड़-उड़ कर उसक ऊपर गिर रही थी। तब धूप में आकाश की नीलाहट घुल गई थी। काली का दिल चाहता था कि अपने मकान के बारे में किसी से बात करे। जब यह ध्यादिश और धूप दोनों असह्य हो गई तो वह छोटी सी छोट उठानर तबिए में चला गया।

चमादडी के बाहर चो के पार साइ भुल्ले शाह का तकिया था। तकिए के चारो ओर शीशम के वृक्ष और ऊँचे सरकडा की घनी बाड थी। एक ओर बड के दो वृक्ष थे और बीच में शायद इस गाव से भी पुराना बहुत बडा पीपल था। इसकी दाढ़िया झुककर जमीन पर आ लगी थी और उनमें से कुछ ने जड़ें पकड ली थी।

तकिए में एक ओर एक टूटी हुई पुरानी कबर थी जिसके बारे में मशहूर था कि वह परमात्मा को पहुंचे हुए पकीर साइ भुल्ले शाह का मजार है। कभी कभार कोई दुखियारी, बीमारी या बप्ट की मारी या फिर गोद हरी होने की आकाशा पूरी कराने या दुश्मन को मान देने के लिए इस कबर पर शाम को सरसा के तेल का दीया जला जाती। इसके चारो ओर तल गिरने से बडे-बडे काल और बिकने घर पड गए थे। इद गिद झाह झेंछाड की घनी बाड थी और उसमें मजार तक जाने के लिए छोटा सा रास्ता था। मजार में हटकर एक छोटा सा पक्का कमरा था जिस मुद्दत हुई किसी ने मनोकामना पूरी होने पर बनवाया था। कमरे की छत गिर चुकी थी। इसके एक कोने में छोटा सा गढा था जिसमें दिन भर उपलो की आग सुलगती रहती थी ताकि हुक्का पीने वाले लोग अपनी घिलम भर सकें। कमरे के बाहर एक घडा पडा था। चमादडी की औरतें आत-जाते कुछ उपले फेंक जाती थी और मडे में पानी भर देती थी। चमादडी के मद्र शीशम के वृक्षों के नीचे अपने ढोर-डंगर बाधते थे और स्वयं पीपल की घनी छाव के नीचे खाट या बपडा त्रिछाकर आराम करत थे, गप गप लगाते थे और ताश और चौपट खेलत थ।

काली अपनी खाट लेकर पहुचा तो बहा काफी रौनक थी। धूप के सताए और शकावट से चूर लग सा रहे थे, कुछ ऊँघ रहे थे।

जीतू बन्तू सतू और भग्गा ताश खेल रहे थे। काली की दखते ही जीतू न आवाज दी।

दाबू जी, इधर आ जाओ।'

जीतू काली की उसकी चार जमाता की तालीम और शहर में छ' बय भुजारने के कारण दाबू जी कहता था। वह उनके पास पहुचा तो चारा ने उसे हाया हाय ल लिया। जीतू ताश की गरुडी दोनों हाया में धामकर बोला

'बतया, दाबू जी पक्का महान बनाने लगा है। ऊपर चौवारा भी रहेगा। अब बाजी दाबू जी के चौवारे में ही रण करेगी।'

घरती धन न अपना

जीतू की बात सुनकर जोर वाली को वहाँ देखकर ऊँघते हुए लोग उठकर उनके पास आ गए। हर आदमी इटो, गारे, चूने लकड़ी इत्यादि के बारे में सलाह दे रहा था। वे गाँव के कुछ मकाना को उदाहरण के तौर पर पेश कर रहे थे। वाली खुशी से फला नहीं समा रहा था। जीतू ने ताश की गड्डी को बपड़े में बांध दिया और अपनी छाती पर हाथ रखता हुआ बोला

‘बाबू जी, मेरी मदद की जरूरत हो तो बता देना। एक बार मकान को आसमान तक उठा देंगे।’

बाबा फत्तू भी अपनी छोटी सी चुरमराती हुईं खाट उठाकर उनके पास आ गया। गाँव में उसकी आयु के बहुत ही कम लोग थे। वाली बाबू को देखकर उठ खड़ा हुआ और उसकी खाट पकड़कर उस जगह रख दी जहाँ बहुत ज्यादा घनी छाँव थी। बाबा फत्तू खाट पर बैठकर बोला

‘बिस्के मकान की बात कर रहे हो?’

‘बाबा वाली ने इमारत गुरू की है। जीतू ने ऊँची आवाज़ में कहा। जब बाबू फत्तू ने बात को छूट हुए हाथ हिलाया तो उसने और भी ऊँची आवाज़ में अपनी बात दोहराई।

‘अच्छा अच्छा।’ बाबू फत्तू ने वाली की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। वह उसकी आर झुक गया और बाबा फत्तू उसकी पीठ थपथपाता हुआ बोला

‘यह तो बहुत ही अच्छी बात है। सारे मुहल्ले में एक भी पक्का मकान नहीं है। तुम्हारा पक्का मकान बनने से मुहल्ले का सिर ऊँचा हो जाएगा।

‘यह सब आप धुजुर्गा के परा का प्रनाप है।’

वाली की बात सुनाई न दी ता वह अपना वान उसरी आर बणाता हुआ बोला

‘मेरे बाना क पनें तरबूज क छप्पर की तरह माटे हा गए हैं। अब बहुत ऊँचा सुनाई दन लगा है।’

वाली ने अपनी बात दोहराई तो बाबू फत्तू का पापण मुह खुल गया और उसने वाली के गिर पर हाथ फरत हुए कहा

‘जीना रहे बाबा तरा बाप ता सब अरमान दिल में ही लेकर मर गया था। अगर पल्ले के चार पन टिकान स घब हा जाएँ तो समझा अय आ गए करना इम पन के राजघ में ता हर बाज जलार भम्म हा जाना है। बाबा फत्तू कुछ दर तक धुन रहकर फिर बोला

मैं भी बिल्ली में बालिया ता बनूँ की। तिन गन महनन की। तटर गनों में काम लिया। तिन में रमिगयी बनाद नाम का भाग थाप्पर बना।

रान को भी कहीं मजदूरी का काम मिल गया तो नौद खराब करके कर लिया लेकिन पक्का मकान बनाने का अरमान पूरा न हो सका गाँव में मेहनत तो है, कमाई नहीं ।'

अतीत की एक कामना को याद करके बाबू फत्तू की आँखा में आसू छलक आया । आस-पास बड़े हुए लाग सोच में पड़ गए और काली का दिल भी भर आया ।

'मकान बन जाए तो मुझे जरूर दिखाना ।' बाबू फत्तू ने अपने जजबात पर कानून पाते हुए कहा ।

मकान ही आपका होगा, बाबा जी ।

काली ने नम्रता से कहा और बाबू की आरंभ श्रुति हुआ बोला

'अभी तो अगली दीवार पक्की बनाने का इरादा है । बाकी दीवारें पक्के सतून बनाकर कच्ची ही बना दूंगा । वाद में जब पैसे हाथ आ जाएँगे तो वे दीवारें भी पक्की कर दूंगा ।

काली बाबू फत्तू के साथ बाता में व्यस्त था कि तबिए में एक ओर से गालियाँ देने की आवाजें आने लगीं । सब लोगों का ध्यान उस ओर चला गया । सब उस आवाज को पहचानते थे, उस आवाज के मालिक को जानते थे । मगू, निक्कू के बेटे अमरू की गालियाँ दे रहा था क्योंकि उसकी भस की पीठ पर धूप पड़ रही थी । मगू बकता-झकता भस को छाया में बाँधकर वहाँ आ गया जहाँ सब लोग बड़े थे । अमरू उसके पीछे-पीछे खाट उठाकर आ रहा था । मगू काली के पास आकर बोला

'आज क्या छत पर भस नाचे थे जो उसका एक हिस्सा गिर गया है ।'

नहीं मैं आप गिराया है । पक्का मकान बना रहा हूँ ।' काली ने विश्वास भरे स्वर में कहा ।

'क्या कहा ?' मगू खिलखिलाकर हँस पड़ा और एक आरंभ लेते हुए घुम्पन को सम्बोधित करता हुआ बोला

'घुम्पना, मुना तून ? काली पक्का मकान बना रहा है ।'

घुम्पन गदगद ऊपर उठाकर कमजोर-सी आवाज में बोला

'क्या कहा ? काली मकान बना रहा है ?'

नहीं हवेली बना रहा है जिसमें आसामिया और तेरे मरे जैसे कमिया की कचहरी लगाने और दाद फर्याद मुनन के लिए एक दीवानखाना भी होगा । मगू यह कहकर काली से बोला

'क्या शहर में डाँके डालता रहा है जो गाँव आत ही पक्का मकान बनाना

गुरु पर किया ? दूसरे गाँव से भी लोग शहर रूहकर आए हैं । पक्का मकान तो क्या, किसी का पक्का गूल्हा भी नहीं बना ।

घुम्मन, मंगू की हर बात पर तिर हिला रहा था । मंगू अपनी बात जारी रखता हुआ बोला

‘भरे मामा का साला नीज म तापर था—सिगाहिया क ऊपर अफगर । सारी उम्र बड़े-बड़े शहरा म रहा । इता बट-बटे शहरा म जिताम हमार गाँव जसे सनडा गाँव समा जात । जिल्ली दमौर (दसावर) तर यह भूम आया है । लेकिन जब से बचारा पीज से बागम आया है रोटी क लिए भी तस रहा है ।

मंगू की आवाज सुनकर सोण हुए लोग भी उठ गए । ताग और योग्य की बाजियाँ ठप हो गई और सबका विश्वास हाने लगा कि मंगू और कान्ती म झगडा हो जाएगा । सब गहगूस कर रहे थे कि मंगू क्या-कती कर रहा है लेकिन डर के मार चुप थे । वाली कमजोर नहीं था तगठा लम्बा शरीर जो मरान की छत्र तस जाता था । वह मंगू की ओर एकटक देखता रहा । वह बात पलटने के लिए बावें फत्तू से बातें करने लगा । लेकिन मंगू उसका बंधे को झझोडता हुआ बोला

‘वाली, रुपया बापर है ता कुछ हम भी दे दे ।

क्या उसकी शराब पिएगा ? वाली न थोप से कहा ।

घरीब कर तो ठेके की शराब पी जाती है और वह नामद लोग पीत हैं । तुम्हारी कमाई हराम की है, इससे तो मैं कुछ और ही करूँगा ।’ मंगू ने छानी तानकर कहा । वाली ने उसकी ओर धूरकर देखा तो वह तिनकर बोला

‘मेरी तरफ ऐसे देख रहा है जैसे मेरा साँस पी जाएगा । मंगू के साथ धर करके इस मुहल्ले मे कोई नहीं रह सकता ।

मंगू की ये बात सुनकर बाबा फत्तू चुप न रहा सवा । वह उस समझाता हुआ बोला

‘मंगू क्यों लाग की बात करता है ! खुश नहीं होता कि हमारे मुहल्ले मे भी एक ऐसा आदमी निकल आया है जो पक्का मकान बना रहा है ।

‘चुप रह बुडबडे, हर सभ अपनी टर टर लगा रखता है ।’ मंगू ने बावें फत्तू को झिडक दिया । वह रूहासा सा होकर शिवायत भरे स्वर म बोला

‘इस छोकरे को न बडा की इरजत का गस है न छोटे का लिहाज । शिकारी कुत्ते की तरह पजे झाडकर पीछे पड जाता है ।’

यह सुनकर मंगू और भी ज्यादा भडक उठा

‘चुप रह बुडबडया, तू मेरी एक धील की मार है ।’

काली की आँखों में गहरा चमकन था। उसकी मुद्रिणी बस हाथ लगी। उसके चहरे में साफ पता लगता था कि वह उस मनुष्य के घृणित रजा है। काली ने थोड़ा सा कानिनी हूँ आवाज में कहा

‘मगू, तू मेरे साथ बात कर रहा था। बीन में बात का क्या पसीना लगाया। वह तुम्हारे बाप के समान है।’

‘तुम्हारे बाप के समान होगा त्रिभुवन अपने बाप की भाँति भी नहीं दगी।’ मगू ने यह कह तो दिया लेकिन काली के गिर के पत्रा की तरह चुप हुए हाथ देखकर डर-सा गया। बर्द लोग ने दबी आँखों में मगू ने कहा कि वह एक झगड़े में मैं बाप को बीच में क्या लाता है।

बीच-बीच में बरान के लिए बहुत से लोग एक साथ बोल रहे थे। जीतू चाहता था कि काली मगू से भिड़ जाए और उसको पीट दे। बाप पत्नी के पल्ले कुछ नहीं पट रहा था और वह बिस्तर बिस्तर हर एक चेहरे की आर दण्ड रहा था। उसने अपने पाप धड़े जीतू में पूछा तो उगते पार्से उत्तर न दिया। बन्स पूछा तो उसने ‘कुछ नहीं’ कहकर टाल दिया। बाप पत्नी ने बागी-बागी हर एक से पूछा लेकिन किसी ने उसे कुछ न बताया। वह हताश होकर ऊँचे स्वर में बोला

‘सब जने कौए की तरह काँकाँ कर रहे हैं। मुझे बहुत हैं पार्से बात नहीं।’ बाप पत्नी अपनी लाठी टोलकर उठा लेकिन काली ने उस फिर घाट पर मिथाने हुए कहा

‘बाबा जी, बडो। आराम से लेना। बात घम हो गई है।’

मगू वहाँ से उठकर परे चला गया। काली कानिनी घाट पर आ बैठा। जीतू उसकी ओर एकदम दखता हुआ धीमे स्वर में बाप

‘बाबू जी, तू तो पक्का शहरिया बनकर आया है। आज तू शहरिया शहरिया की तरह उठा है। हवाई फेंक ही लिए। मन्ना तब का मगू के सारे दाँत उसकी झोली में डाले गये।’

काली ने जीतू का कोई उत्तर न दिया और ताश उगता हुआ बाप एक ल बाजिमों हो जाएँ।

जीतू ताश के पत्ते फेंकने लगा तो बाकी ताश भी उनका पाग आ गए और शीघ्र ही, ही ही ही हूँ हूँ, रो हा हा करते हुए ताश के पत्ता में छो गए।

जब दिन डल गया तो काली ने ताश जीतू के हाथ में थपानी और अपनी घाट उठाकर बोला

‘परछाईया लम्बी हो गई है। जाकर काम शुरू करो।’

बाकी अभी तरिफ़ के अन्दर ही था कि मगू न घायर फतू की घाट को ठानर भारत हुए बहा

'बुडबुया उठा घाट यहाँ स । किनी जगह घेर रगी है । अब तू यहाँ न भाया कर । वाली के चौबारे म दोपहर बाटा कर ।

इसके साथ दो तीन ठहाके गूज उठे और काफी दूर तक वाली का पीछा करते रहे ।

८

दो दिन म ही वाली ने डपोढी छदेड कर मलवा साफ कर दिया । उसने जगह की लम्बाई चौड़ाई का अनुमान लगाकर मकान का नक्शा बना लिया आगे डपोढी इसके पीछे आगन जिसमे एक ओर रसोईघर, दूसरी ओर एक कोने म सीढी और फिर एक खुली कोठडी । उसका जी चाहा कि उसके आंगन मे भी बसा ही हैडपम्प हो जसा पादरी के घर म है । उसे बार-बार ब्याल आता कि कोठडी के ऊपर एक चौबारा भी होना चाहिए जिसम चारा ओर रगदार शीशो वाली खिडकियाँ ह्य और उनसे फर फर हवा आए जाए । वाली जब चौबारे के बारे म सोचता तो वह बिलकुल आखो के सामने आ जाता लेकिन जब वह उसे कोठडी के ऊपर देखने की कोशिश करता तो वह उसे दूर तक नजर न आता । जब उसे यह याद आता कि वह केवल बाहरी दीवारें ही पक्की बना पाएगा तो उसके दिल म एक खलिश सी उठती । वह सोचता कि चौबारा न सही पूरा मकान तो पक्का बनना चाहिए । लेकिन साथ ही दिल म प्रश्न उठता कि इतना रुपया कहा से आएगा । यह सोचकर उसका दिल बंटा लगना और बार बार ब्याल आता कि उसने घाहमुखाह मनान गिरा दिया । यदि अब पक्का न बना सका तो जग हँसाई होगी ।

इस अँवरे म उस रोगनी की एक किरण नजर आती कि शायद छतू शाह से कुछ पसे उधार मिल जाएँ । शायद वह उसके मन की भुराद पूरी कर दे । वाली को याद आया कि अभी उस अपने चाचा का लिया हुआ उधार भी चुकाना है । इस उम्मीद के सहारे उसने सारा मकान एक ही बार पक्का बनाने

वा इराना कर लिया और जेठ म पचाम रुपय डाल कर छग्जू शाह की दूकान की ओर चला गया ।

काली छग्जू शाह की दूकान पर पहुंचा तो चौधरी हरनाम सिंह और हैंबडा बल्लोये का जलदार फौजा सिंह वहा बठे थे । वे किसी गापनीय बातचीत म व्यस्त थे । काली न तीनों की बदगी की । चौधरी हरनाम सिंह और जलदार फौजा सिंह ने काली पर एक उचटती सी नजर डाली परन्तु छग्जू शाह ने उसका हार-अहवाल पूछा और खल बनीले की बोरिया के पास बिछे टाट के टुकड़े पर बठन वा सकेत किया । वे तीना आपस मे खुसर फुसर करने लगे । काली पहले तो बकार इधर उधर दखता रहा लेकिन जब उसकी बातचीत म रुपया का बार-बार जिक्र आने लगा तो वह भी बान लगाकर उनकी बातचीत सुनने की कोशिश करने लगा ।

जलदार फौजा सिंह को रुपया की जरूरत थी । चौधरी हरनाम सिंह सिफारिश के लिए साथ आया था । छग्जू शाह को भली प्रकार मानूम था कि फौजा सिंह जलदारी के रौब म है । थान कचहरी तक उसकी रसाई है । जिला हुक्काम से भी दुआ सलाम है । छग्जू शाह उस बडी रकम देने से घबडा रहा था क्यकि उस इस आसामी पर विश्वास नहीं था । लेकिन वह बहाना यह बना रहा था कि उसके पास इतनी बडी रकम नहीं है । वह ठोस जमानत चाहता था लेकिन जलदार हाथ उधार रकम चाहता था । जब बात लम्बी होन लगी और छग्जू शाह दबी जबान म अविश्वास प्रकट करने लगा तो चौधरी हरनाम सिंह शाह को समझाता हुआ बोला

शाह, सरदारो की जबान ही सबसे बडी जमानत होनी है । इसी जबान से बडे बडे व्यापार और रिश्ते नाते तय हात हैं ।

आप की बात सोलह आने ठीक है लेकिन व्यवहार भी कोई चीज है ।' छग्जू शाह न उत्तर दिया ।

जैलदार फौजा सिंह ने जब देखा कि शाह अपनी बात पर डट गया है तो वह जमानत दन के लिए राजी हो गया ।

'शाह, हमारे पास जमानत रखन के लिए एक ही चीज होती है और वह मैं तेरे नाम रहन कर नहीं सकता क्यकि कानून इजाजत नहीं देता ।

'सर छोटोराम के बनाए हुए कानून की बात कर रहे हो ? इसका इलाज मेरे पास है । और छग्जू शाह अपना मुह जलदार के बान के पास ल जाकर बोला

मरे सम्बन्धी जमीना के मालिक हैं । उमके नाम तो आपकी जमीन रहन

धरती धर न अपना

रखी जा सकती है। चलो यह न सही, बाबत वाला जाट जगता मरा अपना आदमी है। उससे ताम रहन करवा देना।'

जलदार फौजा सिंह और चौधरी हरनाम सिंह चतूतरे व दूसरी ओर च गए और आपस म सलाह करने के बाद शाह व पास वापस आ गए। चौधरी हरनाम सिंह कहन लगा

'जलदार की आठ-दस घुमाआ बजर जमीन है। उसम से दो घुमाओ रहन रख लो।'

अगर वह जमीन रहन रखनी है तो सूद भी डवल होगा। जिस जमीन म पास वा तिनवा भी न उगता हो उसे रहन रखवर में क्या कमाऊंगा?' छजू शाह ने कहा।

वे तीनों आपस म फिर सलाह करने लगे और धीरे धीरे उनकी आवाज धीमी और सिर निकट होते गए। जब फौजा सिंह अपनी जलदारी वा रीब दिखाने लगता तो शाह इस तरह पतरा बदलता कि जलदार को फिर झुक्ना पड़ता। चौधरी हरनाम सिंह जलदार को एक बार फिर चतूतरे से परे ले गया और थोड़ी देर के बाद शाह के बान म कुछ कहा। शाह ने कुछ मणा तक सोचने के बाद चौधरी से एक-दो प्रश्न पूछे और फिर निर्णायक स्वर मे बोला

अच्छा जलदार साहब, आप कोई पराए तो हैं नहीं। आप इलाने के मालिक हैं। आप चौधरिया और सरदारा व सहारे तो हम लोग गाँव म इरजत से दिन गुजार रहे हैं। छजू शाह ने यह कहवर दोना के बान के पास मुह ले जाकर अपना फसला मुना दिया। चौधरी और जलदार दोना चीन गए लेकिन छजू शाह ने उनको एक शर भी बोलन वा अवसर न दिया। वह अपनी विजय पर मुग्गरता हुआ बोना

आप चौधरी टहरे जमीना व मानिक हम टहरे मजदूर हयवानिय। आप लोग व सहारे दाल रागी चन जाती है। आप बडी स-बनी चान सह सभते हैं लेकिन हम लोग अगर एन बार फिर गए ता बस मारी उम्र नहीं उठ सरन। क्या बाली? छजू शाह न अपनी बात की पुष्टि व लिए बाली वा सम्बाधित करन हूँ कहा। बागी उत्तर म मुग्गरा लिया। उम छजू शाह पर क्रोध आ रहा था कि वह चौधरी और जलदार व मामने अपने आनन मना हीन क्या जना रहा है।

मगू न जब छजू शाह वा बागी को सम्बाधित करन हूँ गया ता वह बनोला की यथा बारी व पाध म पातना हुआ बाग

‘शाह जी, तुम तो सेठ हा सेठ । दुनिया म दो तरह के ही तो आदमी है एक चौधरी और दूसर सठ ।’ वह ठहाके मारते लगा ।

चौधरी और जलदार एक बार फिर आपस म सलाह करने लगे । चौधरी, जलदार पर शाह की बात मानने के लिए जार दे रहा था लेकिन जलदार कुछ हिचकिचा रहा था । मगू ने काली पर अपना महत्व पूरी तरह जताने के लिए इस अवसर से पूरा पूरा फायदा उठाना चाहा । वह एक बार फिर बोरी के पीछे स सिर निकालकर ऊँचे स्वर म बोला

‘जलदार साहब, आप शाह की बात मान लें । इसम कोई हज्र नहीं है ।

लेकिन जब उसने देखा कि उनम से किमी ने भी उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया तो वह घारी के पीछे से उठ आया और उनके निकट आकर बोला

‘मेरी बात माना तो शाह कोई नाहक बात नहीं कह रहा । फिर वह कोई गर आदमी तो है नहीं ।’ मगू ने विजयी निगाहा से काली की ओर देखा । जब मगू ने महसूस किया कि इस बार भी उसकी बात को अनसुना कर दिया गया है ता वह उनकी ओर एक कदम बढ़कर छज्जू शाह का सम्बोधित करता हुआ बोला

शाह जी आप ही कुछ नम पड जाओ ।’

मगू न अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि चौधरी हरनाम सिंह गर जती हुई आवाज म वाला

‘कुत्ते की जीलाद, चुप बठ । कुत्ता चमार अपन आपको पडा पच समझता है ।’

छज्जू शाह भी मगू को डाटता हुआ बोला

‘मगू क्या मूख बनता है । बडा की बात म क्या दखल देता है ।’

मगू खिसियाता होकर फिर बनीला की बोरी के पीछे जा बठा और मुह ही म बुदबुदाने लगा । उसने काली की ओर देखा तो उम महसूस हुआ जैसे वह उसके निराश्र पर बहुत प्रसन्न है । वह मुह ही मुह म काली को गालिया दता हुआ धमकिया देने लगा । काली गदन झुकाए हुए साध रहा था कि चौधरी ने मगू का कुत्ता चमार क्या कहा । काली अपन क्रोध को दबाता हुआ जाने के लिए उठ खडा हुआ । लेकिन छज्जू शाह उस हाथ से बठने का इशारा करता हुआ बोला

बाबू काली दास तू कहीं चला ? बठा बठो । लो यह सिगरेट पियो । छज्जू शाह ने लम्प का सिगरट और माचिस उमकी ओर फेंकत हुए कहा । काली

घरती धन न अपना

मिग्नेट सुल्फागर फिर घट गया। मगू अपा भन्तर ही भन्तर जहर घोंटा हुआ अपो पास हाँप रहे शिकारी कुत्ते के गले में पड़े पट्टे को बसने लगा।

चौधरी हरनाम सिंह ने कुत्ते की सूँ पूँ की आवाज सुनी तो मगू को आराध देकर कुत्ते के गले का पट्टा ढीला करना कह लिए कहा। मगू बोरी का पीछे रा निकलकर बोला

‘पट्टा तो ढीला है। बटा-बटा तग आ गया है।’

‘तो इस हुवेली ले जा और पट्टा उतार कर बड़ा गट बन्द कर दना। चौधरी ने कहा। मगू कुत्ते की जजीर घाम वाली को घूरता हुआ चबूतरे से नीचे उतर गया।

जब जलदार फौजा सिंह और छज्जू शाह की बात मिले चढती नजर न आई तो चौधरी हरनाम सिंह जलदार से बोला

जलदार, अगर तू अपनी जमीन रहन नहीं रखना चाहता तो मैं अपनी जमीन रख देता हूँ। जो काम करना है सो करना है। दो जरीब जमीन का पीछे क्या जान दे रहा है।

‘यह है चौधरिया वाला दिल गुर्ना।’ छज्जू शाह ने सुन होत हुए ऊँचे स्वर में कहा।

‘जलदारजी, मैं याज में दमड़े पाई की कमी कर दूंगा लेकिन मेरी शत आपको माननी ही पड़ेगी। नीति के विरुद्ध जाना मेरा धर्म नहीं है। भगवान गवाह है मुझे अपनी रकम और याज का फिक्र नहीं है, मुझे तो सिर्फ आपकी जहरत और इज्जत का ब्याल है। जी खोलकर खच करो। अगर सरदार और चौधरी लोग खच नहीं करगे तो क्या कुम्हार और चमार करगे।’ छज्जू शाह ने अपने एक एक शब्द पर जोर देते हुए कहा। जलदार फौजा सिंह के लिए अब कोई राह नहीं रह गई थी। चौधरी हरनाम सिंह का सकेत पाकर उसने हाँ कह दी और तीनों उठ खड़े हुए। छज्जू शाह जलदार से बोला

आपको पता ही है ‘पो कागज पत्तर चाहिए। किसी को तहसील भेजकर भंगवा लेना। मैं इतनी देर में रकम का बन्दोबस्त कर लूंगा।’

चौधरी हरनाम सिंह और जलदार फौजा सिंह छज्जू शाह से दिन नियत करके चबूतरे से उतरने लगे। उन्हें जाते देखकर काली भी खड़ा हो गया। चौधरी हरनाम सिंह ने उसकी ओर ध्यान से देखा और उसके हूण पुष्ट शरीर और उजले कपडा का जायजा लेता हुआ बोला

‘सुना काली, क्या हाल है तरा?’

काली के उत्तर देने से पहले ही छज्जू शाह बोल उठा

‘चौधरी वाली पक्का मरान बना रहा है।’

चौधरी न एक बार फिर वाली पर नजर डाली और कुछ कह बिना चबूतरे से नीचे उतर गया।

जब वह कुछ दूर निकल गए तो छज्जू शाह वाली से बोला

‘क्या किया जाय ? चौधरी लोग है जमीना व मालिक हैं। रुपये पस की जरूरत होती है तो इधर आ जाते हैं। इनकी जरूरत पूरी करनी ही पडती है। अगर न करो ता कभी दूकान म डक्का और कभी घर म चोरी। अभी दो हजार रुपया माग रहा था लडकी की शादी के लिए। हाथ उधार चाहता था। यह तो कागज पत्तर होते हुए रकम खा जात है, हाथ उधार ली हुई कब वापस करेंगे।’

काली अपने मन की बात कहने के लिए छज्जू शाह की हाँ में हाँ मिलाता हुआ बोला

शाह जी इस दुनिया म हर आदमी हाज़तमद है। बदा ही वदे का दारू है। इस इलाके म किसी को रुपय पैस की जरूरत होगी तो आपके पास ही आएगा।’

‘बदा किसी का क्या कर सकता है। करने वाला तो भगवान है। बदा ता सिफ यहाना बनाता है।’ छज्जू शाह ने नम्रता से कहा।

काली छज्जू शाह की ओर देखता रहा कि अपन मन की बात कह डाले। लेकिन उम हिम्मत नहीं हो रही थी। जाखिरवार उसने जब से पच्चीस रुपय निकाले और छज्जू शाह की ओर बढ़ाता हुआ बोला

‘इधर जाया था ताकि आपना वे रुपय देता जाऊँ जा चाचा ने आप से लिए थे।’

छज्जू शाह इत्तिम ढंग से याद करता हुआ ऊँच स्वर म बोला

‘अच्छा अच्छा, याद आ गया। यह तो दस बारह साल पुरानी बात ह।’ शायद इससे भी ज्यादा पुरानी हो।’

वह तो मुझे पता नहीं। आपने पच्चीस रुपय बनाए थे सो मैं ले आया हूँ।

लेकिन इसके साथ सूट भी होगा चलो बारह साल का न सही छ साल का ही द दा। अपन आल्मी स इतनी रियायत तो करनी ही चाहिए।

छज्जू शाह ने पच्चीस रुपय के नाट तीन चार बार उँगलिया म मसलने के बाद कहा। वाली आज का जिक्र मुनकर कुछ उगास सा हो गया क्योंकि छज्जू शाह ने पहले इस बारे म कोई जिक्र नहीं किया था। काली प्रत्यक्ष रूप से प्रसन भाव से बोला

घरती धन न अपना

‘कितना ब्याज है, शाह जी?’

साल्ट रुपये और देना। वस बसत ता क्या है। छज्जू शाह न हिमाज लगात हुए कहा। काली न उमक हाथ म साल्ट रुपये और घमा लिए। उसन इन नोटा को भी तीन चार बार गिना और उह कमीज व नीच कुर्ती की अन्हनी जेब म रखकर बोला

‘पहले मलवा का चांदी का रुपया चलता था। फिर जाज पचम का चांदी का रुपया आया। जेब म दस रुपये भी हा ता महगूग हाता था कि उसम कुछ है। अब कागज के नोट आ गए हैं। जेब म हजार रुपया भी डाल लो तो खबर तक नहीं होगी। छज्जू शाह एक बार फिर कमीज व अंदर हाथ डाल

• कर नोटा को टटोकर बोला

‘ऐसी आतामिया को तो जमानत के बिना रकम देने म भी कोई सकोच नहीं होता। अगर बाप उधार चुनाए बिना मर गया तो बने ने चुका दिया। कई बार तो ऐसा भी हुआ है कि दाग का लिया हुआ उधार पोते ने चुकाया। लेकिन अब जमाना बदल गया है।

छज्जू शाह की बातें सुनकर काली को विश्वास हो गया कि उसे शाह स रुपये उधार मिल जाएंगे। वह कुछ क्षणा तक छज्जू शाह की ओर देखता रहा और फिर धीमे स्वर म बोला

शाह जी।

क्या बात है काली दास?’ छज्जू शाह उसके मन की बात को भापने की कोशिश करता हुआ बोला। काली ने रुक रुक कर कहा।

शाह जी मैं सोच रहा हूँ कि एक ही बार सब दीवारें पक्की कर दूँ। बार बार उधेड़ने बनाने से खर्च भी ज्यादा होगा और मकान भी अच्छा नहीं बनेगा।

अगर ऐसा कर सका तो बहुत अच्छी बात है।’ छज्जू शाह ने उत्तर दिया।

‘लेकिन सब दीवारें एक ही बार पक्की बनाने के लिए मरे पाग रकम कम है अगर अगर आप। काली अपनी बात पूरी न कर सका और जब छज्जू शाह न उसे हीसत्रा दिया तो बहुत तेज आवाज म बोला

अगर आप ब्याज पर कुछ रुपया दे दें तो काम हो सकता है।

‘कितना रुपया दरकार होगा?’

मरे पास दो-हाई सौ होगा। अगर सौ डेढ़ सौ और मिल जाए तो काम हो सकता है। काली ने साहिव लगात हुए कहा।

छज्जू शाह साब म पड गया। काली सांस रोकर उसकी ओर देखने

लगा। उसका दिल, दिमाग, कान, जाख सत्र छज्ज शाह की जोर लगे हुए थे।

‘इतनी रकम का बन्दोस्त कैसे होगा?’

‘आप चाहें तो सब कुछ हासिल कर सकते हैं। मैं सालों से सालों में ब्याज समेत पूरी रकम चुका दूंगा।’

वह तो ठीक है लेकिन इतनी रकम वहाँ से आएगी। मेरे पास रकम तो होती तो जरूर दे देता। किसी और में लाकर दूंगा तो वह जमानत माँगगा। छज्ज शाह ने कहा।

आपके पास रुपये की क्या कमी है। मेरा काम हो जाए तो सारी उम्र आपका एहसान मानूंगा।’

‘एहसान की तो कोई बात नहीं। आत्मल काम-काज तो रहा नहीं, चारा और मक्का-ही मक्का है। पुराने समय अब वहाँ। दाल रोगी भी मुश्किल में चलती है। रकम कम जमा होगा। छज्ज शाह जाकाश की ओर देखता हुआ बोला। काली ने अपना बात जवाब फिर दोहराई तो छज्ज शाह साब में पड़ गया और कुछ क्षणों के बाद गोपनीय स्वर में बोला

‘कोई जमानत के लायक चीज है। कोई जेवर?’

‘बस यह घड़ी है। काली ने जेब में पुरानी घड़ी निकालकर दिखाते हुए कहा जो उसने पंद्रह रुपये में खरीदी थी।

यह किस काम की? गांव में घड़ी का क्या काम? यहाँ लोग दिन में परछाईया से और रात को तारे देखने के समय का अंदाजा कर लेते हैं। कोई ऐसी चीज बताओ जो जमानत का काम दे सके। छज्ज शाह अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला।

आपने जलदार को दो हजार रुपये देने का वचन दिया है।’ काली ने कुछ तीबरे स्वर में कहा।

‘उनकी बात मत करो। वे मालिक लोग हैं, जमींदार हैं। दो घुमाआ जमीन रहन रख गया है। जब तक उनके पास जमीन है उन्हे ब्याज पर पैसे की कमी नहीं। छज्ज शाह ने अपने एक एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

छज्ज शाह के शब्दों ने काली की सब उम्मीदों को फूट मार कर उड़ा दिया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि शाह को क्या उत्तर दे। उसने अपने आपको सभलत हुए कहा।

‘शाहजी आप मेरे मजान की जमीन रहन रख लें। काली का यह कहते हुए बहुत दुख हुआ और उसे यूँ महसूस हुआ जैसे वह पीथा लगाने से पहल ही उस जगह पर अमरपेल का बीज टाल रहा है। छज्ज शाह काली की उदासी

को भांपता हुआ बोला

'वाली दास जिस जमीन की तुम बात कर रहे हो वह जमीन भी तुम्हारी नहीं है। वह शामनात (गाँव के जमादारा की सौंसी जमीन) जमीन है। जब तू या तरे वारिस (उत्तराधिकारी) इस गाँव में रहेग, जमीन या वह टुकड़ा रहाइश के लिए तुम्हारा है। बाद में उसका मालिक गाँव होगा। वह तरी मालकियती जमीन नहीं है मौलसी जमीन है।

छज्जू शाह की बात सुनकर वाली की रही-सही हिम्मत भी जवाब दे गई। उसे महमूस होने लगा कि गाँव में उसकी हस्ती शूय के बराबर है। उसकी आँवा के सामन अघेरा छान लगा। वह कुछ देर तक उसी हालत में बैठा जमीन को घूरता रहा। वह सौ साल के बुढ़डे की तरह घुटना पर हाथ रख कर धीरे धीरे उठा और चबूतरे से नीचे उतर आया। छज्जू शाह उसे दिलासा देता हुआ बोला

'वाली दास निराश हाने की कोई बात नहीं है। भरे पास रुपया होता तो फौरन निवाल कर दे देता। जब मैं तरे चाचा को दे दिया था तो तुझे देन में क्या हज है अभी एक दीवार ही पक्की कर लो। भगवान ने चाहा दो साल में ऊपर चौमारा भी बन जाएगा।

वाली चबूतरे की ऊपरी सीढ़ी पर खतर छज्जू शाह की बात सुनने लगा। जब शाह ने हुक्का गुड़गुलाना शुरू कर लिया तो वह नीचे उतर कर अहिस्ता अहिस्ता बगम उठाता हुआ अपने घर की ओर चल पड़ा। उसके निमाग में मकान का नक्का उतर गया। चमाली के बाहर कुएँ के निकट गंदे पानी की छपनी के पास आकर वह रुक गया। पहले वह वहाँ दुग घंटे बचने के लिए नाच पर हाथ रख लिया करता था। अब उसने वहाँ खडे होकर साँग जोर से अतर घाँचा और फिर उम अहिस्ता-अहिस्ता छोड़ना हुआ छपनी पार करने गयी में घुम गया। गयी में कीबड की पाँच तक रौन्ना हुआ वह अपने घडर के सामन आ खडा हुआ। वह एक ओर पडे बाद और पुराने शहनीरा बडिया और गिरनियों को देखकर भौंकाता रह गया। उसने जमीन के छोटे गटुड को देखा और भँप दूमरी ओर फेर लिया जम उम जमीन के साथ उगता बाई मक्का नये पा। जिस में पूजा और बशी में उमन मन प्राण निकुडन लग। वह जमीन के टुकडे का घूरता हुआ गाँवन लगा कि यह भी उमका नया है। यही वना इस मुकाम पर बाइ मौलसी है। चमाली का अँगण तक मौलसी है। बाँकी गंगा में हा बड गया और आँखें बग बग गिर नीमर के साथ टन गिया।

उसे दो आवाज सुनाई दे रही थी। एक बूढ़ी और दूसरी जवान। एक उमग भरी और दूसरी किसी हल्के तक निराश। वह ध्यान से दोनों आवाजों को सुनने लगा। जानो चाची स कह रही थी

‘चाची, मवान बन जाए तो काली का ब्याह कर देना। अच्छी सी दुल्हन लाना—काली की तरह लम्बी और तगडी। कही से कोई बौनी न पकड लाना। घर मे बहू आ जाए तो अपना चखा छत पर ले जाना। पीढे पर बैठे बिठाए रोगी खाना।’ जानो अपनी धुन में बालती जा रही थी कि चाची उसे प्यार से डाटती हुई बोली

‘हशत मुटियार लडकिया ऐसी बान नहीं करती। और फिर सोच में डूबती हुई कहने लगी

सजोग होगा तो शादी भी हा जाएगी। अभी तक तो वह नाम नहीं लेन देता। उसकी उम्र के लडके चार चार बच्चा के बाप हैं।’

चाची और जानो अपने अपने ढंग से काली के बारे में बातचीत में खोई हुई थी कि खासकर उसने दोनों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। जानो शर्म के मारे जमीन में गडती जा रही थी। लेकिन जब उसने काली को बहुत उदास और निराश देखा तो चौंक गई और चाची से बोली

‘चाची, काली को क्या हो गया है। बहुत चुप चुप और उदास दीख रहा है।’

‘बाबा, यहा धूप में क्या बठा है।’ चाची घबराकर उठी और काली के पास आकर बोली।

चाची की आवाज सुनकर काली ने यूँ आँख खोली जिस काई बहुत डरावना स्वप्न देखता हुआ डर गया था। काली ने चाची और जानो पर उचटती-सी नजर डाली और आगन में आकर बगल वाली दीवार के साये में बठ गया।

‘हो गया ब-दोस्त?’

‘नहीं हुआ।’ काली ने निराशा भरे स्वर में कहा। चाची कुछ देर तक चुप बठी रही। उसके हाथ से अटेरन गिर गया। उसने उसे उठाने की कोशिश नहीं की और काली का दिलासा देती हुई बोली

ब-दोस्त नहीं हुआ तो कोई हज नहीं। पूरा पकना न सही, बच्चा-पकना मकान बना लेंग।’

काली झुझलाई हुई आवाज में बोला

‘चाची, मैंने घाहमुखाह काठा गिरा दिया। मेरी तो अकल मारी गई थी। तू ही मुझे मना कर देती।’

घरती धन न अपना

को भीषता हुआ बोला

'काली दास जिस जमीन की तुम बात कर रहे हो वह जमीन भी तुम्हारी नहीं है। यह शामलात (गाँव के जमागरा की सौंजी जमीन) जमीन है। जब तू या तेरे वारिस (उत्तराधिकारी) इस गाँव में रहेंगे, जमीन का वह टुकड़ा रहाइश के लिए तुम्हारा है। बाद में उसका मालिक गाँव होगा। वह तरी मालकियती जमीन नहीं है मौरूसी जमीन है।

छज्जू शाह की बात सुनकर काली की रहीं-सही हिम्मत भी जवाब द गई। उसे महसूस होना लगा कि गाँव में उसकी हस्ती गूँथ के बराबर है। उगकी जाँघा के सामने अघेरा छान लगा। वह कुछ दूर तक उसी हालत में बठा जमीन को घूरता रहा। वह सौ साल के बुढ़े की तरह घुटना पर हाथ रख कर धीरे धीरे उठा और चकूतरे से नीचे उतर आया। छज्जू शाह उस दिलासा देता हुआ बोला

काली दास निराश होने की कोई बात नहीं है। मेरे पास खपा होना तो फौरन निवाल कर दे देता। जब मैंने तेरे चाचा को दे दिया था तो तुझे देना मैं क्या हज है अभी एक दीवार ही पक्की कर लो। भगवान ने चाहा दो साल में ऊपर चौबारा भी बन जाएगा।

काली चकूतरे की ऊपरी सीढ़ी पर रुककर छज्जू शाह की बात सुनने लगा। जब शाह ने हुक्का गुड़गुड़ाना शुरू कर लिया तो वह नीचे उतर कर अहिस्ता अहिस्ता कदम उठाता हुआ अपने घर की ओर चल पड़ा। उसके दिमाग से मकान का नक्शा उतर गया। चमादडी के बाहर कुएँ के निकट गढ़े पानी की छपडी के पास आकर वह रुक गया। पहले वह यहाँ दुगध से बचने के लिए नाक पर हाथ रख लिया करता था। अब उसने वहाँ खड़े हाकर सात जोर से अदर घीचा और फिर उसे अहिस्ता अहिस्ता छोड़ता हुआ छपडी पार करके गली में घुस गया। गली में कीचड़ को पाँव तले रौंदता हुआ वह अपने खडर के सामने आ खड़ा हुआ। वह एक ओर पड़े बोदे और पुराने शहतीरो बडिया और सिरकियो की देखकर भौचक्का रह गया। उसने जमीन के छोटे में टुकड़े को देखा और मुह दूसरी ओर फेर लिया जैसे उस जमीन के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। दिल में घृणा और वैवसी से उसके मन प्राण सिकुड़ने लगे। वह जमीन के टुकड़े का घूरता हुआ सोचने लगा कि यह भी उसका नहीं है। यही क्या इस मुहल्ले में हर चीज मौरूसी है चमारा की ओलाद तक मौरूसी है। बानी गली में ही बठ गया और बायें बंद करके सिर दीवार के साथ टेक दिया।

उस दो आवाज सुनाई दे रही थी। एक बूढ़ी और दूसरी जवान। एक उमग भरी और दूसरी किसी हृद तक निराश। वह ध्यान से दाना आवाजों को सुनने लगा। ज्ञानो चाची से कह रही थी

‘चाची, मकान बन जाए तो काली का व्याह कर दना। अच्छी-सी दुल्हन लाना—काली की तरह लम्बी और तगड़ी। कहीं से कोई बौनी न पकड़ लाना। घर में बहू आ जाए तो अपना चखा छत पर ले जाना। पीढे पर बैठे बिठाए रोटी खाना।’ ज्ञानो अपनी धुन में बोलती जा रही थी कि चाची उसे प्यार से डाटती हुई बोली

‘हशत, मुटियार लड़किया ऐसी धान नहीं करती।’ और फिर सोच में डूबती हुई कहने लगी

सजोग होगा तो शादी भी हा जाएगी। अभी तक तो वह नाम नहीं लेने देता। उसकी उम्र के लड़के चार चार बच्चा के बाप हैं।’

चाची और नानो अपने अपने ढंग से काली के बारे में बातचीत में धोई हुई थी कि खासकर उसने दोनों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। ज्ञानो शर्म के मारे जमीन में गड़ती जा रही थी। लेकिन जब उसने काली का बहुत उदास और निराश देखा तो चाक गई और चाची से बोली

‘चाची, कागी को क्या हो गया है। बहुत चुप चुप और उदास दीख रहा है।’

‘बाबा, यहाँ घूम में क्या बठा है।’ चाची घबराकर उठी और काली के पास आकर बोली।

चाची की आवाज सुनकर काली ने यूँ आँखें खाली जम काइ बहुत डरावना स्वप्न देखता हुआ डर गया था। काली ने चाची और नानो पर उचटती सी नजर डाली और आगन में आकर बगल वाली दीवार के साये में बैठ गया।

‘हो गया बदाबस्त?’

नहीं हुआ।’ काली ने निराशा भरे स्वर में कहा। चाची कुछ देर तक चुप बठी रही। उसके हाथ से अटेरन गिर गया। उसने उसे उठाने की बाशिशा नहीं की और काली को दिलासा देती हुई बोली

‘बदाबस्त नहीं हुआ तो कोई हज्र नहीं। पूरा पक्का न सही, बच्चा-मक्का मकान बना लेंगे।’

काली झुललाई हुई आवाज में बोला

चाची, मैंने पाहनुखाह कोठा गिरा दिया। मरी तो जल्द मारी गई थी। तू ही मुझे मना कर देती।

'जो हुआ तो हुआ। अब ख वा नाम लखर वाम 'गुर' कर दे। जसा बन पड़ेगा बना लेंगे।'

नही चाची, अब मैं गाँव में नहा रहूँगा। तुम्हें भी साथ ले जाऊँगा। भरा यहाँ क्या रखा है। मेरे यहाँ बौन से भेन बजर हो रहे हैं। काली ने बहुत दुःख भरे स्वर में कहा।

'काका इस युवापे में भरी वहाँ मिट्टी खराब करेगा। मैं सारा उम्र गंग गाँव में गुजारी है बाकी ना है वह भी यही बातूगी। तू चला जाएगा तो गाँव वाले मुझपर चार लकड़ियाँ डाल कर साड फूट दगे। यह कहती हुई चाची रोने लगी। काली भी रोहोगा हो गया। वह कुछ समय तर चुप रहकर बाला

'चाची। तू ही बता अब मैं इस गाँव में किस मुह में रहूँगा। सारे गाँव में खबर घूम गई है कि पक्का मकान बना रहा है। अब बच्चा कोठा ही पडा करूँगा ता लोग कहेंगे कि मकान गिराया तो इस तजी से था जैसे इसकी जगह पर सोने की लका खडी करेगा। अब फिर मिट्टी के ढेले पर ढेला रखकर दीवारें खडी कर रहा है। ये बातें नही सुनी जाएगी।'

नानो हैरान और परेशान सी काली भी बातें सुनती हुई उसे ध्यान से देख रही थी। उसकी समझ में नही आ रहा था कि काली इस प्रकार की बात क्या कर रहा है। वह उत्तेजित स्वर में बोली

इसमें शक की क्या बात है? अपना मकान कोई जस जो चाहे बनाए।

इन शब्दों में कोई जादू नही था। लेकिन नानो ने अपनी बात इतने विश्वास से कही कि काली हैरान सा उसकी आँर दखने लगा। नानो उठी लहजे में बोली

जगर आदमी गाँव के लोगों की मर्जी पर चलन लगे तो एक दिन में ही या तो उसे गाँव छोडना पड़ेगा या कुएँ में छलांग मारनी पड़ेगी। काली को इस सावली मलौनी सुडौल और स्वस्थ लडकी के साथ अकस्मात ही बहुत ज्यादा खिचाव का अनुभव हुआ। उसने अपनी कुदाल के फल जसी लम्बी लम्बी उगलिया और छुपें जसी चौडी हथलिया पर नजर डाली। अपनी चौडी चकरी छाती का देखा और अपने मजबूत बाजुआ को जकडाया और मन ही मन सोचने लगा कि वह चाह तो धरती को एक सिरे से पकड कर उलटा कर दे। काली का चेहरा तमतमान लगा और वह चाची को बाजुआ में उठाता हुआ बोला

चाची, यही रहूँगा और मकान भी पक्का ही बनाऊँगा। मैं गडी के भटके पर जाकर इटा के गिण्टे बह आऊँ। फिर छप्पड से मिट्टी ढोने के लिए दीनू परजापत (कुम्हार) के पास भी जाना है। सतासिंह मिस्त्री से भी मिलना है।

काली न मुसकराकर जानो की ओर देखा और उसकी झुकी हुई आँखों को निहारता हुआ गली की ओर बढ़ गया।

९

दीनू कुम्हार का घर गाँव के पश्चिम में था। काली जब उसकी तलाश में वहाँ पहुँचा तो वह गोबर के ढेरा के पास खेरी के नीचे लेटा हुआ था और उसके दोना गधे ढेरा के पीछे घूम रहे थे। काली की आवाज़ सुनकर दीनू उठ बैठा और उसकी ओर ध्यान से देखता हुआ लज्जित स्वर में बोला

आख लग गई थी।'

'अच्छा कोई हज़ नहीं।' काली ने मुसकराते हुए कहा। दीनू अँगड़ाई लगा हुआ उठा और अपनी मली सी पगड़ी उठाकर उस सिर के गिद लपेटकर बोला

'सुना है तुम पक्का मज़ान बना रहे हो। बल तकिए में कोई कह रहा था।

'इसीलिए तो तुम्हारे पास आया हूँ। पहले भेर साथ गढ़ी के भट्टे पर चलो इटें देखनी हैं। उसके बाद छप्पड़ से मिट्टी लानी है।' काली ने सब बातें एक ही साँस में कह दी। दीनू ने खेरी की जडा के पास पड़े अपने टूटे और मिट्टी में सने हुए जूत का पहना और काली के साथ हो लिया।

भटठ के निकट पहुँचकर दीनू बोला "कौन सी इटें लेनी है—अव्वल, दोम, साम या धडा ?"

'पहले देख तो ल फिर फमला करोगे।' काली ने उत्तर दिया।

दीनू भटठे की दो बड़ी-बड़ी घिमनियों के पास जाकर मुशी को आवाज़ देने लगा। मुशी का उत्तर पाकर दीनू भटठे की बगल में अन्दर जाने वाले रास्ते की ओर मुड़ता हुआ बोला

'मुशी भटठे के अन्दर है। शायद कच्ची इटा की चुनाई हो रही है।'

दीनू के पीछे पीछे काली भी भटठे के अन्दर चला गया। जहाँ आठ दस आदमी करीने से कच्ची इटें चुन रहे थे। दीनू को देखकर मुशी प्रसन्न भाव से बोला

धरती धन न अपना

६५

'सुना परजापता, कहाँ रहा इतने दिन। तू तो कभी कभी एम गायन हा जाता है जस गधे के सिर स सीग।'।

'सच मुशी जी ? किसके गधे क सिर स सीग गायन हो गण ? दीनू ने हैरत से कहा और फिर दुप भरे स्वर म बोला

'बड़ा जुल्म हुआ है। गधा बच गया या वह भी साथ ही गायन हा गया।' दीनू ने बहुत मासूमियत स पूछा।

मुशी की हँसी रोके नहीं रुकती थी। काली भी खिलखिलाकर हस रहा था। कच्ची इटा की चुनाई म लग हुए मजदूर भी पेट पण्डकर हँस रह थे। और उह देखकर दीनू के गाला की झुरियाँ भी बनपटिया तब जा पहुची थी। मुशी ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को रोका और दीनू की ओर दखता हुआ बोला

तू भी अबल का पूरा है। कभी गधे के सिर पर भी सीग डूए है।'

'मुशी जी तुमने अपन आप ही तो कहा है। पहले मुझे भी शरु हुआ या लेकिन मैंने यह सोचकर यकीन कर लिया क्याकि इस भण्डे पर गाँव गाव क गधे आत हैं।'

मुशी की हँसी थम गई तो वह खाँस कर गला साफ करके बोला
परजापत कस आए हो ?'

इने इट खरीदनी हैं। दीनू ने काली की ओर सकेत करते हुए कहा। मुशी ने काली को सिर से पाव तक देखा और उसकी बेप भूपा स उसकी जात के बारे म किसी नतीजे पर न पहुचकर असमजस म पड गया। उसने काली को एक बार फिर ध्यान स देखा और दीनू को सम्बोधित करता हुआ बोला

कौन सी इट चाहिए ?'

दीनू काली की ओर देखने लगा तो वह बोला

'अब्ल नम्बर।

'कितनी चाहिए ?'

पदह बीस हजार तो लग ही जाएँगी काली ने कच्चा-पक्का अनुमान लगाते हुए कहा।

मुशी उह अबल नम्बर की इटा के ढेर के पास ग गया और एक इट हाथ म उठाता हुआ वाला

अबल स भी अबल नम्बर इट है। दस साल स भण्डे पर काम कर रहा हूँ लेकिन आज तक एसी इट नहीं पनी थी। बिल्कुल लहू जसा रंग है। काली न भी एक इट उठाकर दधी और फिर ढेर पर रखता हुआ बोला

‘क्या परजापत, मुशी जी ठीक कहत हैं ?’

‘परजापत से क्या पूछते हो। इटा की पहचान इससे इसके गधा की ज्यादा है। उनपर अब्बल नम्बर की इट लदी हो तो इतना तेज चलते हैं कि परजापत को भी पीछे छोड़ जाते हैं। दोम नम्बर हो तो रास्ते में इधर उधर मारत हुए जाते हैं। अगर सोम नम्बर की इट लदी हो तो उनकी आपस में टांगें टकराने लगती हैं। क्या परजापत ठीक है ना ?’ मुशी ने हँसते हुए पूछा।

काली इटें देखने के लिए थोड़ी दूरी पर बने डेरो की ओर बढ़ गया तो मुशी दीनू से बोला

‘परजापत। कौन आदमी है यह !’

‘क्या तू नहीं जानता इसे ?’ दीनू ने आश्चर्य से कहा और फिर ऊँचे स्वर में बोला

‘चमारो का काली है। इसके बाप का भला-सा नाम है—भला-सा नाम है—’ यह सोचत सोचत दीनू ने अपनी पगड़ी और भी ज्यादा टेढ़ी कर ली और मुह में बुलबुदाने लगा

‘भला सा नाम है उसका।’ और फिर मुशी की ओर देखता हुआ बोला

‘यह शहर में रहता था। थोड़े ही दिन पहले गाँव वापस आया है। अच्छे पस कमाकर लाया है।’

‘मैं भी सोच रहा था कि शकल से चमार दिखाई देता है लेकिन पहनावा कुछ और कहता है।’ मुशी ने कहा।

जब काली उनके पास आया तो वे चुप हो गए। मुशी का लहजा पहले से कुछ बदल गया था। वह अब नम्बर की इटा के चक्र पर हाथ रखता हुआ बोला

‘फिर कौन सी इटें पसंद की हैं ?’

मुझे तो पहचान नहीं है। मिस्त्री सतासिंह ने कहा था कि अब्बल नम्बर की इट बढ़िया होती है।’

‘ता अबल नम्बर लो।’ मुशी ने कहा।

‘क्या दाम है इसका ?’

‘यह बारह रुपये की हदर है। मुशी ने उत्तर दिया।

‘जा मुनासिब हा वह दाम लगा ल।’

‘मुशी जी, काली चौधरी नहीं है। दाम में कुछ रियायत कर दो।’ दीनू ने कहा।

'मुना परजापता, वहाँ रहा इतन तिन । तू तो कभी कभी एग जाता है जैसे गधे के सिर स साग ।'

'सच मुशी जी ? किसके गधे के सिर से सींग गायन हा मण हैरत से कहा और फिर दुख भरे स्वर म वाला

'बड़ा जुल्म हुआ है । गधा बच गया या वह भी साथ ही गायन दीनू ने बहुत मासूमियत स पूछा ।

मुशी की हँसी रोक नहीं रक्ती थी । वाली भी घिलघिल्लाकर था । कच्ची इटा की चुनाई म लग हुए मजदूर भी पेट पफडवर हेंग और उहे देखकर दीनू के गाला की चुरियाँ भी बनपटिया तक जा प मुशी ने बड़ी मुश्किल स अपनी हँसी को रोक और दीनू की ओर र बोला

तू भी अक्ल का पूरा है । कभी गधे के सिर पर भी सींग छुए ह । मुशी जा तुमने अपने आप ही तो कहा है । पहले मुने भी शर लेकिन मैंने यह सोचकर यकीन कर लिया क्याकि इस भटठे पर गाव गाँव आत है ।'

मुशी की हसी थम गई तो वह खास कर गला साफ करके वाला परजापत कम आए हा ?'

इसे इटें खरीदनी है । दीनू ने काली की ओर सकेत करते हुए कहा मुशी न काली को सिर स पाव तक देखा और उसकी बेप भूपा स उसकी जा क बारे मे किसी नतीजे पर न पहुचकर असमजस म पड गया । उसने काला को एक बार फिर ध्यान से देखा और दीनू को सम्बोधित करता हुआ बोला

'कौन सी इट चाहिए ?'

दीनू काली की ओर देखने लगा तो वह बोला

'अक्ल नम्बर ।

'कितनी चाहिए ?'

'पन्द्रह-बीस हजार तो लग ही जाएँगी काली ने कच्चा-पत्रका अनुमान लगाते हुए कहा ।

मुशी उह अक्ल नम्बर की इटा के ढर के पाम र गया और एक इट हाथ मे उठाता हुआ वाला

अक्ल स भी अक्ल नम्बर इट ह । दस साल स भटठे पर काम कर रहा हूँ लेकिन आज तब एसी इट नहीं पती थी । बिलकुल लहू जसा रग है । काली न भी एक इट उठाकर दखा और फिर ढर पर रखता हुआ बोला

‘क्या परजापत, मुशी जी ठीक कहते हैं ?’

‘परजापत से क्या पूछत हो । इटा की पहचान इससे इसके गधा को ज्ञान है । उनपर अबल नम्बर की इंट लदी हो तो इतना तेज चलते हैं कि परजापत को भी पीछे छोड़ जाते हैं । दोम नम्बर हो तो रास्ते में इधर-उधर मारत हुए जात हैं । अगर सोम नम्बर की इट लदी हो तो उनकी आपस में टागें टकराने लगती हैं । क्या परजापता ठीक है ना ?’ मुशी ने हँसते हुए पूछा ।

काली इटें देखने के लिए थोड़ी दूरी पर बने ढेरा की ओर बढ़ गया तो मुशी दीनू से बोला

‘परजापत । कौन आदमी है यह ।’

‘क्या तू नहीं जानता इसे ?’ दीनू ने आश्चर्य से कहा और फिर ऊँचे स्वर में बोला

‘चमारा का काली है । इसके बाप का भला-सा नाम है—भला-सा नाम है—’ यह सोचते सोचते दीनू ने अपनी पगड़ी और भी ज्यादा टेढ़ी कर ली और मुह में बुदबुदाने लगा

भग सा नाम है उसका ।’ और फिर मुशी की ओर देखता हुआ बोला

‘यह शहर में रहता था । थोड़े ही दिन पहले गाँव वापस आया है । अच्छे पस कामाकर लाया है ।’

‘मैं भी सोच रहा था कि शकल से चमार दिखाई देता है लेकिन पहनावा कुछ और कहता है ।’ मुशी ने कहा ।

जब काली उनके पास आया तो वे चुप हो गए । मुशी का लहजा पहले से कुछ बदल गया था । वह अबल नम्बर की इटा के चत्र पर हाथ रखता हुआ बोला

‘फिर कौन सी इटें पसद की हैं ?’

‘मुझे तो पहचान नहीं है । मिस्तरी सतासिंह ने कहा था कि अबल नम्बर की इट बढ़िया होती है ।’

‘तो अबल नम्बर ले लो । मुशी ने कहा ।

‘क्या दाम है इसका ?’

‘यह बारह रुपय की हजार है ।’ मुशी ने उत्तर दिया ।

जा मुनामिज हाँ यह दाम लगा लें ।

‘मुशी जी, काली चौधरी नहीं है । दाम में कुछ रियायत कर दो ।’ दीनू ने कहा ।

घरती घन न अपना

‘हमारे लिए सब चौधरी है । परजापता, चौधरमा पसे से हाता है । जिसका पास चादर है वह चौधरी है ।’

मुशी इधर उधर की बातें करत लगा तो दीनू काली स बाला
जितनी इट लेनी है उसका पर्चा बनवा ला ।

काली ने मुशी से पाच हजार इटा का पर्चा काटन के लिए कहा परन्तु वह चुपचाप छडा अविश्वास भरी नजर से काली की आर दखन लगा । दीनू ने भी मुशी स पर्चा काटन के लिए कहा तो वह अविश्वास भरी नजर से देखता हुआ बोला

‘याने के लिए पसे लाए हो ?’

नहीं, इस समय ता मरी जेब म एक दा रुपय हाण । काली ने कहा ।

साठ रुपये की इट हागी दो ढाई रुपये लदाई और ढाई के हागे । इतनी रकम के लिए दा रुपय का ब्याना कुछ हैसियत रखता ह । मुशी ने कहा । काली तो चुप हो गया लेकिन दीनू मुशी से बोला

पस आ जाएंगे । तुम पर्चा काट लो ।

‘परजापता, अगर पसे न आए तो मैं तुम्हारे दोना गधा समत तुम्हे यहाँ बाध लूगा । मुशी ने कहा ।

यह सुनकर काली को क्रोध आ गया । वह तीखे स्वर म बोला

‘परजापता, चलो यहाँ से, जब पस देकर ही माल खरीटना है तो जहाँ से भी चाहें खरीद लेंगे । अभी हम ने एक इट तक ली नहीं है मुशी जी न पहले ही से हम बेईमान समय लिया है ।

काली की बात सुनकर मुशी कुछ शरमिन्ना-सा हो गया लेकिन फिर हीसला करता हुआ बोला

इसम गुस्से की कोई बात नहीं । हम उधार कम ही दत है । अगर दना ही पड जाय तो पहले आसामी देख लेते हैं । अगर कोई चौधरी उधार मांगेगा तो देने म ज्यादा हज नहीं है क्यकि हर शशमाही फसल के मौक पर वसूली कर लेंगे । एसे लोग स देर सवेर से पसे मिल ही जाते हैं लेकिन बेहैसियत आदमी स पसा निकालना बहुत मुश्किल होता है । दावक का मगलू चमार चार हजार इट ले गया था । तीन साल हो गए हैं अभी तक सिफ दार्स रुपये वसूल हुए हैं । अम उसस भटठे पर लिहाडियाँ लगवाकर पसे पूरे कर रहा हूँ । एक दिन आता है तो दो दिन गायब रहता है । कही साल-सवा साल म पस पूरे होंगे ।

मुशी की बात सुनकर काली की गदन झुक गई । मुशी अपनी सफाई पश

करता हुआ वाला

मैं नज़ूमी ता हू नहीं कि आदमी का चेहरा देखकर उसका बदर जान लू। नया आदमी आए ता पूछना ही पड़ता है मैं पचा काट देना हूँ आज गाम का या कल सबेरे पसे द जाना।'

'नहीं मैं एक ही बार पूरे पैसे दकर इंट उठाऊँगा।' वाली दीनू को साथ लेकर अपने गाव की ओर चल पड़ा।

जब वे भट्टे से याड़ी दूर आ गए ता बाग़े बाग़

'परजापता मुशी शक्की आदमी हूँ।'

'नहीं मुशी आदमी बुग नहीं हूँ। अगर आमामियाँ पम न दें तो आदमी शक्की हो ही जाता हूँ। लोग तो एक जूत से दो चार साग़ निकाल लेते हैं लेकिन मुशी साल म दा जूते तोड़ता हूँ। दीनू ने कहा।

दीनू मुशी की प्रशंसा और उमकी मजबूरिया का वणन करके वाली को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता रहा कि वह अच्छा आदमी हूँ। मग़ सुनन के बावजूद वाली यही अनुभव कर रहा था कि मुशा ने उसका अपमान किया है। उसके मन म तरह-तरह के विचार आ रहे थे लेकिन वह चुप था। जब व गाव के निकट पहुँच गए तो वाली अपन मुहल्ले को जान वाली गली के सामन रुक गया और दीनू से वाला

परजापतजी, मैं मिट्टी खोन्ने छप्पड पर आ रहा हूँ। तुम दोनों गधे लेकर जल्दी वहाँ पहुँच जाना। दोपहर से पहले-पहर दो-तीन फेरे लगा लें तो अच्छा है।

×

×

×

वाली जब छप्पड पर पहुँचा ता घूप बहुत तज हा गई थी। उमन विकनी मिट्टी का एक टुकड़ा चुना और पूरे गौर से मिट्टी खादन लगा। उमक शगेर से पसीने की नलियाँ पूट रही थी। थोड़े ही समय म उमन मिट्टी खाकर रुक लगा दिया।

दीनू अपने गधो के साथ छप्पड के बहुत निकट आ गया ता बाग़े न कृपा फेंक दिया और उमे आवाज देता हुआ बोला

'परजापत जी आ गए हो।

दीनू ने गधा का मिट्टी के ढेर के पास खड़ा कर दिया और दोनों मिट्टी भर बोरा म मिट्टी भरन लगे। बोरे भर गए दो दानों न मिट्टी भरने तथा पर लाए दिया। दीनू उन्हें गाव की ओर हाँवन लगा ता बाग़े कृपा उमन टुक़े बोला

घरतो घन न अपना

‘प्रजापत जी, मिट्टी आंगन का एक कोन मँगा और जलना थापम जा जाना ।’

वाली अभी दीनू का समझा ही रहा था कि छप्पड़ का किनारे पर त्रिगी के ताबड़तोड़ गालियाँ देने की आवाज सुनाई देने लगी । वाली और दीनू हैरत होकर उस ओर देखने लगे । मगू चौधरी की घोड़ी को चुगी छोड़कर उस ओर भागा आ रहा था । उसी छप्पड़ में छलांग मारते हुए गात्री दार पूछा कि कौन मिट्टी घाँ रहा है हालाँकि उस मालूम था कि वाली मिट्टी घाँ रहा है । मगू ने इनके पास पहुँचकर बहुत रोकर पूछा

‘किससे पूछकर मिट्टी घोँ रहे हो ?’ मगू का बात करने का ढंग ऐसा था जैसे वह छप्पड़ का मलिन हो । मगू ने आगे बढ़कर कुत्ता उठाना चाहा लेकिन वाली ने उस पर अपना पाँव रख दिया । मगू गाली देकर चला

‘मैं पूछता हूँ कि किससे पूछकर मिट्टी घोँ रहे हो ?’

‘छप्पड़ से आज तब किसी ने पूछकर मिट्टी घाँनी है जो मैं भी पूछने जाता और किससे पूछता ?’

‘यह छप्पड़ तेरे बाप की मलिनियत नहीं है कुत्ते का पुत्र आगे उगी जवाब देता है ।’

‘छप्पड़ का पट्टा तेरे बाप के नाम भी नहीं है । वाली ने क्रुद्ध स्वर में कहा । वह सोचने लगा कि चौधरी उसे इसलिए नीच समझता है क्योंकि वह चमार है—छज्जू शाह उसे किसी गिनती में शुमार नहीं करता कि वह गरीब है । मुझे उसपर इसलिए विश्वास नहीं करता क्योंकि वह जमीन का मालिक नहीं है, लेकिन मगू किस विरत पर इतना रोब दिखाता है । वाली मगू को समाझता हुआ बोला ।

तेरी रगा में खून की बजाय पानी बह रहा है जो तू इस तरह की बातें कर रहा है ।

वाली पहले ही धूप से सताया हुआ था और मगू का गालीगलोच सुनकर उसका सारा शरीर क्रोध से जलने लगा । मगू गधे पर लदे हुए बोरे फेंकने लगा तो वाली ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया । दीनू ने जब यह देखा कि दोना में हायापाई तक नीबू पहुँच रही है तो वह वहाँ से दौड़ पड़ा और छप्पड़ के किनारे पर वृक्ष के नीचे जा खड़ा हुआ । मगू अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करता हुआ गालियाँ बकता रहा । वह इसमें असफल रहा तो उसने अपना सिर वाली की छाती पर मारा । वाली ने उसकी कलाई मरोड़कर बाजू पीठ के पीछे लगा दिया । मगू का सारा शरीर ऐँठन लगा ।

‘इन्सान की जीलाद हूँ ता आगे किसी पर हाथ न उठाना । काली ने मगू की कलाई मरोड़ते हुए कहा ।

मगू गालियाँ देता हुआ काग़ी की ओर चपटा और उसकी छाती पर दो-हत्थड़ मारन लगा ।

‘ठहर जा ।’ काली ने दात पीसत हुए कहा और मगू को गदन से पकड़ कर नीचे गिरा दिया । वह अपना एक पाँव उसकी कलाई और दूसरा उसकी छाती पर रखता हुआ बोला

‘अगर जरा-सा जोर दे दू तो तेरी हड्डिया गम भटठी म भून रह चनो की तरह तडाख-तडाख करने लगेंगी ।

जब छाती पर दवाव के कारण मगू की सास रुकन लगी और उसकी आँखें बाहर निकल आई तो काली ने अपने पाव उठाते हुए कहा

वस इसी ताकत पर इतना अकड़ता है ?

मगू कपड़े साढ़ता हुआ उठा और बहुत क्रुद्ध स्वर में बोला

अगर तुम्हें कैद न कराया तो मेरा नाम भी मगू नहीं है ।

‘जाता है यहाँ से कि नहीं । बड़ा आया थानदार का साला जा, जाकर चौधरी के तलवे सहला । उसके पाव में भी खारिश हो रही होगी ।’

काली का अपनी ओर बढ़ता देखकर मगू गालिया बकता हुआ छप्पड़ से बाहर चला गया । जब वह काफी दूर निकल गया तो दीनू काली के पास आकर भयभीत स्वर में बोला

‘काली दास, बुरा हुआ मगू बड़ा नामुराद आदमी है । अब यह चौधरी को तुम्हारे खिलाफ भड़काएगा ।

काली उसकी बात का कोई उत्तर दिए बिना बोला

‘परजापता, मिट्टी फेंककर जल्नी आ जाता । और देख इस झगड़े के बारे में किसी से बात न करना ।

मैं क्या कहूँगा । मैं गरीब आदमी हूँ—मुझमें तो मार खाने की हिम्मत नहीं है । दीनू ने कानों को छूत हुए कहा ।

दीनू के जान के बाद काग़ी कुछ समय तक यूँ ही खड़ा इधर उधर देखता रहा और उसने फिर इल्मीनाम का सौम लिया और साचन लगा कि और कुछ न सही आज उस मगू की ताकत का पता चल गया । साथ ही उसके दिल में खोफ की एक परछाई लहरा गई कि अगर मगू ने चौधरी से कह दिया तो बात बड़ जाएगी । उसने इस भय को झटकते हुए साचा कि समय आन पर वह चौधरी से भी निपट लेगा । डर डरकर दिन गुज़ारने से मर जाना ही

घरती घन न अपना

अच्छा है।

दीनू वापस आया तो वाली व मन रा मगू व साथ झगड रा पना हान वाली बचनी वण और प्रोघ दूर हो चुके थ । उमने वाने भग्गर दागा गया पर लदवा लिए और बुदा उठाता हुआ बोला

परजापत जी, धूप बहुत तज हा गई है । अर लिन टा ही काम चुन करेगे । व गधा के पीछे चलने लगे । दानू वाणी के बहुत निचट होकर बोला

‘जब मैं इधर वापस आ रहा था तो मगू चौधरी की हवेली के बाहर खडा था ।

१०

दोपहर के समय तविए म हर आदमी चमादडी को ओर उत्सुकता स देण रहा था । ताण और चौपड बंद पडी थी । गपशप भी ठनी थी । लेकिन जब उन्हें चो मे वाली नजर आया तो वहा एकदम हलचल सी मच गई । लेटे हुए लोग उचक कर बठ गए । बठे हुए लोग उठकर पडे हो गए । वाली तविए म दाखिल हुआ तो एक साथ कई आवाजें आइ

‘वाली इधर जा जा । यहा बहुत घनो छाव है ।

जीतू दौडकर वाली के साथ लिपट गया और उसे उठाकर अपनी घाट पर बिठा दिया । वह हापना हुआ वाला

‘बाबू जी जाज तूने मेरे मन की मुराद पूरी की है । साले नो ऐसा मारा कि उम्र भर याद रखेगा । बडा फन्नेखा बना फिरता था ।’

वाली हैरानी से जीतू की ओर देखने लग कि यहाँ कैसे खबर पहुच गई । वह चकित-सा बोला

‘किस की बात कर रहे हो ?’

उसी रानीखा के साले की जो चमादनी का चौधरी बना फिरता है ।’ बाबू ने कहा ।

मैने तो किसी को नहा मारा ।’ वाणी ने भावहीन स्वर से कहा । सब

खिलखिला कर हँसने लगे जैसे काली की खिल्ली उड़ा रहे हा ।

सब लोग उस बे गिद इक्ठ्ठे हो गए तो काली ने चारो ओर नजर दौड़ाई । बड़ के नीचे एक आर दीनू अपनी पगडी बिछा कर लेटा हुआ था । काली ने उमे आवाज दी ता रेतली जमीन के साथ यू चिपट गया जैसे गहरो निद्रा म हो । काली ने उसे बराबर पुकारा ता वह आख मसजता हुआ उठा और उसके पास आकर सहमी हुई आवाज म बोला

मैंन किसी को नहीं बताया कि तूने मगू को मारा है । जिस की जी चाह सौगध द दो ।'

परजापता डरता क्या है ? तूने किसी की चुगली नहीं खाई, निंदा नहीं की ।' जीतू न दीनू का हौसला देते हुए कहा । दीनू कुम्हार, काली के तगडे शरीर को देखकर और भा सहम गया और फिर जीतू की ओर इशारा करता हुआ बोला

'मैं तो कुछ भी नहीं बता रहा था । यही कुरेद-कुरेदकर पूछ रहा था ।'

दीनू की बात पर सब हसने लग । जीतू काली को बाज स पकड़ता हुआ वाला

बाबू जी, यह बताओ लड़ाई गुनू कम हुई थी ?'

'मगू की तो किसी भी बात से लड़ाई शुरू हो सकती है । बाबू न उत्तर दिया ।

चारो चुप रहो काली की जवान से पूरी कहानी सुनेग । सत् न हाथ से सब को खामाश रहने का इशारा किया । काली चुप रहा तो बाबू रोने की बनावटी आवाज निकालता हुआ बोला

निक्क मगू को मार पडी है । जाकर उसे उठा ला । शायद अभी तक छप्पड़ म ही पडा होगा ।'

निक्कू का चुप देखकर बाबू उमे कुछ और कहने ही वाला था कि जीतू ने उसे रोक दिया ।

ठहर मार बाबू जी से पूरी बात तो सुन लेने दा । बाबू जी बताओ ना लड़ाई कसे शुरू हुई थी ।

कोई खास लड़ाई नहीं हुई ।'

काली न य शर इतनी गम्भीरता स कहे कि सब चुप हा गए । काली को इस बात पर हैरानी थी कि अब जीतू बाबू सत् इत्यादि गेर बने हुए हैं परंतु जब मगू यहा होता है तो सब यू चुप बठ जात है जम इह साप सूष गया हो ।

कुछ समय के लिए सब घामाण हो गए। काली के गम्भीर स्वर ने उनकी खुशी को बाफूर कर लिया था। बागी का उनके मुरझाए हुए चेहरे देखकर हँसी आ गई और वह जीतू की रान पर हाथ मारता हुआ बाला

जाज तरे पहलवान की मैन सत्र घरमस्त्रियाँ पाड दी हैं।' वह मगू व गाय अपन झगडे की कहानी सुनाने लगा तो सत्र व नेट्टर एक बार फिर दमकन लगे। काली ने उह बताया कि उमने मगू को चित्त गिराकर उसरी छाती पर पाँव रखकर कहा कि अगर वह आदमी भी औलान है तो जाज व बाला विसी पर हाथ नही उठाएगा। काली अगर थगड की कोई कडी भूल जाता तो दीनू उसे बीच म जोड देता।

बाता-बाता म त्रिन ढल गया तो लाग घडी भर आराम करन के लिए लट गए। काली भी सत्रा की हालत म था जब दामू चौधरीगर ने छठे हुए वच्च की तरह सत्र स अलग पडे निस्कू स पूछा

काली है यहाँ ?

काली ने अपना नाम सुना तो चौंक कर आँखें खोल दी।

क्या क्या बात है ? निस्कू घाट स उठता हुआ बोला।

चौधरी जी ने उस दीवानखाने बुलाया है।

वह सामने कबूतर की तरह आँखें बंद किए हुए पडा है। जाकर उठा ले। निस्कू ने काली की घाट की ओर संकेत करत हुए कहा।

दामू को देखकर सब लोग उठ बठे और आँखा ही आँखो म इशारे करत हुए एक दूसरे से पूछने लग कि वह क्या कह रहा है। काली घाट स उठना हुआ बाला

दामू क्या बात है ?

चौधरी ने तुम्ह दीवानखाने बुलाया है।

दामू व शब्द सुनकर दीनू कुम्हार का खून खुष्क हो गया और वह सरकता सरकता सरकडो के पीछे चला गया ताकि दामू की नजरों से ओझल हा जाय। काली ने दीनू की तलाश म चारा ओर देखा और उस वहाँ न पाकर मुसकराता हुआ ऊँची आवाज म बोला

परजापता गधे लेटर छप्पड पर पहुच जाना मैं चौधरी जी की हवेली से सीधा वही आ जाऊँगा।'

काली को चौधरी की हवेली स बुलावा आने पर सब सहम गए। जीतू ने दामू को एक ओर ले जाकर धीमी आवाज म पूछा

चौधरी ने बागी का क्या बुलाया है ?

पहले तो दामू चुप रह लेकिन जीतू के बार-बार पूछन पर वह इधर उधर देखकर गोपनीय स्वर में बोला

आज मैं सवरे स ही दीवानखान में था। एसा लगता है कि वाली न मगू की अच्छी मुरम्मत की ह। साले को जान स मार देता तो अच्छा था। सारी दोपहरी चौधरी के तलवे सहलाता हुआ विलाप करता रहा है। एन-दो बार ता दहाड मार कर रोया भी। यह तो मुझे पता नहीं उमन चौधरी में क्या कहा ह लेकिन वह था गुम्म में।

जीतू ने आँखा ही-आखा में बतू का सारी बात समझा दी। वाली भी साठ गया कि उसे मगू के साथ गण्डे के सिलसिले में ही बुलाया गया है। वह दीनू को छप्पड पर भेजन के लिए जीतू की तकीद करके दामू के साथ चल दिया। जब वाली और दामू कुछ दूर निकल गए तो निकलू जीतू और बतू का मुह चिन्ता हुआ बोला

क्या ? क्या मैं मर गई है जा इस तरह चुप बठ हो ?

फिर वह अपनी छाती थपथपाता हुआ बोला

मगू का जेना बेल के सागा पर चढ़ने के बराबर है। जब खर मनाओ कि वाली यान स इधर ही बच कर आ जाए।

जीतू और बतू चुप रह तो निकलू उनके मुह की आर अपना चप्पा बन्ता हुआ कहन लगा

अब यहा क्या बठा है ? जा जानर अपन बाबू का छुडा ला ?

निकलू की बानें सुनकर जीतू खीन गया और उसकी आर झुकता हुआ बोला

मगू कोई ख नही है। तरी मेरी तरह चमार है। तू धोस ता एस द रहा है जम मगू दलाक का यानदार लगा हुआ है।

मगू के मामन कहो तो बात भी है। पीठ पीढ़ ता लाय सरतार का भी गाली दे लेत है। निकलू न जीतू का ललकारा।

जीतू और निकलू में बात बढन लगा तो बाकी लोग उनमें बीच-बचाव करान लग।

लोग अभी तू तू में मैं में म लग हुए थे कि बाकी तनिए में वापस आ गया। उमन फटार कपडे की बमीज और खाकी निकर पहन रखी थी। पाव में पशावरी चप्पल था आर धूप स बचन के लिए सिर पर गाडे के साफे की जगह तौलिया रखा हुआ था। उसकी बप भूपा देखकर सब के मुह हरत स खुले रह गए। जीतू वाली के कपडा को प्रशंसा भरी दृष्टि से देखता हुआ प्रमानभाव

धरता धन न अपना

स बोला

मेरा बाबू जी जाग ता सचमुच का बाबू लग रहा है ।'

निककू जिलखिलाकर हँस पडा ।

'रही सही कसर चौधरी पूरी कर देगा । वह पाडे दिन पहले ही बिलायती जूना लाया है ।

काली ने निककू की ओर काई ध्यान न दिया और जीतू के निरुट जाकर बोला

परजापत के साथ छप्पड म जातर गधा पर बोरे लदवा दना । मिट्टी में सवेरे हा खोद आया था । मैं भी वहा जल्दी से जल्दी पहुचने की कोशिश करूगा ।

काली चौधरी की हवली की ओर जान वाल बडे रास्त की ओर बढ गया । सब आँखें उस पर लगी हुई थी । ताया बसता उसकी ओर ध्यान से देखता हुआ बोला

काली का रग चिट्टा हाता तो इन कपडा म यह भी गोरा साहब निखाई देना ।

'अगर साहब नहीं है तो चौधरी बना देगा । पिछले जिना जीतू को ता चौधरी न साहब बना दिया था । निककू ने जीतू की ओर देखत हुए कहा । जोर अपनी छाट उठारर चमादडी की जोर चला गया ।

निककू गला म प्रवेश करत ही अपनी परनी प्रीतो को जावाजें देन ग्या । प्रीता कोठडी म मा रही थी । निककू ने उम झगगातर उठायो और एक ही सास म पूरी बात बना ली । प्रीता गिर पर दुपट्टा लना भी भूत गई और मगू की मा जस्ता क पर होकर कात्री की चाची प्रतापो क पास आ गई ।

चाची हा तर म मुल्ल म हाहाकार मच गई । चाची प्रतापो और जस्ता लकड़मरी का गालिया दनी हुई स्थापा कर रहा था और जानो हैरान-सी साच रही थी जि प्रीता क मूत कम बत कर ।

११

काली का रग क पास छत म मशान म खरखर चौधरा का हुरग की ओर देखन लगा । उम मन्तूम था कि निककू का मशान त्रिगम बचर आधा

छुट्टी के समय खेलत हैं, पहले से काफी छोटा हो गया है और हवेली की दीवार स्कूल के बहुत नज़दीक पहुंच गई है।

काली मदान से बड़ के दो बड़े वृद्धा की ओर चला गया जहां दोपहर के समय चौधरी हरनाम सिंह और मुहल्ले के हमारे चौधरी आराम करत हैं। लेकिन वहां किसी का न पाकर वह हवेली के फाटक के सामने आ गया। फाटक पर लगी हुई जिस्ती चादरा का रंग वाला पड़ गया था। यह फाटक चौधरी हरनाम सिंह के ताऊ बसावा सिंह न उन दिना बनवाया था जब उसे जल्दारी मिली थी। हवेली के अदर दीवानखाना भी जल्दारी के दिन म ही बनाया गया था।

काली ने फाटक को धीरे से घोलकर अदर झाका और फिर जाग बढ़कर बड़ कर दिया। फाटक के खुलने और बड़ होने पर चरा चरा की आवाज़ आइ तो एक कुत्ता जोर से भौका। साथ ही दालान से टंगर टंगर टंगर की आवाज़ आई। लेकिन कुत्ता भौकता हुआ काली की ओर दौट आया। काली पत्थर का एक टुकड़ा उठाकर उस डरान धमकाने लगा। दालान से दामू दौडा और कुत्ते को पटटे में पकड़ कर दालान की ओर ल गया जोर काली को दीवानखाने की ओर जान का संकेत दिया।

काली दीवानखान की आर जाता हुआ हवेली में चारा जोर देखने लगा। बाइ ओर दालान में दो भसँ और एक घोड़ी बँधी थी। उसके साथ ही एक और दालान में बला के लिए लम्बी पक्की खोर बनी हुई थी। उसी दालान में दूसरी ओर दो पहिया वाली बलगाड़ी खड़ी थी और बाहर गडडा खड़ा था। दोना दालाना के सिरा पर एक एक कोठड़ी थी। दूसरी कोठड़ी से दीवान खान तक एक छाटी सी दीवार थी जिसके पीछे चौधरी का तीन मञ्जिला रिहायशी मकान था। दीवानखाने का पिछला हिस्सा भी रिहायशी मकान से मिला हुआ था।

काली तीन मीढियाँ चक्कर दीवानखाने के चबूतरे पर आ गया और फिर चरामद में रकनर बारी-बारी तीन दरवाजों की आर देखने लगा जिन पर वारीक सरकड़ा की चिक लटक रही थी। वह इस असमजस में था कि कौन सी चिक उठाकर अदर जाये कि एक चिक के पीछे से चौधरी हरनामसिंह का भतीजा हरदेव बाहर निम्ला। काली ने उसे एकदम पहचान लिया और बदगी करता हुआ मुसकराकर बोला

‘चौधरी हरदेव, पहचाना नहीं ? मैं काली हूँ।’

हरदेव कुछ क्षणा के लिए चकित सा उस पहचानने की काशिश करता रहा

और फिर उसका रोहना म छ गाल पहले का कमजोर लेकिन मजबूत हड्डी का लड़ना उभर आया। वह वाली की आर हैरत और प्रणाम भरी तबरा म दगना हुआ प्रमानभाव से बोला

मुनाओ वाली—कच वापस जाया तू ? फिर उमर तगडे शरीर को दगवर अपन यजुआ की मछलिया और पट्टा को दोगा हाया स न्याता हुआ कहन लगा

जिसम अच्छा कमावर आए हो।

वाली उत्तर म मुसकरा लिया। हरदेव अपन गारे शरीर का मजबूत हुआ वाला

सबेरे आवर मरी मालिश कर जाया करो। इस गांव म एक भा एसा चमार या कमीन नही है जो अच्छी तरह मालिश कर सके। मगू स नमी-कभी मालिश कराता हूँ लेकिन उसका हाया म जान ही नही है।

वाली उत्तर म मुमवराना हुआ वाला

बडे चौधरी साहन कहाँ हैं ?

हरदेव न एक चिब की ओर इशारा लिया और उस आने की तारीफ करता हुआ बाहर निकल गया।

वाली चिब उठाकर अंदर चला गया और दरवाजे के पास ही रुक गया। चौधरी हरनाम सिंह सूती चारपाई पर लेटा हुआ था। मगू दरवाजे स जरा हटकर छन से लटक रहे झालरदार पक्षे को धीरे धीरे घीब रहा था। वाली की आहट पाकर चौधरी ने आँखें खोल दा और उस बठने के लिए इशारा करके करबट ब्रल ली। वहाँ बठने लिए कुछ नही था। वाली ने जमीन पर बठने की बजाय खडे रहना ही मुनासिब समझा। वह मगू की ओर देखन लगा जो नगी जमीन पर पाब पसागे बठा पक्षे की रस्सी घीब रहा था।

जब चौधरी न दा चार बार करबट बदली तो मगू पखा छोडकर रिहा-यशी मरान की जोर खुलने वाले दरवाजे म खडा होकर आवाजें देने लगा

ओ नत्य चौधरी जी के लिए वातामा की ठडाइ ले आओ।' वह इधर-उधर घूमता हुआ यू आवाजें दे रहा था जस इस घर क इन्तजाम म उस घास दखल हासिल हा। जस उस कुछ न सूचता तो दीवानखाने क चबूतरे पर खडा होकर कुत्ता क नाम पुकारन लगता।

थाडी दर क बाद चौधरी हरनाम सिंह उठ बठा। सिर पर साफा रखा और खाट पर पाँव लटका कर बठ गया। वाली को खडा देखकर उसका माथ

पर ल्यूडिया चढ़ आइ। कोई और चमार होता तो उसे वह तुरन्त ही दा चार गालिया मुना देता लेकिन काली का डील-डौल और वेप भूपा दखकर वह चुप रहा। बादाभो की ठडाई पीकर वह काली मे बोला

तुम पर कोई नई जवानी नहीं आई है जो राह जात लोगो से लडाई माल लता है। ऐसी अघी जवानी जल्दी ही सकी घूह-खदक म जा गिरती है।'

काली चौधरो की बात को पूरी तरह समम न सका और धीमे स्वर मे बोला

'चौधरी जी, मैं आपकी बात समझा नहीं। मैं तो किसी के साथ झगडा नहीं करता।'

'आज तूने मगू को मारा। अगर उमकी कोई हड्डी-मसली टूट जाती तो कौन जिम्मेदार होता ?

'चौधरी जी पहल मैंने नहीं की थी। मैं छप्पड म मिट्टी छोद रहा था तो मगू न पहले मुझे गालिया दी फिर उसने गधा पर लद हुए मिट्टी के बोरे नीचे गिरा दिए। बाद म उसने मुझ पर हाथ उठाया ता मुझे भी जवाब देना पडा।

'तूने कुछ कहा हागा तो उसने हाथ उठाया। तरा झगडा मगू से हुआ लेकिन तून कुदाल घोडी को मारी। अगर उसकी टाग पर लग जानी तो मेरा पाच सी रुपया का जानवर नाकारा हा जाता। वह डर कर ऐसी भागी कि उस दो आदमी नगल के पाम से पकड कर लाए हैं।

चौधरी ने उत्तेजित स्वर म कहा।

'मैंने तो घोडी देखी तब नहीं कुदाल कस मारता ? यह बिलकुल झूठ है। आप मगू को मेरे सामन बुगकर पृछ लें। काली उत्तेजना म चौधरी की चारपाई की ओर एक कदम बढ़ आया। चौधरी मरहान से टेक लगाता हुआ बोला

'गांव म रहना है ता भलमानसी से रहो। जिस थाली म खात हो उसी मे छेद करना चाहते हो ?'

चौधरी जी मैं किसी की थाली म नहीं खाता इसलिए छेद करन का मवाल ही नहीं उठता।' काली ने बहुत गम्भीर स्वर में कहा।

काली के इम उत्तर से चौधरी चकरा गया। आज तक उसके सामन किसी कमीन या चमार ने इम ढग मे बात नहीं की थी। उसे शोध ता बहुत आया लेकिन अपने जाप पर कानू पाता हुआ वाग

घरती धन न अपना

दया, आपस में प्रेम प्यार से रहता। तुम्हारी बातों से जागनाद साँगी है जो तुम लड़ते हो।

वाली कुछ दूर के लिए घामों पर पड़ा रहा और फिर नम्रता से बोला
'चौधरी जी आप गह तो छपड़ से मिट्टी गये सँ।

छपड़ सरना साँगा है। क्या कमीन क्या चमार—क्या जाट क्या मग
जान जितनी जी चाह मिट्टी छोड़ लेना लेकिन इतना म्याल रगता कि वहाँ
बहुत गहरा गड्ढा न बन जाए। पार साल ऊँच मुहल्ले के पूरण सिंह ने वहाँ
कुआँ सा खान लिया था। बरसात में छज्जू शाह की भस उसमें एसी फमी थी
कि उस बटिलियाँ देकर निकालना पड़ा। चौधरी ने वाली की आर दखन हुए
वहाँ। कुछ क्षणों के बाद वाली हाथ मलता हुआ बोला

अब जाऊँ ?'

चौधरी ने फिर हिंसापर जान की अनुमति दत्त हुए कहा

मरी बात बाद रखना। दगा किसान करोगे तो नुस्मान उठाओगे।

वाली ने कोई उत्तर न दिया और बदगी करके कमरे से बाहर निकल
आया।

मगू दीवानखान के चबूतरे की सीढियाँ पर बठा था। वाली को देखकर
वह नज़रें बचाकर दरामद की ओर चला गया। चौधरी ने मगू को आवाज़ें
दाँ तो वह जल्दी से कमरे में घुस गया। फिर चौधरी की बडकनार आवाज़
गूजी

कुत्ते की औलाद तूने घोड़ी को खुल्ला क्या छोड़ लिया था। कोई ले
जाता तो क्या तरा धाप इतने स्पष्ट भरता ? कुत्ता चमार हर बात निराली
करता है। चौधरी को गरजते सुनकर काली एक क्षण के लिए रुक गया।
उस चमार के शब्दों से बहुत चिढ़ थी। उसने फाटक की ओर बढ़ते हुए निणय
कर लिया कि वह चौधरी हरदब की मालिश करने के लिए कभी नहीं
आएगा।

वाली हवेली से सीधा छपड़ की ओर चला गया। वहाँ जीतू मिट्टी
उखाड़ रहा था। उसे देखते ही जीतू ने कुदाल छोड़ दी और वाली की आर
बढता हुआ बधनी से बोला

क्या तुलाया था चौधरी ने ?

वही मगू वाली बात थी ? काली ने बेध्यानी से उत्तर दिया।

'क्या कहा उसने ?

कोई खास बात नहीं हुई उल्टा मगू को पाट पड़ गई। वाली बहुत

उदास और श्रुद्ध स्वर में बोला

मगू के साथ बात करत वक्त चौधरी उसे बुत्ता चमार उतर कहता है ।'

जीर क्या उमे राजा साहन कहकर पुवारता ? चमार वह जम स है और बुत्ता अपनी बरतूता स बन गया है ।' जीतू ने हँसते हुए कहा

जीतू हथेली में हुई बातचीत का विस्तार पूछ कर वाली में बोला

अच्छा बाबू यह बता लूने मगू का कहीं पटना था ?'

'क्या ?'

मैं उस जगह पेशाब करूँगा ।

एसी बात मत कहा । आखिर वह भी हमारी तरह बुत्ता चमार है ।' वाली ने कृत्रिम गम्भीरता में कहा ।

वाली ने अपनी कमीज और चप्पल उतार कर एक आर रख दी जीर बुदाल उठकर मिट्टी खोदने लगा । जीतू एक ओर खड़ा होकर उसमें बाग

मुहल्ले में निक्कू और प्रातो ने मण्डूर कर दिया है कि तूने मगू की बाँह तोड़ दी है और तुझे याना पकड़कर ले जाएगा । अब मैं इधर आ रहा था तो जस्ता बरी के नीचे खड़ी तरा रपापा कर रही थी । प्रीतो भी उसकी हाँ में हाँ मिला रही थी ।'

वाली ने कुत्तल रोक दी और उत्तेजित स्वर में बोला

'चाची ।

जीतू ने वाली को टोकते हुए कहा

चाची लड कम और रा क्यादा रही थी । उसे प्रीतो ने विश्वास दिला दिया था कि तुम्हें याना पकड़ने आ रहा है ।'

वाली कुछ क्षणा तक साँच से डूबा रहा और फिर जीतू से बोला

तू घर जाकर चाची को समझा दे कि मुझे याना पकड़ने नहीं आ रहा है । जस्ता स कह दना कि मगू की बाह नहा टूटी है-और वह चौधरी व कुत्ते की दोना हाथा स मालिश कर रहा है ।

जब काला और दीनू छप्पड से निक्कल तो सूय अस्त हो रहा था । वह घर पहुँचता मिट्टी के ढेर के पीछे दीपक का मंद सा प्रकाश फग हुआ था और मिट्टी के ढेर का साया छाटी में पहाड़ी बन गया था । वाली ने गधा की पाठ स मिट्टी के बोर पीचे फेंके तो दीपक की बत्ती एकदम बहुत ऊँची कर दी गई । वाली ने देखा कि दो बालू उस पर जमी हुई थी । वे आँखें उसने पटले भी देखी थी लेकिन इस समय वे उस बहुत ही अजीब बड़ी धुली हुई सी प्रतीत हुई । चाची ने उठकर काली के मिर पर बारना किया और माथा चूमकर रेंधी

धरती धन न अपना

हुई आवाज म बोली

'बाबा, मरे तो प्राण निकल गए थ । प्रीतो न सारे मुहूँ म मगहूर कर दिया कि तूने मगू की बांह तोड़ दी है और घाना तुम्ह परडन आ रहा है ।'

'न मगू की बांह टूटी है और न ही घाना मुग परडन आ रहा है । काली ने तीमे स्वर म कहा । घानो ने बहुत जोर स सांग छोड़ी जग यह बहुत देर स उसकी छाती म अटरी हुई थी और तजी स गली म दौड़ गई ।

काली चाची की सब बात। को अनगुना करता हुआ मिट्टी के मिगरे हुए डेले समेटन लगा । उस पहली बार पछतावा हो रहा था कि मगू क साप उन मगडा करना चाहिए था ।

१२

मकान बनाने के लिए कुछ आवश्यक सामान जुटाने के बाद काली ने बुनियाद खोदन का विचार किया । उसकी दाइ और बतू का मकान था और बाइ और निक्कू का । काली ने जीतू की सहायता से बुनियादो के निशान लगा दिए ।

सबसे पहले उसने बन्तू और उसके पिता और माता चाननराम और ठाकुरी को बुलाकर उनकी ओर बुनियाद के निशान दिखाए और कहने लगा
आप अपनी तसल्ली कर लें कि कहीं मैंने आपकी जगह तो नहीं घेर ली है ।'

उहने काली की बात का बहुत बुरा माना और चाननराम अपना रोप प्रकट करता हुआ बोला

तुम कौन सी मुराबो की तकसीम कर रहे हो जो ऐसी बात कहते हो । हम तो खुशी हुई है कि तुम्हारी पक्की दीवार के सहारे हमारी कच्ची दीवार भी खड़ी रहेगी ।

काली लज्जित स्वर म बोला

चाचा बड़ लोग एतराज कर देत हैं । कभी-कभी तो इसी बात पर पगडा फिसाद खडा हो जाता है । इसस तो यही अच्छा है कि सब मामला पहले ही मुल्का लिया जाय ।

उनके जान के बाद काली निक्कू के घर गया और उसे बुनियाद का निशान देखने के लिए कहा। निक्कू तो चुप रहा लेकिन उसकी पत्नी प्रीतो काली से तीखे स्वर में बोली

काली, तू तो एही बात कर रहा है जमे हम तेरा शरीक हैं।'

निक्कू भी अपनी पत्नी की हीं भे-हा मिलाता हुआ सिर धुनने लगा। काली हँसी मजाक में निक्कू को घर से निकाल लाया और उसे बुनियाद के निशान दिखा दिए।

'चाचा, देख लो, निशान ठीक है ना? कोई एतराज हो तो अभी बता दो।'

निक्कू ने सिर हिलाकर अपनी अनुमति दे दी और घर वापस चला गया। उसके पीछे पीछे मगू भी गली में आ रहा था। वह निक्कू के साथ उसके घर में घुस गया।

काली ने यह देखकर सोचा कि सबसे पहले निक्कू की दीवार के साथ बुनियाद खोद ले। उसने जीतू की सहायता से काम शुरू कर दिया। अभी वह कच्चे निशानों का पक्का ही कर रहे थे कि निक्कू सिर पर चादर लपेटे और हाथ में पतली सी लाठी पकड़कर काली के सामने आ खड़ा हुआ और रोब से बोला

'मैं यहाँ बुनियाद नहीं खोदने दूँगा। यह मेरी जगह है।

काली चकित-भा उसकी ओर देखता हुआ बोला

'चाचा, जब मैं तुम्हें निशान दिखाए थे तो उस समय तो तू चुप रहा। अब मैंने बुनियाद खोदनी शुरू की तो सिर पर चादर बांधकर झगडा करने आ गया है।

निक्कू निशान लगी जमीन पर पाव रखता हुआ कहने लगा

यह जगह मेरी है। मैं इस जगह बुनियाद नहीं खोदने दूँगा।

चाचा, इस तरह शोर मचान से क्या फायदा। धीरज से बात कर। काली ने बुदाल फेंकत हुए कहा।

'मेरी जात चली जाए परवा नहीं लेकिन मैं तुम्हें यहाँ बुनियाद नहीं खोदने दूँगा।'

शोर सुनकर कई स्त्रियाँ अपने घर से बाहर निकल आईं। कुछ काली के घर के सामने इकट्ठी हो गईं। हजूम के वरान के साथ-साथ काली की परेशानी भी बढ़त लगी। निक्कू ने जब देखा कि गली में काफी भीड़ इकट्ठी हो गई है तो वह लोगो की महानुभूति पाने के लिए रूंधो हुई आवाज में बोला

घरती घन न अपना

‘काली के पास पसा है और चंह तगडा और जवान है तो इसका यह मतलब नहो कि गरीब और कमजोर पडासी का हक मार ले मैं यही भर जाऊंगा लेकिन इसे अपना जगह म बुनियाद नही खोदने दूगा ।’

काली भी गली म खडी स्त्रिया को सम्बोधित करता हुआ बोला

मैंने कच्चे निशान लगा लेने के बाद इनके सामन हाथ जोडकर कहा कि आकर निशान देख लो । यह तो चुप रहा लेकिन चाची प्रीतो मुझे डाटने लगी कि मैं उनपर बेएतबारी कर रहा हूँ । फिर भी मैं इसे यहाँ लाकर निशान दिखा दिए और इसने कोई एतराज न किया । अब लाठी उठाकर झगडा करन आ गया है ।’

काली निक्कू के पास जाकर उसका हाथ पकडने की कोशिश करता हुआ बोला

‘चाचा भरी बान तो मुनो ।

निक्कू घटके स अपना हाथ छुडाता हुआ ऊँचे स्वर म बोला

जोरावर का सात बीस का सी । एक तो मेरी जमीन खा रहा है और जब मुझे मारने पर भी ग्त्तारू हो गया है ।

निक्कू अपने घुटने को इस तरह सहलाने लगा जैसे उस पर सख्त चोट लगी हो ।

प्रीता जब तक चुप खडी थी लेकिन निक्कू को घुटना सहलाता देखकर वह बहुत ही तीखे स्वर म बोली

मोण काली को नई जवानी आई है । हर एक को मारता फिरता है । और फिर वह बाजू लहराती हुई वाली

माए का प्लेग निक्कल—काला ताप घडे—दर दर का भिखारी बन ।’ चाची न प्रीता का गालियाँ दत हुए मुना तो वह भी भडक उठी

प्लेग निक्कल तुझे और तरे घर वाल का और तरे बच्चा की फौज का जो सारा तिन घर घर क दर मूँघत फिरत है ।

जाना चाची क पास खडी थी । वह उस चुप कराकर प्रीतो के पास चली गई और उमक मुह क आण हाथ रखता हुई बाी

चाची मरणा का झगडा है तू बीच म क्या दखत दती है ।

राट मुन समगान बागी तू बान है । आई है उसक साथ हमदर्दी करन । शम हानी ता भाद का मार का इतनी जलार न भूलतार ।

प्रीता न जाना का हाथ अपन मुह स हटान हुए कहा । जाना शमिदासी पाछ हट गर ।

जब प्रीतो और चाची का बोल-बोलकर पसीना छूटने लगा तो काली चाची का कंधा धीरे से दवाना हुआ बोला

‘चाची, क्या बोल रही है झगडा तो यू गुरू कर दिया है जैसे यहा खून हो गया हो ।

‘खून कर दो । तुम्हारे सिर पर तो खून सवार है ही । पल्ले चार पैसे कमा हो गए कि हर एक के पीछे लठ लेकर घूमता फिरता है । प्रीतो का राघ क्षण प्रतिक्षण बन्ता जा रहा था । काली के बहने पर चाची चुप हो गई थी । पानो ने जब प्रीतो को मालिया देते सुना तो वह उसे चुप कराने के लिए उसकी ओर गइ । उस अपनी ओर आती देख प्रीतो चीखती हुई बोली

राड वाराने पाल रही है । उनकी तरफदारी तो ऐस कर रहा है जैसे मकान काली का नहीं, इसी का बन रहा हो ।

पानो बुदबुदाती हुई उल्टे पाव वापस आ गई । काली क्रोध से आग-बगूला हो गया लेकिन बहुत सी स्त्रियां को उपस्थित देखकर चुप रहा । चाची से चुप न रहा गया । वह प्रीतो की ओर बढ़ती हुई बोली

पहले तू अपनी खाट के नीचे तो झाककर देख । लुच्ची राड अपने आपको पानदानी समझती है ।

शोर सुनकर ताई निहाली भी वहा आ गइ । जीतू को काली के पास खडा देखकर वह डर गइ । वह धवराई हुई सी जीतू के पास गई और उसका वाज पकडकर बोली

काका चल यहा से । तू खामुखाह क्या झगडे में पडता है ।

मा, यहा डाग नहीं चल रही । जा घर जाकर बठ ।’ जीतू ताई निहाली को पीछे धकेलता हुआ बोला ।

काका साडो की लडाई म तू खामुखाह मारा जाएगा । भुससे थाना बचहरिया नहीं भुगती जाएंगी ।

जीतू ने ताई निहाली की ओर धूरकर देखा और बहुत तीखे स्वर म बाला

मेरे पीछे-पीछे सारा दिन ऐसे घूमती रहती है जैसे मैं दा सालका बच्चा हूँ ।’

जीतू ने ताई निहाली को झिडक दिया । ता वह रेंधी हुई आवाज म बोली

यह तो मरी जान का दुश्मन हो गया है ।’ ताई निहाली चाची प्रतापी के पास आकर बोली

घरती घन न अपना

‘प्रतापिए, तू ही इसे समझा ।’

प्रीता ने ताड़ निहाली और प्रतापी को इकट्ठ देखा तो जीतू को भी गालियाँ देती हुई वाली

राड का पुत्र सौदागर का घोडा कभी सीधी राह पर नहीं चलते । क्या तू पहली मार भूल गया जो इस तरह फिर अक्डन लगा है । मुशटडा कहा का ।

तेरी शरापत का भी मैं अच्छी तरह जानता हूँ । जीतू ने बहुत क्रुद्ध स्वर म कहा ।

तू औरता की लडाई म क्या बोलता है । काली ने जीतू को उटते हुए कहा ।

जीतू कुदा उठाकर निक्कू का ओर घडता हुआ बोला

इस तरह काम हाने से रहा । यह तो जूते का यार है ।

निक्कू न जीतू को अपनी ओर आते देखा तो उमे लल्कारता हुआ बोला

हिम्मत है ता आग आ । तरे टुकडे कर दूगा । राड का पुत्र अपने आपको यडा लट साहब समझता है ।

जीतू न निक्कू को मोटी सी गाली दी और उसकी ओर बग लेकिन काली न उस अपन बाजुआ म जन् किया ।

जीतू होश कर ।

प्रीता जीतू का यह रग देखकर और भी ज्यादा भडक उठी

तरा कुछ न रट । रर मुम्ह चढती जवानी म उठा ल । तरी तेह म कीडे चलें ।

प्रीता की गालियाँ मुनकर ता निहाली भी जवाय म गालियाँ दन लगी । बाबी प्रतापी भा निहाली क साथ मि गद । प्रीता के साथ उसकी युवा पुत्री लगी आ मिगी । बान पन आवाज मुनाई नहा द रहा थी । एमा लगता था जग धारा बान की कर् घानें एर साथ चर रही हा । नाना सररा चुप करान की बागिन कर रही थी । तब वह फिर प्रीता क पाग आर् ता यह उमर म म म हाय दनी लद बाग ।

क्या जा मर पाग म कररी क्या का । अपन भा की गज का मरन मानन मिट्टा म मिना ली है ।

नाना भा भाव उग जीर क्रुद्ध स्वर म बाग ।

बाबी जगन मभा कर बाग कर ।

चाची प्रतापी प्रीतो की जोर लपकती हुई बोली

'दुनिया म लोकलाज भी कोई चीज हाती है। तुम मे वह भी नहीं।
कैवारी लडकी पर लाछन लगात हुए तुम्ह शम नहीं आती ?'

कजरी तो है ही जा तेरी इस तरह तरफदारी कर रही है। क्या लगती है यह तरी ?

प्रीतो तुम्ह सारी दुनिया जपन जैसी नजर आती है। तू तो हरजाई कुत्तिया को भी पीछे छोड दिया है। तू बाहर निकलती है ता दस मद तरे पीछे हान हैं। तरी लडकी निकलती है तो बीस उसके पीछे हाते हैं। अगर तू मच्छी बानें सुनना चाहती है तो आज सुन ले।'

चाची प्रीतो का मुह चिढाती हुई बोली

तू अपनी करतूतें बहुत जल्दी भूल गई है। आज वे चौधरी तुम्हें खटकने लग हैं जिनके घर म सारा सारा दिन पडी रहती थी। तू ता बाजीगरो के कोठा म भी पडुची।

प्रीतो ने चाची को साथ ही दस-बीस गालिया मुना दी।

तू नत्थासिह की जोर तू ऊँचे मुहल्ले वाले खडगसिह की रखेल तू बावक क लाला चमनलाल की लुगाई तूने अपन गाँव के जवान तो क्या, आस-पास के गाँवो के बूढे तक न छोडे। तुम्ह ता जब भी शम नहीं आती। दस बच्चा की मा बन गई है लेकिन तेरा तल सुर्मा और कधी पट्टी जब भी आकरिया जसी है। चाची बाजू लहरा-लहराकर बोल रही थी और उसके मुह म पाग बहन लगी थी।

प्रीतो भी लडाई म अपने आपको भूल गई थी। उसना दुपट्टा सिर से खिमककर पाव म जा पडा था। कभीज के बटन खुल गए थे। उसके छोट बच्चे सहम हुए उसकी टागा स चिपट गए थे। वे एक-दूसरी को अनाप शनाप बक रही थी। गाव का कोई जाट ऐसा नहीं था जिसका इस लडाई म जिश्र न आया हा। बागी और जातू अपनी बन्दीपत के वारे म नय नये ब्योरे सुनकर शम के मारे जमीन म गडे जा रह थे। निककू भी गदन झुकाकर जमीन पर बठ गया था।

काली ने जब दखा कि बान औरता की जात से उठकर बच्चा और बडा तब आ पडुची है ता वह चाची क सामन हाथ जाडता हुआ बोला

चाची दस कर। क्या लोगा का तमाशा दिखा रही हो।'

चाची चुप होने की बजाय और भी ज्यादा जार से बोलन लगी। उसका सांस फूल रहा था। वह काली को एक आर हटाती हुई बोली

घरती धन न अपना

‘बाबा, परे हट जा, रोज रोज का केश अज्जा नहीं हाता । आज इम रीं से फसला करवे ही रहूंगी ।’

काली ने चाची का यह रूप पहले कभी नहीं दग्ग था । वह आग की तरह दहन रही थी । वह उस पनडनर पीछे ले आया और अपन घर स दूर चौगान की जोर ले गया । चाची पीछे मुड मुडकर प्रीता को धरानर गालियाँ दे रही थी । कई स्त्रियाँ चाची के पाछे चली गई । प्रीता कुछ देर तन ता पूर जोश से बोलती रही लेकिन मुवाजले म किसी का न पानर उसका जोश टग पडने लगा ।

काली चाची को चौगान म छोडकर सीधा प्रीता क पाम आया और उमक सामने हाथ जोड कर सिर झुकाता हुआ बोला

‘चाची, मैं तुम्हारे पाव पडता हूँ । तेरे सामने सिर झुगानर बठ जाता हूँ । तू मेरे सिर पर सी जूते मार कर एक गिन । सारे गाँव की राख मेरे सिर मे डाल दे लेकिन यह तमाशा बन्द कर दो । मैं तुम्हारे पुत्तर क समान हूँ । मेरे प्राण भी ले लो तो मैं ऊफ नहीं बरूँगा ।’

काली प्रीता के पाव की ओर झुका तो वह पीछे हट गई ।

यह क्या कर रहे हो ? प्रीता न पीछे हटत हुए कहा । काली की वाता ने उसके अदर ममना की भावना जगा दी थी ।

चाची छाव म आ जाओ । धूप म खजे रहकर कसा हाल कर लिया है । काली ने बुपट्टा उठाकर उसे साफ किया और प्रीता के हाथ म थमा लिया ।

जीतू को काली पर क्रोध आने लगा और वह मुह ही मुह म बुदबुदाया इस चुडल के पाव पड रहा है कुदाल उठाकर इसके भिर पर नहीं मारता । उसने घणा स मह दूसरी ओर फेर लिया । प्रीता ने निक्कू की ओर देखा जो सिर लटकाए हुए खडा था । फिर उमका ध्यान बच्चा की ओर गया । आसुआ से उनकी गाला पर लकीरें सी बन गई थी । काली न आवाज देकर सब को अपने पास बुलाया और उनक सिर पर हाथ फरता हुआ बोला

रो राकर बचारो के चिडिया जसे पतले-पतल मुह निकल आए हैं ।

बच्च मामूमियत स काली की ओर देखने लगे । बच्चा का यह हुलिया दख कर प्रीता का भी दिल पसीज गया और उसने सबको अपनी टांगो से चिपका लिया ।

काली निक्कू क पास जाकर उसके सामने हाथ जोडता हुआ बोला

‘बाबा अपनी जिं छोड दो । मैं सब काम तुम्हारी मर्जी क मुताबिक ही करूँगा । जहाँ कहाग वही बुनियाद खादूँगा और अगर कहाग तो मवान बनाना

ही छोड़ दूंगा। लोगो को बहुत तमाशा दिखा चुने हो। जब उठो यहाँ स।'

काली क'य शब्द निककू पर ठडे पानी की धार की तरह पडे। उसने मुह स एक शब्द तक न निकला। काली न दीवार की छात्र म खाट पिछा दी और निककू को उस पर बिठा दिया। एक बच्चे से पखा भोगवाकर उसे हवा करन लगा। प्रीतो भी उनके पास आ गई। बच्चे भो खाट के चारा ओर जमा हो गए। काली ने सजको घडे का ठडा पानी पिलाया।

काली ने जब दखा कि निककू और प्रीतो शान्त हो गए हैं तो वह दोना को पखे से हवा करता हुआ बाला

चाचा अब बता, तुम्हें ऐतराज किम वान पर है। अगर तू चाह ता मैं एन हाथ अपनी जगह तेरा दीवार की आर छोड देता हूँ। लेकिन यह सोच ला कि बरसात म दोना दीवारें पानी भरने से बोदी हो जाएंगी। जोर गिर जाने का डर रहेगा।'

निककू न उसे कोई उत्तर न दिया तो वह प्रीतो से बोला

चाची, तू ही बता दे। चाचे को शायद कुछ मूय नहीं रहा है।

'मैं क्या बनाऊँ। मर्दों की बातों म मैं मलाह देने वाली कौन होती हूँ?'

प्रीतो ने ँँठत हुए उत्तर दिया। काली निककू का समलाना हुआ बोला

चाचा, कच्ची दीवार बहुत मोटी होती है। पक्की दीवार तो उतनी मोटी बनेगी नहीं। तुम उठकर देख लो मैंने तुम्हारी दीवार से मिट्टी का एक छिलका तक नहीं उतरा है।'

निककू फिर भी चुप रहा तो काली प्रीतो से कहने लगा

काली तू पूछ कर बता दे। चाचे को शायद मर साथ बात करना पसंद नहीं है।

प्रीतो निककू को डाटती हुई बोली

अब बोलता क्या नहीं? क्या जमान गोता खा गई है?'

निककू ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। उसके हाठ फडफडाए और वह हारी हुई आवाज म बाला

मुझे पहले एसा लगा था कि तूने मेरी आधी दीवार भी काट दी है।'

एक बार फिर अच्छी तरह देखभाल कर अपनी तसली कर लो।' काली ने कहा।

निककू अब चुप बैठा रहा ता काली प्रसन्न भाव स बोला

या मुर्खा इनना समय बरसाद कर लिया। न कोई बान थी और न ही उमका कोई सिर पर।

काली न मुगररात हुए प्राण म कहा

'चाची भला तू मुझ दानी गाजियां क्या ना । क्या तू सनमुख तिल न मरा बुरा चाटनी है ?

'मैं तरा बुरा क्या चाटूंगी । तू तो मुझे अनाथ छोड़ना म भी क्या प्याग है ।' प्रीता न सिन्धु स्वर म कहा ।

ता फिर मुग रानी गाजियां क्या ना ?'

तू अपन चाच न साथ क्षण्ड जा रहा था । औरत का अनाथ आत्मी का लद ता होना ही है । मैं भी बोल पना ।

'मैंन चाच स कब क्षण्डा रिया है ? पूछ लो उमस ? मैंन तो उतरो ऊना गाल तक गही बोला ।

'यह तो पिछलग्गू है । जिमी न पढ़ा सिखा दिया होगा सिर पर चान्द बांध और लाठी उठाकर जब यह घर स निकला तो मैं समझी थी कि कही काम स जा रहा है । लेकिन मुझे क्या पता था कि यहाँ जामनाद बाँटा आया है । प्रीतो कराहती हुई बोली पता नहीं कह तिन कब आएगा जब यह भी काम पर जाएगा ।

काली कुछ देर चुप रहकर कहन लगा

चाची, अगर कहो तो काम शुरू कर दूँ ।'

प्रीता निक्कू की ओर दपने लगी । जब वह चुप रहा तो तीसरे स्वर म बोली

'तू भी मझ से कुछ बोला । फिर वह काली स कहन लगी

'यह तो गूगा हो गया है ।'

प्रीतो न एक बार फिर निक्कू स सली से पूछा तो वह भरी हुई आगन म बोला

मैं कब रोवता हूँ ? तेरी जगह है तू नम जी चाहे उम खोद ।

थोड़ी दर के बान निक्कू और प्रीतो अपन घर चले गए ।

काली और जीतू ने कुदालें उठा ली । जीतू अपनी कुदाल को मजदूती से धामता हुआ बोला

पहले निक्कू की दीवार के साथ बुनियात खोद ने । इसका कोई भरोसा नहीं है । यही घड़ी म सेर और पल म माशा हो आता है ।

काली जीतू की ओर अथ पूण नजर से देखता हुआ बोला

तू ठीक कहता है । पता नहीं फिर कब लाठी उठाकर आ जाए ।

काली और जीतू दोनों सिरों से एक-दूसरे के साथ शत लगाकर बुनियात

खोदन म व्यस्त हो गए और प्रीतो के बच्चे मिट्टी के ढेले उठाकर एक जोर फेंकन लग।

93

निककू और काली म सुलह सफाइ की खबर सुनते ही मगू आग बगूला हो गया। वह लाठी उठाकर जूता घसीटता हुआ निककू के घर आ गया। उस ममय निककू सा रहा था। मगू ने निककू की टांग झेंचोड़ी तो वह हडबडाकर उठ वठा। वह कुछ क्षणा तक मगू की ओर देखता रहा और फिर रेंघी हुआ आवाज म बोला

मगू बाजी चोपट हो गई। तरे कहन पर काम पर न गया और उधर से कुछ न मिला। घर म आटे की चुन्की तक नहीं है। पानी पो-पीकर सबके पेट म अपारा पड गया है।'

कुत्ते की ओलाद, तू सारी उम्र भूखा रहेगा। तेरे जसे आदमी को तो पानी भी नसीब नहीं होना चाहिए। मगू ने कडकती हुई आवाज म कहा।

मैंन क्या नहीं किया? जिस जगह काली ने निशान लगाए थे वहा घरना माररर वठा रहा। उसे गालिया ली और ललकारा लेकिन वह जवाब म मेरे सामने हाथ जोडता रहा। वह मेरी दीवार की धार हाथ भर अपनी जमीन छोरने के लिए भी तयार हो गया।

उसने तुम्हारे साथ धोखा किया है। तुमन बना-बनाया काम बिगाड लिया। तुम्हारी जगह मैं हाता तो पाच दस रुपये जरूर बगूल कर लेता। मगू निककू की धार घृणा भरी नजरों से देखता हुआ बोला।

रुपय का जिक्र सुनकर प्रीतो चार गइ। उसने सोचा कि काली का टुक रुपया से भरा हुआ है। इमीलिण प्रतापी दिन म पचास बार उसका ताला टटालती है। वह मगू के पास आ पडी हुई और निककू के मुह म हाथ दती हुई बोली

इम माए को तो सारी उम्र काम करना न आया, अब कस जाणगा। लोग बिगडे गेल बना गते है लेकिन यह बना हुआ खेल बिगाड देगा है। मेरी तो

घरती धन न अपना

९१

एगो किस्मत पूटी है कि रखा भी नहीं मिलता । यह मर जाए तो घर में एन नफर तो बम हा ।'

फिर वह मगू की ओर मुड़ती हुई तीग स्वर में बोली

तू नी तो इग सलाह दवर आप चौधरी की हवेली चला गया ।

मगू न प्रीतो की आर धूरकर दया तो वह फिर निक्कू पर बरसन लगी मोया उछलता बट्टन है । लेकिन पानी की शाग की तरह बठ भी जली जाता है । वाली ने आ चार मीठी बातों की ता यह उसकी बुनियात तक घोलन पर तमार हो गया ।

यह सुनकर निक्कू भडक उठा और प्रीतो की सात पुस्तों को एक ही गाली में पिराता हुआ बोला

तू उस पुत्तर पुत्तर बह रही थी । उस छाती के साथ लगाने पर तुल्लो हुई थी मैं तरी बरतूता का अच्छी तरह समझता हूँ ।

मगू ने जब देखा कि वे दोनों आपस में ही उलचने लग है तो वह उह धामोश करता हुआ बोला

'टोकरी से गिरे हुए बेरा की तरह अभी कुछ नहीं बिगडा है । अभी आधी बुनियात खदी है । लोग तो अमारत बन जाने पर भी सगडा घडा कर देत है दोपहर के बाद जब काली काम शुरू करने आए तो तुम पहले ही उस जगह घाट विछाकर बठ जाना । बाट में मैं अपन-आप सभाल लूंगा ।

मगू निक्कू की प्रतिक्रिया जानने के लिए उसकी ओर देखने लगा । निक्कू को मगू की बात पसंद नहीं आई थी और वह उसकी ओर अविश्वास से देखने लगा । वाली के साथ सगडे का ख्याल आता तो उसका दिल दहल जाना लेकिन जब रूपया की ओर ध्यान जाता तो उसकी हिम्मत बंध जाती । जब मगू न उसे असमजस में देखा तो उसको बध में शकोडता हुआ बोला

तू मद है मर्दों जैसे काम कर ।

यह तो सिफ बच्चा की पलटन तयार करने के लिए ही मद है । बाकी यह तिनका भी तोडेगा तो इसकी चाह दद करने लगती हैं । प्रीतो ने निक्कू का मुह चिडात हुए कहा ।

निक्कू न धूरकर प्रीतो की आर लखा और हकलाता हुआ बोला

तू चहता है ता एक धार फिर कर देखता हूँ । लेकिन तुम वहा रहना ।

जगर सुमन मगन मार लिया ता रात को दाह (शराब) पिलाऊगा ।

'शराब का नाम सुनकर निक्कू की जान में जान आ गई और वह घाट से उटना हुआ था ।

‘अगर शाम तक खुदी हुई बुनियाद भी मिट्टी से न भर दी तो मुह पर थूक देना ।

निककू मगू के सामने ही सिर पर चादर लपटने लगा तो वह खुश हो गया और बार-बार खँखारता हुआ वदमस्त साँड की तरह गली में आ गया ।

दिन ढलने के बाद जीतू को साथ लेकर काली बुनियाद खान के लिए आया तो निककू पहले से ही सिर पर चादर बांधकर और हाथ में लाठी पकड़े हुए वहाँ बठा था । यह देखकर काली का माया उनका लेकिन वह मुसकराता हुआ नम्र स्वर में बोला

‘चाचा, धूप में क्या बठा है । उठ, तुम्हारी खाट छाँव में बिछा देता हूँ ।

उसके नम्र शब्दों से निककू का हृदय निश्चय कमजोर पड़ने लगा लेकिन रूपा और शराब का ग्याल आने ही उनकी फिर से हिम्मत बँध गई और वह सीधे स्वर में बोला

‘सबसे तुमने धोखे से आधी बुनियाद खो ली है । अब नहीं खादन दूंगा ।

जीतू भी काली के पास आ गया और उसे कंधे से पकड़ाकर लाया हुआ पूछने लगा

‘चाचा निककू क्या कह रहा है ?’

काली ने बताया तो वह हँसता हुआ निककू से बोला

‘चाचा धक्का का ठट्टा अच्छा नहीं होता । उठ, काम करने दे ।’

निककू जीतू को मोटी-सी गाली देकर बागा

‘चला जा यहाँ से बजर की ओलाद । मेरे मुह लगा तो जमीन में जिन गाड़ दूंगा ।’

वह खिल-खिलाकर हँस पड़ा और काली से बोला

निककू चौधरी से पूछा आप ही बात कर । मुझे तो जमीन में जिन गाड़ दान की धमकी दे रहा है ।

काली ने निककू के पास जाकर बहुत गम्भीरता से कहा

‘चाचा, क्या समय बरबाद कर रहा है । चलो उठ यहाँ से मैं तुम्हारी तरफ आधा हाथ जमीन छोड़ दूंगा ।

तू जगह छोड़ने वाला कौन है ? तरी हैसियत ही क्या है ? बात तो ऐसे करता है जिस मरगा का मालिक है । निककू ने काली की खिल्ली उड़ाते हुए कहा ।

‘चाचा इस तरह तो वे लोग भी पगडा नहा करते जिन्हें मरव्य बाटन हान है । अगर तुम्हें यह शक है कि मैं तुम्हारी जमीन खा रहा हूँ तो मुल्के

घरती धन न अपना

की पचायत बुलाकर फसला कर ले ।

मैं किसी पचायत का नहीं जानता । एब तो मेरी जमीन खा रहा है आर ऊपर से धींस दे रहा है । निक्कू ने ऊँचे स्वर में कहा ।

उसकी आवाज सुनकर अपने दरवाजे की जाट में खड़ी प्रीतो बाहर निकल आई और थोली फलाकर काली का सयापा करने लगी । चौगान में बरी के नीचे बठी चाची प्रतापी को खबर मिली तो वह प्रीतो के सारे कुटुम्ब को गालिया देती हुई वहाँ आ गई । दोनों के बीच लड़ाई घास में लगी आग की तरह भड़कने लगी और पल भर में सारा मुहल्ला इकट्ठा हो गया । मद तकिये से दौड़कर वहाँ पहुँच गए ।

काली निक्कू को खाट से उठाने की कोशिश करता हुआ बोला

चाचा तू यहाँ से उठ तो सही । मैं अभी तेरे साथ फसला करता हूँ ।

अब यहाँ से मेरी लाश ही उठेगी ।' निक्कू उसका हाथ झटकता हुआ बोला ।

'चाचा लाश उठे तो तेरे दुश्मना की । काली उस फिर उठाने की कोशिश करने लगा तो निक्कू चारपाई के साथ पहले से भी ज्यादा सटकर बैठ गया । काली ने जब देखा कि निक्कू झगड़ पर उताव है तो वह क्रुद्ध स्वर में बोला

जा जाकर अपने वकील को बुला ला । मैं उसके साथ बात करूँगा ।

काली की इस बात पर लागा का भीड़ में जोर का ठट्ठाका मूज गया ।

इतनी देर में बाबा फत्तू भी वहाँ पहुँच गया और निक्कू की खाट पर बैठता हुआ बोला

निक्कू जब तू बच्चा नहीं है । कल को मेरी लडकी की शादी हो जाए तो साल-दो साल में तू दोहते-जोहती वाला हो जाएगा । अब से काम ले झगड़े फिमाद में क्या रखा है ।

'तू बौन है भर मामले में दखल देने वाला ? बुडगा मरघट तब पहुँच गया है लेकिन चौधरे से बाज नहीं आता । निक्कू ने बाबू फत्तू का घाट से धक्का दत्त हुए कहा । वह गिरने लगा जिन पास खड बतू ने उस में भाल लिया ।

'मद की जवान कोई चीज होती है । सबर अच्छा भला मान गया था अब फिर मुबर रहा है । यह तो जत का पार है । बतू ने टाररा फेंकत हुए कहा । बई लागा ने उमरा समयन किया । वहाँ मौजूद लागा का अपने विरुद्ध दखल देकर निक्कू घमरा गया । लेकिन प्रीता उम हीमला इन के लिए गान के बच्च के मूह से निम्नान छुटाकर बानू लहरानी हुई गालियाँ देने लगी ।

जब बाबा फतू जमाने को बोसता हुआ वहा म जाने लगा ता जीतू निक्कू के पास जा कर बोला

चाचा भलमानसी मे उठ जा वरना मैं खाट समेत तुम्हें गली म फक दूगा ।

निक्कू ने गाली देते हुए जीतू की ओर लाठी लहराई लेकिन काली न जाग बढकर उसको सिर से पकड लिया और उसके हाथ स घीचकर एक आर फक दिया ।

‘चाचा तू एक झापड की मार नही है । मैं जितनी नर्मी दिखा रहा हू तू उतना ही सिर पर चढता जा रहा है ।’

निक्कू ने काली की लाल आखें देखी तो नजरें नीचे चुका ली । वह मोच रहा था कि काली को उत्तर द कि उसे मगू की आवाज गुनाई दी । वह छाती तानकर बोला

‘मैं अपनी जगह म बठा हूँ मुझे उठाने वाला तू कौन है ?’ काली निक्कू की ओर बढने लगा तो मगू उसे ललकारता हुआ बोला

‘खबरदार जा चाचे निक्कू की ओर कदम बढाया फिर वह उपस्थित लोगो को सम्बोधित करता हुआ बोला

निक्कू को कमजोर जानकर हर कोई उस पर धौंस जमा रहा है ।

मगू की शह पाकर निक्कू भी गेर हो गया और खाट पर खडा होकर बोला

अगर कोई इम तरफ कुदाल लेकर आया तो गदन तोड दूगा ।

प्रीतो भी निक्कू के समीप आ गई और गाद म रो रहे बच्चे का चुप कराने के लिए उसके मुह म पिस्तान दती हुई बोली

‘अगर किसी न हमारी जगह की ओर देखा ता खून पी जाऊंगी ।

काली ने जब देखा कि वात हद से बढती जा रही है तो वह कुदाल फेंक कर निक्कू के पास आ गया ।

चाचा, तू किसी की शह पर क्या झगडा कर रहा है ? अपना बुरा भला आप सोच ।’

जीतू न भी निक्कू को यही सम्मति दी तो मगू उस डांटता हुआ बोला

‘तू कौन है बीच म बोझ वाला ? बडा पच बना फिरता है । मा सारा दिन दर-जर से भीख मांगती है और बटा लागो को सिक्खया (मम्मति) द रहा है ।

‘तु वहाँ का पच है ? सारा दिन चौधरी के जूते चाटता है और यहाँ आकर रोप गाँठता है । क्या पिछली मार भूल गया जो फिर उछलन लगा ह ।’

घरती घन न अपना

जीतू । मगू का मुँह पिटा। तब कहा ।

मगू गान्धियाँ लगा हुआ लगी उगार कर जीतू की आँसू बगल में छिपा बाँधा।
तोता ब चींभ म आ गया और मगू ब गाना। छाया ताकत गूदा हो गया ।

‘यह शगडा मर जीतू पाप निक्कू ब चींभ म है । अगर मू लगत लगा
ता यारी गान भी लगा करमे । हर जगह चौधर मरती तहाँ हाँसि ।

रोधत की कर गता है जिग दुग आया है । दि लंगूना निक्कू की जग
म वात म म बुनियात गाना है ।

मि गानूना । वाती । कुनाउ उगती । निक्कू ने उगतो अरती आर
आन लगा गा उगत निक्कू लगत गया और यह गान म उठार एत थार जा
गया हुआ । वाती ने गान का मगीतर बुनियात म पर ह्या नि्या जीतू हारा
पर मगर उ मगा लगा ताकि कुनाउ ब दगा पर पात मडूना रह ।

मगू निक्कू की आँसू दगता हुआ ऊँच स्वर म बोला

‘दुख क्या रहा है ? आग बड़कर उम रोत द ।’

निक्कू अपना जग पर ही गूदा रहा तो मगू ने उग वाली की आँसू धवल
दिया । वाली ने उग बाजू स परडकर पीछे कर लिया । मगू न एत बार फिर
वाली की आँसू धका लिया ता निक्कू अपन-आपसी सँभाउ न सवा जीतू ल
घडाता हुआ पकरी दटा के डेर स जा टकराया । उसन जोर स चींभ मारी
हाथ में मर गया ।

निक्कू को उठाया गया तो उसके माथे स धून वह रहा था । उसनो जहमी
देखकर सब सहम गए और धीरे धीरे पिसकने का चल करने लग । प्रीतो अपनी
छाती पीटती हुई विलाप करने लगी । माँ का रोती देखकर बच्चे भी रोने लगे ।
वाली न कुदाल फेंक दी और निक्कू को वहाँ से उठाकर छाट पर लिटा लिया ।
वह नडाल था और उसके चेहरे पर पीलाहट छा गई थी । मगू अपनी लाठी
पटकाता हुआ बोला

‘अब यहाँ से भागता नहीं । मैं तुम्हें हथकड़ी लगवाकर ही दम लूँगा ।’
यह कहता हुआ वह वहाँ स दौट गया ।

वाली ने सरसो के तल मे हल्दी मिलाई और निक्कू के माथे पर रखकर
ऊपर पट्टी बांध दी । उसके मुँह म पानी डाला । वह इद गिद मर्ने औरता
और बच्चा को पीछे हटाता हुआ निक्कू को पखा करने लगा । उसके सिरहाने
बठी प्रीतो कभी छाती पीटन लगती और कभी माथा । जब किसी ने कहा कि
मगू थाना बुलान गया है तो चाची का दिल घटने लगा और वह बेहाश हो गइ
चानो ने उसके मुँह म पानी डालकर और नाक बन्द करके गशी तोड दी ।

चाची न आवें खाली और दहाड मारती हुई बोली

‘हाय, भरे काली को जब धाना पनडकर ले जाएगा।’

वह फिर बहोश हो गई। उसका रंग हल्दी की तरह पीला हो गया। और हाठ एस बंद हो गए जस उट आपस म भी दिया गया हा। निक्कू की बराह प्रीता का बिलाप, चाची की बहोशी और कानी की घमराहट देखकर नाना की आवा से आंनू आ गए और उसके मुह से मगू के लिए बंद टुजा निकली। काली कभी चाची को हीमला देता और कभी निक्कू का हाल पूछता।

मगू चौधरी हरनाम सिंह की हबेली जाता हुआ छज्जू शाह को भी खबर देता गया। उसन रास्त म मिलने वाले हर ब्यक्ति का बताया कि काली न निक्कू का मार दिया है उसका खून कर दिया है। जिसने भी मुना वह अपने सब काम छाडकर चमादडी की जार भाग गया।

घाटी ही देर बाद मगू वापस आ गया और उपस्थित लोगो को ललकारता हुआ बोला

‘यहा स काई नही जायगा। पचायत आन ही वाली है।’

मगू बडा को गालिया देता और बच्चा को डाटता हुआ पाछे हटाने लगा। वह काली का नाम लिए बिना उस बन्दूत ऊँची आवाज मे घमकिया दे रहा था। लेकिन काली इनको अनमुना करता हुआ निक्कू को पखे से हवा करता रहा। मगू न जब चौधरी हरनाम सिंह और छज्जू शाह को गली म आत देखा तो जार जोर स बोलन लगा

‘चुप हो जाओ चौधरो जी जा गए हे।’

चौधरी हरनाम सिंह और छज्जू शाह के पहुचन पर काली पखा छोडकर एक ओर खडा हो गया। चौधरी हरनाम सिंह ने निक्कू क माथ पर पट्टी और उसक उपर तेल मिले खून का घन्ना देखकर काली की ओर यू नजरें उठाई जस उसे भस्म कर देना चाहता हो।

जब से तू गाव म आया है चमादडी म शरारत बहुत बढ गई है। पहले यही मुहल्ला था और यही लाग थे। लेकिन इनमे से कोई कान म डाने पर भी नही चुभता था। लेकिन जिस दिन से तून यहा कदम रखा है राज दगा फिसाद होने लगा है। कभी किमी को मारता है और कभी किमी का मिर फोडता है।

काली न चौधरी की ओर भरपूर जाखा से देवा और दृढस्वर म कहन लगा

‘शरारत पहले भी होनी थी लेकिन लोग चुपचाप सहन कर लत थे। मैं उस समय चुप नही रह सकता तू पानी मिर से गुजरन लगता है।’

घरती धन न अपना

काली ने य शब्द सुनकर चौधरी का बहुत क्रोध आया लज्जित छज्जू शाह उसका हाथ दबाता हुआ बोला

‘काली शाह बात क्या हुई है ? निककू का गिर बग पत्र क्या ?’

काली उत्तर दन लगा तो मगू बात म ही बोल पया । छज्जू शाह न उम निडक लिया ।

तुप रह, उसकी बात गुनन द । बात म तू भी अपनी गुना लगा ।

काली ने पूरी कहानी गुनाई तो चौधरी पृणपूण स्वर म बोला

‘इन कमीना के दिमाग म जरूर कोई कीटा होगा जो उस जमीन क लिए लड रहे हैं जो इनकी नहीं है । आत्मी किसी जायदान के लिए झगडा कर तो कोई बात भी है ।

‘चौधरी जी, काली अपन आपको पूरे गाँव का माजिक समझता है । मगू ने आगे बढत हुए कहा । काली उत्तेजित स्वर म बोला

मैं जमीन के इस टुकडे को भी अपनी जायदान नहीं समझता । मैं तो सिफ मलब का मालिक हूँ ।

‘तू पूरे मलबे का भी मालिक नहीं है । यह मिट्टी गाँव के छप्पड की है । चौधरी का क्रोध बढने लगा तो छज्जू शाह न फिर उसका हाथ दबा दिया ।

काली अगर निककू झगडे पर उतारू था तो तू चौधरी क पास जाना । अपने आप जबदस्ती फसला करने की क्या कोशिश की ?

शाह जी सवेरे यह बिलकुल मान गया था । जिसस जी चाह पूछ ली । सच पूछो तो यह सारी शरारत मगू की है । इसी ने निककू को उकसा और भडकाकर झगडा खडा करा दिया और फिर उस इटा के ढेर पर धक्का दिया और उसका सिर फोड लिया ।

यह झूठ है । यह निककू को गरीब और कमजार समझकर उसका हक मार रहा था ।

इस मुहल्ले मे सभी गरीब है । मेरे कौन से हल चलते हैं ? काली न कहा । मगू बहुत ऊँची आवाज म उत्तर दन लगा तो छज्जू शाह अपने काना पर दाना हाथ रखता हुआ बोला

मगू जाहिस्ता बोल यहा सब कानो वाले खडे है । फिर वह चौधरी स कहने लगा

निककू भी सिरफिरा है । अपना नफा-नुकसान आप नहीं सोचता ।

निककू खाट पर पडा कराह रहा था । उम विश्वास हो रहा था कि काली से उसे फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी । वह खाट पर लेटा चौधरी के पाव की

और झुकता हुआ बोला

'चौधरी जी मैं मर गया। मेरा सिर फोड़ दिया।'

प्रीतो विलाप करती हुई सब बच्चों को चौधरी के सामने खड़ा करके बोली
'चौधरी जी, अगर तेरे चमार को कुछ हो गया तो इन छोटे-छोटे बच्चों
का क्या हाल बनेगा?'

चौधरी हरनाम सिंह चुप खड़ा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था
कि क्या करे। उसे सारे मामले में काली का बहुत कम कसूर नजर आ रहा
था। वह वहाँ से चला जाना चाहता था लेकिन कोई फसला किए बिना जाना
असम्भव था। वह बेजारी से बोला

'शाह, इन कमीना को कैसे समझाया जाय कि लडाईं झगड़े में कुछ नहीं
रखा।'

छज्जू शाह बाबे फत्तू को देखकर बोला

तू मुहल्ले का बुजुग है तू ही इन्हें अवाल दिया कर।'

बाबे फत्तू ने अपने हाथ में सपतली सी लाठी जमीन पर रख दी और
काना को छूता हुआ बोला

'शाह जी निक्कू को तो रब जी भी नहीं समझा सकता। मैंने इसे समझाना
चाहा तो पजे झाड़कर मर पीछे पड़ गया। बाकी रहा मगू वह मेरे साथ
ऐसे बात करता है जैसे मैं छ साल का छोकरा हूँ। इस मुहल्ले में शराफत
नहीं रही। यहाँ अब लुच्चा लडा चौधरी और गुडी औरत प्रधान है।

बाबा फत्तू अभी अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि गली के मोड़ पर
किसी के गालियाँ देने की आवाज सुनाई दी। उस आवाज को पहचानकर
छज्जू शाह मुमनराता हुआ बोला

घडडम चौधरी आ रहा है।

चलो, हम चले, मुनसिफ आ गया है। चौधरी हरनाम सिंह ने कहा।

एक पतला लम्बा सा व्यक्ति हाथ में लाठी पकड़े हुए वहाँ पहुँचा तो लागा
ने रास्ता दे दिया। उसने कभर के गिद गज भर का साफा लपेट रखा था और
सिर पर सफेद पगड़ी बांध रखी थी। घडडम चौधरी का असली नाम नत्थासिंह
है। क्योंकि वह हर आदमी के काम में हस्तक्षेप करना अपना धर्म समझता है
इसलिए लागा उसे प्रायः घडडम चौधरी के नाम से पुकारता है। वह अपनी सब
जमीन बचकर खा चुका है। उसकी पत्नी विवाह के दो साल बाद बेओलाद
ही मर गई थी। नत्थासिंह को वानून और कचहरी दोनों का बहुत शौक है।
काम हो या न हो वह हर दूसरे तीसरे दिन कचहरी जरूर जाता है।

घरती धन न अपना

झूठी सच्ची गवाहियाँ देकर अपनी गुजर-बसर कर रहा है। सब लोग उससे डरते हैं क्योंकि वह मुहफट है और बुरी स-बुरी बात कहने से भी नहीं हिचकिचाता। वह बूटो में बठता है और जवाना में भी, चौधरिया में भी और कमीना में भी। इसलिए गाँव के बारे में सबसे ज्यादा खबर उस ही रहती है।

धडडम चौधरी को देखत ही प्रीतो दोहृत्यड मारकर रो पड़ी।

चौधरी तरे चमार को वाली ने मार लिया।

‘कौन वाली?’ धडडम चौधरी ने चारा ओर देखत हुए कहा।

‘मासे का लडका।’

धडडम चौधरी के जेहन में एक तस्वीर उभरी और उसकी जगह एक दूसरी तस्वीर ने ले ली। वह वाली को पहचानता हुआ बोला

क्या? तूने इसका सिर फोड़ा है? उसने निक्कू की ओर सवेत करते हुए कहा।

पता है इसमें दफा ३०२ लगती है। बहुत बड़ा जुम है। सात साल की कद हो सकती है।’

यह सुनकर वहाँ खड़े लोगों के दिल दहल गए। धडडम चौधरी की कानून की सूझबूझ से किसी को इन्कार नहीं था। वह बड़े वकीलो के बान बतरता था। वह फिर बोला

‘कद भी का मुश्किल जेल में लोहे की चक्की पीसनी पड़ेगी।’

पानो ने यह सुना तो उसका सास जहाँ था वही रुक गया। वह ऊँची आवाज में बोली

निक्कू का सिर वाली ने नहीं मगू ने फोड़ा है। इस आवाज को पहचानने के लिए कई लोगों की नज़रें औरतो के जमघट की ओर उठ गई।

धडडम चौधरी बोला

यह बयान तो मौका के गवाह का मानूम पड़ता है। फिर वह मगू की ओर देखता हुआ बोला

तूने इसका सिर क्यों फोड़ा है?

‘मैंन नहीं फोड़ा। इसका सिर फोड़ने वाला उधर तहसील्दार की तरह छानी चौड़ी करने खड़ा है। मगू ने वाली की ओर इशारा करते हुए कहा।

छग्जू शाह धडडम चौधरी को सारी बात बताने के लिए बोला

चौधरी नत्यामिह बात यू हुई है कि ।

चुप रह—बड़ा सफरपोश बना फिरता है। धडडम चौधरी ने छग्जू शाह का निक्कू लिया।

पहले मुझे दोग फरीका (पक्षा) की बात सुन दो ।

छज्जू शाह अपनी झोंप मिटाने के लिए बोला

चौधरी नत्यासिंह, मैं उनसे यही कह रहा था कि सुल्ह सफाई से काम लो ।

‘गलत बात है । सुल्ह सफाई से नहीं कानून से काम लेना चाहिए । वह छज्जू शाह की ओर धुरकर देखता हुआ बोला । छज्जू शाह ने चौधरी हरनाम सिंह का हाथ पकड़ते हुए कहा

चौधरी जी चला चलें । चौधरी नत्यासिंह आ गया है । वह इनका फसला करा देगा ।’

वे वहाँ से चले गए तो घडडम चौधरी ने जमीन पर जोर से थूका और निक्कू से पूछने लगा

‘तू उसे बुनियाद खोदने से क्या रोक रहा था ?’

चौधरी यह मेरी जमीन दबा रहा था । निक्कू ने हँधी हुई आवाज में कहा ।

जमीन दबा रहा था तो पटवारी के पास जाता । वह माप कर सही जमीन निकाल देता । सिर पर चार बाघकर झगडा करन क्या आया ? बुलवा दूँ पटवारी को ?

मेरे पास पटवारी की फीस के पैसे नहीं थे ।’ निक्कू ने सारा खेल चौपट होत देखकर बाबला करना शुरू कर दिया ।

फीस में दे दूँगा । एक बार फसला तो हो जाएगा । काली ने घडडम चौधरी की ओर देखते हुए कहा ।

वह दो रुपये लेगा ?’ उसने काली को घ्यात से देखत हुए कहा जैसे उसकी हैसियत का अनुमान लगा रहा हो । कुछ क्षण चुप रहने के बाद वह फिर बोला

यसे तो इस काम की कोई फीस नहीं है । लेकिन अगर फीस न दो तो पटवारी को कभी जरीब नहीं मिलती और कभी गाँव का नक्शा खो जाता है ।

काली न हाँ म सिर हिलाया तो घडडम चौधरी ने जीतू को पास बुलाकर रोब से कहा

‘दोड़कर पटवारी को बुला लाओ । मरा नाम लेना । हाँ, उस कह देना कि साथ जरीब और गाँव का नक्शा लेता आए ।’

सब लागो को पता था कि पटवारी इस काम का एक रुपया लेता है । लेकिन घडडम चौधरी ने दो रुपया कहकर अपना हिस्सा भी पक्का कर लिया था । जीतू के जाने के बाद उसने काली का कानून समझाया । फिर वह कभी

घरता धन न अपना

निक्कू को मालिश देना शुरू कर देता और बभी किसी से मजाब करन लगता । उसकी बाता पर लाग हँस रहे थे और वहाँ पर छाया हुआ तनाव तज़ी से कम हो रहा था ।

जीतू को अक्ल ही आत दगबर घडडम चौधरी ने पूछा
पटवारी नहीं है ?'

'चौधरी जी वह तो मिला नहा । पटवारी की चीकी पर ताला लगा हुआ ह ।

'लीलो रांड के चौबारे म बठा हागा । फिर वह पटवारी को गाली देता हुआ बोला

'साले स लीलो की ही गरदावरी खत्म नही होती । बुरे कामा से हटता नही और फिर तागत के लिए चुशते पाता है ।

औरता ने शम के भारे मुह परे कर लिए और मद हँसने लगे तो घडडम चौधरी भी मुसकराने लगा ।

आदमी हुशियार है । इस सफाई से गरदावरी करता है कि किसी को कानोकान खबर नही होती । लेकिन मेरे से कोई बात छिपी नही रहती । मैं तो उडती चिडिया के पर गिन सेता हूँ ।

घडडम चौधरी लोगो का मन बहलाने म ध्यस्त था कि जीतू जरीब लेकर वापस आ गया और उसे जमीन पर फँकता हुआ बोला

'पटवारी जी आ रह हैं ।'

जीतू अभी यह कह ही रहा था कि नाक को दबाता हुआ और धोती को मभालता हुआ पटवारी वहाँ आ पहुँचा । घडडम चौधरी उसे देखते ही ऊँचे स्वर म बोला

'यहाँ लोग एक-दूसरे का सिर फोड रहे हैं और तू चौबारे म बठा टाँगा पर मालिश करवा रहा है ।

गाँव के नक़ो म चमादनी के भावे के पुतर काली के मकान का निशा देखकर उसना रक्वा निवाल दे ।

पटवारी न नक़ो म कागी के मकान का निशान और रक्वा देवा और जरीब से मापकर बाता

कागी की जमीन निक्कू की जार आघा हाय निकलती है ।

यह सुनकर घडडम चौधरी भडक उठा और निक्कू का मोटी-सी गाली देकर बाता

'तू तरे बाप की तरफ आघा हाय जमीन निकलती है अगर वह कचहरी म मुक्कमा दापर कर देता तू अदर हो जाएगा । बग मूरमा बना

फिरता है। तिर पर चार्लर वाँघरर लडाईं करने निबलता है।' फिर वह कानी स बाला

'इसकी दीवार आध हाथ चौड़ाई तक गिरा दा। अगर यह पगडा करे तो मार मारकर इसकी हड्डियाँ तोड देना।'

काली न दा म्पय निहाले तो धडडम चौधरी ने आग बत्कर पकड लिए और उसे निक्कू की गीवार गिरा देन की तारीद करके पटवारी के साथ चला गया। मगू पहले ही खिमक गया था। निक्कू भी बग्हाता हुआ चला गया। प्रीना बच्चा का घसीटती हुई उसके पीछे-पाछे चल दी। धीरे धीरे कानी लोग भी घिसकन लम। सूर्यास्त तक वहाँ केवन्काली और चाची रह गए। वह उदास सा चाची के पास जा बठा। चाची की उखडी हुई साँस देखकर उसकी उदासी और भी घनी हाने गी तो वह बुनियाद खोन्ने लगा। जब इस काम म भी दिल न लगा तो वह चाची से परे हटकर जमीन पर ही बठ गया। उसे बार-बार ब्याल आ रहा था कि वह किन अरमाना के साथ गाँव आया था। उसका जी चाहा कि वह वापस चंगा जाए गाव से इतनी दूर कि वापस आन का ब्यालबस तडप बनकर रह जाय।

१४

काली को के पार बाजीगरा के कोठे की ओर जाने के लिए गली म जाया तो उस ताइ निहाली दिखाइ दी। उसने मले पल्लू के नीच कोई बतन छिपाया हुआ था और बहुत सभलकर कदम उठा रही थी। काली तज कदम उठाता हुआ उसक बराबर आनर ऊँचे स्वर म बोला

ताई !

जावाज मुनकर ताई निहाली चौक गई और उसन बतन को और भी मजबूती स पकड लिया। काली हँसता हुआ पल्लू की जोर सकेत करके बोला 'ताइ, इसम क्या थी है जो इतना छिपाकर ले जा रही हो ?'

नही काका मुझे तो थी देखे कई साँ वीत गए हैं। बस यह समझो कि जब जीनू पैदा हुआ था तज आधा सर थी खाया था। मैं तो थी का रग

घरती धन न अपना

१०३

और क्या था भूल गई है । लस्मी लाई है । लस्मी भी क्या चिन्ता पाती है । क्या जमाना आ गया है गाड़ी लस्मी दत्त समय चौधरानिया के हाथ परीक्षा लगत है । अब ता गाड़ी लस्मी यामत होनी जा रही है । ताई न बदन को पल्लू में पीना स विद्यालयर वाली को दिखात हुए कहा ।

'तू ता पाय पीता है । प्रतापी कहती थी कि तू लस्मी को मुह नहीं लगाता ।

ताई ऐसी बात तो नहीं । लस्मी मिले तो पिऊँ । जब मैं शहर में था ता राज लस्मी पीता था । यहाँ मित्रता ही नहीं । एक दो बार कोशिश की कि वही स दूध मिल जाय लेकिन कोई बन्दोबस्त नहीं हो सका । यावत तो हर चीज भीष की सुरत में मिलती है । और वह जबरदस्ती नहीं ली जा सकती । सोचता हूँ कि भकान बन जाय तो छोटी-मोटी गाय रखूँ । बागी ने उच्चक कर बदन के अदर झाँका ।

काका तू पसे वाला है । तू चाहे तो हल भी बना सकता है । निहाली ने मिट्टी के बदन का पल्लू के नीचे छिपात हुए कहा ।

'जीतू कई दिन से कह रहा था कि उसके अदर गर्मी पड गई है । नमक मिलाकर लस्सा पीने को कहता था । घर में नमक तो था लेकिन लस्सी नहीं थी । कल दस घण्टे में गई लेकिन मवने यह कहकर टाल दिया कि गर्मी से डँगरा का दूध सूख गया है । आज फतू चौधरी की घरवाली की सी मिन्नतों की तो उसने आधी कटोरी लस्सी दी ।'

काली उसके साथ भाग चलना रहा तो ताई निहाली को सदेह हुआ कि वही उसके घर ही न आ रहा हो । अगर ऐसा हुआ तो जीतू के हिस्से में आधी लस्सी ही आएगी । इस समय वह किसी दूसरे घर में भी जाना नहीं चाहती थी । क्योंकि जहाँ भी जाएगी उमसे पूछा जाएगा कि वह लस्सा कहाँ से लाई है । वह काली को अपने घर में आन से रोमने के लिए बोली

बाबा जीतू तर पास तो नहीं था । सवरे मुह अँधरे ही निकल गया था । अभी तक नहा आया । पता नहीं कहाँ चला गया है ।

तू कहाँ जा रहा है ?'

काली ताई का मनोभाव ताण गया और शरारत से मुमतराना हुआ बाग में भी जीतू को ही देखने आया था । अगर वह घर पर नहीं है ता मैं शरीरगत के शम हा आता हूँ । छन के लिए सिरफियाँ बनवानी हैं ।

ताद निहाली का घर आ गया ता उमन प्रवण करन हा झट में खराब बन कर लिया । जीतू के प्रति ताद निहाली के लान्-ध्वार के बारे में साबन्त

हुआ काली बाजीगरा के बोठा की आर बढ गया ।

चो के दूसरे किनारे के साथ साथ झखाड म स गुजरकर काली बाजीगरा के बोठा की ओर मुड गया । उनके थोडे दारी गाँव स अलग थग थे क्योकि वे बिल्ली, लोमडी और गीदड तब का मास खा लेत थे । यू तो गाव का प्रत्येक व्यक्ति उनसे परहेज करता था पर पंडित सतराम ता उनकी परछाई तब को सहन नही कर सकता था । लेकिन गाँव वाला ने उन्हें इसलिए बसने की आज्ञा दे दी थी क्योकि वे मिट्टी के खिलौने बनाने और कलाप्राजियाँ डालने के अतिरिक्त सिरकिया और तद भी बनात थे ।

युवक बाजीगर खुशिया और उसका चाचा रोडा अपन बोठा के पास खडे काली को देख रह थे । रोडे ने आँखो पर हाथ की छतरी बना रखी थी । उसने खुशिये से पूछा

‘कौन आ रहा है ? मैंने इसे गाव म पहले कभी नही देखा ।’

खुशिये ने कोई उत्तर न दिया और काली की ओर एकटक देखता हुआ पहचानने की कोशिश करता रहा । जब वह उनके निकट पहुच गया तो खुशिया प्रसनभाव से बोला

‘काली है ।’

‘कौन काली ?’

‘चमारा का काली ।’

‘चमारो का कौनसा काली ?’

‘वही जो गाव से भाग गया था । सुना है शहर से बहुत पसा कमाकर लाया है । खुशिय ने उत्तर दिया ।

‘बडा बाका जवान है । रोडा दो कदम आग बढ आया ।

काली जब उनके बहुत निकट पहुच गया तो खुशिया दौड पडा और उल्टी कलाबाजी खाकर उसके सामन जा खडा हुआ ।

‘काली, सुना क्या हाल चल है ?’

‘तू सुना—मजे म ही ना । काली ने खुशिय का हाथ पकड लिया और फिर रोडे की ओर बढता हुआ बोला

‘बदगी चाचा ।

‘बदगी । रोडे न भी काली का हाल चल पूछा ।

कुछ समय तक इधर-उधर की बातें करने के बाद काली बोला

‘खुशिय, आजकल सिरकिया बनात हो या काई और काम ध धा , कर लिया है ।

धरती धन न अपना

गाँव में आज तक क्या कभी बिसी का धंधा बदला है। सिरकियाँ बनाते क्या हल चलाने लगेंगे ? तुम्हें सिरकियाँ की क्या जरूरत पड़ गई ?' रोडे ने पूछा।

'काली मजान बना रहा है।' खुशिये ने बताया।

'अच्छा।' रोडा चकित-सा हो गया।

'पक्का मजान बना रहे हो या।

'बच्चा पक्का ही समझो।

कितनी छतें होगी ?

'एक डयोढी की एक काठडी की और आधी रसोई की।

कितनी शहतीर डालोगे ?'

'दो डयोढी पर दो काठडी पर और एक रसोई पर।

चार कम बीस सिरकियाँ लगेंगी। रोडे ने उँगलियाँ पर हिसाब लगाते हुए कहा।

कितने पैसे लग जाएँगे ?

जो जी चाहे दे देना। हम कौन से सेठ साहूवार हैं जो हिसाब बित्तब करेगे।

'फिर भी ?

वह जो दिया जो मन चाहे दे देना। लोग से वारह आन सिरकी लेते हैं तेरे से दस आने ले लेंगे। लेकिन सिरकियाँ बटियाँ दूँगा। रसोई की जगह तद (सूमठी की आता को मुखाकर बनाई गई डोरी) से गाँठूंगा।

काली आखिरी कोठे के पास खेल रहे बच्चा को देखने लगा। खुशिये का छोटा भाई बच्चा को कलामाजियाँ सिखा रहा था। उसके हाथ में छडी थी और जिम बच्चे की कलामाजी में बोर्ड टूटि रह जाती वह उसे उससे पीटता। काली उन्हें चस्पी से दपता हुआ बोला

खुशिये, अभी कलामाजी का काम बरत हो या छोड़ दिया है।

'जब बाजी देखने वाले ही नहीं रहें तो बाजीगरी कौन करेगा। बहुत जायम का काम है। हरामी को शौक है—एक दा वार चोट खान के बाद इमना भी शौक उतर जाएगा।

आठ साल पहले तो यह बटूगना (रिल्ली का बच्चा) सा था लेकिन अब लडका हो गया है। माहता जवान निकलगा। काला न उसकी आर ध्यान में देखते हुए खुशिये में पूछा

'कलामा नाम हरामी क्या रखा है ? तुम्हें कोई और नाम नहीं मिला था ?

वह तो चुप रहा लेकिन राडा खिलखिलाकर हँस पडा।

इसका वाप बचपन से ही इस हरामी बहकर पुकारता था। एक ता इस लिए कि यह शुरू से ही जगली गिरले की तरह शरारती था। दूसरे इसका रंग गोरा था। कहते हैं कि गोरा कमीन और काला ब्राह्मण दोना हरामी होत हैं। आहिस्ता-आहिस्ता इसका यही नाम पड गया। अब जब कभी इसका किसीस झगडा होता है तो यह बहुत रोब से कहता है कि तूने हरामी के हाथ नही देवे।'

रोबे न एक द्वार फिर जोर से ठहाका मारा।

काली जेब से एक रुपय का नोट निकालता हुआ बोला

'चाचा यह लो बयाना सिरकिया बनान का, बानी पसे सिरकियां बन जान पर दूगा।'

'यह क्या ? कोई देएतवारी है ? राडे ने कहा।

'नही बणतवारी की बात नही। इसका मतलब यह है कि बात पक्की हा गई।

यह क्या कागत (कागज) सा दे रह हो।' रोडा नोट को देखता हुआ बोला

'क्या शहर म यही चलत है ?'

'हाँ यही चलत है।'

'अगर रुपय का यह हाल हा गया है ता बाकी चीजा का क्या बनगा ?'

राडे ने उदास स्वर म कहा और फिर जल्दी मे अपन कोठे की ओर मुड गया।

काली चो पार करके मिस्तरी सतासिंह के तरखान (बडई की दूकान) की ओर चल पटा। तरखाना गाव क पश्चिम म बडे रास्त पर था। दो कोठियां थी जिनम से एक म वह अपना काम-काज करता था और दूसरी म रहता था। सामने छोटे से आगन म जामुन का पड था। सतासिंह प्राय इसी जामुन के नीचे बठकर अपना कामकाज करता था। उसका ऊँचे मुठल्ले म अपना जही मकान था लेकिन अकेला होने के कारण वह तरखान म ही रहता था।

उसका मुख्य काम गाव के काश्तकारा के लिए हल पजाली और कृषि सम्बन्धी दूसर औजारों के लडकी के भाग बनाना और उनकी मरम्मत करना था। इसके लिए उसे प्रतिहल रबी और खरीफ पर एक-एक मन अनाज मिलता था। राजगीरी के लिए वह अलग पसे लेता था।

काली जब तरखाने म पहुचा तो मिस्तरी सतासिंह आगन मे खडा था।

घरती धन न अपना

उताने तग और घुन्ना। ता रग्ग कच्छा पहत रग्ग था और गिर पर रग्गी रग का साफा बाँधा हुआ था। बाइली की दीवार क साय जठ रग्ग घूले पर तवा पडा था और पास ही प्रात म गूँघा हुआ आटा रग्ग था। बागी न मिस्त्री को बन्गी की ता वह दाड़ी के बाग। को उँगलिया म साफ करता हुआ बोला

‘आ आ, चमान्डी के रसि आ जा।

बाली मुसकरा दिया।

मिस्त्री जी ‘रोटी पनाओ लगे हो?’

‘हाँ भई, मेरी घरवात्री तो है नहीं जो मेरे त्रिए रोटी पकाएगी। मुन तो अपने हाथ ही जलाने पढत हैं।’

मिस्त्री ने थोडा सा आटा उठाकर तव के ऊपर लगाया। उसका रग पहले पीला होकर काला पड गया और फिर उसम धुआ उठने लगा। उसने रोटी बेली और तवे पर डाल दी। रोटी की भाप उसनी उँगलिया को छू जाती तो वह हाथ को झटकता हुआ सी सी करने लगता। एक बार उसके दायें हाथ पर ज्वाला भाप लग गई तो वह उगलिया को पाणी म डुबोता हुआ बोला

जो हाथ तेसी थारी और कुल्हाडा चतान के लिए धने हा उनसे रोटी कसे पकाई जा सकती है? मिस्त्री ने जोर स ठहाना मारा।

छ रोटियाँ पकाकर मिस्त्री ने तवा नीचे उतार दिया। चूल्हे म जल रही लकड़ी को राख म मसलकर बुचा दिया। उसम से अभी तक धुआँ निकल रहा था। धुआ उसकी आँखो म पड गया तो वह उहे मजता हुआ बोला

ब्याह के बिना जिदगी सुखगती लकड़ी की तरह है जिसम से सिफ धुआँ निकलता है जो आँखा म आसू तो ला देता है लेकिन गरमाइश नहीं पहुँचाता। उसने एक बार फिर जोर का ठहाना मारा और मिट्टी के मले-से बतन मे से अन्नार निकालकर रोटी पर रख दिया और लस्ती की गडनी पाम खीचकर बडी-बडी ग्राहियाँ मुह म डालने लगा।

बाली उसे ध्यान से देखता हुआ बोला

मिस्त्री क्या रोज हाथ जलाते हो। शादी क्या नहीं कर लेते? तरवाना भी भरा भरा लगेगा।

मिस्त्री ने ग्राही लस्ती के घूट के साय कण्ठ से नीचे उतारी और मुह भरकर गाली दी।

मरे लिए सारी दुनिया की लडकियाँ और औरतें बहनें या माएँ हैं। वह लडकी शायद मर चुनी है या पदा ही नहीं हुई जिसने साथ मेरा सयोग था।

मन्तागिह ने ‘रोगी खाकर सामान समेटकर अन्तर रखा और जूता पह

नता हुआ नर्दासिंह चमार को गाली देकर बोला

‘पता नहीं जूत में कील गाड़ देता है। जब पहनता हूँ पाव को काटता है।’

‘तुम अपनी कसर वहीं और निकाल देते हो।’ काली ने शरारत से कहा और फिर सन्तासिंह के बान के पाम मुह ल जाकर बोला

‘मिस्तरी जी तुम्हारा नर्दासिंह की लडकी पाशो के साथ क्या रिश्ता है?’

‘वही जा कुत्ते का कुतिया से होता है। काली—रन (पत्नी) वह जो अपनी ब्याहता हो। उसे सिर पर चढाओ या पाव के नीचे दबाकर रखो—वाई उँगली उठाने वाला नहीं। लेकिन पराई जनानी (स्त्री) तो मुहजार घोड़ी की तरह हानी है पता तही कब बिदक जाए।’ सन्तासिंह आखें फलाता हुआ बोला।

कुछ क्षण तक मिस्तरी जूत में पाँव को हिलाकर कील की चुभन से बचाने का यत्न करता रहा और फिर दाढ़ी को खुजाता हुआ काली से बोला

‘मुनाआ, इधर कसे आना हुआ?’

‘मिस्तरी जी, मेरा इरादा पक्का भवान बनाने का है। चारा बुनियाद छोड़ ली है।’

अच्छा-अच्छा, निकवू के साथ तुम्हारा ही झगडा हुआ था। मुझे नन्द सिंह ने बताया था कि काली और निकवू में झगडा हो गया है। उस समय मुझे समय में नहीं आया कि तारा नाम ही काली है। सच्ची बात पूछो तो गाँव में कुत्ता और चमारों की पहचान रखना मुश्किल है। जात जात रहते हैं ना। सन्तासिंह ने हँसते हुए कहा

‘अच्छा भवान बना रहे हो।’

‘मिस्तरी जी क्या तुम्हारी नजर में चमार और कुत्ते बराबर हैं?’

सन्तासिंह ने उसे क्रोध में देखा तो उसका कंधा थपथपाता हुआ बोला

‘मैं तो ठट्टा कर रहा था। तू बुरा मान गया। मुझे को धूँ दे और बात कर।’

काली का अपने क्रोध पर काबू पान में कुछ समय लगा। वह अपने आदर बल खाता रहा। जब मिस्तरी ने उस वरुँ वार विश्वास दिलाया कि उसके मुह से यह बात सहज ही निकल गई थी तो काली उदास स्वर में बोला

‘मैं पक्का भवान बनाना चाहता हूँ।’

‘जूरर बनाओ।’

‘या तो तुम आप बना दो या किसी और राज का पता बना दो।’

का ताबीज बाध रखा था। दाएँ हाथ की कलाई पर अपना नाम और राना पर एक ओर हनुमान की तस्वीर और दूसरी ओर एक परी की तस्वीर खुदवा ली थी। उसके कपड़े हमेशा तल से भरे रहते थे और वह यूँ चलता था जैसे अपनी ताकत के बौझ तले दबा जा रहा हो।

लच्छो ने धूमकर उसकी आर देखा और जल्दी-जल्दी तमले की जार बढ गई। हरदेव ने एक दूसरा गीत गाना शुरू कर दिया—

‘होली टुरनी बाकिए मुटयारे पैर मोच खा जाएगा।

हरदेव को अपनी उपस्थिति का अहसास दिलाने के लिए दीवानखान के चबूतरे पर बठा हुआ मगू जोर जार से खासने लगा। हरदेव उस देखकर ऊँची आवाज म बोला

‘मगू तरे गल म क्या फँस गया है। नहीं निकलता तो डडे से निकाल दू।’

मगू चबूतरे स उठकर हरदेव के पास आ गया और खी-खी करके हँसन लगा। हरदेव ममन गया कि मगू न सब-कुछ देख लिया है। वह नोव भरे स्वर म बोला

‘गधे की तरह क्या हिनहिना रह हो?’

मगू उसे क्रोध मे देखकर चुप हो गया और कुछ क्षणा के बाद उसके निबट जाकर गोपनीय स्वर म बोला

‘चौधरी, यह प्रीतो की लटकी लच्छो है।’

हरदेव हैरान होकर उसकी ओर देखन लगा। मगू की बात उसकी समझ म नहीं आई।

‘सीधी तरह बात कर। साला बुयारतें डालता है।’

मतलब यह है चौधरी हरदेवजी यह प्रीतो की लटकी लच्छो है।’ मगू ने एक एक शब्द पर जार देते हुए कहा।

‘वह तो मुन लिया। कुछ आगे भी कहो।’

‘चौधरी, क्या तुम प्रीतो को नहीं जानत।’ मगू हरदेव के सामने खडा होकर बोला।

‘जानता हूँ।’

तो इसको भी जानो। यह उमी घोडी की बछरी है जिस पर कभी बडा चौधरी बहुत मेहरबान था। मगू हँसन लगा।

हरदेव ने मगू की ओर दखा तो वह और भी जोर स खिलखिलानर हँसन लगा।

मैं ही क्या दूंगा।

‘शिहाड़ी का बितान पास लाओ ?’

‘जो बारी राज सत है। आजकल गया गया डेढ़ गया शिहाड़ी का चलता है। मैं सवा रुपया ल दूंगा।’

ठीक है। क्या स काम शुरू कराओ ?’

जब तुम पहा मैं तो इस समय भी तयार हूँ। आजकल पुगन ही फुसत है। तरघान पा काम मंगा है।

‘कल स ही गुरु कर दो।’

ठीक है। कल सबर जा जाऊंगा। गारा तयार रखना। इटा पर पानी छिड़क देना।

सतासिंह वाली की ओर ध्यान स देघने लगा। जब वह चलन लगा तो उस रोजता हुआ बोला

वाली, तरे साथ एक बात करनी थी हम जहाँ राज का काम करत हैं दोपहर की रोगी और शाम की चाय वही घात-पीत हैं। तरे घर म रोटी तो खा नहीं सकता इसलिए तुम रोगी चाय के पसे अलग दे देना। चार आन हागे।

वाली बुझे हुए मन से तरघाने स बाहर आकर बड़े रास्त की ओर बढ़ गया।

१५

लच्छो सिर पर टोकरा उठाए हवेली के अंदर दाखिल हुई तो चौधरी हरनाम सिंह का भतीजा हरदेव दीवार के साथ घोड़ी की ऊँची खोर पर बैठकर उसकी आर दपता हुआ लहक लहककर गाने लगा—

तरी हिक त आलना पाया नी जगली बबूतर ने।

हरदेव २०-२१ साल का बाका जवान मुबह सवरे बाजीगरो के छोकरा से मालिश कराता और शाम की उनके साथ पकड़ मारता। उसने वाली रेशमी डार म साने का ताबीज बांधकर गले म लटका रखा था। बाएँ बाजू पर तावत

का ताबीज बांध रखा था। दाएँ हाथ की कलाई पर अपना नाम और राना पर एक ओर हनुमान की तस्वीर और दूसरी ओर एक परी की तस्वीर खुत्वा ली थी। उसके कपड़े हमेशा तल स भरे रहते थे और वह यूँ चलता था जैसे अपनी ताकत के बोझ तले दबा जा रहा हो।

लच्छो न घूमकर उसकी ओर देखा और जल्दी जल्दी तबले की ओर बढ़ गइ। हरदेव न एक दूसरा गीत गाना शुरू कर दिया—

होली टुरनी बाकिए मुटयारे पर मोच खा जाएगा !'

हरदेव को अपनी उपस्थिति का अहसास दिलाने के लिए दीवानखान के चबूतरे पर बठा हुआ मगू जोर-जोर से खाँसने लगा। हरदेव उस देखकर ऊँची आवाज में बोला

'मगू तेरे गल म क्या फँस गया है। नहीं निमलता तो ढडे से निवाल दू।'

मगू चबूतरे से उठकर हरदेव के पास आ गया और खी खी करके हँसन लगा। हरदेव समझ गया कि मगू ने सब-कुछ देव लिया है। वह क्रोध भरे स्वर में बोला

'गधे की तरह क्या हिनहिना रहे हो ?

मगू उसे क्रोध में देखकर चुप हो गया और कुछ क्षणा के बाद उसके निकट जाकर गोपनीय स्वर में बोला

'चौधरी, यह प्रीतो की लडकी लच्छो है।'

हरदेव हैरान होकर उसकी ओर देखने लगा। मगू की बात उसकी समझ में नहीं आई।

'सीधी तरह बात कर। साला बुधारतें डालता है।

'मतलब यह है चौधरी हरदेवजी, यह प्रीतो की लडकी लच्छो है।' मगू ने एक एक शब्द पर ज़ार देते हुए कहा।

वह ता सुन लिया। कुछ आगे भी कहो।'

चौधरी, क्या तुम प्रीतो को नहीं जानते। मगू हरदेव के सामने खड़ा होकर बोला।

जानता हूँ।'

तो इसको भी जानो। यह उसी घाड़ी की बछेरी है जिस पर कभी बड़ा चौधरी बहुत मेहरवान था। मगू हँसने लगा।

हरदेव ने मगू की ओर देखा ता वह और भी जोर से खिलखिलाने हँसन लगा।

‘चौधरी, अभी लगात बीरर की डाल मे साथ बांधा है या नही ? कही मूगे पहलवान की तरह तुम्हारा जिस्म भी न पट जाए ।

हरदेव ने अपनी चौडी छानी गोल राना, तगडे पट्टा को दया और दाना बाजुआ को अकडता हुआ बोला

‘चमारा कसरत की है धी पाया है दूध पिया है । तरी तरह बाजरे की मूधी रोटियाँ नही खाई हैं ।

तो क्या हुआ । इसका फायदा ता किसी चमारन को ही होगा ।’ मगू फिर खिलखिलाकर हसता हुआ बोला

‘चौधरी मैं हर रमज समझता हूँ, दाई स पट छिपा नही रहता ।’

हरदेव को गुस्सा आ गया और वह उससे उलपने ही वाला था कि मगू उसके तेवर भाँपकर हाथ जोडता हुआ बोला, ‘चौधरी जी, भापी देना । मैंने सब कुछ तुम्हारी भलाई के लिए कहा है । यह कबूतरी जगली नही पालतू है । दाना देखते ही बठ जाएगी ।

मगू की बातें सुनकर और उसका मसखीन चेहरा देखकर हरदेव का गुस्सा दूर हो गया और वह प्रसन्नभाव से बोला

‘वाह मगू तू बात पत की करता है ।’

मगू ने हरदेव के कंधे पर हाथ रख लिया और उसे दो कदम परे ले जाकर बहुत धीमी आवाज में कुछ समझाने लगा । हरदेव उसकी बात सुनकर परे हट गया । उसका रग डर से पीला पड गया था और हाठ कपकपा रहे थे ।

‘चौधरी होकर डरत हो ? मगू ने उसे छेड़त हुए कहा ।

डर की बात हरदेव पर चाबुक की तरह पडी । वह रोब से बोला

‘चमार, तू मुझे जानता नही । उसने मगू के कान में कुछ कहा और फिर दोना ने इतने जोर से हाथ मिलाए कि मगू बाट में कितनी देर तक अपना हाथ दबाता रहा ।

लच्छो गोबर फक्कर वापस जाई तो हरदेव ने उसे रोब से आवाज देते हुए कहा

‘यह ते तवेले की कोठडी की चाबी । वहाँ गेहूँ के (वालिया) सिटटे पडे है । उह ले जाओ । कोठडी का दरवाजा खुला रहने देना ताकि उसमे ताजी हवा फिर जाय ।

लच्छो की समझ में कुछ नही आया । वह अभी निणय कर भी न पाई थी कि उसका हाथ स्वयं ही चाबी की ओर बड गया और वह टोकरा फेंकर कोठडी की ओर चली गई ।

‘अच्छा चौधरी मैं चला। शिवारी को हीम खिलानी है। इससे वह खरगाज की यू फौरन सूघ लेता है। मगू दीवानखान के चबूतरे की ओर चल दिया।

चौधरी हरदेव घोड़ी की खार के पास खड़ा कभी मगू की ओर देखता, कभी फाटक की ओर और कभी लच्छो की आर। लच्छो ने तबेल की कोठनी का ताला खोल दिया तो वह आगे बढ़ने लगा लेकिन दा कदम चलकर रक गया और मगू की आर देखने लगा। मगू ने हाथ से उम्मे जल्दी जाने का मन्केत दिया, तो वह तेज तज कदम उठाता हुआ कोठडी की ओर चल दिया।

लच्छो दरवाजा खोलकर अन्दर चली गई। कोठडी भूस से भरी हुई थी। उसमें एक ओर कपास की छडिया पडी थी और उनके नीचे गहू के सिटटे। लच्छो ने सिट्टा तक पहुचने के लिए दरवाजे का एक पट बन्द कर दिया। उसने झुककर सिटटे उठाने के लिए हाथ बढाए तो उसके सीने पर दो हाथ रीगने लगे। उसके मुह से हल्की-सी चीख निकली और वह अपने आपको छुटाने के लिए हाथ पाव मारने लगी।

‘छोड दो मुझे ?’

लेकिन हरदेव की प्रिपत मजबूत थी और लच्छो केवल हाथ पाव मारकर रह गई। उसका अग अग डीला पडने लगा। वह भराई हुई आवाज में बोली

छोड दो मुझे वरना मैं चौधरी जी से कह दूंगी।

क्या कहोगी ? बात तो यू करती हो जैसे दादी सत्यवती हो।

कपास की छडियाँ कुछ देर तक उनके बोझ तले बडबडाती रही और फिर घोड़ी देर के बाद हरदेव कोठडी से निकलकर हवेली से बाहर चला गया। लच्छो वहाँ भूस पर बठी रही। लेकिन जब उमन बाहर किमी की आहट सुनी तो वह जल्दी से उठी और अपनी झोली सिट्टो से भरने लगी। झोली भरकर उसने दरवाजे के दोनो पट खोल लिए। वह अपना टोकरा उठाकर बगल वाले दरवाजे से चौधरी के रिहायशी मकान में चली गई। उसने टोकरा एक ओर रख दिया और मन को मारती हुई बोली, ‘चौधरानी जी, रोटी दे दो।’

आँगन में घेवरानी बदन साफ कर रही थी। उसने लच्छो की ओर देखा और फिर चौधरानी के बुलाने पर अदर चली गई। थोड़ी देर के बाद ही वह रात की बची हुई बासी राटिया लेकर बाहर आ गई। लच्छो ने झाली की बजाय अपने हाथ आगे पलाए तो वह आँखें फाड फाडकर देखती हुई बोली

‘तेरी झोली में क्या है ?’

कुछ भी हो तुझे क्या। तू रोटी दे मुझे।’ लच्छो ने हँसने का प्रयास

करते हुए कहा ।

‘यह सिटटे कहीं से लाई हो ?’

‘चौधरी हरदेव ने दिया है ।’ लच्छो ने अपने ताजा जखम पर फिर से नाखून लगा दिया । धेवरी ने लच्छो की ओर अधपूण दृष्टि से देखा और अदर चली गई । लच्छो घर जाने की तयारी कर रही थी कि चौधरानी बाहर आई और उसे सहन लहजे में कहने लगी ‘नी यह तूने क्या किया ? ये सिटटे तो बीज के लिए रखे थे । तू इन्हें क्या उठा लाई ?’

‘चौधरानी जी मैंने अपने-आप नहीं लिए । मुझे चौधरी हरदेव ने दिए हैं । कहता था इन्हें ढोरा लग गया है । लच्छो को पसीना आ गया ।

कहर की धूप पड़ रही है इन्हें डारा कैसे लग गया ? उस भोए मगू को कई बार कहा है कि तवेले की कोठड़ी का दरवाजा खोलकर हवा लगने दिया कर । चौधरी को पता चल गया तो मेरी शामत आ जाएगी । तू इन्हें जो उठाने गई मुझसे दाने माग लेती । फेंक इन्हें ।

चौधरानी ने लच्छो की ओर पाव की ठाकर से टोक्री बढात हुए कहा । लच्छो ने सिटटे टोक्री में डाल दिए और खाली झोली लेकर बाहर आ गई ।

१६

प्रीता बार-बार गली में झारती और लच्छो को कहीं न पाकर अन्दर जमीन पर बठकर फिर हाथ-हाथ करना शुरू कर देती । निक्कू घाट पर पटा पेट का दबाने लगता और जा मूत्र में आता यह दना । बच्च प्रीता के इद गिर्न रात हुए आन और मार ग्यार इधर उधर बिगड़ जात ।

निक्कू गिरता-पड़ता अपनी घाट में उठा और प्रीता के पाग बगना हुआ बाग मूत्र के मार पट में दन हाथ लगा है । अगर गुझ राती न मिया ता मरी आन निक्कू जाएगा ।

निक्कू का दगकर बच्च भा प्रीता के पाग आ गए । प्रीता अपने माथ का बाएँ हाथ में टाकती हुई बाग आन ता लच्छो न बगुन हा तर कर नी है ।

फिर वह रोटी मागते हुए बच्चा का पुचकारने लगी। लेकिन जब उनकी जिद बढ़ती ही गई तो वह उह गालिया देती हुई वाली, 'मोयो, सबर करो। मेरा मास मत नोचा।'

प्रीतो की गालिया और झिडकिया का बच्चा पर कोई असर नहीं पड़ रहा था। व पहले से भी ज्यादा चीखन लगे। प्रीतो जानती थी कि वे सच्चे हैं। सुबह स उहोन लस्सी की केवल आधी आधी कटारी पी थी।

प्रीता अलसाई हुई उठी और कोठड़ी में जाकर खाली बतन देखने लगी। बच्चे भी उसका पीछे कोठड़ी में आ गए। जब वह बतन उठाकर उसके अन्दर धाकती तो बच्चे भी बतन पर झुक जाते परन्तु उसे अपने पेट की तरह खागी पाकर मायूस हो जाते। प्रीता का जब सब बतन खाली नजर आए ता उसे श्राध आ गया। उसने चौड़े मुह वाले पातल के देगचा में नजर डाली तो उसमें मक्खन के जाले पड़े हुए थे। यह देखकर उसका श्राध और भी ज्यादा बढ़ गया। वह तीखी आवाज में बोनी 'मेरी मा ने देगचा तो यह सोचकर दिया हागा कि प्रीतो के सुसराल में पकवान पकत हाग। लेकिन यहां जब से आई हूँ भग ही भुनती देखी है।

उसने देगचा उलटाकर जमीन पर पटक दिया और गुम्से में थोली बच दो दस। हम इसमें कौन सी खीर पकानी है।'

उसका सजसे बडा बटा अमरु झट बाग उठा

'ए माँ मैं बच आता हूँ। बाजू ठठियार वर्तन लेता है।'

प्रीता ने श्राध में देगचा अमरु की आर लुटका लिया और वह उसे सिर पर रखकर दोना हाया में थामे हुए दरवाजे की ओर बढ़ गया।

जब वह दहलीज पार करने लगा तो प्रीतो के अन्दर जैसे कोई चीज झटका खाकर टूटने लगी। उसने सोचा कि यह देगचा ता उसकी मा की निशानी है। वह इसे भी बच रही है। यह सोचकर प्रीतो के मन प्राण काँप गए और वह आवाजें देती हुई अमरु के पीछे दौड़ गई। लेकिन अमरु उसकी आवाजा और गालिया को अनसुना करता हुआ बहुत आग निकल गया।

रास्त में अमरु ने सोचा कि एक दिन उसने गुरद्वार के महल की गडवी घुराकर बची थी तो उसके दम आने मिले थे। यह देगचा तो बहुत बडा है। इसके चोख दाम मिलेंगे। यह सोचकर उसके कदम और भी तज हो गए। प्रीतो गिरनी-पडती गली तब उसके पीछे आई और यह देखकर कि अमरु मुहल्ल में बाहर बुएँ की छपडा भी पार कर गया है वह अपन-आप से बोली, मुझ अब देगचा बचकर ही आएगा। उगना बस चले तो घर के मिट्टी के बतन भी

बच दे ।'

अमरू हापता हुआ बाबू ठठियार की दूकान पर पहुँचा और उसने सामने देगचा रखकर बोला, 'इसे तोलकर पसो का हिसाब लगाओ, मैं अभी आया ।'

अमरू दौड़ता हुआ छज्जू शाह की दूकान पर आ गया और तेज-तेज साँस खींचता हुआ बोला

'शाह जी चार आन का गुड, एक आने का नमक और चार आने का गेहूँ का आटा और एक डिब्बी सिगरेट ।'

पल्ले पसे भी हैं या खाली सौदा ही माँग रहे हा ?' छज्जू शाह ने अमरू को शक भरी नजरों से देखत हुए कहा ।

'तुम सौदा बाधो मैं अभी पसे लाया । अमरू फिर बाबू ठठियार की दूकान पर आ गया । बाबू ठठियार ने इस दौरान में उड़ी मारकर देगचा ताल दिया था । उसने अमरू के हाथ पर डेढ़ रुपया रखा तो वह तिलमिलानर बोला

'यह क्या दो रुपया तो दो इतना बड़ा देगचा है ।

मैंने पहले ही दबानी पयाग दी है । ऐस पुराने के तो कोई इतने पसे भी नहीं देगा और फिर तू भी तो वहाँ से चोरी करके ही लाया होगा ।'

बाबू ठठियार ने देगचे के पेदे पर हथौड़े से दो चार चोटें लगाकर उसका हुलिया बिगाड़ दिया और अपने आसन हर बठ बठ पीछे बोटबो म फेंक दिया । अमरू कुछ और वह बिना पसे मुट्ठी में दबाकर छज्जू शाह की दूकान पर आ गया ।

'शाह जी लाआ मरा सौदा । उसने अपनी मुट्ठी खोल दी ।

छज्जू शाह ने अमरू के हाथ में पस देने ता हैरान रह गया और तराजू संभालना हुआ बोला

वहाँ से चोरी करके तो नहीं लाया ? तरे पाम इतने पस वहाँ से आ गए ?'

शाह जी तुम्हें पसा में मतलब है । यह चोरी के हा या गाधी के । अमरू ने तीस स्वर में कहा ।

'बान ता टार है । मुझे तो केवल पसा से मतलब है ।

छज्जू शाह का अमरू का लटका बदन बुरा लगा लेकिन उगरी बान मन का भावार्थ । उगन सौदा तात्पर कागज के पुडा में बांध दिया ।

अमरू ने सिगरेट का डिब्बिया सामने में रखे ताद का हथौड़े का शस्त्रा दीवार में लटके हुए धिमाकार दिया दा ।

लटका पर अमरू का प्रीति उजावला हाकर बाधा

‘वह! लगा दी इतनी दर ? तरो राह दयत दयत मरी तो आखें पक गईं !’
लच्छो न उस कोई उत्तर न दिया और खाली टोकरा फक्कर बोली मे
यासी रोटिया निवालकर अपनी मा के हाथ म थमा दी और एव ओर हटकर
जमीन पर ही पठ गई । बच्चे रोटिया देखते ही उछल पडे और उन्होंने प्रीतो
को घेर लिया ।

प्रीतो उहे पीछे हटानी हुई वाली

गुड की डेली माग लेती । मकई या बाजरे के दान माग लेती । चौधरानी
को अपने बाप के बारे मे बताती कि वह जन्मी हुआ पडा है ।’

लच्छो ने फिर उसे कोई उत्तर न दिया । प्रीतो उसे चुप देखकर क्रोध भर
स्वर म बोली

‘मैं कुत्तो की तरह भौंक रही हू और तू पटरानिया की तरह कानो मे रुई
ठासे बठी है । मेरी बात का उत्तर क्यों नहीं दती ?’

‘छोटे चौधरी ने गदम के सिटटे दिए थे लेकिन चौधरानी ने वापस रखवा
लिए ।’ लच्छा ने प्रीतो को आर दखे बिना ही कहा ।

प्रीतो उसकी ओर ध्यान से देखती रही और फिर उसका दिल पसीजने
लगा । वह एकदम ही इस तरह चुप हो गई जैसे उसे गहरी चोट पहुंची हो ।
वह बुत की भांति खडी रही और बच्चे उसके हाथ से रोटिया छीनकर आपस
म लटने लग । फिर वह जैसे नींद से जाग उठी और बच्चा को गालिया देती
हुई उनस रोटी क टुकडे छीनन लगी ।

‘मोए घर मे कोई चीज रहने नहीं दत । आती बाद मे है खा पहले जाते
हैं । फिर वह लच्छो को सम्बोधित करती हुइ बोली

‘तुम्ह भी रोटी का टुकडा मिला है या नहीं ?’ और वह उसके उत्तर की
प्रतीक्षा किए बिना ही बच्चा को गालिया देने लगी ।

लकिन उस तुरंत ही एहसास हो गया कि गाली गन्गी का कोई फायदा
नहीं है । क्वाकि रोटियाँ बच्चो के पेट के अन्दर जा चुकी थी । कुछ देर तक
वह एव ही जगह पर खडी सांच म डूबी रही और फिर धीरे धीरे कदम उठाती
हुई बाहर आ गई ।

काली उनकी दीवार के माथ लगने वाली अपनी बुनियाद देख रहा था ।
प्रीता उसक निकट जाकर वाली, काली पुत्तरा, हमारी तरफ जगह विल्कुल
न छोडना । बरसात म पानी गिरन स दोना दीवारें बोदा हो जाएगी । तरो
दीवार तो पक्की होगी, इसलिए खडी रहेगी लेकिन हमारी कच्ची दीवार गिर
जाएगी ।’

‘तहा चाची, मी जाधा हाय जगह छो= दी है । जब वभी पवरा मवान यनाआ तो अपनी दीवार इधर बढ़ा लना । काली न घाली जगह को ध्यान न देखत हुए वहा ।

‘बाबा, पवरा मवान वीन वनाएगा ? यहाँ तो एक डग की रोगी नही मिलती । तरा चाचा घाट पर पडा है । तीन दिन स मेरा अग जग दद कर रहा है । लच्छो । प्रीतो आग कुछ वह न सकी और बात का रख बदलती हुई बोली

‘मैं बाहर निकली थी कि किसी के घर से आटे की चुन्बी माँग लाऊँ ताकि बच्चो के पेट मे कुछ तो जाए । फिर वह कुछ क्षण चुप रहकर बोली

‘सुना, तेरी चाची यहाँ है ?

‘यही है चाचे का अब क्या हाल है ? काली ने पूछा ।

कोई हाल नही । खाट पर पडा हाय हाय कर रहा है । प्रीतो न उत्तर दिया ।

कोई दवा-दारू किया या नही ?

‘दवा दारू ?’ प्रीतो ने काली की जार अजीब सी नजरों से देखा और खोखली हँसी हँसती हुई बोली

‘सबेरे से सब भूखे बठे हैं घर म । नसवार लेने के लिए भी आटा नही है । दवा दारू कहा स करूगी । प्रीतो की आँखे भर आइ और वह आँसू पाछनी हुई बोली

‘घर मे निकली थी कि किसी स बाजरे या मकई का आटा माँग लाऊँ ।

चाची से ले लो काली स्वय चाची की ओर बढ़ गया और उसकी खाट के पास जाकर बोला

‘चाची आटा रहा पडा है चाची प्रीतो माग रही है ।

इतने मे प्रीतो भी चाची के पास आ गई और उसका हाल पूछने लगी । चाची ने निक्कू का हाल पूछा तो तिनकर बोली

ठीक है उस समय तो उछल रहा था । अब दिना के लिए खाट के साथ बंध गया है ।

काली आटे की बडी बाल्टी भर लाया । गहूँ का आटा देखकर प्रीतो दग रह गई । उसने काली के सामने झोली फटा दी और फिर उस समटती हुई बोली

मुझे बाटी ही दे दो । झोली म डाला तो बहस सा जाटा उसके साथ चिपक जाएगा । वागी मैं लच्छो के हाय भेज दूगी ।

प्रीतो आटे की बाटी लेकर अपन घर जान क लिए गली म आ गई लेकिन

फिर पलट आई और चाची के पास आकर बोली

गुड हो तो एक ढेली दे दो । तरे देवर का दूगी । कहना है कि खडा होता हूँ तो चक्कर आ जाता है ।

'मरे घर म तो नाम के लिए भी गुड नहीं है ।' चाची घीम स्वर म बोली

'काली खाण्ड वाली चाय पिता है, मैं भी जब कभी दिल चाह उसी से मीठा कर लेती हूँ ।

प्रीतो हैरान सी सोचने लगी कि काली गेहूँ का आटा खाता है, खाण्ड पीता है, इसीलिए तो इतना अकलमद है । उसको यूँ महमूस होने लगा जस काली किसी देश का राजा हो ।

आटा लेकर प्रीतो अपने घर चली आई और लच्छो के हाथ मे बाटी थमाती हुई बोली

ले तू रोटी बना ले ।' वह स्वयं निक्कू के पास जमीन पर बैठती हुई बोली देख, काली गेहूँ का आटा खाता है, खाण्ड पीता है । एक तू है सारी उमर घर मे पडा खाट तोड़ता रहता है । अगर तू भी शहर चला जाता तो हम सब एण आराम स रहत ।' और फिर वह दीवार के सहारे अघलेटी अपने आप से बुदबुगान लगी

अच्छे कम किए हैं इन लोग ने जो सुख भोग रहे हैं ।

घर म गहूँ का आटा देखकर सब बच्चे लच्छो के गिद जमा हा गए जसे आज कोई विशेष चीज पक् नहीं हा ।

'मैं चार रोटिया खाऊँगा ।'

'मैं छ खाऊँगा ।

'मैं सब खा जाऊँगा ।'

बच्चे आपस म बहस करते-करत हाथा पाई तक पहुच गए ।

इतनी देर म अमरू भी देगचा बेचकर सामान खरीद लाया । प्रीतो ने उसकी झोली को ऊपर तक भरे दखा तो चीखकर बोली

मोया, बच आया देगचा ? जब तक पडा था तारी आँखा मे खटकता रहा । अब सवर हो जाएगा ।'

अमरू ने प्रीतो की बात को अनसुना करके कहा

गेहूँ का आटा लाया हूँ, गुड और नमक भी ।'

प्रीतो ने गुड का नाम सुना तो देगचे का भूल गई और चीखती हुई बोली कहाँ है गुड ? ला मुये द ।

अमरू ने दो ढेलियाँ रखकर बाकी गुड उमके सुपुद कर दिया । प्रीता १

गुड की एक ढेली लच्छा यी और फरत हुए कहा

ल पुतर, तू खा ले । तुझे ता गुड बहुत प्यारा है ।

प्रीतो की जत्र भी लच्छो पर प्यार आता तो बह उस पुतर बहकर पुकारती थी ।

बच्चे गुड पर टूट पडे और प्रीतो के चीखने चिल्लाने और मारपीट करने के बावजूद छीनकर इधर उधर भाग गए । प्रीतो की देगचा फिर याद आया तो वह अमरु को गालिया देती हुई बोली

‘माया घर उजाड है । येटा बाप से भी दो कन्म आगे निकल गया है । आज देगचा बेच आया है कल मा-बहन को बेच आएगा ।

लच्छो ने य शब्द सुने तो चौंक गई और आटा गूधती हुई साचने लगी कि मां घर से आटा उधार मांगने गई तो आटा ले आई । अमरु देगचा बेचकर आटा और गुड दोनों ल आया । लेकिन वह अपना सब कुछ लुटाकर भी खाली हाथ वापस आ गई ।

लच्छो की आखो से टप टप जामू गिरकर आंटे में मिलने लगे ।

१७

काली और मिस्तरी सन्तासिंह न मिलकर अगली दीवार दो ही दिन में काफी ऊपर उठा दी । सन्तासिंह दीवार के बरामद खडा होकर उसे अपने बंद से मापता हुआ बोला

‘यह दीवार तो अमर बेल की तरह ऊपर उठी है । जसल में राज के साथ गारा इट देने वाला आत्मी खुस्त हो तो काम बहुत जल्दी खत्म हाता है । अगर तिहाडी पर मजदूर लगाया जाय ता वह दिन में दस बार हुक्का पीएगा, बीस बार उभे प्यास लगेगी और पचास बार उस पशाव की हाजत महसूस होगी ।’

मिस्तरी जी तुम्हारा हाथ बहुत साफ है । कई मिस्तरी इट को तोड़ने में ही आधी घड़ी लगा दत हैं । तुम एक ही घोट में इट को हम तरह ताड दत हो जम आरी स बीरो गई हा । काली न मुमकरात हुए कहा । सन्तासिंह खुश हाकर बाग

'तूने जोड़े का गुस्द्वारा देखा है कि नहीं। यह गुस्द्वारा आठ मिस्तरिया ने बनाया है। लेकिन मैं अपना हिम्सा दो दिन पहले ही खत्म कर दिया था। जो दीवारें मैंने बनाई हैं व दूर से ही बलग नजर आती है। निशान साह्य का चबूतरा भी मैंने बनाया था। उस पर पलस्तर मैंने अपने हाथा से ही किया था। अब तक मलाई की तरह नम है।' सन्तासिंह दीवार का ध्यान से देखता और अहिस्ता-अहिस्ता उसके साथ साथ बढ़ता हुआ कह रहा था।

दीवार का निरीक्षण करने के बाद सन्तासिंह काली के बहुत निकट आकर गोपनीय स्वर में बोला

'एक बात पूछू—बताओगे ?'

काली ने हा में सिर हिलाया तो वह अपना मुह उसके कान के निकट ले जाकर बोला

'यह जो लडकी तेरे घर आती है मगू की बहन है ना ?'

'हां।'

तरे साथ इसका कुछ खास ही सम्बन्ध मानूम होता है। सन्तासिंह ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि काली के बदले हुए तेवर देखकर अपनी बात पलटता हुआ बोला

मेरा मतलब है कि यूँ ता गाव की हर लडकी बहन होती है लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि जानो सारा दिन तेरे घर में ही क्या घुसी रहती है वस काई हज भी नहीं है मन मिल की बात है जाट लोग तो सिर्फ अपनी सगी बहन की ही सौगंध खात हैं। यह कहकर सन्तासिंह काली की ओर देखने लगा और उसे खामोश पानर फिर बोला

'अपने मन की बात तो तू ही जानता होगा लेकिन वह लडकी बस तेरी आख के इशारे की इतजार में है और उस पासे ही पक हुए बर की तरह तरी गोद में आ जाएगी।' सन्तासिंह भी खी करता हुआ हँसने लगा और अपने अग अग को धक्काता हुआ बोला

क्या मगू का पक्का मकान बनाने का इरादा नहीं है ?'

काली ने सन्तासिंह की ओर ध्यान से देखा और उसके कंधे पर हाथ रख कर बोला

मिस्तरों तू याह क्या नही कर लेता ?

सन्तासिंह पहले तो खिलखिलाकर हँसने लगा आर फिर एकदम बहुत गभीर हो गया। काली ने अपनी बात फिर दाहराई तो वह एक एक शब्द को चवाता हुआ बोला 'अब व्याह क्या होगा। समय निकल चुका है। उसने निराशा भरी

घरती घन न अपना

लम्बी साँत छोड़ी और अपना मामान सौभाग्य लगा । वाली मिस्तगी के निरत जावर वाला

मरी बात का जवाब दो टाल गया रह हो ।'

सतासिंह ने तसी को हाथ म थाम हुए कहा

मरे बाप न मुझे तसी यामना और इन् रचना बचपन म ही सिपाना चुप कर दिया था । लेकिन पश्चर इसके वि वह मुझे घर बनाना सिपाना सके, वह इम दुनिया मे चल बसा । जब मुझे घर बनाने का ढग आया तो समय गुजर चुका था और मेरे माँ-बाप गीना म स बाई भी जिला नहा था ।'

'ता इसस क्या फक पडता है । किसी के भी माँ-बाप हमेशा जिला नही रहत । वाली ने कहा ।

तू अभी यह बात कह सारता है क्यावि तरी चाची जिंदा है । मरी एक मौमी थी उस मरे 'याह का पित्र था और वह एक दो जगह बातचीत चला रही थी लेकिन उसे भी मौत ने आ घेरा । सतासिंह कुछ क्षणा के लिए चुप रहकर फिर बोला

वाली दास लोग लडकी, लडके का 'ही देत बल्कि उसके माँ-बाप को देते हैं खानदान देखत हैं जब खानदान ही न हो ता देखने कौन आएगा ।' सतासिंह की उदासी गहरी होती जा रही थी और वह उस छिपाने के लिए खोखली हँसी हँसता हुआ बोला

'चलो आधी स ज्यादा उम्र गुजर गई है जो रह गई है वह भी गुजर जाएगी ।'

वाली भी कुछ उदाम हो गया । उसे चुप देखकर सतासिंह ने कहा

'आदमी के पास चार खेत हा तो जर्घी म लेटकर भी शादी करा सकता है लेकिन महनत मजदूरी करने वाले जादमी के सिर पर किसी का साया हो तभी शादी होती है ।

मैं तो अभी इस ब्रह्मण म नही पडा हू । वाली ने भयभीत स्वर म कहा और फिर मिस्तरी को ध्यान से देखकर वह बोला

तुम्हारी उम्र अभी इतनी ज्यादा तो नही है वि शाली न हो सके । तुम्हारा भाई अब भी जतन कर तो वही न-वही से रिश्ता मिला सकता है ।'

सतासिंह घणा भरे स्वर म बोला

नाहरसिंह क बारे म कह रह हा ? वह मेरी शाली करा चुका । भाभी ने तो उस इम तरह बस म कर लिया है वि वह वाकी मय रिफ्त भूल गया है । अब ता उस गीब से नाता ही ताड लिया । मीने पिछन साल उस चिट्ठी

लिखी थी कि मकान की छत खराब हो गई है। अगर कुछ मर्रा लो तो शहतीर और कड़िया बदन द उसने मेरी चिट्ठी का जवाब तक न दिया। मैं उनका पाम शहर गया और बात गुप्त की ता वह फिर भी चुप रहा लेकिन भाभी ने कोरा जवाब देते हुए कहा कि जिसे गाव के मकान में रहना है वही इसकी मरम्मत कर ले।' सतारसिंह और भी ज्यादा गभीर हो गया और उसकी बड़ी-बनी आँखें फल गईं। वह तल्लू से बोला

भाभी चाहती तो अपनी छाटी बहन का रिश्ता मेर लिए ले आती लेकिन उसे डर था कि मेरी शादी हो गई ता मैं अलग हो जाऊँगा या बार साथ भी रूगा तो उसके बच्चों की पलटन को पालन-पोसने के लिए अपनी कमाई खच नहीं चूँगा। इसलिए वह हमेशा टालमटोल करती रही लेकिन जब से वह शहर गई है उसन मरे ब्याह का खिन्न तक छोड़ दिया है। जब मैं मकान की मरम्मत के बारे में बात करन गया था तो मुझे कहने लगी कि उसके बड़े लडके और छोटी लडकी को गोद ले लू। इससे तुम्हारा कुल भी चरता रहे। मैंने उसे जवाब दिया था कि पराए तेल में कुल का दीप नहीं जल सकता।

काली कुछ दर सोचन के बाद बोला

मिस्तरी जी तुम्हारे पास तो पैसे की कमी नहा है। वही में औरत खरीद क्या नहीं लेते ?

इस काम में भी बहुत ठगी है। मुझे ता पचास रुपय मँवाने के बाद ही अकल था गई लेकिन कई लोगों ने इस काम में बहुत नुकसान उठाया ह। जोड़े के सरदार पूणसिंह का तो घर-बार ही लुट गया। वह एक औरत खरीद लाया। वह सात दिन उसके घर में रही और हर चीज की टोह ले ली। और फिर एक रात जब पूणसिंह जिला बवहरी गया हुआ था ता वह सारे घर में घाडू देकर मिट्टी तक उठाकर ले गई। पूणसिंह न थाने में स्पट दब कर रखी है। अभी तक ता कुछ पता नहा चगा।'

मिस्तरी जी, तुम्हारे साथ कस ठगी हुई थी ?' काली ने दिग्दर्शी लेत हुए पूछा।

छोडो इस बात को। सतारसिंह ने उवसाहट भर स्वर में कहा। परन्तु जब काली ने खिन्न पकड़ ली तो वह बागा

बावक के लाला बनारसी दाम का ता तुम जानन ही हो। मेरा उसके साथ बहुत देर से उठना-बठना है। उसका तीन मज्जिला मकान मैं ही बनाया था। उसी न एक आत्मीय का साथ तीन मो रुपय में सोना तय किया था। वह औरत बिघना थी लेकिन बच्चा कोई नहा था। अपनी ही जात पिरा

घरतो घन न अपना

दरी की थी। जो आत्मी उम भोग न कर म गीन गय करो भाग या उम। हमारे साथ कुछ इग दग न बागभीन की रि बनारमी गग रीग पाग आत्मी भी पय ग्य गया। उम आत्मी न बताया था रि औरत का गीन दरी स थीत बोग है। उमका बाग मर बुका है और मी का नाम जगन्ना और है। यह हमस पचाग गय बयाता स गया और तीन रि के बा भोग को साथ लाते का बायन कर गया। उमा आता गय भाग-गता बग रिग था। तीन रि न बा यह एन औरत को भा। साथ लाया और सारी बग पसरी कर ली। नाम को यह यह कहकर बागम बना गया रि तीन रि ब्याह की तैपारी क लिए चाहि। चौथ रि सवेरे जोड़े क गुग्गारे म आत्मीय कराया जागा। मी गुग्गारे क घायी का कह भाया और अघ-टाठ रगता रिग। चौथे रि सवेरे ही लाला बागरमी दाम और अपने गीन क चौधरी बूटासिह का साथ लेकर मी वही पहुँच गया। हमा नाम तत उता इ-द्वार रिग सतिन न यह आत्मी आया और न यह औरत ही आई। अगल रिन मी और बनारमी दाम उम आत्मी क गीन गल ता गही स पाग पला रि यह पहाय यही छानी मानी दूवान करता था और फिर एन रिन यह गाव की घेवर। की मुका लहरी को भगावर ल गया। उम आन तत पुलिग गरी पस गरी तो मुम उम गही तलाग कर सकोग। वाली दारा औरत यही हानी है जिस बाज-बाज क साथ सेहरे बाघनर बागत के साथ लाया जाए। बागी औरत और घोड़ी उसकी होती है जो इस पर सवार है। सन्तासिह अपने औजार संभालता हुआ बोला

‘अब मैं चलता हूँ जाकर अभी रोटी पकानी है और पाठ करना है।

वाली भी सन्तासिह के साथ बोरी म औजार डालने लगा। जब उसने अपना सब सामान समेट लिया तो वाली के कंधे पर हाथ रखकर बोला

‘बल्ग्या तेरी अभी उम्र है, वही ब्याह कर ले। चाची ने आँखें बन्द कर ली तो तुम्हे कोई नही पूछेगा। सरकारी साँड की तरह तुम्हें चारा तरफ स ठडे ही पड़ेंगे।’ सन्तासिह चाची को सम्बोधित करता हुआ बोला

‘चाची मकान बन जाए तो वाली की शादी कर देना।

चाची ने चारपाई से उठने की कोशिश करते हुए कहा

‘मिस्तरी जी मैं तो वह कहकर हार गई हूँ तुम इसे समझा दो। निकू की पत्नी प्रीतो अपनी भतीजी का रिश्ता ला रही है।’ सन्तासिह वाली के पान के निकट अपना मुह ले जाकर बोला—‘प्रीतो की भतीजी से ब्याह न करना। अगर वह अपनी बुआ जसी निकली तो तुम्हे अपन बच्चा की पहचान करना

भी मुश्किल हा जाएगा।' सन्तारसिंह बहुत जोर से हँसने लगा। काली भी पहले मुसकरा दिया लेकिन बाद में सजीदा हो गया। चाची सन्तारसिंह की हँसी से बे-मास अपनी बात जारी रखती हुई बोली

'यह एक बार हाँ बहे, मैं सात लडकियां तलाश कर लूंगी। इसकी उम्र के लडका के तो चार चार बच्चे हैं।'

इतनी देर में नानो आ गई और चाची का हाल पूछने के बाद दीवार की ओर दखने लगी। सन्तारसिंह ने ठंडी आह भरी और फिर ऊँची आवाज में काली से बोला

तू शादी क्या नहीं करता। जल्दी शादी करा ले ताकि चाची भी चार दिन बहू से सेवा करा सके।'

मिस्तरी जी, तू ठीक कहता है। अब मेरा आखिरी पहर है। इस शरीर का क्या पना है अब जवाब दे जाए।'

'चाची, जिसके ब्याह की बात हा रही ह।' नानो ने खुश होत हुए कहा।

मिस्तरी जी काली का ब्याह करने के लिए कह रहा है।' चाची ने उत्तर दिया।

'अच्छा—चाची जल्दी करो—हम दोल्बक पजाएंगी और किट्टा डालेंगी।' नानो ने और भी ज्यादा खुश होते हुए कहा।

ज्ञाना की बात सुनकर चाची मुसकरा दी और उसकी झुरियाँ आखा पर छा गई। काली चुप था। सन्तारसिंह नानो की ओर ध्यान में देख रहा था और उसमें नज़रें उसके कपडा को चीर जाना चाहती थी। वह नानो की बात सुनकर खिलखिला उठा और काली के कंधे पर हाथ मारता हुआ बोला

'यह लडकी ता ऐसे बात कर रही है जैसे तेरी बाग (पल्लू) पकड़ेगी।

सन्तारसिंह न बहुत जोर से ठहाका मारा और अपने औजारों की बोरी पीठ के पीछे लटकाकर गली में आ गया।

१८

मिस्तरी सन्तारसिंह के जान के बाद काली चाची और नानो दोनों से आख चुराता हुआ जल्दी-जल्दी काम समेटने लगा। उसने गारे की तगारी एक आर

घरती धन न अपना

१२५

रख दी, विपरी हुई इट इकट्ठी कर दी और बाल्टी में पड़े पानी से हाथ मुह धोकर चाची से बोगा

मैं शहतीरा का बदमास्त करने के लिए महाशय तीरथराम के पास जा रहा हूँ। सुना है उसने पास पुराने शीशम के शहतीरे हैं।'

महाशय तीरथराम की दूकान अब नाम मात्र ही थी। दूकान का दालान खाली पड़ा था। अब वह केवल भोग भोग सौग ही रखता था। दालान के पीछे कोठड़ी में एक आर कुछ बोरियाँ पड़ी थी और दूसरी आर लकड़ी के तख्त रखे थे। महाशय के तराजू और बाटा को जग ने घाना गुरु कर दिया था। उसके तीनों लडके शहर में मुलाजमत करते हैं। दोनों लडकियाँ की शादी हो चुकी थी। गांव में केवल महाशय और उसकी पत्नी रहती थी। उसने दो भैंसें पाल रखी थीं और वह उनके दूध का घी बनाकर अपने लडके को शहर भेज देता था। अपनी गुजर बसर के लिए महाशय छोटा मोटा काम करता रहता था। नई फसल निकलने पर अनाज खरीद लिया, गुड शक्कर की बोरियाँ रख ली और कहीं सस्ती लकड़ी मिल गई तो उसका सौदा कर लिया। उसकी दूकान पर समाचार पत्र आता था इसलिए सारा दिन खूब रोनाक रहती थी और वाद विवाद होता रहता था।

जब काली महाशय तीरथराम की दूकान पर पहुंचा तो डा० विशनदास और पादरी अचितराम वहाँ बैठे थे। विशनदास और महाशय बहस में उलझे हुए थे। काली ने तीनों की बदगी की तो कुछ क्षणा के लिए बहस बंद हो गई। विशनदास ने हुक्का भुड़गुडाते हुए काली के साथ गम जोशी से हाथ मिलाया। पादरी ने उसकी पीठ थपथपाकर आशीर्वाद दिया और महाशय ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्त की। डाक्टर विशनदास काली का हाथ दबाता हुआ बोला

काली तुम्हें रावि में आए हुए आज कितने दिन हो गए हैं लेकिन तू मुझे मिलने नहीं आया। मैं खुद चला आता लेकिन दूकान से फुसत नहीं मिलती काली दास बस एक मिनट।

डाक्टर ने हाथ लहराकर काली को रोका और फिर हुक्के की नय महाशय की ओर माडता हुआ बोला

महाशय जी इन्कलाब को न तुम रोक सकते हो और न ही पादरी जी। इन्कलाब तो चल्ती बात की तरह है जो धम के कच्चे विनारों को तोड़कर चारा आर फूट जाएगा।

पादरी ने काली का सम्बाधित करत हुए कहा
सुनाआ बटा कस हा।

'पादरी जी, ठीक हूँ।' वाली पादरी की ओर देखता हुआ बोला।

पादरी अचिन्तराम ठिगने कद का आदमी था। वह सफेद पगड़ी, सफेद लट्ठे की सलवार सफेद कमीज और चाहे गर्मी हा या सर्दी ऊपर लम्बा कोट पहनता था। उसके हाथ में हर समय चानी की मुट्ठी वाली छड़ी रहती थी। पादरी का चेहरा नहीं मुनी गुड़िया जैसा था और उस पर हर समय मुस कराहट खेलती रहती थी।

पादरी ने अपने चेहरे पर लम्बी चौड़ी मुमकराहट लाने हुए कहा

काली दास, सुना है तुम मकान बना रहे थे कि तुम्हारे पड़ोसी निक्नू ने झगटा खड़ा कर दिया ?'

अब ता फसला हा गया हूँ। पटवारी ने जरीब से पमायश करके मेरी जगह निकाल दी है।'

'बहुत अच्छा किया बेटा। ईसा मसीह की भां यही तालीम है कि पडासिया के साथ शांति से रहो। आसमानी किताब में लिखी हुई बातें सदा सच होती हैं। पादरी ने नम्र स्वर में कहा। काली तनमयता से पादरी की बातें सुन रहा था। पादरी फिर से बोला

'कभी-कभी मैं आप लोगों के मुहल्ले में जाता हूँ। ईसा मसीह का भी यही हुकम है। वैसे भी गरीब आदमी परमात्मा के ज्यादा नजदीक होता है। अजील पाक में लिखा है—'ऊँट का सूई के सुराख से गुजर हो सकता है लेकिन धनवान का स्वर्ग में गुजर मुमकिन नहीं है। पादरी कुछ क्षणा के लिए स्क्वोर फिर चला

तुम्हारे मुहल्ले का नदसिह है ना—वही जो जूत बनाता है। भला आदमी है। एक दिन वह मुझे बाहर सेता में मित्र गया और मेरा हाथ पकड़कर बोला—पादरी जी, मैं चमार नहीं रहना चाहता। इससे बचने के लिए मैं गुरु का अमृत चखा और सिख बन गया। लेकिन फिर भी रहा चमार का चमार। मुझे कोई तरकीब बताओ कि मैं चमार न रहूँ। पादरी की आवाज खरगोशी बन गई और वह काली के निकट हाकर बोला

'उम्के घर में कभी कभी जाता हूँ। उमें ईसा मसीह की बाणी बहुत प्यारी है। उसका बड़ा लडका दिल्ली के बड़े दफ्तर में भर्ती हो गया है। यह सब ईसा मसीह की मंहरबानी से हुआ है। वह सबका पवित्र पिता है वह सबके पाप अपने सिर पर ले लेगा। मैं किसी दिन तुम्हारा मकान देखने आऊँगा। जब कोई आदमी ऊँचा उठने की कोशिश करता है तो मुझे बहुत खुशी होती है।

महाशय ने पादरी को काली के सामने अपना प्रचार करते देखा तो वह विशनदास से जो अभी तब अपनी बात पूरी नहीं कर पाया था, क्रुद्ध स्वर में बोला

‘विशनदास जब चुप हो जा। हमेशा अपनी ना हाँका कर। तू कमिनिस्ट (कम्युनिस्ट) क्या बना है दिमाग चाट लिया है। फिर वह पादरी को सम्बोधित करता हुआ बोला

तुममें जोर विशनदास में एक ही एक है और वह यह कि विशनदास ऊँचा बोलता है और तू बहुत धीमा। लेकिन तुम दोनों जहाँ कहीं भी किसानों को देख लेते हो उस पकड़कर बँध जाते हो और दूसरा आदमी सुने-न सुने अपनी बाँसुरी बजाते रहते हो।’

पादरी महाशय की बात पर हँस दिया। काली मुसकराता हुआ बोला
पादरी जी मुझे बहुत अच्छी बातें बता रहे थे।’

‘बातों की कमाई तो खाता है—मीठी छुरा है, महाशय ने कहा।

मेरी बुराई करने वाले का भी ईसा मसीह भला करेंगे। पादरी ने महाशय की ओर देखते हुए कहा।

विशनदास ने जल्दी जल्दी हुकके के दो चार कश खीचे और उठकर काली का हाथ पकड़ता हुआ बोला

उठो अपनी दुकान पर चलत है। फिर उसने महाशय से कहा

मैं रात को आकर आपका इस समस्या की साइटिफिक प्योरी समझाऊँगा। वैसे लेनिन ने कहा है।

महाशय ने विशनदास की बात को बीच में ही काट दिया और पादरी की ओर देखता हुआ बोला

कभी कभी अपने ग्राम या मत्पुत्र का भी नाम ले लिया करो।’ फिर उसने विशनदास से कहा

तू जब भी मुह खोलता है तो तेरी काली जवान पर मारकस और लेनिन का नाम हाता है और जब यह पादरी बोलता है तो एक ही आवाज निकलती है और वह अजीब और ईसा मसीह की। विशनदास खिलखिलाकर हँस पड़ा और पादरी के साथ दूरान के चबूतरे से नीचे उतर गया।

गली में जाकर विशनदास ने काली से पूछा

महाशय का दुकान पर कस आया था ?

‘मकान बना रहा है उसके लिए शहतीर जोर बढियाँ दखन आया था।
विशनदास जा यह बनाया कि आर कामरेड से डाक्टर कम बन गए ?’

विशनदास हँस पडा आर फिर गभीर होकर बोला

राटी का बन्दोस्त भी तो करना था। खाली कामग्रेडी से बच्चा का गुजारा तो नहीं हो सकता। अब मैं पहले से ज्यादा काम करता हूँ। पहले मैं लोग के पास चलकर जाता था। अब लग मेरे पास चलकर आत हैं। मैं उह रोग का इलाज बताने के साथ-साथ गरीबी का इलाज भी बताना हूँ। अब गाव म पार्टी के कई समय बन गए हैं। ऊँचे मुहल्ले वाले चाननसिंह का लडका खेरसिंह, जो होशियारपुर कालिज म पढता था, अब पक्का कामरेड बन गया है। उसने पढाई छोड दी है। बहस म बहुत हाशियाग हो गया है। मुहल्ले म किसी को अपन सामन नही टिकने देता।'

काली विशनदास की ओर आश्चय से देखने लगा। उसे वह दिन याद आ गए जज विशनदास स्वयं जाल्घर कालेज म पढता था। छुट्टिया म जज कभी वह गाव म आता तो हर साज का वह उसे ची मे ले जाता और रात गए तक कई बानें समझाया करता—इन्कलाव की बानें, खेत मजदूर के सघप की बानें— व सब बातें काली की समझ स बाहर होती थी लेकिन उस पर इतना प्रभाव अवश्य पडा था कि उसने चौघरिया क लडका की गालिया सुनने से इन्कार कर दिया था और दो चार बार झगडा हो जाने पर हाया-याई भी की थी।

जब व दोना दूकान पर आ गए तो डाक्टर बोला

मुनाओ वहाँ-वहाँ घूम फिर आए हा। क्या क्या काम करत रहे ?'

यहा से तो जाल्घर गया था। उसक बाद एक साथी मिल गया और उसके साथ कानपुर पहुच गया। वहाँ कई पाण्ड वेलने के बाद कपडे के एक कारखान म तीन साल मजदूरी की। काली न उत्तर लिया।

इसका मतलब यह है कि तुम परोन्तारी बनकर आए हा।'

विशनदास ने मुसकराते हुए कहा। काली की समथ म कुछ नही आया और वह केवल इधर-उधर याकता हुआ चुप रहा। कुछ क्षणा के बाद विशनदास बोला

मुना है तुम मकान बना रहे हो ?'

'हा बना तो रहा हूँ। मकान तो नही कहना चाहिए बस कोठा खडा कर रहा था।

'कोई कह रहा था कि निक्कू ने बुनियाद खोन्न पर झगडा खडा कर दिया था।'

'हाँ। उम मगू न भडनाया था लेकिन अब मामला ठीक हो गया है।'

विशनदास सोचता हुआ बोला

मगू चौधरी हरनाम सिंह का एजेंट है। गरीबी आदमी का जमीर घतम कर देती है। गरीबी दूर हो जाए तो हर आदमी अपनी जमीर का मालिक आप होगा। और गरीबी दूर करने का एक ही रास्ता है और वह है इकलाव सारे समाज की काया कल्प।

जब काली ने विशनदास को कोई उत्तर न दिया तो वह सोचने लगा कि शायद उस पर पादरी की मीठी बातों का प्रभाव पड़ गया है। उसे दूर करने के लिए वह बोला

पादरी ऊपर से बहुत मोठा है लेकिन उसकी काट तेज छुरी से भी गहरी होती है। किसी दिन वह तुम्हारे घर पहुँच जाएगा और कपड़ा का जोड़ा सामने रखकर कहेगा कि ये कपड़े पवित्र पिता ने अपने गरीब बच्चा के लिए भेजे हैं। इन्हें बखूल करो और उस आसमानी बाप का गुनिया अदा करो जो सारी दुनिया के पाप अपने सिर पर लेने के लिए सूली पर चढ़ गया। वह केवल एक धर्म की अफीम का नशा उतारकर दूसरे धर्म का नशा पिलाता है। मेरे से पादरी भी घबराता है और महाशय भी। पण्डित सतराम तो मुझे देखते ही धू धू करना शुरू कर देता है।

विशनदास अपनी बातों का प्रभाव देखने के लिए काली की ओर तकने लगा। जब काली ने कोई उत्तर न दिया तो डाक्टर सोच में डूब गया और अपनी दाढ़ टाँग को जोर जोर से हिलाने लगा। कुछ क्षणों के पश्चात् वह फिर बोला

तुम बहुत देर के बाट गाँव आए हो। तुम्हें यहाँ के पोलिटिक्स का पता नहीं है।

विशनदास अभी अपनी बात पूरी नहीं कर पाया था कि दूरान के अन्दर की ओर उसके घर की छिड़की खुली और एक महीन आवाज ने कहा
पिता जी, बीबी कहती है रोटी पाला।

अभी आया। डाक्टर ने बहुत तेजी से उत्तर दिया और फिर काली से बोला

मैं तुमसे कह रहा था कि जिन कारखानों में तुम काम करते थे वहाँ मजदूरों की मूनिषन जरूर होगी।

एक नहीं तीन मूनिषन थे।

तुम भी किमी मूनिषन के मम्बर थे या नहीं ?

तीनों मूनिषनों का मम्बर रहा सब बराबर। हर मूनिषन के लीडर

को सिफ अपने हलके माण्डे से गज थी ।'

काली की बात सुनकर विशनदास टैरान रह गया और परस्पर इसके कि वह काली से कुछ कह अलमारी के पीछे खिडकी एक बार फिर खुली और वही महीन आवाज जाइ

पिता जी बीबी कहती है राटी खा लो ।'

'अभी आया बटा ।' डाक्टर विशनदास काली की आर दखता हुआ बोला 'पूजीपति यह कभी नहीं चाहते कि मजदूरा मे सगठन हो । यह एक इम्पीरियलिस्ट चाल है ।'

विशनदास बहुत जोश से बोल रहा था कि उसकी तीन साल की बेटी बहुत मुश्किल स चबूतरे पर चढकर बोली

'पिता जी बीबी कहती है रोटी खा लो ।

'अभी आया बेटा कहकर विशनदास काली को सम्बोधित करता हुआ बोला

ट्रेड यूनियन का बुनियादी असूल यह है कि । विशनदास बात अधूरी छोडकर सोच मे पड गया और जब अलमारी के पीछे खिडकी जोर से खुली तो चौंकर उस आर देखने लगा । वारीक क्रोधभरी आवाज आई

कितनी ही बार लडकी को भेज चुकी हू कि आकर रोटी खा लो । यहा कौनसी कमाई कर रहे हो जा तुम्ह फुमत नहीं है मोये लोगा को भी घर पर कोई काम नहीं होना जो यहाँ आ जात हैं । इसके साथ ही खिडकी धमाके के साथ बंद हो गई । डाक्टर विशनदास सब बातें भूल गया और दूकान को ताला लगाकर चबूतरे से नीचे उतरता हुआ बोला

'काली दास, शाम को आना । फुसत से बठकर बातें करेंगे ।

काली जब घर पहुचा ता मिस्तरी सन्तासिंह कमर तक उठी दीवार के साथ खडा जानो को ध्यान से दख रहा था जो चाची के पास बैठी सूत की उल्थी हुई तारा को सुलझा रही थी ।

'मिस्तरी जी, काम शुरू करें । काली ने कमीज उतारकर खाट पर फेंकते हुए कहा ।

'कहाँ पर गया था ? सन्तासिंह हाठो पर जवान फेरता हुआ धीमी आवाज मे बोला

मासूक बढिया है ।' काली ने गारे की तगारी रखते हुए कहा

मिस्तरी जी अब इधर ध्यान दो । आधी दिहाडी पहले ही निकल गई है ।'

सन्तासिंह ने काली की ओर घूरकर दखा और काडी और तसो उठाता

हुआ बोला ।

'तरी आधी दिहाडी घराब हुई है अपना ता मन सत्र-कुछ डोल गया है ।'
सन्तार्सिह होठो को चवाता हुआ तसी से इटा के टुकड़े करने म ब्यस्त हो गया ।

१९

साझ के साथ गहरे हो गए ता काली ने काम बंद कर दिया । वह कुछ समय तक कमर तक उठी हुई दीवारो को देखता रहा । फिर उसने विखरे हुए सामान को इकट्ठा किया और कपड पहनकर चाची से बोला

मैं बाहर घूमने जा रहा हू । आकर रोटी खाऊंगा ।

'पुतरा, सूरज अदर बाहर हो गया है । अभी रोटी खा जा । चाची ने चूल्हे म फूकें मारत हुए कहा ।

'नही चाची थोड़ी देर के लिए बाहर घूम आऊँ ।

काली बाहर निकल गया और सीना तान हुए लम्बे लम्बे डग रखता हुआ चमादडी के बाहर कुए के पास आकर कुछ क्षणी के लिए ठिठक गया और सोचने लगा कि किधर जाए । सबसे पहले उसके दिमाग मे डाक्टर विशनदास का ट्याल आया । लेकिन उसकी दूकान की ओर जान से इसलिए रुक गया कि डाक्टर की घातें आधी रात तक खत्म नहीं हागी । फिर वह कुछ सोचे समझे बिना ही खेता की ओर बल गया ।

ची के निकट पहुचकर काली को बहूत-सी आवाजें एक साथ सुनाई दी । वहाँ गाव के घर-घर लडके कबड्डी खेल रहे थे । उसके तन घन म भी खिचाव सा पदा हाने लगा और कदम तेज-तेज उठने लगे । उसे आते देखकर जीतू ने ऊँची आवाज म कहा 'लो हमारा बाबू जी आ गया । काली कबड्डी का खेल देख रहे लोगो के पास चला गया और लानू पहलवान को देखकर उसके निकट जा बठा ।

जीतू खेल छोडकर काली की ओर आता हुआ वाला

'बाबू जी इधर आओ ना दो-दो हाथ हो जाएँ ।

कागी उत्तर म केवल मुसकरा दिया लेकिन ज़र लानू पहलवान ने उमे कबड्डी खेलन का कहा तो काली कपडे उतारकर मदान म आ गया ।

'बाजू जी से पहले मैं पकड़ लूंगा।' जीतू ने हँसते हुए कहा और कबड्डी बहता हुआ सीधा काली की ओर बढ़ने लगा । काली के दिल म एक अज्ञान-भा भय उत्पन्न हुआ और वह इसके प्रभवाधीन पीछे हटता रहा । लेकिन ज़र जीतू १ आगे बढ़कर काली को छू लिया और उस ललकारता हुआ पीछे हटने लगा तो वह भडक उठा और अपटकर जीतू को इस तरह पकड़ लिया कि वह एक कदम भी आगे न बढ़ सका । जीतू अपन शरीर से रेत फाडता हुआ अपने पंभ की ओर चला गया ।

काली और जीतू की पकड़ देखकर दर्शक खुश हो गए । लानू पहलवान ने काली को थपथपा दी और उस समझाता हुआ बोला 'पकड़ने क बाद पहले बाजू कावू मे करे और फिर एसा घोड़ी पटडा मारो कि सामन का खिलाडी जमीन पर चित्त गिरे ।'

काली लानू पहलवान की बात पर मुसकरा दिया । उसकी चिन्तक अभी तक बाकी थी और वह प्रतिद्व द्वी पक्ष की ओर जान म हिचकिचा रहा था । जब कुछ लोग न उसे बार-बार कहा तो वह कबड्डी बहता हुआ उस ओर चला गया । जीतू न उस तान बार पकड़ने की वाशिष की लेकिन काली ने उस अपने शरीर को छून तक न लिया ।

याडी दर के बाद ही कागी की झिझक मिट गई और बालपन के सब दावपेच अपने-आप ही याद हो आए । वह निपुण खिलाडी की तरह अपने आगे पीछे और दाएँ-बाएँ दखता हुआ सतकता से कबड्डी खेलने लगा । वह दो बार प्रतिद्व द्वी घडे की ओर हो आया था । जब वह तीसरी बार गया ता जागे के दिग्दार न, जो कटवी बेल की तरह फूल रहा था और प्रतिदिन दर्जी की दूकान पर जाकर गज स अपनी छाती मापा करता था, बगल स होकर काली को पकड़न का यत्न किया । लेकिन काली न उसका हाथ झटक दिया । वह क्रोध म आकर पूरे जोर से काली की ओर बढ़ा लेकिन उमने एन बार फिर उसे इस तरह पीछे हटा दिया जैसे वह गदी मक्खी हो । कागी जब अपने पक्ष की ओर वापस आ गया तो उसके सायिया न उसे अपनी बाजुआ म उठा लिया । लानू पहलवान शाबास देता हुआ बोला, 'बाह मेरे शेर ! अपनी गदन की भी नही छून लिया । इतनी साफ कबड्डी खेलन वाले आजकल कम ही मिलेंगे । हा एन बात का ख्याल रखा कि घुटना हाथ आ जाए तो दूसरा आदमी कँची डाल सकता है । इसलिए हमेशा घुटना बचाकर खेले । दूसरी बात यह कि बाजुआ

को पकड़ो म बा- टीनों को लकड़म व भी मास्तर बाबू वर लता पाठिए ।
पगला वर बाव गुरीया आत्मा पकड म गिरत जात है ।

म- गुरे जोकर पक या कि घोषरी हल्लव भी उम भार मा गिरता ।
उमक पीए-पीए मगू गिरारी मुक्त की जमीर घाम हण आ रता था । हल्लव
को देखकर लगत और खिलादिया । उम हल्लव-नाय लडिया । मबक अहमाग
या कि अभी तन मउ बरबर का गरी है । मुछ मित्त। व गिर मउ रत गया
ओर वागी व प्रतिद्वन्दी गन स एव माय वर आगारें आद

घोषरी हमारी तरफ आ जाआ । दूगरा घटा हम पर भारी है ।

‘यहाँ वर पक लता बाव भी है या मिक चमार इकठे गिए हए है ।

हल्लव व बयाजी स कहा और फिर गिर गिरार स बोला

दिलदार तू चमार। व छोर। व साय बचड़ी गे-गर अपनी तागत का
अदावा क्या लगाता है । तिसी दिन पट्टवान व अघाडे म आ । हल्लव न
भरपूर अंगठार्द ली और लानू पट्टवान व पास बटता हुआ बोला

पहलवान जी, आपन ब्यास पार व पहलवान रहीम की बुशती दग्गी है कि
नहीं मुना है बटत बाता भवान है ।

‘उसती बुशती के बारे म तुम्ह बाव म बतारुंगा । पहन तू यहाँ अपना जोर
दिया । लानू पहलवान ने हल्लव को बाजुआ स पकडकर ऊपर उठाने की
कोशिश करत हुए कहा ।

‘घोषरी यहाँ किससे पकड लूगा । सब चमार इकठे गिए हुए हैं । एक
दिलदार है सो वह भी अपना बच्चा है । हल्लव ने अघाडे म मुबका को घणा
से देखते हुए कहा और फिर लानू पहलवान स बोला

मेरी बचड़ी तो सीकरी के मउ के टूर्नामेंट म देखना ।

‘काली अच्छी पकड लता है । दिलदार का तो इसन एक बार पटडा बना
दिया । जीतू ने कहा ।

यद्यपि हल्लव पेशावर खिलाडी नहा था लेकिन उसने उनके तमाम नखरे
सीख लिए थे । वह वहाँ खेलने की नीयत से नहीं आया था लेकिन वह चाहता
था कि सब लोग उसे बार बार वह और मिनत करें । लानू पहलवान ने हल्लव
को नखरे करते हुए देखा तो ऊँची आवाज म बोला

हल्लव तू भी बाबू ठठियार की तरह बहुत नखरे करने लगा है । उसे
कहो कि बाजे (हारमानियम) पर एकाध गीत मुना दो तो वह पचास बहाने
बनाएगा । लेकिन जब एक बार गुरू कर देगा तो फिर गीदड की तरह चुप
होने का नाम नहीं लेगा । कपडे उतारकर जघाडे म चल । काली तरे मुकाबले

की चोट है ।’

जब हरदेव फिर भी अपनी जगह से न हिला तो लानू पहलवान वाली से बोला

‘वाली तू ही बुला ले ।’

खेल तो मन की मौज है इसमें किसी को बुलाने या मजबूर करने का क्या मतलब ।’ वाली ने मुसकराते हुए कहा । हरदेव ने वाली की ओर घणापूण नज़रो से देखा और फिर कपड़े उतारता हुआ बोला

‘जाज इसका भी जोर देख ही लू । गया नया शहर से आया है ।’

हरदेव ने कपड़े उतारकर अपने शरीर पर रेत डाली झुककर अखाड़े की मिट्टी को छुआ और उसे माथे और कानों पर रगया और कलेलें भरता हुआ अखाड़े में आ गया । दशक अखाड़े के निकट खिसक आए । एक दो खिलाड़ियों के बाद हरदेव प्रतिद्वंद्वी पक्ष की ओर गया । उसका रंग ढंग सबसे निराला था । वह ताजादम घोड़े की तरह कलेलें भर रहा था । उसने प्रत्यक्ष प्रतिद्वंद्वी को ललकारा लेकिन किसी न भी उसकी ओर हाथ न बढ़ाया और वह सब खिलाड़ियों की ओर रेत फेंकता हुआ अपने पक्ष की ओर लौट आया ।

लानू पहलवान के कहने पर वाली हरदेव के पक्ष की ओर कबड्डी बहता हुआ गया । वाली अभी कुछ कदम ही आगे बढ़ा था कि हरदेव ने उसे शह दी और उसे चींते की तरह दबोचना चाहा लेकिन वाली ने उसे अपने बाजुआ के बल से परे धकेल दिया । हरदेव दुबारा उसकी ओर झपटा तो वाली शह देकर एक ओर निकल गया और हरदेव अपने ही त्रोर से जमीन पर गिर गया । वह मिट्टी झाड़ता हुआ उठा तो वाली अपनी हृद में जा चुका था । हरदेव वाली के पीछे ही कबड्डी बहता हुआ आ गया और पेशतर इसके कि वाली अच्छी तरह से मार सके उसने अपने दाना हाथ बहुत जोर से वाली की छाती पर दे मारे । वह कुछ क्षणा के लिए चक्करा गया । सबन महसूस किया कि हरदेव अपनी हार का बदला लेना चाहता है । वाली ने हरदेव को पकड़ने की बहुत कोशिश की लेकिन उसके हाथों में उसका कोई अंग न आया और वह सबका ललकारता हुआ अपने पक्ष की ओर वापस चला गया ।

कुछ समय तक अपनी सास दुरस्त करने के बाद वाली प्रतिद्वंद्वी पक्ष की ओर दम देना हुआ गया । सब खिलाड़ी पीछे हट गए क्योंकि उन्हें मान्य था कि वाली को हरदेव ही पकड़ने की कोशिश करेगा । वाली चक्कर लगाकर मुग्धा तो हरदेव पैतरा बदलकर उसके सामने आ गया लेकिन वाली ने उसे पीछे धकेल दिया । हरदेव ने वाली के बाजुआ का बाध करने की तीन चार बार

काशिश की लेकिन यह असफल रहा। वाली ज़रूर अपनी हज़म वापस आ गया तो लालू प्रसन्नमान से बोला

‘वाली, मुग़ालिफ़ खिलाड़ी को कभी अपनी बग़ल मत आने दे।’

फिर वह हरदेव से बोला

‘तू हमेशा सामना से पत्थर धी कया काशिश करता है? मर्द की तरह हमेशा अपनी सीध मत चला कर।’

यहाँ शोर सुनकर राह जात लोग भी झुट्टे हान लग और दगरा की सख्या बढ़ती गई। आराग पर लालिमा घटम हो गई और हल्ला-हल्ला अँधेरा फलने लगा। चौधरी हरनाम सिंह नेतो से वापस आ रहा था। वह भी शोर सुनकर वहाँ आ गया। उस दधरर बर्दे लोग पीछे हट गए। यह लालू पहलू यान के निवट आरर बाला

‘मुनाओ पहलवान जी, सेउ गरम है?’

‘हाँ चौधरी लेकिन अब वा बातें वहाँ। यह जमाने घटम हो गए ज़रूर चाली राता म सारी सारी रात बग़ल चलती थी। सलन वाले भी बाँक जवान हाते थे। उनके मुवाबले वा तो आजकल के छोररा म एव भी धक्का नहीं है। चौधरी रल्लू वा भतीजा ललकारसिंह ऊँचे मुहल्ले वाला फौजासिंह छोहारा का निक्का और चमारा वा माया।’

वाली का ध्यान लालू पहलवान की ओर आकषित हो गया। अपने पिता की प्रशंसा सुनकर वह प्रसन्न हो गया और उसका उत्साह पहले से कई गुना बढ़ गया। हरदेव ने अपन चाचा को वहाँ उपस्थित देखा तो उसके मन म प्रबल इच्छा पदा हुई कि वह मदान म हर खिलाड़ी को पछाड दे। चौधरी हरनाम सिंह ने खेल बंद देखकर ऊँची आवाज़ म कहा

‘खेल बंद बयो कर दिया। मुझे भी अपन हाथ देखने दो।’

कुछ क्षणा तक खिलाडिया म सरसराहट सी हुई और फिर हरदेव मोर की तरह नाचता हुआ प्रतिद्वंद्वी पक्ष की ओर बढ़ गया। वाली ने उसे शह दी तो वह एक ओर खिलाड़ी की ओर मुड गया लेकिन दूसरे ही क्षण वह काली से इतनी तज़ी जीर फुर्ती से आ भिडा कि देखने वाले अश-अश कर उठे। लेकिन पलक झपकत मे वे दोनों ज़मीन पर थे और हरदेव हाथ फल्लाए हुए कबड्डी कबड्डी कहता हुआ अपनी हज़म की ओर रीगने की कोशिश कर रहा था। कुछ समय के लिए उसने अपने आपको काली की पकड से छुटाने के लिए हाथ-पाव मारे लेकिन बाद म उसका दम खतम हो गया। वाली ने उसे छोड दिया तो हरदेव गदन झुकाए अपनी हृदम आ गया। लालू पहलवान ने प्रसन्न होकर चौधरी

हरनाम सिंह से कहा

यह मासे का लडका है—अपन बाप की तरह दलर जीर शर । अगर दाव पेच सीख ॐ तो अपने इलाके के वडे से वडे पहलवान को सामन न टिकन दे ।'

हरदेव का अपनी हार पर बहुत ज्यादा खुशलाहट हुई । यह सोचकर उसका त्रोध और भी बढ गया कि उसे एक चमार ने हरा दिया । वह पीछे जाकर अपना फूला हुआ साँम टोक करता रहा और दोना ओर मे खिलाडी बारी-बारी आत जात रह । जब काली की बारी आई तो हरदेव आगे बढ आया । काली जानता था कि इस बार भी हरदेव ही उस पकडने की काशिश करगा । वह फूक फूककर कदम बढाता हुआ प्रतिद्वन्दी पक्ष की ओर चला गया । हरदेव एक ओर इम ताक म घडा था कि काली की पीठ या बगल उसकी ओर हो ता वह उस दबोच ले लेकिन काली उसे एसा अवसर नहीं द रहा था । यह देखकर मगू हरदेव के साथिया को ललकारता हुआ बोला

‘उसे शह दो—सीधे तो कुत्ता भी शर क बावू म नहीं आता ।’

मगू की आवाज सुनकर काली का ध्यान एक क्षण के लिए बढ गया । उसी एक क्षण का फायदा उठात हुए हरदेव ने उस दबाच लिया । काली अपना पूरा जार लगाकर उसे घसीटने की काशिश करने लगा । हरदेव ने जब दखा कि काली उसकी पकड से निकल रहा है तो उसन काली की छानी पर जार स दोहल्यड मारी और साथ ही उसके बाएँ कूल्हे म अपने पाव की ऐडी जमा दी । काली की आखो के सामन अँधेरा छाने लगा । उसकी पकड धीमी हो गई । वह कुछ क्षणा तन ललखडाता हुआ खडा रहा और बाद म जमीन पर लेट गया । हरदेव एक कदम पीछे हटकर विजयभरी दष्टि स देखन लगा । जब काँगे कूल्हे का पकडकर लोटपोट होन लगा तो जीनू उसके ऊपर चुकता हुआ वाला काली को चोट लगी है ।

लानू पहलवान भागकर काली के पास जा गया । बाकी लोग भी र्ना जमा हो गए । लानू पहलवान न काली की हथेलिया का जार जार म मग्ना मुक्त कर दिया । जीनू उसके पाव के तलवे मलन लगा । घानी दर व गल गाने न आँखें खाने की ओर वह या ललखडाता हुआ उठा जम बर्द बप तन बीमार रहा हा ।

‘कहाँ चोट आई है ?’ लानू पहलवान न चिन्तित रूप म पूछा ।

‘कूल्हे म हरदेव की ऐडी लग गई है ।’ काली न बगुन की कमखार आवाज म कहा । लानू पहलवान हरदेव की ओर मग्मत भरी निगाहा म दखता हुआ

घरती घन न अपना

बोला

यहाँ चलने आए थ या झगडा करते ?'

फिर उसने बागी को सहारा देकर सीधा पडा किया और नम्र स्वर म बोला

'धीरे धीरे चलने की कोशिश करो । अभी चाट ताजा है । घून जम गया तो चलना मुश्किल हो जाएगा ।'

चौधरी हरनाम सिंह हरदेव को डाँटा हुआ बोला

अगर इस तरह कबड्डी खेलोगे तो एक दिन अपनी हड्डी-पसली भी तुडवा लोगे ।' फिर वह काली का हाल पूछकर और उसे हीसला देकर चला गया । लानू पहलवान और जीतू काली को कंधा से पकड़कर आहिस्ता-आहिस्ता चलाने लगे ।

हरदेव ने अपने कपडे उटाए और चुपचाप अपने घर की ओर चल पडा । मगू शिकारी कुत्ते की जजीर घामे उसके बराबर जा रहा था ।

२०

काली सारी रात दद से तडपता हुआ खाट पर करवटें बदलता रहा । रात के अन्तिम पहर म नींद आई तो वह देर तक सोया रहा ।

चाची ने पहले तो उसकी जोर ध्यान नहीं दिया परन्तु सुभ जब कोठा की भेंडैरो से ऊपर आ गया तो वह काली का कंधा पकड़ोरती हुई बोली

'उठ काका, गोटे-गोडे तिन चढ आया है । क्या सारा दिन कुम्भवरण की तरह सोया रहेगा ?'

काली ने हडबडाकर आँखें खोल दी और उठने के लिए जब टाँगें समेटने लगा तो दद की टीस सारे शरीर म दौड गई । वह टाँगें लटककर चारपाई पर बठ गया और चाची की नजरें कंधाकर चोट को इस तरह देखने लगा जैसे चोरी का माल हो । चाची रसोई म चली गई तो वह फिर लेट गया । वह जब पलटकर उसकी ओर आई तो काली उठकर बठ गया । चाची उसके निकट आकर बोली

‘वाहर अदर हो आ और जाकर काम गुरू कर दे ।

‘अच्छा चाची उठता हू ।’ काली न दात भीचे और हिम्मत करके उठने की कोशिश की । वह लँगडाता हुआ चार छ कन्म चला तो उसक माथे की नसें तन गईं और कान लाल हो गए । चाची ने उसे लँगडाते हुए देखा तो धबराई हुई बोली

‘लँगडाकर क्या चलते हो ? कहीं चोट लगी है ?’

‘नहीं चाची, टांग सो गई थी ?’ काली ने मुसकरान की कोशिश करत हुए कहा ।

चाची अपने काम मे व्यस्त हो गई तो वह फिर अपनी चोट को सहलाने लगा ।

जीतू दराती और खुरपा हाथ मे घाम घास काटन जा रहा था । काली को अपने आगन मे बठा देखकर वह अन्तर आ गया । काली को कुछ अस्वस्थ देखकर वह वाला

क्या ज्यादा चोट आई है ?’

फिर उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही बोला

‘हरदेव अपने आपको बहुत बग पहलवान समझता था । परन्तु कल तुमन उसका अहकार तोड़ दिया ।

‘उसका अहकार टूटा या नहीं, मेरा कून्हा जरूर टूट गया है । शायद अदर मास फट गया है । सखन दद हा रहा है । काली ने दुख भरी जानाज म कहा ।

जीतू दराती और खुरपा बगल म दबाकर काली पर चुकता हुआ बोला

‘दिखाओ तो ?’

निकर की ऊपर उठाकर काली न जीतू को चोट दिखाई । कूल्हे पर सेर के घाट जितना मास उभर आया था और वह हिस्सा नीला हो गया था । जीतू ने चोट वाली जगह को जरा दबाया तो काली चीख उठा

‘छोड़ दो, बहुत दद होता है ।’

जीतू सीधा खड़ा हो गया और चिन्तित स्वर म बोला

‘घाट ज्यादा ही लगी है । तुम लागड (पुरानी माटी रुई) गम करके सेंक दो । तिल्ली का तल गम करके मालिश करो ।

चाची ने उह इस तरह खूसर फुसर करत देखा तो उसका शक्क फिर जाग उठा और वह उनक पास आकर बोनी

घरतो घन न अपना

क्या बात है। क्या काली की टांग पर चोट आई है ?'

यह सुनकर जीतू ने मुह दूसरी ओर फेर लिया और काली ने नजर झुका ली। चाची ने जरा ऊंचे स्वर में पूछा

'क्या बात है ? चुप क्या हो ?'

'कुछ नहीं।' जीतू ने दूसरी ओर देखते हुए ही उत्तर दिया।

अभी तो दोनों बचरी की तरह मुह हिला रहे थे और अचकित हो कि कुछ नहीं है।

चाची मामूली सी चोट लगी है। अपने-आप ही ठीक हो जाएगी। काली ने उस टांग की कोशिश की।

दिखाओ तो सही। चाची ने धबराए हुए स्वर में कहा। काली ने जीतू की ओर देखा और फिर अपने आप में सिमटता हुआ बोला

'चाची कोई चोट नहीं लगी है। तू तो यूँ ही परेशान हो रही है।'

चाची समझ गई कि काली को ऐसी जगह चोट लगी है जिस दिखाने में वह शरमा रहा है। वह सनिग्ध स्वर में बोली

मर लिए तो तू वहीं छोटा सा बच्ची है जो दस बचत मरे साथ सोता रहा है। जिसका मुह में अपने हाथों से धोती रही है। माँ के लिए बच्चे तो घुड़के हो जान पर भी छाटे रहते हैं। काली को असमजदगी में देखकर चाची ने उसे दुलारा तो वह आहिस्ता से बाग

'अच्छा ठिगाना है। तू पहले मुझे लोगड गम कर दे। दो रोडे (इतने टुकड़े) चुल्हे में डाल दे। चोट को सँक दूँगा।'

परन्तु चाची पहले चोट देखना चाहती थी। उस चोट स्वयं देने बिना विश्वास नहीं हो रहा था। बच्ची की बात छिपान की आत्त को वह भरी प्रकार जानती थी। उमर बच्ची को एक बार फिर असमजदगी में देखकर उमर की ओर हाथ बढ़ाया तो वह तित्कित उठा

'चाची, अभी ठिगाना है। वह घाट पर लट गया और निवार को नीच कर दिया। चाची ने उभरी हुई नीली पचर-भी जगह देखा तो धबराकर बच्ची

'यह चोट कम लगी ? क्या किसी में झगडा हो गया था ?'

बच्ची चुप रहा परन्तु जीतू ने आहिस्ता में उत्तर दिया

'बहुत सज्जन-सज्जन चोट लग गई। चौधरी हरनाम सिंह के भतीजे हनुव न लरी मारी था।'

चाचा कुछ धाँसा के लिए निम्नगध रह गई और फिर बहूत सुखी आवाज

म बाली

'तू चौधरिया के लडका के साथ बचड़ी क्या खेलने गया था। उनका क्या है। उसने ता णडी मार दी। गरीब की चाहे जान ही चली जाती। चमार धूरकर भी देख ले ता चौधरिया को ताव आ जाता है। आप चाहे चमार को जान से भी मार दे ता कोई पूछने वाला नहीं। तुम्हारे साथ कई बार माया मारा है कि उनके साथ न खेला कर। अब लेंगडा तू हो गया है, चौधरी हरदेव का क्या गया ?'

चाची बाली के पास बठी उसे समझा रही थी। उसे चौधरिया पर कुछ गुस्सा था, कुछ बेवनी थी। वह घुटना पर हाथ रखकर उठी और फटी-पुरानी रजाई म से लोगड निकाल लाई और चूल्हे म दो साफ (इट) राडे रख दिए।

चाची हाथ म छोटी सी बटारी लेकर गली म आ गई ताकि किसी से थोडा सा तिली का तल माग लाए। बाली न उसे रोका कि वह शाह जी की दूकान स मगवा लेगा परंतु चाची उसकी बात को अनसुना करती हुई गली म निकल गई। कुछ आदत स मजबूर, कुछ इस विचार स कि आग पडोस वाल उससे भी कुछ न कुछ माग कर ले जात हैं और कुछ इस विश्वास स से कि गनी मुहल्ले वाले दु ख सुख के साझी होत है। वह गली के हर घर म गई बाली की चोट का जिक्र किया, दबी जवान म चौधरिया को दुरा भला कहकर तिली का तल मागा। हर एक ने इधर उधर स बानें की, गरीबी का रोना रोया, सहा नुभूति जताई, चौधरियो के लडका को गाली दी और अपनी सतान की बस्म खाकर चाची को विश्वास लिलाया कि उनके पास तिला का तल हाता तो व जरूर देत। चाची को तल तो वही मे न मिला लेकिन सार मुहल्ले को खबर हो गई कि चौधरी हरदेव ने बाली का कूल्हा तोड दिया है।

जब चाची बुदबुदाती हुई खाली बटारी उठाए घर गई तो काली बाला दतनी दर म तो शहर से भी तल आ जाता।' काली के शदा म चाची को बगल का आभास हुआ। उसका धम पहल ही टूटा हुआ था। बाली की बात सुनकर वह भडक उठी।

आस पडास का दतना भी फायदा नहीं है कि कोई किसी का काम ही करे। अपने को जरूरत हाती है तो इधर मुह उठाए चली आती हैं जैसे यहा भडार खुला हा। चाची नामक (नमक) है, चाची मीच (मिच) है।

चाची नकल उतारती हुई बोली।

‘और आप किसी की बनी उंगली में नमक छिड़ने के लिए भी तयार नहीं होती। भाड़ में जाएंगे गली गवाँड़। अब मरे भी कोई माँग आई तो मुह तोड़कर जवाब दूँगी।’

चाची ने मिट्टी के बटख में रमे एक मल-स बगड़े की कई गाँड़ें छालकर दो पसे निकाल। उन्हें अच्छी तरह टटोल कर और फिर आँघा के नजदीक रखकर देखा। जब तसल्ली हो गई कि दो पस ही हैं तो बगड़े का मखे में छिपा दिया और हाथ में बटोरी रखकर गली में आ घड़ी हुई।

काली की चाट का समाचार सुनकर बच्चा ने जमर घर के गिरे में राणा गुरू कर दिया। चाची ने एक दो पसे तल खान के लिए कहा तो बच्चा चाप पिसाव गए। उन्हें काली की चोट देखने का शौर था तल खान में दिल चस्पी नहीं थी। चाची ने एक बड़े पुचवार कर कहा

‘बहुत अच्छा लडका है। जा दौड़कर टके का तिल्ली का तल ला दे, मैं तुम्हें गुड दूँगी।’

परन्तु वह लडका चाची की नजरों में बचाता हुआ भाग गया।

जाजबल के बच्चे से तो ख बचाए। तिनका सोडने से भी उनका दिल में मूल उठता है। हमारे जमाने में मजाल कि कोई बच्चा बड़े का कहना टाल दे। गली गवाँड़ तक का काम कर देते थे।’

चाची की शुबलाहट बढ़ती देखकर काली ने उसे आवाज दी

‘चाची जीतू को पसे दे वह तेल ले आएगा।’

चाची ने बटोरी और दो पसे जीतू की ओर बढ़ा दिए। काली दो पस देखकर बोला

‘दो पसे का कितना तेल आएगा। क्या पता कितने दिन मालिश करनी पड़ेगी?’

‘मैं रोज का रोज मगवा लूँगी। एक बार आधी बोतल मगवा ली तो माँगन वाला की यहाँ छाबनियाँ उतर आएँगी। और बूद बढ़ करके दो दिन में ही बोतल ले जाएँगे।’

चाची के रहज्जे में अहकार जीतू को बुरा लगा। काली ने भी उसे महसूस किया। वह मुसकराने की काशिश करता हुआ बोला

‘कौन किसी के पास हाथ फलाने आता है। अगर कोई आएगा तो अपना समयकर ही आएगा।’

चाची जीतू को बोतल और आठ आन पसे दे दे।

चाची ने बहुत जिद की लकिन आखिरकार उसे काली की बात माननी

ही पड़ी। वह क्रुद्ध स्वर में बोली

लुटा दो घर को। चार पैसे हैं सो नज़रा मैं खटक रहे हैं। खत्म हो जाएंगे तो फिर बठकर रोना।' चाची का क्रोध बहुत बढ़ गया था। उसने बुदबुदाते हुए कई मटके उठाए और गठडी भी निकाली। उसकी कई तहे खोल कर एक रूपया निकाला। और जीतू के हाथ में रूपया और बोतल थमाती हुई बोली

ले, तल से भरवा ला इस।'

चाची का क्रोध भी देखकर जीतू मुसकरा दिया और काली की आर देखता हुआ बाहर निकल गया। जीतू के जाने के बाद चाची काली के पास बठकर ऊँचे स्वर में बोली

'इस तरह घरा के गुजारे नहीं चलत। बाकी लोगो का देखो नमक भी डग के डग लाते ह।'

काली ने चाची की बात पर कोई ध्यान न दिया तो वह और भी झुझला गई और उठकर गली में आ गई।

उसे प्रीतो का लडका अमरू नज़र आया तो उसे पुकारकर बोली

'बे, तेरी मा पतीला ले गइ घी आट का भरकर। आटा नहा है तो पतीला ही वापस कर दो।'

पतीले का जिन्न सुनकर अमरू की आँखें चमक उठी। उसने ध्यान से चाची की ओर देखा और फिर भाग गया। चाची ने उसे दो एच गालियाँ दी और अदर बाकर ऊपर उठी हुई दीवारों को देखन लगी।

अपनी छत पर खड़ी प्रीता ने चाची में पूछा

सुना है काली के चोट लग गई है। क्या कहाँ गिर गया था ?'

'बहुत चोट लगी है। सारी रात खाट पर तडपता रहा है।'

'हाम में मर जाऊँ। वहाँ चोट लगी है ?' प्रीतो मँडेर पर झुकती हुई बोली।

कूल्हे में लगी है। चौघरिया के हरदेव के साथ कदड़ी खेल रहा था। मेरा काली भी ख जी की दया में तगडा है। हरद्व दमसे हार गया तो गुम्से में आकर इसने कूल्ह में एड़ी मार दी। उसका क्या गया, यह जिना के लिए चार पाई पर जा पडा है।'

चाची ने पतीला माँगने के लिए उससे बात शुरू की थी। लेकिन काली की चोट का जिन्न छिडा तो वह बात भूल ही गई।

'रज जो आराम दे। अभी मकान की दीवारें भी पूरी नहीं हुई हैं। तिलो

का तेल गम करके मालिश करो बहुत जल्दी आराम आ जाएगा।' प्राप्ता ने सहानुभूति जताते हुए कहा।

'जीतू गया है तल लाने।'।

प्रीतो पाचो स इधर उधर की दो चार रातें करके नाचे उतर आई और सीधी मगू की माँ जस्तो के पास चली गई। वह रहस्यमय स्वर में बोली

'नी वाली के चोट लगी है। बूल्हे की हड्डी टूट गई है। अब घाट पर पड़ा है। चौधरी हरनेव के साथ बगडडी सेल रहा था। रव जी सक्की मुनता है। सबका अहवार तोडता है। पहले मगू को मारा फिर लच्छो व भाई का सिर फोडा। चौधरी स टक्कर ली तो पछाड खा गया। रव जी ने नजदीक होकर मेरी मुनी। ऊपर वाला सबका अहवार तोडता है।

प्रीतो खिलखिलाकर हँस पडी। उस बोलते मुनकर जानो भी बाहर आ गई। प्रीतो न उस देखा तो तिनकरर बोली

तू अपना काम कर। तू बाहर क्या जाई है। मुटियार लडकिया के लिए इतना काम रस अच्छा नहीं हाता। वाली के सिफ चोट लगी है मर नहीं गया है।

प्रीतो ने जस्तो की ओर भावपूर्ण दृष्टि से देखा और जब जानो जरा परे चली गई तो धीमे स्वर में बोली

'हर आदमी की इज्जत अपने हाथ में होती है। नानो को मैं जब देखती हूँ वाली के घर में घुसी रहती है। अब यह छोटी तो है नहीं जो सारा दिन आबारा गाय की तरह गलिया में घूमती रह। मैं तो अपनी लच्छो को चौधरिया की हवेलिया में भी न जाने दू, लेकिन क्या करूँ मजबूरी है।

जस्तो ने प्रीतो की बात की ओर ध्यान नहीं दिया परन्तु नानो कांप सी गई। उसका जी चाहा कि प्रीतो के वाली में दहकती लकडी दे मारे परन्तु वह माँ के सामने कुछ न कह सकी और अदर चली गई। फिर उसे अचानक वाली की चोट का ख्याल आया। वह सोचने लगी कि मोए चौधरिया को भी आग लगी हुई है। रव करे इन सबको प्तग निकले सबकी टांगें टूट जाए। चोट स्यादा हुई तो वाली का मकान भी दिना पर जा पडेगा। जानो को डर सा महसूस होने लगा। उसने दरवाजा की ओट में खड़े होकर आगन में झाका। जब उसने देखा कि प्रीता चली गई है तो वह अपनी माँ के पास जाकर बोली

'मैं इस राँड का घर में नहीं घुसने दूगी। अपनी तरह सबको बदमाश समझती है। वह मुझ पर लाठन लगाने वाली कौन होती है?' जानो रो पडी। जस्तो पहले चुप रही परन्तु जब उसने देखा कि वह हिचकिया ले रही है तो उस

दिलासा देती हुई बोली

‘तू क्या रोती है। उसकी ता आदत है। उसके बहन से तू बुरी थोड़े ही हो जाएगी। जा उठकर काम कर।’

नानो उसी स्थान पर बठी रही। उस काली की चोट न छयाल आया तो वह बाहर जा के लिए उठी परन्तु ठिठन गई। उस महसूस हुआ कि उसके अन्त करण म कोइ परिवर्तन आ गया है। फिर उसने अपना हौसला बढ़ाने के लिए मन ही मन म कहा कि वह प्रीतो की क्या परवाह करती है। वह बाहर जान के लिए दरवाजे तक आ गई परन्तु फिर रुक गई और वही घड़ी उम्मीद भरी नजरों से गली म आंकिने लगी।

जीतू तिली का तेल लेकर वापस आया तो चाची ने चूल्ह मे से एक गम रोडा निकाला और उस एक मल से कपड म लपेटकर काली के हाथ म थमा दिया ताकि वह चाट को सेंक ल। स्वयं वह बगौरी म तल डालकर उसे गम करने लगी। तिली क गम तल का मालिश करने के बाद चोट लगी जगह का रंग गहन नील की बजाय हल्का नीला हो गया और उस पर कही कही लाल लाल धम उभर आए।

जीतू चाट को ध्यान से देखता हुआ बोला

‘अन्दर से मांस फल गया है।’

हा,’ काली ने उकताहट भरे स्वर म उत्तर दिया।

‘लानू पहलवान को चोट दिखा दो। एक तो वह मालिश कर देगा, दूसरे उसे टूनी हड्डी की भी समझ है।’

काली कुछ क्षण तक सोचता रहा और रोडे का फेंकता हुआ बोला
वात ता ठीक है।

जीतू सोच म पड गया। उसे गम्भीर देखकर काली बोला
क्या साच रहे हो ?

यही सोच रहा था कि लानू पहलवान आल्मी शरीफ है परन्तु है तो चौधरा। शायद यहाँ आने से इन्कार कर दे। उसकी हुबेली गाव के दूसरी तरफ ह। वहा तक जाना शायद तर लिए मुश्किल हो।

‘नही मुश्किल क्या है। लँगडाता लँगडाता वहा तक पहुच जाऊंगा।’

काली ने उठकर निककर उतार दी और तहबंद बाध लिय। जीतू उसे तयार देखकर बाला

चाची तेल की बोतल दे दो। लानू पहलवान म मालिश करवा लाता हूँ।
चोट जल्दी ठीक हो जाएगी।

का तल गम करके मालिश करो बहुत जल्दी आराम आ जाएगा।' प्रीता ने सहानुभूति जतात हुए कहा।

जीतू गया है तल लाने।

प्रीता चाचो स इधर उधर की दो चार रातें करके नीचे उतर आई और सीधी मगू की माँ जस्तो के पास चली गई। वह रहस्यमय स्वर में बोली

नी काली के चोट लगी है। कूल्हे की हड्डी टूट गई है। अब खाट पर पड़ा है। चौधरी हरदेव के साथ बबडडी खेल रहा था। ख जी सबकी मुनता है। सबका अहकार तोड़ता है। पहले मगू को मारा फिर लच्छो के भाई का सिर फोड़ा। चौधरी से टक्कर ली तो पछाड खा गया। ख जी ने नजदीक होकर मेरी सुनी। ऊपर वाला सबका अहकार तोड़ता है।

प्रीतो खिखिलाकर हँस पड़ी। उसे बोलत सुनकर जानो भी बाहर आ गई। प्रीतो ने उसे देखा तो तिनकर बोली

तू अपना काम कर। तू बाहर क्या आई है। मुटियार लडकिया के लिए इतना बान रस अच्छा नहीं होना। काली के सिफ चोट लगी है मर नहीं गया है।

प्रीतो ने जस्तो की ओर भावपूर्ण दृष्टि से देखा और जब जानो जरा परे चली गई तो धीमे स्वर में बोली

'हर आत्मी की इज्जत अपन हाथ में होती है। जानो को मैं जब देखती हूँ काली के घर में घुसी रहती है। अब यह छोटी तो है नहीं जो सारा दिन आवारा गाय की तरह गलिया में घूमती रह। मैं तो अपनी लच्छो को चौधरिया की हवलिया में भी न जान दूँ लेकिन क्या करूँ मजबूरी है।

जस्तो ने प्रीतो की बात की ओर ध्यान नहीं दिया परंतु जानो कांप सी गई। उसका जो चाहा कि प्रीतो के बालों में दहनती लपडी के मारे परंतु वह माँ के सामने कुछ न कह सके और अन्दर चली गई। फिर उम अचानक काली की चोट का घ्याल आया। वह सोचने लगी कि माण चौधरिया का भी आग लगी हुई है। ख बरे इन सपनों के मंत्र मंत्र की टोंटें टूट जाएँ। घाट क्या हुई ता काली का मकान भी जिन पर जा पड़ेगा। जानो को टर-भा महसूस होने लगा। उमन दरवाजे की आँसू होकर आँसू में झाँका। जब उमन दशा कि प्रीता चली गई है ता यह अपनी माँ के पास आकर बारी

मैं इम रात का घर में नहीं घूमने दूँगी। अपनी तरह सपनों के माण समझती है। बड़ मुँह पर लाछन लगाने वाली कौन होता है? जानो रा पगी। जस्ता पता सुन ता परंतु जब उमन दशा कि यह हिचकियाँ ल रही है ता उम

दिलासा दती हुई बोली

'तू क्या रोती है। उसकी तो आदत है। उमके बहने में तू बुरी पाडे ही हा जाएगी। जा उठकर काम कर।

चानो उसी स्थान पर बठी रही। उस काली की चाट का छयाल आया ता वह बाहर जाने के लिए उठी परन्तु ठिठन गई। उम महसूस हुआ कि उसके अन्त करण म कोई परिवतन आ गया है। फिर उसन अपना हौसला बढान के लिए मन ही मन म कहा कि वह प्रीतो की क्या परबाह करती है। वह बाहर जान के लिए दरवाजे तक आ गई परन्तु फिर म्क गई और वही खडी उम्मीद भरी नजरों से गली म बाकने लगी।

जीतू तिली का तेल लेकर वापम आया ता चाची ने चूल्हे म से एक गम रोडा निकाला और उसे एक मल से कपडे म लपेटकर काली के हाथ म यमा दिया ताकि वह चोट का सँक ले। स्वय वह कटारी मे तल डालकर उसे गम करने लगी। तिली के गम तेल की मालिश करने के बाद चोट लगी जगह का रंग गहरे नीले की बजाय हल्का नीला हा गया और उस पर कही कही लाल लाल धव्ने उमर आए।

जीतू चाट को ध्यान से देखता हुआ बोला

अदर से मास पन गया है।

'हा,' काली ने उकताहट भरे म्वर म उत्तर दिया।

लानू पहलवान का चोट दिखा दो। एक तो वह मालिश कर देगा, हमरे उसे टूटी हडडी की भी समझ है।'

काली कुछ क्षण तब सोचता रहा और रोडे का फँकता हुआ बोला बात तो ठीक है।

जीतू सोच म पड गया। उसे गम्भीर देखकर काली बोला क्या साच रहे हो ?'

'यही मोच रहा था कि लानू पहलवान आदमी शरीफ है परन्तु है तो चौधरी। शायद यहा आन स इकार कर दे। उसकी हुवेली गाव के दूसरी तरफ है। वहा तक जाना शायद तरे लिए मुशकिल हो।

नहो मुशकिल क्या है। लँगडाता लँगडाता वहा तक पहुच जाऊंगा।'

काली ने उठकर निककर उनार दी और तहबद वाँघ लिय। जीतू उसे तयार देखकर बाला

चाची तेल की बोतल दे दा। लानू पहलवान स मालिश करवा लाता हू। चोट जन्दी ठीक हा जाएगी।

घरती धन न अपना

लालू पहलवान अपने गाँव और आसपास के इलाक़े तक म टूटी हट्टी जाड़ने में निपुण समझा जाता था। कोई गिर जाए, हाथ पाँव टूट जाए किसी के मोच आ जाए—सब लालू के पास आते थे। वह भी सौ काम छोड़कर पहलू इधर ध्यान देता था। वह कहता था कि आदमी को अगहीन होने से बचना सबसे बड़ा धर्म है। इसे वह भगवान का काम समझकर सबसे पहले और पूरी लगन से करता था। छोटा हो या बड़ा, जाट हो या चमार इस सम्बन्ध में उसके लिए सब बराबर थे।

काली जीतू के मधे का सहारा लेकर लँगडाता हुआ चलन लगा। उस लँगडाता देखकर चाची के कलेजे पर जैसे पत्थर-सा आ गिरा। वह मुट्ठी ही मुट्ठी में बुलबुलाई कि मोए हरद्व ने चाँद को ग्रहण लगा दिया है। उसने चौधरिया को दबी खदान में गालियाँ दी और फिर धीरे धीरे मान का डढ़ दाना फेंककर भिन्नत माँगी कि काली की चोट जल्दी ठीक हो जाए।

२१

लालू पहलवान की हवेली पश्चिम में गाँव से बाहर थी। उसने यह हवेली दो-तीन साल पहले ही बनाई थी। इसलिए इटा का रंग अभी सुख था। उसके चारों ओर पक्की दीवार थी। बीच में लहंगे की चादरों का बड़ा दरवाजा था जिसमें से गड्ढा आसानी से गुजर सकता था। हवेली के खुले आँगन में गन्ने का रस निकालने का बेलना लगा हुआ था। उसके सामने दालान था जिसके पीछे कोठडियाँ थी जिनमें खेतीबाड़ी का सामान रखा था। एक ओर ढोर डगर बाघने के दालान और चारा रखने की कोठड़ी थी। उसके साथ ही वह कोठड़ी थी जिसमें गुड़ पकाया जाता था।

काली और जीतू हवेली में दाखिल हुए तो लालू पहलवान दालान में चारपाई पर बठा पटसन की रस्सी बना रहा था। उसने दोना को गट में आते देखा तो भुसकता हुआ बोला

आ भई काली। लँगडाकर चल रहे हो क्या क्या चोट लगी है ?

काली के कुछ बहाने से पहले ही जीतू बोल उठा

‘पहलवान जी, चोट सी चोट लगी ह, वह जगह तो धाले नमक जसी हो गई है। सारी टांग अक्ड गई है। प्रेचारा पिसट पिसटकर यहाँ तक आया है।’ काली ने बड़ी कठिनाई से हाठो पर फीकी सी मुसकान लाते हुए कहा ‘चौधरी जी, रस्सी बना रहे हो।’

‘हा भई। फमल की बटाई व बाद पठठे-दख्ये का काम ही रह जाता है। जमीन की जुताई-ब्याई तो बरसात लगने पर ही होगी। डोर डेंगर के चाने पानी का काम सबेरे शाम खत्म हो जाता है। दोपहर अपनी होती है। चीपट छक्की खेलकर भी मन उब जाता है। वहाँ फिर सी झगडे पिसाद की बातें होती हैं। हाडी की फसल अच्छी हो जाय तो जाट के जिस्म म पानी भी लहू बन जाता है। और जिस आदमी म पहले ही लहू बाफर हो, वह या तो देवता बन जाता है या राक्षस—और अक्सर जाट राक्षस ही बनते हैं।’ लालू पहलवान मुसकराता हुआ फिर बोला

‘मेरे उस्ताद न तालीम दी थी कि अगर लँगोट का पकरा रहना चाहते हो तो कभी बकार मत बठना, जमीन खोदा, बाड लगाओ और कोई काम न हो तो खाटो की रस्सिया ही बस दो मने भी उस्ताद की बात पल्ले बाध ली। कभी बकार बठता हू तो एसे लगता है जैसे बीमार हो गया हू।’ लालू पहलवान ने सारी चीजें सँभालकर एक ओर रख दी और काली से बोला

‘खडे क्या हा, बठ जाओ। उसन दूब की लम्बी चौड़ी सफ कच्चे फण पर बिठा दी और उन दोनो को बैठन के लिए बहकर स्वय भी बही बठ गया।

काली ने चौंकर लालू पहलवान की ओर देखा और उसका सीना हप से फूल गया कि वह चौधरी हाकर भी उनके बराबर बठा है।

‘वहा चोट लगी है?’ लालू पहलवान ने पूछा। काली न कूल्हे की ओर संकेत किया।

‘लेट जाओ।’

‘जब काली लेट गया तो पहलवान ने उसकी टांग को सीधा किया। उसका तहबद ढीला करके चोट को देखा और उँगलिया से टोहकर उसकी शक्ति महसूस करने लगा। काली को दब सहसूस हुआ परंतु वह उसे पी गया। लालू पहलवान ने चोट का अच्छी तरह दया उसकी टांग को इधर उधर हिलाया और काली की ओर भरपूर नजरों से देखता हुआ बोला

‘यह मर्दों का काम नहीं है। खेल म जहा बदले की ख्वाहिश पदा हुई वहाँ खेल खत्म और लडाई शुरू समझा। मैं हरदेव की अच्छी तरह जानता हू। सोहना तगडा जवान है। पार साल मेरे पास भी आया करता था। उसके

मजबूर करने पर मैंने उसे अघाडे म भी उतारा। कुछ दाँव पच भी सिघाए और उस वही नसीहत थी जो मेरे उस्ता ने मुझे की थी। लँगोट लगाकर पराई औरत की ओर न देयना, शराब को हाथ न लगाना। दोना पाप हैं और जो आदमी एक पाप करता है फिर उसके लिए पाप की काई हू नही रहनी। तुमसे क्या छिपाना मगू है न नत्यू का पुत्र आजकल वह चौपरी हरनाम मिह की हवेली म काम करता है उसरी बहन नाम ता मुझे याद नहा बट यहाँ मकई बूटन आती थी। एक दिन वह सवेरे आई तो हरदेव भी वहाँ बटा था। बलने ब पास ही अखाडा था। वह मालिश करने दड उठर निकालन लगा था। उस देखकर हरदेव न ठटठा किया। मैंने भी सुना। लडकी शरीफ थी। उसने उसे झाड दिया। झट मुह लटकाकर बठ गया। वह चली गई ता मैंने उसे समझाया पागल हर आदमी का इज्जत अपने हाथ म होती है। तरी क्या रही। तेरे बाप और ताये की सारा इलाका इज्जत करता है। एक चमारन न तरा दाग दाढी कर दिया। अगर तुम्ह यही कुछ करना है तो लँगोट उतारकर तहमद पहन ले हाथ म लाठी रख टेढी पगड़ी बांध और मौज कर। मरी बातें कडवी थी सो गर्मी छा गया और उसी समय उठकर चला गया। उसके बाद यहाँ कभी नही आया।

काली ने पानो के बारे म इस प्रकार की बात पहली बार सुनी थी। कुछ समय के लिए तो वह जस सुन सा हा गया। वह अपनी चोट और दह को बिल्कुल भूल गया। उसके अन्दर गुस्सा बढ रहा था। बट अपन विचारो म मगन था कि लालू पहलवान की आवाज ने उसे चौंका दिया।

‘यहा एडी लगी है। हड्डी को कोई चोट गही पहुँची है। मास फट गया है। मैं तिली के तेल की मालिश कर देता हूँ। ऊपर गम लोण्ड बाध कर इटें गम करक सेंक लेते रहना। दो चार दिन म ठीक हो जाएगी मैं तेल ले आऊँ।

तल तो मेरे पास है। काली ने जीतू को तेल की थोथी देने का इशारा करते हुए कहा।

नही, नही। जो यहाँ आएगा उसकी मालिश के लिए तेल यही मिलेगा। हर साल एक मन पक्की तिली का तल इसी काम के लिए निकलवाता हूँ। फिर कभी तल साथ न लाना। लालू पहलवान न काली को प्यार से डाटते हुए कहा और कोठडी से तल की बोतल निकालकर उसकी मालिश करता हुआ बोला

ऊपर वाले न सब-कुछ दिया है। किसी चीज की कमी नही। सबर सतोष (सतोप) हो तो थोडे म ही अच्छा गुजारा हो जाता है। यह गुण भी मैंने

अपने उस्ताद से सीखा था । उसे मरे सावन म चार साल हो जाएँगे । उसकी शरल अब भी मेरी आँखों और मन म जिंदा है । इलाके का वह शेर था । अपने उस्ताद का जिन करत हुए लानू पहलवान की आँखा म आँसू आ गए और वह कुछ क्षण चुप रहकर बोला

‘कहत हैं पहलवानों को अक्ल नहीं होती लेकिन बड़े बड़े पण्डित उसमे कनी कतराते थे । वह किसी मदरमे म नहीं पटा था लेकिन उसकी अक्ल बहुत तेज थी । कौल का सच्चा और वादे का पक्का आदमी था । उसकी औलाद सिफ एक ही लड़की है । वह पार म ब्याही हुई है । वह मुझे हर साल राखी बाधती है और मैं भी भाई का धम निभाता हूँ । करवा चौथ, वंशापी, दशहरा और दिवाली पर उसे कुछ न कुछ भेजता रहता हूँ । लानू पहलवान की आँखें भीग गई और वह हँधी हुई आवाज मे बोला

मुझे उसका बहुत आसरा था । वह मर गया तो मेरे लिए दुनिया म अँधेरा छा गया । उसकी एक एक बात मुझे अब भी याद है ।’

लानू पहलवान बाता म अपना काम नहीं भूलता था । मजाल है चोट पर ज्यादा दवाव दे जाए । उसने चोट पर पन्द्रह-शीस मिनट मालिश की और हाथ मसलता हुआ बोला

इमे कपडे म ढाप दो नहीं तो ह्वा लग जाएगी ।

काली ने पहलवान की ओर ध्यान से देखा । पुरान पीपल की तरह उसका शरीर भी बहुत विशाल था । छोटे छोटे मुड़े हुए कान मोटी गदन और भोला भांग मासूम सा चेहरा । काली नजरें झुकाकर लानू पहलवान की एक एक बात याद करने लगा । उसने मन-ही-मन म सोचा कि पहलवान बहुत अच्छा आदमी है । वह बाकी चौधरियो जैसा नहीं ह । लानू पहलवान तल स भरे हाथ सिर पर मलकर बोला

अब तो शरीर म पहले जैसी ताकत नहीं रही । इतनी देर तो लोहा घिसता रहे ता वह भी हल्का पड जाता है । यह तो हाड मास का शरीर है । इसे सौ मुख-दुख होते रहत है । जवानी के लिन म मेरे अदर साँड जितनी ताकत थी । अधी जवानी म अधी ताकत पग पग पर गिर जाने का डर रहता था । एक बार यहाँ से सात कोम दूर महतावपुर म बहुत बडा दगल हुआ था । उस दगल म डिप्पी साहिब भी आए थे । भेला म इतनी रीनक तहो होता जितनी इस दगल म थी । व्याम पार म नूरा पहलवान भी आया था । मैंने बहुत से दगल म कुश्तियाँ लडा थी लेकिन उसे पहली बार देखा था । बहुत सोहना सुयरा शरीर था उसका । लम्बा गोरा शरीर और विजली की तरह

घरती धन न अपना

फुरतीला । उसका शरीर बेंत की पतली छड़ी की तरह लचक जाता था । जब छोटे मोटे जोड़ हो चुके तो रमाली की कुश्ती के लिए टोल बजने लगे । दो मीरासी दगालग ढाल बजाकर पहलवाना को ललकार रहे थे । नूरा एक ओर से छलांग मार कर अखाड़े में उतरा । उस देववर सारे मजम की आखें उस पर जम गई । एक आदमी साठी पर रमाल और उसके पल्लू में चादी के इक्यावन रुपये और सोने का एक पाँड बाधे ढोल वालों के साथ नूरे के आगे चलने लगा । नूरा पहलवाना की हर टोली के पास आकर रुक जाता और उनकी ओर मिट्टी फेंकता । उससे कोई जवाब न पाकर वहाँ से मुसकराता हुआ वह आगे बढ़ जाता ।

जब वह हमारी टोली के बराबर आया तो उस्ताद ने मेरी ओर देखा और पूछा कि लानू हिम्मत है ? मैंने कहा कि उस्ताद का हुक्म हो तो मैं अभी बात पूरी भी न कर पाया था कि उस्ताद ने मुझे लँगोट बाधने का इशारा किया । नूरे ने हमारी टोली के सामने आकर मिट्टी फकी । जवाब में मैंने उसकी ओर मिट्टी फेंक दी । उसने उस्ताद को देखकर उसके पाव छुए और उसके पाव की मिट्टी अपने माथे को लगाई । उस्ताद ने उस थापी दी और वह कलेलें भरता हुआ आगे बढ़ गया ।

मैं लँगोट बाधकर उस्ताद के पास जाया । अपना सिर उसके पाँव पर रख दिया । उस्ताद ने मुझे थापी दी और बोला कि लानू शेर है अखाड़े में उतर कर पीठ नहीं लगवाएगा । मैं भी छलांग मारकर अखाड़े में उतर आया । चारों तरफ से आवाजें आई लानू आ गया लानू आ गया । नूरा पिंड का चक्कर लगाकर बीच अखाड़े में आकर मिट्टी से खेलने लगा ।

मैंने भी रमाली के साथ पिंड का चक्कर लगाया । जिमकी ओर स मुड़ता था वहाँ बहिँ मरी आर उठकर भरत साम्म बटानी थी ।

चक्कर लगाकर मैं भी अखाड़े में आ गया । दोनों मीरासिया न ढोल की तान बट्ट दी । धनक धिन धिन धनक धिन धिन मरे अटर लट्ट जाश घाने लगा । मैं नूर के साथ हाथ मिलाया और हाथा में मिट्टी ममत्कर उसका तरफ फेंक दी । नूरे का बाँस शरीर दधर मरा एक बार ता जी खुश हा गया । उसका शरीर लगा मधा हुआ था जम रज न कही फुरमन में बटकर तराना हा । घूट जमा कट बडा वही चमत्तर आगें । पनगी मी नाज और हाट और टागी टागी भूरी भूछे । शक्त्त स यह पहलवान मानूम नशा जाना था ।

जब गाल की घुन तब हा गर् ता हमन दमन पजा लिया । झटपें हान लगी । मैं दा चार शान्ता में उस तांग । वह ताज्जत में मुगम कम था लकिन पुट

तीला इतना कि धरीर पर पानी की बूद न टिकने दे। मैं उसे गिराने की कई बार कोशिश की लेकिन वह हर बार निकल जाता था। मैं उसे पकड़कर नीचे झुकाता तो वह बेंत की छड़ी की तरह दाहरा होकर इतनी पुरती से मेरी पकड़ से निकल जाता जैसे मुट्ठी में हवा निकल जाए। याही देर बाद लोग हँसने लगे। साला, सलोना चिड़िया की तरह फुदकता फिरता है। मैंने एक बार पूरे जोर से उसे पकड़ने की कोशिश की लेकिन वह पुरती से ऐसे घूम गया कि मैं खुद गिरत गिरते बचा। मैं फिर उस दबोचने की कोशिश की लेकिन वह साप की तरह लचकीला मरी बाँहा में से निकल गया। मेरा गुस्सा बहुत बढ़ गया। मैंने उसे पकड़कर उसकी बाह को बाध कर लिया। उसके पाव को अपनी ऐड़ी से खिसकाकर उसे गिराया कि उसका अपना और मेरा सारा बोध उसकी बाह पर आ पडा और इस तरह तडाख की आवाज आई जस कोई टहनी टूटी हो। उसका बायाँ बाजू लटकने लगा। मैं एक तरफ हट गया। मुझे जस होश नहीं था। मैं घबराया हुआ चारा आर दख रहा था। मुझे पता था कि मैंने क्या किया है। जो मैंने साचा था वही हुआ था।

‘जब कुछ देर तक पूरा बाजू को पकड़कर बठा रहा ता मैं उसके पास गया। दद के बावजूद उसकी आखा में जजीव चमक थी। उसने मलामत भरी नज़रो से मरी आर देखकर कहा कुशती लडने आए थे या मरा बाजू तोडने तुम चक वाले उस्ताद मेहर के शागिद हो ना उसके इन शब्दा ने मुझे जैसे शक शोर लिया।

‘दद के मारे नूरा जमीन पर चिन लेट गया। डोल वाली ने फतह की घुन बजानी गुरु की तो हजूम में हाहानार मच गया। हमारे इलाके के लोग ने खुशी से बन्दरे बुलाने शुरू कर दिए। भीड़ हमारी तरफ जमड पटी। उस्ताद सबसे पहले पहुँचा। उसने मेरी आर नफरत से देखा और नूरे की पीठ पर थापी दी। अपनी पगड़ी उतारकर उसके बाजू पर बाध दी। उसने नूरे की पीठ पर थापी दकर कहा—नूरे तू जीत गया। लालू के साथ मैं भी हार गया। मैं तो इस विरछ (वृक्ष) समझकर पानी लिया था कि इसकी छाँव में बठूगा लेकिन मुझे क्या मालूम था कि इस विरछ में एक सूराय भी है जिसमें एक साप रहता है जो भरे पिड में मुझे काट घाएगा। उस्ताद की आँखें नीची हा गइ। नूरे की आँखा में दद के साथ साथ एक अजीब चमक भी थी। मैं उस्ताद के पाव पर गिर पडा और पफक पफककर रोने लगा। उस्ताद एक तरफ हटकर वाले कि इसमें अच्छा तो यह था कि तू हार जाता।

उस्ताद न नूरे को अपन बधा पर उगा लिया । ढोल वाले आगे-आगे ढाल बजात हुए चलने लग । उस्ताद त सारे पिंड का चक्कर लगाया और लोगो स कहत रहे कि पार इलाके का नूरा पहलवान जीत गया और लानू पहलवान समेत हम सब हार गए । उनकी आवाज म कुछ ऐसा दद था कि सब लोगो ने अपनी हार मान ली । उस्ताद न नूरे को डिप्टी साहिब के सामने पेश किया । उसके सिर पर जीत का पटका बांधा और एक पौन् और चानी क इक्यावन रुपय उसकी शोली म डाल दिए ।

‘उस्ताद का गाव मेहतावपुर से चार कोस था । वह नूरे को सारा रास्ता बधो पर बिठाए अपने गाव ले गया । गोगा की एक भीड उनके साथ थी । घर ले जाकर उसकी बांह जोडकर बांस की सीख बाध दी । नूरे को उहनि सात दिन अपने घर मे रखा । बड पलग पर नूरा बठता । आस पास छाटा पर दूसरे लोग बठे रहत । उस्ताद की हवेली म मेला-सा लगा रहता । नूरे की इस तरह आओभगत होती जस वह गाव का जमाई (दामात) हो या कोई बहुत पडुचा हुआ सत या फकीर ।

‘सात दिन के बाद जब नूरे की बाह ठीक हो गई ता उस्ताद उस घाडी पर बिठा कर व्यास नदी तक छोडन गए । पत्रह-बीस आदमी साथ थ । सब लागो न नूरे से माफी मागी कि उनके इलाके के दगल म उसके साथ ज्यादाती हुई है । वापस आकर उस्ताद न मरा लंगोट लेकर पीपल की ऊंची टहनी के साथ बांधकर मुझे अखाडे म उतरन स मना कर दिया । उस दिन के बाद मैं उस्ताद के साथ दगल म तो जाता रहा परन्तु मरा काम सिफ पटठा की मालिश करना था । वह दिन गया आज तज मैंन कभी बच्च पर भी हाथ नही उठाया । काइ माली भी द तो हाथ जाड दता हूँ । किमी क चान लग जाए, हड्डी टूट जाए या उतर जाए तो मी काम छोडकर उसकी मरत के लिए जाता हूँ ताकि जा पाप मुमसे हा गया था वह दूर हा मर ।

यह कहानी मुनात-मुनात लानू पहलवान का आखा म आंभू था गए । कानी भी बच्च की-मी मामूमियन और शीर म पहलवान का बाने मुन रहा था । पहलवान क अन्त जस विचारा की गहरी नती बग स वह रही थी और उसकी सनह पर बह गुण मौडा की तरह उमडे आ रह थ जा आन्मी का जानवर स इमान बना दन है । उसकी बाने मुनकर काली का एम महमूम हा रहा था जस उमरी आवाज हड्डारा जन्मा का छू कर आ रहा था ।

लानू पहलवान न उतन हुए कहा

‘बाट पर म कपरा न हाना । मैं उतर तना । कान मैं इम प्यकर

फिर मालिश कर दूंगा। तुम यहाँ न आना, तुम्हें चलने में तकलीफ होगी। मैं स्वयं ही आ जाऊँगा।'

नहीं, मैं ही आ जाऊँगा। आप उस गदगी में वहाँ आएँगे।' काली ने तुरन्त उत्तर दिया। लालू पहलवान ने काली की ओर देखा और प्यार से डाँटता हुआ बोला

इस गदगी में पूल भी पैदा होने हैं। तेरा बाप माछा मेरा लँगोटिया यार था। वह मेरी मालिश करता और जोर करवाता था। हमारा दाना का बराबर का जोड़ था। लेकिन मैं आगे निकल गया क्योंकि मेरे पीछे जमीन थी, खुराक थी। मैं अकेला एक भस का दूध पी जाता था। उसके पीछे बहुत नर थी सिर्फ सूखी मेहनत। लेकिन नर आदमी था, बहुत सूज वृद्ध वाला था। जब तक वह जिन्दा रहा उसके पास दिन में एक बार खर जाता था। तू भी ता उसी का बेटा है और फिर यह काम मेरा कसब नहीं, धम है। इसके लिए तो मुझे नहीं भी जाना पड़े तो खर जाऊँगा।'

लालू पहलवान अभी बातें कर रहा था कि बड़े दरवाजे पर किसी के मुँह में बकरा बुलाने की आवाज आई बब्बा बब्बा बब्बा। लालू पहलवान, काली और जीतू—तीनों उस ओर देखने लगे। लोहे के बड़े दरवाजे को जोर से धकेलकर दिलसुख झूमता, लडखडाता और ऊटपटाँग बोलता हुआ अंदर दाखिल हुआ। सरकड़े की तरह लम्बा और पतला शरीर था उसे बलने में से निकाला गया हो। बेजने के निकट आकर वह रुक गया और चारा आर दखता हुआ आवाजें देने लगा

'ताया ओ ताया।' जब उसे कोई उत्तर न मिला तो वह ऊँची आवाज में बोला

'बोल वहाँ है तू—बाहर आ जा नहीं ना सारी पहलवानी निकाल दूंगा। पहलवान न उन दोनों की ओर देखा और उसके चेहरे का रंग बदल गया और उक्ताहट भरी आवाज में बोला

क्या है दिलसुख? क्या तू आज फिर पीवर आया है? लालू पहलवान दालान से आगन में आ गया। दिलसुख उसके पास आकर और गौर से देखकर डाँटता हुआ बोला

तू कौन है?' दिलसुख लालू पहलवान के और भी पाम चला गया और अपना मुँह उसके बहुत पास ले जाकर हँसता हुआ बोला

'तू ताया है?'

लालू पहलवान ने उसे पकड़कर झसोडा।

'आज तू फिर पीकर आया है। तरो मौत के दिन अब करीब हैं। कुछ शम कर।'।

दिलमुख ने लानू की बात अनसुनी करते हुए कहा

यहाँ वह तो नहीं आई लच्छो निककू चमार की छोकरी। साली परेव दे गई। एसा चक्कर दिया कि अब तक नहीं मिली।

काली और जीतू ने एक-दूसरे की ओर देखा। काली की आँखा में लाल लाल डोरे उभर आए और साथ ही शम के भारे उसकी गदन झुक गई। लानू पहलवान ने दिलमुख को गालियाँ दीं और धक्के देकर उसे हवेली से बाहर निकालता हुआ बोला

'अगर ज्यादा बक्वास की तो जूते मार-मारकर सिर पाला कर दूंगा।'

दिलमुख बुटबुटाता हुआ बड़े दरवाजे की ओर मुड़ गया।

'नालायक सारे जमाने का। इतनी जायदाद का मालिक और य करतूतें।'

लानू पहलवान ने दुखभरे स्वर में कहा। दिलमुख ने बड़े दरवाजे के पास जाकर पीछे मुड़कर देखा और लानू पहलवान की ओर धूककर आगे बढ़ गया। वह बड़े दरवाजे के बाहर जाकर अमरू की आवाजें देने लगा। लेकिन जब कोई जवाब न आया तो भोगी-सी गाली देकर बोला

'बहन तो गई थी अब साला भाई भी दौड़ गया। शराब की भट्टी से भेरे साथ आया था।'

काली ने यह सुना तो भना-सा गया। पहलवान दालान में आकर चारपाई पर बठ गया। काली न उसकी ओर देखा। वह भी चिन्त था। साम जैस फूट रही थी। तीना कुछ दर के लिए चुप रह। फिर लानू पहलवान न किसी गहरी सोच में डूब हुए कहा

जाट जमीन में सबसे ज्यादा प्यार करता है भादया में भी ज्यादा। लेकिन यही इसरी सबसे बड़ी दुश्मन है। दिलमुख भीन घुमाऊँ जमीन का बाहिर माँक है। नम्बरदार के मिवा किसी के पास जमीन नहीं है। जाट को जवानी आन में पहच ही पर निकलन गुन हो जान हैं। औरत और शराब उम अपनी तरफ घीचन हैं। कई तो एक-सा घरर खारर बागम आ जान हैं कुछ वहाँ के ही रहत हैं। दिलमुख पाँच घुमाऊँ जमीन पहले ही रत्न रख चुका है। बाकी आहिम्ना-आहिम्ना रख दगा बाप-जान का अच्छा नाम रोजन कर रहा है कम-बखू तिन हुए मर पाग आया था। पाँच तो मय के बदन में घुमाऊँ जमीन रत्न रख रहा था। मैंन ता माफ जवान द निया। मय दान और कमता पहलवान मग भाई थ। रिजना पुराना नहीं, मून ता एक

हीं है। अब नम्बरदार हरनाम सिंह और वावक वाले जगत क पास कोडिया क मोल जमीन रहन रख रहा ह। दुख तो बहुत होता है पर क्या करूं, लोक-गज मेरी बांह पकड़े हुए है। शरीके का मामला है। कल का लोग कहेंगे कि ताया भतीजे की जायदाद खा गया। मैंन राजे घर मे इसकी शाली कराई थी। लडकी का बाप फौज म सूबेदार है। इसका फूल-सा बच्चा है। उस बेचारी को इसने बहुत दुख दिया। वह तो रो पीटकर अपने मने चली गई। सो हीले बहाने करके दिलसुख से आधी जमीन लडके के नाम करा दी है। सब विस्मत के खेल हैं। इसके बाप दादा के वक्त म इसकी हवेली में पचायत होती थी। अब गाँव का सब लुच्चा-लफगा बही झूठठा होता है।' पहलवान के मन प्राण जैसे काँप गए थे। उसने कानो की हाथ लगात हुए कहा

हे रख जी, सबको बखश देना।'

कुछ देर चुपचाप बठे रहने के बाद काली उठ खड़ा हुआ। जीतू भी उसी समय उठ बठा। लालू पहलवान उह जान क लिए तयार देखकर बाला

'बल पडे। अच्छा, इसका खयाल रखना। हवा न लगने पाए। सेंक जरूर दना। कल में दिन ढले आऊंगा।'

दोनों न लालू पहलवान को बदगी की और काली जीतू के कधे का सहारा लेकर चल मडा। दोनों बडे दरवाजे तक चुपचाप चलत आए। उनका धान करन को जैसे मन नहा चाहता था। दरवाजे के बाहर आकर दोनों रुक गए और एक-दूसरे की ओर इस तरह दखन लगे जस पूठ रह हो—तू क्या कहना चाहता है। दोना की नजरें झुक गई जस बात करने स हिचकिचा रह हा। काली कुछ क्षणा क बाद जीतू क कधे से हाथ उठाता हुआ बहुत धीमी आवाज म बोला

जीतू तू तो काम-वाज के सिरसिले म गाँव के अंदर-बाहर आता जाता है। क्या यह ठीक है कि लच्छा अर दिलसुख की बटक म भी आती है ?

मैं भी यही सोच रहा था और यही बात पूछना चाहता था।

कुछ क्षणा के लिए चुप रहकर जीतू ने निगायात्मक स्वर म कहा

'आती होगी, जरूर आती होगी। वह बाठ आए चो की तरह आजकल चारा बार रास्त बना रही है।

सारा दिन काली घर में छाट पर लेटा रहा। नानो ने दिन में कई चक्कर लगाए ताकि काली का हाल स्वयं पूछ सक परन्तु जरा भी वह आती मुहल्ल का कोई-न कोई पुरुष या स्त्री उसके पास बठा होना। काली तो हाल पूछने वाला को कोई उत्तर न देता परन्तु चाची चोट का विस्तृत वृत्तान्त देकर परमात्मा से पाथना करती कि चौधरी हरदव की स्यादती का बदला उससे वह स्वयं ले।

दिन भर हाल पूछन वाला का ताँता बँधा रहन से काली का मन उदास नहीं हुआ परन्तु शाम के समय घर में लेटने से उसका दिल धवराने लगा। उस का जी बाहर खेना में खुली हवा में जान को हुआ। वह कुछ समय तक चाची के डर से छाट पर लेटा रहा परन्तु जीतू के आने पर वह उठ खड़ा हुआ।

काली ने जीतू के बान में कुछ कहा और उसने कोने में लाठी उठाकर उसके हाथ में थमा दी। चाची उस बाहर जान के लिए तयार देखकर हैरानी से बोली, तू कहा चला? चलने से मुट्ठा बन गया तो दिनों पर जा पड़ेगा। छाट पर लेट। मैं रोवा गम कर देती हूँ और उससे चोट को सँक दे।

चाची, लालू पहलवान ने कहा था कि शाम को थोड़ा-बहुत धूमना फिरना, बर्ना तकलीफ बंद जाएगी। काली ने कहा। जीतू ने भी उमका समर्थन किया तो चाची चुप हो गई और वे दोनों गली में आ गए।

काली अँगड़ाकर लाठी के सहारे चल रहा था। वे मगू के घर के सामने पहुँचे तो नानो द्वार में खड़ी थी। वह बहुत ध्यान से काली की ओर दखन लगी जैसे उसके अग-अग का निरीक्षण कर रही हो। काली ने भी उसकी ओर तजर भरकर देखा परन्तु जीतू की मुमकरता पाकर उसने आँखें झुका ली। नानो ने मन हा मन सोचा कि काली को सचमुच बहुत चोट लगी है। मगू झूठ नहीं कह रहा था कि उसने कूल्ह और कंधे की हड्डी चटख गई है।

गाव से बाहर आकर वे चो के बघ पर चल गए। वहाँ से वे कधाने का जान वाली पगडडों पर उतर गए और चो के पार शीशम के वृथो के कुज में जा बठ। जब अँधेरा छा गया तो वे गाव की ओर चल पडे। चो पार करने के बाद उह कुछ जावाज सुनाई दी। दूर होने के कारण वे उन जावाजा को पहचान नहीं पा रहे थे जावाजें सुनकर जीतू की जिनासा जाग उठी और वह उन जावाजा तज पहचन के लिए तेज-तज कदम उठाने लगा और काली को पीछ छोड़ गया।

चो के बघ पर दिलमुख, बलवता और मगू जा रहे थे और तीनों ने शराव

पी रखी थी। वे लडखडात जीर एक् दूसरे से टकरात हुए जाहिस्ता आहिस्ता आग बढ़ रहे थे। जीतू उनके निकट पहुचा तो दिलमुख चुनीती भरी आवाज मे बोला

‘कौन है तू ?’

‘चौधरी मैं हूँ जीतू।’

‘मुना चमारा तू आधी रात को यहाँ कसे घूम रहा है ? क्या किसी मगूक की टोह मे यहा आया था ?’

जीतू के उत्तर देने स पहले ही मगू बोल पडा

आजकल यह चमादडी का छोटा पच है। बडा पच काली है।

‘फिर तो निककू की छोकडी इसके भी बस भ हागी। दिलमुख हँसता हुआ बोला।

‘चौधरी, वह तो अपनी यरानेदार है। इसके मुह पर वह यूकती भी नही। मगू ने अहकार भरे स्वर मे कहा।

ओ मगू, तेरा क्या मुकाबला है तू तो चमादडी का राजा है। पटठे ने उसे पूरी तरह जवान भी नही होन दिया। पहले ही उस पर काठी डाल दी।’

बलवत ने मगू को थापी देकर कहा और फिर वह दिलमुख का कधा पकडता हुआ बोला

दिलमुख, जो लकी चाचे मुशी की हवेली मे काम करती है वह एकदम पटठी है। बिलबुल जगली मोरनी जसी। रग तो पक्का है लेकिन नन नक्का बहुत अच्छे हैं। जब वह सिर पर टोकरा उठाकर चलती है तो उसकी कच्चे खरबूजे जसी छानिया कटोरे मे पडे पानी की तरह हलकोरे खाती हैं। एक चार हाथ फिर जाए तो उसकी जवानी सरसा के फूला की तरह खिल उठे।

‘मगू कौन है वह ? किसकी लडकी है ?’

दिलमुख न बचनी से पूछा। मगू ने कोई उत्तर न दिया तो वह उसके कधे को थडोडता हुआ बोला

‘साले बोलता क्या नही। तू तो एम चुप हो गया है जैसे तेरी सगी बहन लगती हो।

‘वहन ही लगती है, चौधरी।’

मगू ने अपनी घोंप मिटात हुए कहा। बल्यता खिलखिलाकर हँस पडा और उस धकेलता हुआ बोला

‘साले तरी शक तो नजरबटू जसी है।’

उनकी बातें सुनकर काली के दिमाग मे उफान सा उठन लगा था। उसका

जी चाहता कि बलवत और दिलमुय को पाग डाँ । य चौधरी पाग है ता
 दूसरा मतलब यह नहीं कि दूसरा की बहू-बहिनिया के बारे म ऐसी बातों म
 बातें करें । उम मगू पर बहुत गुम्गा आ रहा था कि यह पाग बगरा हो
 गया है कि अपनी बहन म बार म लगी सुरी बाँ गुत्तर ही ही हम रहा है ।

काली उनक बरतार पहुँचा तो दिलमुय न पूछा
 'सो है ?'

मैं है । काली । लठी पत्ता हूण कहा ।

ओ काली क्या तू अभी जिंदा है ? मिन ता गुता था कि हुरतव न तरी
 हड्डिया का मुग्गा बाग लिया है । चमारा कदा मुठ दर जान ला है आ एर
 ही बार म हड्डियां तुहवा लीं । बलवत न हँसत हूण कहा ।

तुम्ह अपनी ताकत पर घमट है तो तू भी दा हाय करक दग्य ल ।
 काली ने लठी पँ दी और बाँह पर हाय फरा लगा ।

'बाह आ मूरमे ! क्या दूसरी टाग भी तुहवाके का इरादा है ? बलवत
 न काली की जार बढ़ते हुए कहा ।

बस-बस कहत हूण जीतू ने बलवत को पकडने की कोशिश की ।
 बलवता उस धररा देकर काली की आर बडा लेकिन दिलमुय म पकड
 लिया ।

इस वक्त नहीं । तुम्हारी कुस्ती कल देखेंगे । इतनी अच्छी बातें कर रहे
 थ, बीच म लडाईं झगडा शुरू कर दिया ।

'चौधरी कवारी लडकिया के बारे म ऐसी बातें करते हुए तुम्हे शम नहा
 आनी ?' काली ने क्रुद्ध स्वर म कहा ।

तुम्हें शम आती है तो तू चला जा । जिसकी बहन है वह चुप है और
 तेरे पेट मे खाह मखाह मरोड उठ रहे है । क्या मगू ?' दिलमुय ने कहा । मगू
 ने कोई उत्तर नहीं दिया तो काली को सचमुच ही शम महसूस होने लगी और
 वह चाट के बावजूद तज तेज कदम उठाना हुआ उनसे आगे निकल आया ।

काली के जान के बाद कुछ क्षण तक सब चुप रहे । दिलमुय झुकता हुआ
 बोला

साले ने सारा मजा खराब कर दिया । और फिर वह मगू की ओर मुडता
 हुआ बोला

'सकी भी प्रीतो की छोकरी के साथ यारी है या नहीं । इसकी तो उनक
 साथ मुडग साक्षी है ।

अपना मागूक ऐसा नहीं है कि हर एर मरे के कानू आ जाए । वह तो

इसकी ओर आख उठाकर भी नहीं देखती।' मगू न प्रफुल्लित स्वर म बर्हा।

'जा ओ मगू इतना झूठ मत बोल'। वह तो राम गाय है। चारा दिखाकर उसे कोई भी दोह सक्ता है।'

यह सुनकर काली एक बार फिर रुक गया ताकि उह उत्तर दे। परन्तु फिर यह सोचता हुआ वह आग बढ गया कि जब अपन मुहल्ले के लोग ही एमी बातें करत हैं ता दूसरा का मुह कसे बढ किया जा सकता है।

काली घर पहुचा ती चाची खाट पर लेटी थी। उसके पास कोई बैठा था। काली उसे अँधेरे म पहचान न सका और निकट आकर उसे देखता हुआ बोला

चाची।'

'आ गया, बाका। मेरा तो फिन्न से दिन्न डूब रहा था। काइ अच्छी बात मन म जाती ही नहीं थी।

चाची परमात्मा का यान् करती हुई उठ बैठी। काली उसके सामन दूसरी खाट पर बठने लगा तो ज्ञानो उठकर खडी हा गई।

'पानो पुत्तर, तू क्या खडी हो गई?' फिर वह काली स बोली

'बचारी दिन डूबने के बाद तस चक्करलगा चुकी है। यह लडकी न होती तो मैं हील से ही मर जाती।'

काली ने पाना की आर देखा तो उसे बलवत और दिलमुख की सब बातें याद आ गइ। वह दूसरी खाट पर लेटता हुआ बोला

'चाची, अँधेरा क्या कर रखा है?'

बाका, तू यहाँ नहीं होता तो मेरे लिए दिन म भी अँधरा ही रहता है।'

चाची दीया जलाने के लिए उठी ता काली पानो से बहुत धीम स्वर म बोला

'तू घर चली जा, मगू आ रहा है। उसने शराब पी रखी है।

पानो ने उसकी बात को अनसुना करत हुए कहा

क्या बहुत ज्यादा चाट लगी है?'

नहीं।' वह श्रुद्ध स्वर म पाना से बोला

'चली जाओ ना, बरना मगू मारगा।

पानो को काली के लहजे मे शक हा गया कि उन बहुत ज्यादा चोट लगी है। काली ने उसे बाजू ने पकडकर दरवाजे की ओर धक्कते हुए कहा

'चली जाओ। मगू को पता चल गया ता तुम्हारी हडडी-पसरी एक कर देगा।'

'तहाँ जाऊनी । मार पड़ना ना मुझे मुझे क्या !'

जाना मुसकराई ना वाली को भँडे से भी उसके मार-मरत रीत मंडा
आए । बाबा म नीत ज्ञाना तो उसके भँडे वरना ५ वाली को जाना
बहन मुसकरी रीत रीत कीर बत मार ना मार मोकने मरना रि रि मुस नीत
बाबका ना कुच बत रीत ५ बत रि मुस नीत रीत रीत ।

जाना को मरना म मरत मरना मरना रि मरत मुस बटुत रीत तो बुकी है ।
बटुत रीत नीत मर मरनी तो जगो रीत की मरत म रोगनी म मरनी (रि का
मरना म बाबा मरना मरना मरना) के मरते रीत उच रीत भी । जानी माँ
को मर प्रवार मर मरना जाना का मर रीत म मर मरना और बत बटुत रीत
मर मर ५ वाली

माँ ।

आ गई तु निरमुक्ति । जगना म आये मोकने हुए बत रीत मर गई
भी मु ? मरना मरना मरना मरना मरना है ।

जाना म जानी माँ की बाग भागुनी बरत हुए बत

माँ वाली को बटुत बाग रीत है । मर बटुत नीत मुसकरी मर मुस मर की
मर मर मरना मरना है ।

'पौधरिया म माया मरना है मोक रीत रीत तो और क्या होगा ।'

जाना माँ की बाग मुसकरी जाना को निरमर हो गया रि बाबा को मर
मुस मरनी मोक रीत है । मर मोकरी मर पदेगा हा मर । मर मर पर
बैठी बरवटे मरनी रीत । मर मर मरना हो गया । मरना मरना जाग
मर । मरना मरना मरना जाग मर । मरनी हो गियार मर । मरना मरना
मरनी रात की निरमरना का कुछ रीत मरना मरना मरना मरना मरना
रात फिर टिक जाती । जाना मोक रीत भी रि वाली को मरना मोक मर है
मरनी तो मर मरना निरमरना हो गया है । फिर उम मरना हुआ रि रात टिक
मर है । मुस भी मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना
के मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना
मर मरनी मोक मरनी । मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना
मरनी । जाना ने मोक मरना न जाकर वाली को देव आए । उसकी मरना के
सामने रीतनी मरना मरना । फिर उस मरना मरना कि मरना मरना मरना या मरनी
ने मरना मरना तो फिर मरना मरना । मरना मरना मरना मरना मरना मरना
मरनी मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना मरना

मर कुछ देर चारपाई पर पड़ी बरवटे बदलती रीत । फिर वह उठ खड़ी

हुई। उसने चुक्कर अपनी माँ की ओर दया और धीरे धीरे लम्बी की सीढी उतरकर नीचे आ गई। उसने दरवाजे की साँवल उतारी और एक पट खोला तो घुर घुर की आवाज एम आई जैस उसे चेतावनी दे रही हो। उसने बाहर निकलकर दरवाजा बन्द करने के लिए साँवल की आर हाथ बड़ाया लेकिन फिर खींच लिया।

लोग अपने आगना में सोए हुए थे। वह अपने-आप को समेटती हुई दबे पाँव अँधेरी गली में आगे बढ़ती गई। जब वह काली के घर के पास पहुँची तो उसके मन में खयाल आया कि अगर चाची की आँख खुल गई तो फिर क्या होगा। परन्तु जब वह काली के घर के सामने पहुँची तो सब-कुछ भूल गई और लपककर अन्दर घुस गई।

एक ओर खाट पर कच्छा पहने हुए काली साया हुआ था। उससे थोड़ी दूर पर चाची गठरी बनी हुई लेटी थी। उसके पोपले मुँह में साँस अजीब-सी आवाज पदा करती हुई आ-आ रही थी। काली के सिरहाने बैठकर वह उसके कंधा पर हाथ फेरकर देखने लगी कि कहीं चोट लगी है। काली हड़बड़ाकर उठा तो जानो ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया और बहुत धीमे स्वर में बोली 'मैं हूँ।'

काली ने चाची की खाट की आर देखा और यह इतमीनान करके कि वह सोई हुई है, उसने जानो का हाथ पकड़ा और उसे इटा के चक्के पीछे ल गया। जानी के कुछ बहन से पहले जानो ने उसके कान में कहा

क्या बहुत चोट लगी है ?

नहीं।

'सच।'

'तरी सोगंध।'

जानो ने इतमीनान से धीरे धीरे लम्बा साँस छोड़ा और अपनी तसल्ली करने के लिए काली के बाजूआ, राना, छाती और पीठ पर हाथ फेरने लगी। काली के शरीर में सनसनी-सी हाने लगी और उसने जाना का अपनी बाँहा में ले लिया।

'चोट लगी कहीं है ?'

'बूल्ह में।'

'क्या निकले माए ह्रदव को।' जाना ने उसकी छाती के माथ सक्ते हुए कहा।

काली को बलवत और तिलमुख की सब बातें फिर याद हो आई। कच्छे

खरबूजे जसी छातिया । काली की सास उखडने लगी और सारे शरीर मे तनाव बढने लगा । उसने जानो को भीच लिया । फिर उसकी पीठ को अपनी छाती के साथ लगा लिया और हाथ उसकी छाती पर जाकर बटारिया बन गए । जानो ने कुछ क्षणा के लिए काली की गिरफ्त को तोडने का यत्न किया लेकिन शीघ्र ही उसके हाथ ढीले पड गए ।

कुछ क्षणा के लिए वे ऐसे ही खडे रहे । काली सारी दुनिया को भूल गया और उसका हाथ नीचे रीगने लगे । जानो ने एक बार फिर उस रोक्ने का असफल यत्न किया । उसका सारा शरीर ढीला पड गया और काली के साचे म ढलता गया ।

जब काली ने अपनी गिरफ्त ढीली की तो जानो को महसूस हुआ कि वह गिर जाएगी । उसने बहुत कठिनाई स अपने आपको सँभाला । उसे एकदम डर और शम महसूस होने लगी । वह काली के आँगन स निक्लकर गली म आ गई । उसने घर जाकर अंदर से दरवाजे को सँभल चढा दी । उसने अपनी सलवार उतार दी और उसे पानी म अच्छी तरह निचोडकर सीनी के डड के साथ लटका दिया । वह कमर के इद गिद दुपट्टा लपेटकर छत पर चली गई और अपनी खाट पर ऐसे गिर पडी जैसे उसके अंदर बल एकदम ही खत्म हो गया हो । वह मुह म बपडा ठास फफक कर रोने लगी ।

२३

सतासिंह न बारी से सब औजार जमीन पर उडेल लिए और उह छाँटा हुआ बोग

आज शन बाँधकर काम करेंगे । बल शाम तक यह दावार पूरी करनी है । मैं तयार हूँ ।

काली हाथ झाडना हुआ उठा और गारे की तगारी लीवार क साथ लग फन्ट पर रखकर जल्नी जल्नी दूँ पकडवाने लगा । मिम्नरी सतासिंह क हाथ बन्दूक तक चर रह थ । वह हाथ म हर इन् को उछालकर चारा आर म ध्यान स दयता और उमक नाच गारा लगाकर लवार पर जमा दता । वह हर इन् क

घारे म कहता कि यह ज्यादा पक्क गई है, यह बच्ची रह गई है, यह बिलकुल ठीक पकी है। गारे में कभी ककर आ जाता तो वह उसे काँड़ी से बाहर फेंकता हुआ कहता कि गारा मक्खन की तरह नम और साफ हो तो इट तुरत जम जाती है और दीवार की उम्र लम्बी होती है।

धूप बढ़ने के साथ-साथ मिस्तरी सतारसिंह के हाथ सुस्त पड़ते गए और पारा चढ़ता गया। प्यास लगी तो पानी पीने के लिए उसे महाशय की दूकान पर जाना पड़ा। वह वापस आकर बहुत तल्लख स्वर में बोला

‘मैं चमारा का काम इसी दुख का मारा नहीं लेता। अभी पानी पीकर आया हूँ फिर प्यास लगने लगी है।’

‘नर्सिंह के घर से पानी ला दू, वह तो तरा सिख भाई है।’

‘आहिस्ता बोल’ मेरा उसका क्या रिश्ता। वह मजहबी सिख है।’ सतारसिंह ने नर्सिंह को गाली देते हुए कहा।

लेकिन गुरु का सिख तो है।’

सिख धन जाने का यह मतलब तो नहीं कि वह चमार नहीं रहा। धम बदलने से जात तो नहीं बल जाती।’ सतारसिंह ने एक इट को दो हिस्सा में तोड़त हुए कहा।

जब सूय सिर पर आ गया और लू चलने लगी तो सतारसिंह फटटे स नीचे उतर आया। वह बाल्टी में हाथ धोकर दीवार की ओर देखता हुआ बोला

‘आज धूप बहुत तेज है। मैं दिन ढले ही आऊँगा।’

‘ठीक है। मुझे भी स्कूल के मुशी के पास जाना है। बल उसका बुलावा आया था।’

‘मगू की बहन स भी बुलावा आया है या नहीं?’

सतारसिंह ने शरारत भरी नजरों से बाली की ओर देखा और खिलखिलाकर हँसता हुआ बोला

‘पुत्ररा तू बिरमत का धनी है। भोज कर रहा हूँ भोज करत समे हम भी याद कर लिया कर।’

सतारसिंह गली में चला गया तो वह सामान समेटकर बाठरी में जा घुसा और बहुत गर्मी होने के बावजूद दोना पट बद करके खाट पर लेट गया। चाची की अनुपस्थिति से उसे इतमीनान सा मिला।

बाली नहा चुका तो चाची ने उसके हाथ पर मक्ई की चार रोटिया रख दी। वह उन्हें धूरता हुआ बोला

‘मक्ई की रोटी पकाई है, क्या गेहूँ का आटा खत्म हो गया है?’

‘खत्म तो नहीं हुआ, काका । रोज गेहूँ की रोटी खाएंगे तो गुजारा कैसे चलेगा । हमारे घर में तो गेहूँ की रोटी सौगात समथी जाती है । मुहल्ले में जाकर दख लो, लोग बाग धाम, मकई और बाजरा ही खाते हैं ।’

चाची ने काली को समझाया ।

रोटी खाने के बाद काली ने गारे पर पानी छिड़का और कोठरी में आकर खाट पर लेटता हुआ बोला

‘आज बहुत गर्मी है ।’

‘काका हाथ (आपाठ) बीत रहा है ।’

चाची ने रोटी खात हुए पोपले मुह से कहा । वह धीरे धीरे रोटी चबाती हुई अपने बुढ़ापे को कोस रही थी । काली को खाट पर बराबर करवटें बदलते देखकर उसने कहा

‘जा, तक्रिये में चला जा वहाँ हवा चलती होगी ।’

मुझे बड़े मुशी ने बुलाया है । स्कूल जाना है ।’

‘उसने क्या बुलाया है ?’

चाची नवाले को अपने मुह के पास रोक्ती हुई बोली ।

पता नहीं, कल नर्दासिह का लडका कह गया था ।

कोई नई मुसीबत न आ रही हो । सरकारी हाकिम बुलाए तो डर लगता है । पर मुशी बचारा तो लडकें पताता है । काका, उस तुम्हारे साथ क्या काम हा सनता है ?’

कोई चिट्ठी चपाटा आई होगी । शहर में भरे कुछ पस रह गए थे शायद वह आए हा ।’

चाची की चिन्ता एकदम दूर हो गई और वह काली को समझाती हुई बोली

‘किसी के सामने पस मत लना । गाँठ बाँधकर सीधे घर आना ।

काली हँसता हुआ करवट बग़र सान की कोशिश करने लगा ।

दिन ठले काली स्कूल चला गया । बड़ा मुशी अपने कमरे में चतूतरे पर बटा था । बाहर स्कूल के बच्च बड़े डार बटन की प्रतीक्षा कर रहे थे । मुशी ने हर गाँव की डार की अलग अलग डरी बना रखी थी । वह हर पत्र पर लिखा पना ध्यान में पन्ना और मावधाना में मुहर लगाकर उस मन्त्रिघन डेरी में रख लेता । काकी ने मसा का बन्गा का ता उमन गिर ऊपर उठाया और प्रसनामन हृष्टि में उमकी आर स्थन लगा । काका जाना

‘मुन्नाका मरा नाम काकीनाम है । काका आपने नर्दासिह के लडके में ।

काका अभी बात पूरी भी न कर पाया था कि मुन्ना प्रसन्न भाव में योग

'अच्छा-अच्छा, याद आ गया। तुम्हारा मनीआडर आया है। मनीआडर पर यह नाम पडकर मैं शशोपज में पड गया। मैं हैरान था कि इस नाम का इस गाँव में कभी खत नहीं आया, आज मनीआडर कहीं से आ गया। फिर मैंने सब बच्चा से पूछा तो नन्दासिंह के लडके ने कहा कि उसके मुहल्ले में इस नाम का आदमी रहता है।' मुशी काली को एक बार फिर ध्यानपूर्वक देखकर बोला 'आने के लिए भरी बात पल्ले बाध लो। अपने नाम के साथ बलिदयत या जात या दोनो जम्बर लिखा करा। उससे किसी गडबड का अदेशा नहीं रहता। अगर इस गाँव में तुम्हारे नाम का दूसरा आदमी होता और यह मनीआडर ले जाता तो तेरी रकम जाती, उस आदमी को हथकड़ी लग जाती और मैं नौकरी से बरखास्त हो जाता।'।

वह सामने पडे पत्रा पर झुकता हुआ काली से कहने लगा

'मैं डाक बाँट दू तुम इतनी देर में दो गवाह ले आओ।

गवाह का नाम सुनकर काली चौंक गया।

गवाह किसलिए ?'

'यह तसदीक करने के लिए कि तुम्हें रकम मिल गई है। गवाह पढना और दस्तखत करना जानते हैं तो अच्छा है। हा, उनका बालिंग होना जरूरी है।'

काली इस सोच में डूबा हुआ, कि गवाही देने के लिए किस से कहे डाक्टर विशनदास की दूकान पर आ गया। डाक्टर दीवार के सहारे अघलेटा कोई किताब पढ रहा था। काली बढ़ती बढ़ती दहलीज के साथ बढ़ता हुआ बोला

डाक्टर जी क्या पढ रहें हो ?'

यह सोचियत धुनिमन से नई किताब आई है। इसमें क्लास स्ट्रगल और मुम्तलिफ तबका के क्लास करेक्टर का तजकरा किया गया है।'

डाक्टर ने सीधा बँठत हुए कहा। काली की समझ में कुछ न आया। उसके चेहरे पर हैरानी की परछाइयाँ फल गईं तो डाक्टर मुसकराता हुआ बोला

'इसमें समाज के अलग-अलग तबका (वर्गों) की खासियतें बताई गई हैं। और यह बताया गया है कि इन तबकों में टकराव क्या जरूरी है।'

डाक्टर की बात लम्बी होने लगी तो काली उसे टोकता हुआ बोला

डाक्टर जी, मैं आपके पास एक काम से आया था।'

'क्या ?'

मेरा मनीआडर आया है। आपकी गवाही चाहिए। आपको डाकखाने चलना होगा।

मनीआडर कहीं से आया है ?

कानपुर से मिल वाला ने मेरी मजदूरी का हिसाब करने काया भेजा होगा।

डाक्टर ने लडकी को बुलाकर दूकान पर बिठा दिया और काली के साथ चल पडा। जब वे गली में आ गए तो काली बोला

डाक्टर जी एक गवाह और चाहिए।'

कोई बात नहीं। दूकाना से होकर चलते हैं, हुकीमा का ओमा मिल गया तो उस ले जाएंगे। अगर वह न मिला तो किसी और को पकड़ लेंगे।'

काली का दूकानो की ओर से जाने को जी नहीं चाहता था और जब डाक्टर ने थान की बात शुरू कर दी तो उसका निश्चय और भी दुढ़ हो गया लकिन उस ओर से जाए बिना कोई चारा नहीं था।

ओमे का साथ लेकर वे डाकखाने पहुँच गए। मुशी बच्चा को डाक देकर भेज चुका था। उसने डाक्टर और ओमे से इधर उधर की बातें करने का वाद फिर वही नसीहत दोहराई जो वह पहले काली को कर चुका था। उसने अपन सामन पडी सडूकची का ताला खोला। उसके एक खान में चार तह करके रखा हुआ मनीआडर निकाला और उस पर लिखा पता पढ़कर काली की ओर बढ़ाना हुआ बोला

अंगूठा लगाआम या

दस्तावन कहेगा। मैं इसी स्कूल से चार जमानों पास की थी। उन गिना खरनों का पंडित शिवराम मुशी थे।

काली ने मनीआडर लेकर रकम दधी और मुशा से बलम लेकर दो जगह मुबलग अस्सी रुपये समूह पाए लिखकर नीचे हस्ताक्षर करके मनीआडर मुशी की ओर बढ़ा दिया। मुशी ने पढ़कर उस मनीआडर लीगन हुए कहा

नाम का साथ बकलम मुनी भी लिया।

काली ने बकलम मुनी भा लिया तो मुशी ने बारी-बारी डाक्टर और आम का हस्ताक्षर कराए और उनका अपना भाँति निरी तग करके उसने मनीआडर का नीचे का एक हिस्सा तह करके फाटा और काली का हाथ में धमा दिया। फिर उसने मनीआडर मद्रुफा में रखकर बमद का एक छानना धम्य निकाला और उस पर धम्य छानना ताया ग्राहकर बहुत सावधानी से उसमें मरम-दम का नाम लिखा और उन्हें छान चार बार गिना। दम-दम का नाम नाम एक पाँच का नाम चार एक-एक रुपये का नाम और एक चबना काली का

बोला

'काली, आओ, दूबान पर चलत हैं। तुम्हें घर जाओ की क्या जन्मी है ?'

'डाक्टर जी, आज से फिर मरान बनाना शुरू किया है। मिस्त्री सतासिंह मेरा इतना कर रहा होगा।

'अच्छा। मुबह शाम किसी बत्त मरे पास आया करा। तर साय बात करने म मजा आता है। एव-दो आत्मिया को छोड़कर बाकी गाँववाला क सिर स मेरी बातें या गुजर जाती हैं जस भोम स पानी।

'जहर आऊँगा।' कहता हुआ काली आग बढ़ गया।

वह घर पहुँचा तो मिस्त्री सतासिंह वापस जाने क लिए तयार हो रहा था। काली को देखत ही बाला

'क्या मुझी तरे मुह को छुआरा लगा रहा था (सगाई कर रहा था) जो तूने इतनी देर लगा दी ?'

'मनीआडर आया था उसके लिए दो गवाह चाहिए थे। डाक्टर विशनदास और भोम को गवाही के लिए लेकर गया था। तुम डाक्टर को आदत जानते ही हो।

मिस्त्री सतासिंह खिलखिलाकर हँसता हुआ बोला

'वह कोई आदमी है। नायन के स्यापे की तरह उसकी बात खत्म होने म नहीं आती। ऐसा झलूला (मुस्त) आदमी मैंने कभी नहीं देखा। नाक साफ करने बठेगा तो आधी दिहाड़ी भूँ शडाप म लगा देगा। किसी वाहेगुर भगवान को वह नहीं मानता। किसी देवी देवता म उसका विश्वास नहीं है। गाँव का हर बेकार नौजवान उसका यार है। छोड हम उसस क्या लेना है। गारा और इटें रख, काम शुरू करूँ।

चाची कोठरी म सो रही थी। काली की आवाज सुनकर वह बाहर निकल आई और चिंतित स्वर म बोली

'पुत्ररा, क्या कहा मुझी ने ? क्या बुलाया था उसने ?'

चाची, मनीआडर आया था। इसलिए बुलाया था।

वह क्या होता है ?'

डाक से रुपया आया है। मैं शहर म जहाँ काम करता था, वहाँ से पसे आए हैं।'

चाची का मन प्रफुल्लित हो उठा। काली को अपनी ही नजर स बचाने के लिए उसने जबान दाँता तले दबा ली और अटेरन और सूत की अट्टियाँ उठा कर बाहर चली गई।

सतारिंह और काली सुयाम्त के बाद भी काम करता रह। जब अंधेरा गहरा हो गया तो मिस्तरी फट्टे स नीचे उतर आया और दीवार की ओर प्रशसा भरी नजर स दयता हुआ बोला

'काली, मुझे तू आज दस रुपय दे दे। किसी से हाथ उधार लिए थ। पना नहीं मेरा क्या बनेगा। मुना है गाँववाले नया तरखान लाना चाहत हैं।'

सतारिंह कुछ क्षण ठुप रहफर बोला

तू शहर म रह आया है। वहाँ राज-तरखान को काम मिल ही जाना हागा।'

'हाँ मेहनत करनेवाला आदमी शहर म बेकार नहीं रहता। वहाँ कमाई है। लेकिन खर्च भी बस ही है। मिस्तरी जी, परदेस, परदम ही है। वहाँ तो किसी से बटी वेंगली पर पेशाब करने के लिए भी कहो तो वह इस काम के पसे भनिगा। लेकिन यह नहीं कि वह चमार है, यह कुम्हार है। वहाँ भी जात-जात है लेकिन पास पैसा हो तो चमार भी ब्राह्मण के बराबर बठ सकता है।

मिस्तरी दम का नोट जेब म रखता हुआ वाला

'अच्छा, कभी फुरसत से बठकर सोचेंगे।'

सतारिंह के जाने क बाद काली चाची के पाम आ बठा और मुह लटका कर बोला

चाची, गाँव म हम ता हर आदमी पशु और भूढ समझता है। आज मुगी ने मुझे भूढ जानकर मरे म बारह आन ठगने चाहे।

पुतरा तू ऐसी बातें न सोचा कर। ख जो न जिसको चमार पना किया है वह चमार ही रहेगा चौधरी नहीं बनगा। सब कर्मों का फल है।'

चाची उस समझाती हुई वाली।

काका तेरे बाप-शदा भी इसी गाँव म रहे। वह तो कभी ऐसी बात नहीं सोचते थे। हाथ धोकर रोटी खा और सा ना। सवेरे से काम म लगा हुआ है।

काली नहा धोकर खाट पर बठता हुआ बोला

'ला चाची रोटी दे दे।

चाची उठी तो उसका दुपट्टा घड स नीचे खिमक गया। वाली ने शम के मारे मुह दूसरी ओर फेर लिया और खीपकर वाला

चाची, तू कमीज क्या नहीं पहनता ?

काका गर्मी से मरा शरीर जल रहा था इसलिए उतार दी। अब रात हा गई है सवेर पहन लगी।

वाली रानी घात लगा ता चाची उमक पास आ बटी ओर चिन्तित स्वर
म वाली

वाना पाना जाज भी नहा आई ।

चाची मोच म डूब गई और वाली जमीन का धूरता हुआ इम तरह रोनी
चप्रा लगा जस जहर निगत रहा हा ।

२८

चाची कोठरी का सारा सामान डयोड़ी म देखकर चकित रह गई और घबराई
हुई बोली

‘बाबा, तून यह क्या किया ? कोठरी का सामान डयोड़ी म क्या रख
दिया ?

चाची सोच रहा हूँ कि लग हाथा काठड़ी का भी बच्चा पक्का बना दू ?

‘पुसारा मरी मानो तो कोठरी को इसी तरह रहने दो । डयोड़ी पक्की बन
गई है यही बहुत है । अब शादी की फिक्र करो । सौ डेढ सौ रुपय हाथ को
रोकते रोकते भी लग जाएंगे । हम कोई खतरी महाजन तो हैं नहा जा माना
टांगे । चादी क दो चार गहने और शगुन के लिए सोने की बालिया या नाक
का कोका बना लगे । इस वक्त तो तुम्ह दस रिश्न मिल जाएँगे । मैं मर गई
तो फिर सारी उम्र दूसरा की बहुआ को देखकर छाती पीटोग ।

चाची कुछ क्षण रक्कर बोली

अब तू छोटा नहीं है । तरी उम्र क लटको के चार चार बच्चे हैं । तामू
का देख ले । उसके तीन बच्चे हैं चौथा तयार है । दलीपा तेरे से एक साल
छोटा है उसके भी तीन बच्च हैं ।

अच्छा-अच्छा तुम्ह हमेशा शादी ही सूझती है ? मौका आने पर शादी
भी कर लूगा ।

चाची ने वाली का कोरा उत्तर सुनकर मुह दूसरी ओर फेर लिया तो वह
उसके पास बठता हुआ बोला

चाची मैं सोच रहा हूँ कि कोठरी पक्की बनाने की बजाय अभी सिफ

पक्के स्तून बना द। दीवारें कच्ची भी रह तो काई हज्र नहीं। इनके बाद मेरी शादी हागी ता लडकीवाले सोचेंग कि उनरी लडकी अच्छे घर म गई है। वाली चाची की पीठ थपथपाता हुआ बोला

'पद्रह दिन का काम है। उसके बाद तू एक छाड मेरी दस शादिया कर देना।

'तू ता हर बात ठट्टे ग ले जाला ह। बाका, मैं सब कहती हूँ जिस लडके के भिर पर कोई न बठा हो उसके पास सान की इटें हा भी ता उसे काई लडकी नहीं देगा।

चाची मैं तेरी बात मानता हू। लेकिन पद्रह दिन म काइ फक नहीं पडेगा मैं बूढा नहीं हा जाऊंगा। गली म मेरी उम्र क ज्यादा नहीं तो दो लडके बनारे बठ हैं मगू जीर जीतू।

तू उनकी बात छोड द। निहाली के पल्ल पसे हात तो वह जीतू की शादी कई साल पहल कर देनी। काकी रहा मगू उसकी दा बुडमाइया (भंगनी) छूट चुरी है। शराबी को आंखो स देखकर काई लडकी नहीं देगा।

चाची उत्तन्तित म्वर म फिर बोली

हमार समे म छ सान हए तस ग्यारह साल की उम्र म शागी हो जाती थी। कई लडके लडकिया के ब्याह तो इमम भी छोटी उम्र म हो जाते थे। मैं आठन साल म थी जय मरा ब्याह हो गया था। तरी मा मुसस छोटी उम्र म ब्याही गए थी। लडका लडकी तस साल से उमर हो जात थे तो लोग जगालियाँ उठाने लगत थे कि कोई एय हागा जा याह नहीं होता। वाली चुप रहा ता चाचा बात बढाती हुई बोली

प्रसिनी एक लडकी घता रही ह। उसने भाई के माले की लडकी है। उम्र पद्रह साठ बनाती है। उसका बाप गढी म जूते बनाता ह। कहती थी लडकी का अग रग सब ठीक है। तू हा कह दे ता मैं उसमे आग बात करूँ।

अच्छा काठरी बन जाए तो जिस दिन जी चाह मेरी शादी कर देना। अत तू काठरी म जाकर दख ले काई चीज तो नहीं रह गई है।

काली ने बात खत्म करते हुए कहा।

चाची गहर सोच म डूबी बठी रही। काली ने अपनी बात दोहराई तो उसन डयोडा का द्वार अंदर सब द कर लिया। दीया जलकर हाथ म ले लिया और चाची को अपने पीछे आने का संकेत करती हुई कोठरी का आर बढ गई।

उसने कोठरी के भी दोना पट बना कर लिए और एक कान म बँठकर

जमीन को टटाने लगी। वाली उसक तिर पर घड़ा आरक्य म देग रहा था। चाची उठ पड़ी हुई और एग स्थान की ओर सक्न करती हुई बोली

'यहाँ देग पसो इट है। वाली न जगह को टटाला और जार ल्यारर इट बाहर निकल ली और उस परे रखता हुआ बाला

य रही इट।

चाची न उस पीछे हटा गिया और फिर उम जगह वा टटोला। हाया स मिट्टी उखाडने लगी। वाली का जब गर्मी और घुटन स साँस खने लगा तो वह चाची म कुछ भुद्ध स्वर म गाग

चाची क्या है हट, मिट्टी में उखाड दता हूँ।

'टहर बारा।

और फिर वह उस जगह की ओर सक्न करती हुई बोली

'यहाँ से मिट्टी हटा दे।

वाली बाहर आकर खुरपा ले आया और मिट्टी खोजन लगा तो चाची बहूत धीम स्वर म बोली

आहिस्ता आहिस्ता खोद। खुरपे की धमक प्रीतो के मकान म सुनाई देगी।

काली हैरानी म डूबा हुआ चाची के कथनानुसार काम करता रहा। आधा घंटे की खुरपाई के बाद वाली न जमीन म से एक मटका निकाला। उसका मुह खोला तो उसक अंदर स छोटा सा मटका निकला। चाची न मटका वाली के हाथ से ले लिया और अपना दुपट्टा जमीन पर बिछाकर मटका उसके ऊपर उँडेल दिया। उसम से चादी क कुछ रुपये छन छन करते नीचे आ गिरे। उनके साथ चादी की पाजेब, दो ड्रुमके चौक और फूल भी निकले। चाची ने गहने अलग कर दिए और काली स बोली

य गहन तरी माँ और मरे दोनो के है। मके समुराल से हम दोनो को यही कुछ मिला था। ये रुपये गिनो, पाच कम चालीस होने चाहिए। ये सब चीजें तरी शादी के लिए दबाकर रख दी थी। इसस एक तो चोरी चकारी का डर नही रहता, दूसरे पसा हाथ म हो तो खच हो जाता है।

चाची की बातें सुनकर और अपन सामन पड़ी चीजें देखकर वाली का मन पहल ता गुत्गुदा गया और फिर एकदम ही वह बहुत उदास हो गया। उसका जो चाहा कि चाची क गले लगकर पूट पूटकर रोए। चाची ने उन सब चीजा को समझत हुए कहा

'नर बाप नदा न तरे लिए यही जायदाद छोड़ी थी। अब तू इसना माकि है। वन में इतना चाहता हू कि तू मरे जीत-जी शान्ति कर ले। मैं भी

अपने आगमन में छम छम फिरती बहू को देख लू। बाका, क्या पता सास की लोरी अब छूट जाए।

यह कहते-कहते चाची की आँखा में आँसू आ गए।

काली चाची को कोई उत्तर दिए बिना ही बाहर आ गया और टथोनी में चक्कर काटता रहा। थोड़ी देर बाद चाची दुपट्टे में मन चीजें समेटकर उन्हें अपनी छाती से लगाए ड्याडी में ले आई और दुपट्टे को उसरी ओर बढ़ाती हुई वाली

ले इन्हें सँभाल लें। अब तू जाने, तरा काम जान।'

काली न दुपट्टा लेकर अपने माथे का लगाया और खामाशी से राना हुआ उन चीजों को एक बपड़े में बांधकर अपने ट्रक में रख दिया।

कुछ देर के दोना चुप रह। काली चाची की खाट के पास विचार मग्न बंठा रहा। उस अपने दादा, पिता और चाचा में से किसी की शकल याद नहीं थी। वह कोशिश कर रहा था कि उनकी कोई तसवीर जेहन में उभार सके। उसकी उदासी बहुत गहरी हो गई तो वह उठकर बाहर चला गया।

बाकी क जान क बाद चाची ने अपना अटेरन और सूत उठाया और डयोडी को ताला लगाकर चौगान की ओर चली गई।

चौगान में जस्सो, प्रीता, प्रसिन्नी, बत्तो, पाशो, निहाली बर हुक्मा और जानो बरी के नीचे बैठी थी। चाची का देखते ही नानो उठ खड़ी हुई और अपनी मा जस्सा से बोली

मा मैं भस को चारा डाला जा रही हूँ।'

चाची न उस जाते देखा ता प्रसिन्नी से पूछा
कौन गई है उठकर ?'

नानो।

अच्छा, आग लग जाए इन आँखों को। मुझे तो चारा ओर परछाइयाँ-ही परछाइयाँ नजर आती हैं।'

फिर वह पीछे मुड़कर देखती हुई वाली

हो नानो ! पुतरा, मेरी बात तो सुन।'

चाची भस को चारा डाल जाऊँ।

चाची अटेरन से सूत की अट्टियाँ बनाने लगी।

चाची, तरा सूत तो बहुत बारीक है। प्रसिन्नी ने कहा जो अपने फूल हुए पट के कारण बार-बार पहनू बदल रही थी।

बात लिया सूत। अब तो तरली भी नजर नहीं आती। चाची न आँखा

स पाना पाछत हुए बहा ।

‘चाची डपानी ता बहुत अच्छी बन गई है ।

हां पुत्तरा वाली की जिद थी । उसकी मर्जी ।

‘अब तू उसकी शादी कर दे । तारी उम्र बर महेनत करने की नहा ह ।

पुत्तरा मरी कौन सुनता है । मैं ता कह-बहकर हार गई हूँ । आज बहना था कि काठरी पन्नी कर लू । उसका बाल शानी कर लूंगा । तुम काई रिश्ता लाभा ना ।

रिश्त तो पचास मिल सकता है लेकिन वाली का पता नहीं पसन्द आया नहीं । उस तो अपनी हैसियत का घर चाहिए ।’

बतो की बात सुनकर प्रीतो तिनकर वाली

‘मुरबबो के मालिक घर तो मिलन स रहे क्याकि हजारों म एक चमार ही ऐसा होगा जिसके पास जमीन होगी । हाँ, मेहनत मजदूरी करने वाला घर मिल सकता है ।’

मुरबबो का मालिक घर कौन देखता ह । हाँ किसी मंगल पकीर की लडकी नहीं होनी चाहिए । बाकी सब सब जी क हाथ म है । जहा सजोग होंगे वही शादी होगी । चाची न हट स्वर म कहा ।

चाची एक लडकी है—मरी मौसी की भतीजी लेकिन रग उसका पक्का है । बतो ने कहा ।

वाली कौन मा जप्रेज है । प्रीतो बोली । यह सुनकर चाची भडक उठी ।

प्रीतो तू सदा लागवाजी करती है । चमार का बटा तो काला ही होगा ।

चाची का उत्तर सुनकर सब हस पडी । प्रसिनी और बन्तो तो हसी स लोट पाट हो रही थी । प्रीता भी भडक उठी

चाची तू सदा दूसरे के सिर स चादर छीचती है । जो अपन-आपको वाली सत्योती (सत्यवती) समथती है मैं उह भी जानती हू ।

प्रीतो बात आग बढान लगी तो बब टुकमा उस टाकती हुई बोली

प्रीतो तू तो जहा भर की रशम ३ ।

‘बेबे बशम हूँ या । और फिर प्रीतो बात पलटती हुई बोली

‘मैंने ता ठांटे म कहा था । सब राजी-खुशी रखे वाली को लाखा म एक है । पर बत्ता तू किस किस क लिए रिश्ता लाएगी । अभी जीतू की कुडमाई (मंगनी) करा रही थी । अब वाली के लिए कह रही ह । क्या एक ही लडकी का सब जगह घुमा फिरा रही हो ।

जीतू की कुडमाई की बात ता पन्नी है क्या ताई ? बतो ने जीतू का

मा निहाली की ओर देखत हुए कहा ।

'हा बीबा । पक्की ही समझो । जब उसके मुह को छुआरा लग जाएगा तो तभी समझूगी बात पक्की है ।

मुहल्ले म शादी लायक लडके और लडकिया बहुत हैं । प्रीता गिनती हुई बोली ।

काली जीतू, मगू वग्गा, नत्थू जीर लडकिया मे पानो, चमली, वदा, नमीवो और '

'तू अपनी लच्छा और अमरू का नाम क्या नहीं रखती ।

जस्सो ने अपन बंटे और बेटी का नाम सुनकर कहा

व अभी छोटे हैं । अमरू का तो भाभी न अभी पारमाल ही दूध छुडवाया है ।' प्रसिनी ने ठहाका लिया ।

वेव हुक्मा रव जी को याद करती हुई बोली

'अब लडके और लडकिया को आधे बूढे करके शादी करन का रिवाज हा गया है । अभी तक तो सब अच्छे हैं लेकिन दुध और बुद्ध (दूध और बुद्धि) को भ्रष्ट होते देर नहीं लगती ।'

प्रीतो प्रसिनी के फूले हुए पेट को देखता हुई बोली

इस साल तो मुहल्ले म पुआरा पडने वाला है । असूज के महीन म बन्तो प्रसिनी, धनो और करपी के घर बच्चे होंग ।

तू अपने आपको क्या भूल रही है । पट तो तरा भी शह के छत्ते की तरह बढा हुआ है ।

प्रसिनी न यह कहकर बन्तो के कान म कुछ कहा और दाना हँसी से लोट पोट होने लगी । बेबे हुक्मा ने उह टोकत हुए कहा

'कयो हिड हिड लगा रखी है ।'

भाई, इनके हँसन के दिन हैं । अपनी जवानी म तू भी तो इसी तरह हँसनी होगी ।

'ना बीबा उन दिना हर घर मे सास का पहरा होना था । अब ता सास घर म किसी गिनती म नहीं है । उन दिना छ छ महीन अपने मद से वान करन का मौका नहीं मिलता था । आजकल तो उठन-बठन अपने मर्दों क कान म फूँ मारता हैं ।' वेव हुक्मा न कहा ।

बब, सुना है जब तू जवान थी तो तरे मद की टांगा म राज रान का दद उठता था और तू दवानी थी ता उन आराम मिलता था ।'

प्रीतो की यह बात सुनकर सब हँसा स हवलान लगी । वेव हुक्मा धरती धन न अपना

गारियाँ देती हुई अपनी लाठी टटोलने लगी तो ताई निहाली प्रीतो को डाँटती हुई बोली

‘प्रीतो तरे जसो वगम मैंने आज तब नही देखी ।’

सब अभी हँस ही रही थी कि काली आ गया । वह चाची के पास आकर बोला

चाची डयोढी की चाची देना ।’

काली बधाई ही तरी डयोढी तो हवेली की डयोढी दिखाई देती है ।’

ताई ने कहा । काली उत्तर में मुसकराता हुआ लौट गया ।

काली के जान क बाद चाची भी उठ खड़ी हुई तो प्रीतो बोली

भाभी क्या अदर सोन की इटें दवाई हुई हैं जो दिन में भी ताला लगा कर रखती हो ।

हाँ प्रीतो चोर उचक्का से ताला लगाना ही पडता है ।

चाची चली गई, ता प्रीतो नाम चढाकर बोली

चाची भतीजे दोना का दिमाग विगड गया है ।

२५

काली अभी ऊँघ ही रहा था कि जीतू दनदनाता हुआ डयोढी में घुसा और उसे कंधो से झझोडता हुआ बोला

बाबू जी, तू सो रहा और गाँव में दुनिया पलट रही है ।

काली हडबडाकर उठा और शोध और आश्चर्य भरी नजरों से जीतू की आर देखने लगा । वह उसे कंधा से पकडता हुआ बोला

बाबू जी सचेत हो जाओ ।

‘क्या हुआ ?’

भानू बादशाह बनता है । पादरी को तरे साथ बातें करत मैंने आप देखा है ।’

ता इमस क्या हाता है ।’

जीतू छाती-सा खाट पर उसका साथ फेंसकर बैठता हुआ कान में बोला

पादरी मुझे शहर भेज रहा है। बड़े पादरी के नाम रक्का (सदेश) देकर। बीस रुपये खाने-पीने का सामान ला के लिए दिए हैं। एक रुपया मुझे मजदूरी का दिया है।'

वह आश्चर्य भर स्वर में बोला

'कुछ समझ में नहीं आता। बल इतवार है। सुना है गिरजे में बहुत रौनक होगी। बड़ा पादरी आएगा। बाहर से भी लोग आएंगे।

तुम्हें किसने बताया?' काली ने आखें मझत हुए कहा।

पादरी पादरानी से कह रहा था। मैंने तो कुछ और भी सुना है।'

मैं महाशय की दुकान पर गया था। वहां कोई कह रहा था कि नन्दसिंह और उसका टब्लर (कुटुम्ब) ईसाई बन रहे हैं। तबिए में जाया तो वान में यही भनक पड़ी। इसलिए भी शक पड़ता है क्योंकि पादरी सबेर से नन्दसिंह के घर में तीन बक्कर लगा चुका है। कुछ गडबड जरूर है। जीतू ने अपने पात्र ऊपर उठाकर दिखाते हुए कहा

पादरी ने मुझे बूटा का यह जोड़ा भी दिया है। देपन में तो बहुत अच्छा है लेकिन पाव की खाता है।

काली उसके पाव में पड़े बूट को देखकर मुसकरा दिया। जातू उम बाह से पकड़कर उठाता हुआ वाला

'चलो महाशय की दुकान पर चलत हैं। वहां पक्का पता चलेगा।

जब वे दुकान पर पहुंचे तो महाशय और पंडित सतराम दोनों बहुत उदास बैठे थे। डाक्टर विशनदास अपनी नाक कुरदला और दाढ़ टांग हिलाता हुआ दूकान गुडगुडा रहा था। काली धार जीतू बदगी करके एक जोर बैठ गए। जीतू ने जब देखा कि वे तीनों इस तरह बैठे हैं जैसे चुप रहने की शर्त लगा रखी हो तो वह स्वयं ही बोला

'महाशय जी मैं शहर जा रहा हूँ। वहाँ से कुछ भँगवाना हाता बता दो।'

तू क्या लेन जा रहा है?'

पादरी भेज रहा है। कुछ खान-पीने का सामान लाना है और बड़े पादरी को रक्का देना है।

जीतू की बात सुनकर पंडित सतराम भडक उठा और शुद्ध स्वर में बोला

मैं ठीक कह रहा हूँ कि पादरी नन्दसिंह का भिस्तान बना रहा है। भवनाश हो उसका। बड़ी मुश्किल से भिस्तानिया का बीज-नाश किया था

धरती धन न अपना

गान म । अब पादरी फिर नया पीधा लगा रहा है ।

महाशय ने हुक्के की न अपने मुह म ले ली और गम्भीर मुद्रा म बठा हुकरा गुडगुडाता हुआ बोला

सतराम, शायद तरी बात ठीक हा । लेकिन क्या किया जा सकता है ।

पहाशय सोच म पड गया । पडित सतराम सटपटाता हुआ बोला

कभी किसी दूसरे घम वाले को अपना घम बदलत हुए सुना है । घम जब भी बदलता है ता हिन् ही बदलता है । क्याकि उस अपने घम कम पर विश्वास नहीं रहा ।

पडित जी, अगर आप की बात मान भी ली जाए तो कोई फक नहीं पडता । क्याकि घम बदलने से नन्दसिंह का क्लास करक्टर नहीं बदलगा । सब घम पाखण्ड है । हर घम मजदूर तबके वे लिए अफीम है । अफीम काली हा या भूरी उससे क्या फक पडता है ?

तू भी बन जा त्रिस्तान ? पडित सतराम उस झिडकता हुआ बोला । और फिर कुछ देर तक खामोश रहकर हारी हुई जावाज म कहने लगा नन्दसिंह तो पहले से ही नीच था । जो आदमी गोमाता और उसके कोख जाए के चमडे के जूते बना सकता है वह गाय का मांस भी खा सकता है ।

सतराम गाय के चमडे के जूत बनाना और बात है और गाय का मांस खाना और बात । जूत बनाना तो घधा है ।

महाशय ने एक एक शब्द पर जोर देत हुए कहा ।

असल बात यह है कि पादरी ने नन्दसिंह को लालच दिया है । उसक बडे लडके को शहर म नौकर कराया है । डाक्टर न कहा ।

वह कौन सा तहसीलदार बन गया है । कहीं चपरासी-खलासी भरती करा दिया हागा । सतराम बोला ।

चपारसी सही वह सरकारी अहलवार तो बन गया है ।' महाशय ने कहा । डाक्टर हुक्के का कश लेता हुआ बोला

मैं वह रहा था कि आदमी लालच म आकर ही एस काम कर सकता है । जरूरतमन् की जर जरूरतें पूरी नहीं हागी तो उह पूरा करन के लिए वह सी तरह क पापड बनेगा ।

हाजतमन् कौन नहीं है ? तू हाजतमद नहीं या मैं नहा ? सबर सताख (मनाप) हा ता सब हावनें पूरी हा जानी हैं ।

पडित मन्सुराम न गम हात हुए कहा ।

‘पंडित जी, गरीब की हाजत बहुत बड़ी होती है। भूखा जब भी सवाल करेगा दो रोटिया का करेगा। गरीबी दूर करने का एक ही तरीका है और वह है इक्लाव, प्रोलतारी इक्लाव, जो अमीर और गरीब सबका बराबर कर देगा।’

‘विश्वनाथदास, तू अनहानी बातें करता है। भगवान न सब जीव-जंतुओं को उनके कर्मों के अनुसार जन्म दिया है। आदमिया का ता छोडा कुत्ता का ही ले लो। काइ डग ह तो कोई शिकारी। कोई मेभा की गाद म साना है ता कोई तेरे भर स ठोकरें जाता है। तुम पहले इह नो बराबर करो। अमीर-गरीब, ब्राह्मण चमार को बाद म एक जसा करना।’

पंडित सतराम की बात पर महाशय जार से हँसा। उसने महाशय की हँसी को अपनी विजय जानकर प्रफुल्लित स्वर में कहा

विश्वनाथदास नर्दासिह चमादडी म सबसे सुखी है। जीतू और काली तरे सामने बठे हैं। ये क्रिस्तान क्या नहीं बनत ? निककू के घर म आठ-आठ पहर का फाका हाता है वह क्रिस्तान क्या नहीं बनता ? नर्दासिह पहले मित्र बना लेकिन ऊँची जात के किमी सिख ने उसे मुह नहीं लगाया। अब वह क्रिस्तान बनकर भी चमार का चमार ही रहगा, बल्कि कुछ नीचे ही गिर जागगा। चमारा की विरादरी से निकलकर चूडा भगिया में जा मिलगा।

सतराम, बात करने से कोई फायदा नहीं। कोई ऐसी तरकीब साचो कि नर्दासिह अपना इरादा बदल ले। उसके घर जाकर उसे समझाया।’ महाशय ने मुझाव दिया।

गम राम। मैं नर्दासिह के घर जाऊँ। क्या मरा जन्म भ्रष्ट करने की सलाह न रहे हा ? जा करेगा सा भरेगा। पंडित सतराम ने काना को छूते हुए कहा।

पंडित सतराम की बात सुनकर काली को क्रोध जा गया और वह एकदम उठ खडा हुआ। उसे महसूस हुआ कि नर्दासिह ईसाइ बनकर कोई बुरा काम नहीं कर रहा है। डाक्टर न उसे रोकने की कोशिश की लेकिन वह अपने घर की ओर आ गया। जीतू वहा से उठकर पादरी के घर चला गया।

काली ने डयाडी म कदम रखा ही था कि धाधी उसके पास आकर बोली

‘क्या ?’

नर्दासिह और उसका नंबर ईसाई बन रहा है। अभी प्रीतो आइ थी नर्दासिह के घर से होकर। वह बना रही थी कि उमक घर म पादरी न कपडा

घरती घन न अपना

मा गट्टर भेजा है। बच्चा-बच्चा सारे दो-गो जोड़े हैं, एक-एक जूना है—भेगी नहीं बिलापती। और बहुत मा समाप्त भी है।

बा रहा हागा। उसरी मर्जी है।' वाली ने बेघ्यानी स उत्तर दिया।

प्रीतो पहती थी कि बल से नन्दसिंह बमार नहा ईसाई हा जागगा। घाची ने उत्सुकता स कहा।

अच्छा। वाली न बाई दिलचस्पी दियाए प्रिया कहा और कुत्तल उठा कर बोठरी की दीवारें छेडेने लगा।

२६

दुतवार के दिन गाँव म हलचल मच गई। कोई ही ऐसा मद औरत और बच्चा हागा जिसने पादरी के घर और गिरजे के सामन चक्कर ट लगाया हा। नन्दसिंह के घर म तो मबेरे से ही ताला पडा था और वह अपनी पत्नी और बच्चो सहित पादरी के घर चला गया था।

गिरजाघर मे सुबह से ही सफाई हो रही थी। रम बिरगी झटिया स उसे सजाया जा रहा था। पादरी के घर म बडी-बडी देगो मे पक्वान पक रहे थे। बाहर से ईसाई लोग पादरी के घर पहुच रहे थे। बडा पादरी और इलाके के अमीर ईसाई पादरी की बठक मे कुर्सिया पर बठ थे और गरीब ईसाई गिरजा घर के अन्दर पडे बेंचा पर ऊँघ रहे थे। बच्चा का एक बडा हजूम कभी गिरजाघर के सामन जमा हो जाता और कभी पादरी के घर के सामने। बच्चे नन्दसिंह क बच्चों को देखन का उत्सुक हो रहे थे कि ईसाई बनने के बाद वे कैसे दिखाई दते हैं।

ज्यो ज्यो दिन चढ रहा था लोगो म हलचल बढ रही थी। पादरी के घर में बन रह पक्वाना की मुग्धि चारो आर फल रही थी। उसके घर म एसी रौनक थी जस वहाँ विवाह हो रहा हा। जब पादरी के घर से जीतू बाहर निवला ता गला में मँउरा रहे लाग उस पर झपट पडे

नन्दसिंह बन गया ईसाई ? ठाकरी बन गई ईसायन ? पाशो बन गई ईसायन ?

जीतू बच्चा की भीड़ को चीरता हुआ सरना नाई को बुगने के लिए उसके घर की ओर बढ़ गया। सरना नाई ने पहले तो आने में इनकार कर दिया लेकिन जब जीतू ने बताया कि पादरी पूरा एक रुपया देगा तो उसे लालच आ गया लेकिन वह लोक-रुज्जा और गाँववाला की प्रतिश्रिया से डर गया। उस चुप देखकर जीतू ने बताया कि पादरी हर हजामत का एक रुपया देगा। सरना ने चौंकर जीतू की आर देखा और नज़रें झुका ली।

जीतू ने उसके वान में कुछ कहा तो सरना भटक उठा और उस्तरे उठाकर उसके पीछे-पीछे गालियाँ देता हुआ भागा। जीतू छलाँग भरता हुआ उसकी पहुँच से बाहर निकल गया तो सरना रक्त गया और उसे मोटी-भी गाली देकर बोला

कुत्ता चमार, एक बार हाथ आ गया तो इसी उस्तरे से तेरी गदन काट दूंगा।'

जीतू बाज़ार से हीता हुआ सबको ताज़ा खबरें सुनाकर पादरी के घर पहुँच गया। जब उसने बताया कि सरना नाई ने आन से इनकार कर दिया है तो पादरी दुविधा में पड़ गया क्योंकि इसका अर्थ था कि गाँव के लोग नन्दसिंह के ईसाई बनने के विरोधी हैं। उसने जीतू को चुप रहने का सकेत दिया और अपनी छड़ी तलाश करने लगा। बड़े पादरी ने उससे बेचैनी का कारण पूछा तो पादरी ने टाल दिया।

जीतू के जान के बाद सरना सोच में पड़ गया। जब उसे पसो का खयाल आता तो जी चाहता कि चला जाए। उसने सोचा कि जब वह और चमारों के बाल काटता है और हजामत बनाना है तो नन्दसिंह के बाल काटने में क्या हज़ है। सरना हजामत के सामान का थैला उठाकर गली में आ गया और आधा गाँव घूमकर पादरी के घर जा पहुँचा।

सरना को देखकर पादरी का जिनगी प्रसन्नता हुई इतनी शायद नन्दसिंह के ईसाई बनने के लिए हाँ कहने पर नहीं हुई थी। पादरी ने उसे बदर ले जाते हुए कहा

'जीतू ने तो मुझे डरा दिया था।

आपने उस कुत्ते चमार को क्या भेजा था। मेरे साथ ऊपटौंग बानें कर रहा था। चुकर करो वह बच गया। मेरे हाथ आ जाता तो मैं उस्तरे से उसकी गदन काट देता।'

सरना नाई ने पादरी के घर में चारा ओर देखकर कहा

'क्या काम है, पादरी जी?'

पा गटठर भेजा है। बच्चा-बड़ा सजने दो-दो जोड़े हैं, एक-एक जूता है—मेरी नहीं, विलापती। और बहुत गा समान भी है।

‘वन रहा होगा। उसरी मर्जी है। बाली न बेघ्यानी स उत्तर दिया।

‘प्रीतो बहती थी कि कल स नन्दसिंह चमार नहा, ईसाई हा जाएगा। चाची ने उत्सुबता स बहा।

अच्छा। बाली न कार्द लिचस्पी सिंघाए जिना बहा और बुटाल उठा कर कोठरी की दीवारें घुंटेडने लगा।

२६

इतवार के दिन गांव म हलचल मच गई। कोई ही ऐसा मद औरत और बच्चा हागा जिसने पादरी के घर और गिरजे के सामन चक्कर न लगाया हो। नन्दसिंह के घर मे तो मकरे से ही ताला पडा था और वह अपनी पत्नी और बच्चा सहित पादरी के घर चला गया था।

गिरजाघर म सुबह से ही सफाई हो रही थी। रग बिरगी बडिया से उसे सजाया जा रहा था। पादरी के घर म बड़ी-बड़ी देगो म पक्वान पक् रहे थे। बाहर स ईसाई लोग पादरी के घर पहुंच रहे थे। बडा पादरी और इलाने के अमीर इसाई पादरी की बटन म कुंसियो पर बठ थे और गरीब ईसाई गिरजा घर के अंदर पडे बेंचा पर ऊष रहे थ। बच्चो का एक बडा हजूम कभी गिरजाघर के सामने जमा हो जाता और कभी पादरी के घर के सामने। बच्चे नन्दसिंह के बच्चो को देखने को उत्सुक हो रहे थे कि ईसाई बनने के बाद वे कैसे दिखाई देते ह।

ज्या-ज्या दिन चढ रहा था लोगो म हलचल बढ रही थी। पादरी के घर में वन रह पक्वाना की सुगंध चारा ओर फल रही थी। उसके घर मे ऐसी रौनक थी जस वहा विवाह हो रहा हो। जब पादरी के घर से जीतू बाहर निकला ता गंगा में मंडरा रहे लाग उस पर बपट पड

नन्दसिंह वन गया इसाई ? ठाकरी वन गई ईसायन ? पाशो वन गई ईसायन ?

जीतू बच्चा की भीड़ को चीरता हुआ सरना नाई को बुलाने के लिए उसके घर की ओर बढ़ गया। सरना नाई ने पहले तो आन से इनकार कर दिया लेकिन जब जीतू ने बताया कि पादरी पूरा एक रुपया देगा तो उसे लालच आ गया लेकिन वह लोक-रज्जा और गाववाला की प्रतिक्रिया से डर गया। उसे चुप देखकर जीतू ने बताया कि पादरी हर हजामत का एक रुपया देगा। सरना ने चौंकर जीतू की आर देखा और नज़रें झुका ली।

जीतू ने उसके कान में कुछ कहा तो सरना भडक उठा और उस्तरा उठाकर उसके पीछे-पीछे गालियाँ देता हुआ भागा। जीतू छलांगें भरता हुआ उसकी पहुँच से बाहर निकल गया तो सरना रुक गया और उसे मोटी-सी गाली देकर बोला

‘कुत्ता चमार एक बार हाथ आ गया तो इसी उम्नरे से तेरी गदन काट दूँगा।’

जीतू बाज़ार से होना हुआ सबको ताज़ा खबरें सुनाकर पादरी के घर पहुँच गया। जब उसने बताया कि सरना नाई ने आने से इनकार कर दिया है तो पादरी दुविधा में पड़ गया क्योंकि इसका अर्थ था कि गाव के लोग नन्दसिंह के ईसाई बनने के विरोधी हैं। उसने जीतू को चुप रहने का सकेत दिया और अपनी छड़ी तलाश करने लगा। बड़े पादरी ने उससे बचनी का कारण पूछा तो पादरी न टाल दिया।

जीतू के जाने के बाद सरना सोच में पड़ गया। जब उसे पसा का खयाल आता तो जी चाहता कि चला जाए। उसने सोचा कि जब वह और चमारों के बाल काटता है और हजामत बनाता है तो नन्दसिंह के बाल काटने में क्या हज़ है। सरना हजामत का सामान का थैला उठाकर गली में आ गया और आधा गाँव घूमकर पादरी के घर जा पहुँचा।

सरना को देखकर पादरी का जितनी प्रसन्नता हुई इतनी शायद नन्दसिंह के इसाई बनने के लिए हाँ कहने पर नहीं हुई थी। पादरी ने उस अन्दर ले जात हुए कहा

‘जीतू ने तो मुझे डरा दिया था।’

आपने उस कुत्ते चमार को क्या भेजा था। मेरे साथ ऊटपटाँग वार्ने कर रहा था। गुबर करो वह बच गया। मेरे हाथ आ जाना तो मैं उस्तर स उसकी गदन काट देता।’

सरना नाई ने पादरी के घर में चारा आर देखकर कहा

‘क्या नाम है पादरी जी?’

‘नन्दसिंह जीर उमरा टम्बर यीमू मसीह की शरण में आ रहे हैं। उसके और उसके दोना लडका के बाल काटन हैं।

पादरी न नन्दसिंह का आवाज दी। वह आँगन में आकर सरना की आर दखकर हसने लगा

‘दांत बाद में दिखाना। पहले सिर दिखाओ।’

सरना न हसत हुए कहा। नन्दसिंह ने पगडी उतार दी और बाल खोल कर सरना के सामने बठ गया।

बोला रखना है। पादरी ने कहा।

‘पादरी जी वादा रखने म जुएँ रह जाएँगी। मेरी मानो तो एक बार उस्तरा फिरा दो।’

सरना हसता हुआ बोला और उसने एक हाथ में सब बाल समेटकर कची स काट लिए।

हजामत के बाद नन्दसिंह मौलवी दिखाई देने लगा। सरना ने मशीन स उसकी दाढी काट दी और छोटे छोटे बाला पर पानी लगाकर उन्हें उँगलिया स मसलने लगा। जब वह नन्दसिंह की दाढी पर उस्तरा चलाने लगा तो वह विलख उठा। गाला और ठोडी पर कई जगह मास बट गया तो नन्दसिंह युझलाता हुआ बोला

सरना क्या तू हजामत करना भूल गया है ?

‘वही म तो नहीं भूला तूने बहुत देर के बाद कराई है।’

हजामत के बाद नन्दसिंह की अजीब-सी शकल निकल आई। उसकी पत्नी और बेटे प्रिययाँ उसे हैरत और दिलचस्पी से देख रहे थे। बाद म सरना ने नन्दसिंह के दाना लडका की हजामत बनाई। पादरी ने मरना को पसा के साथ कुछ मिठाई भी दी। उसने मिठाई वही खा ली क्याकि बाहर ले जाने में उसे डर महसूस हो रहा था।

हजामत के बाद बडा पादरी आँगन में आ गया। पानी की एक बाल्टी मेज पर रखकर उसके पास खडा अजील म स कुछ पढता रहा। उसके साथ साथ पादरी और दा-तीन दूसरे आदमी भी अपनी-अपनी अजील से पढ रहे थे। आधा घण्ट के बाद बडे पादरी ने बहुत आनर स कहा

आनेहुयात यानी अमृत तयार है। इससे नन्दसिंह और उसके बीबी बच्च नहा लें।

स्नान के पश्चात उन्होंने नए कपडे और जूते पहने। बडे पादरी ने उहे अपने सामने खडा करके प्रार्थना की और उनके गले में छोटी छोटी मुनहरे रंग की

जजीर लाल की जिनके बीच में छाटा-सा त्रास लटक रहा था। इस कारवाह के समय सत्र महमान पादरी के घर में जमा थे और सब मिल्कर गा रहे थे

‘हैं य बच्चे, पास आन दा, कहा तूने मसीह।

गाद म उाको प्यार से लिया तूने ममीह।

तूने परमाया मैं इनको दूगा अपनी पाक रह।

इनको वापतिरुमा मिला अब इनको गले स मिंग।

बाप बट पाक रह इन बच्चा को कर ले कबूल।

है यकीन हमको कि सुन ली है दुआ तूने मसीह।

अदर ईसाई विरादरी यह गीत गा रही थी और बाहर गली में बच्चे बड़े शोक म सुन रहे थे। व पादरी के दरवाजे के आस-पास जमा थे। गीत के बाद लोगा के हँसन की आवाजें आनी गुरू हुइ और फिर पादरी के मकान का दरवाजा खुल गया। बच्चे डर के मारे इधर उधर भागने लग तो पादरी उह पुचकारता हुआ बोला

‘इधर आओ तुम्ह मिठाई मिलेगी।

पादरी के साथ खडा लम्बा चोगा पहने हुए बडा पादरी मुसकरा रहा था। बडे पादरी ने दो बच्चा का जो भागत हुए आपस म टकराकर गिर गए थे, आगे बटकर उठाया उनर कडे झाडे और प्यार मे थपथपाया और उनका भीठी गालियाँ दी। यह देखकर बाकी बच्चे भी लौट आए और गोलियाँ लेन के लिए धक्कम पण करन लगे।

बडे पादरी न सब बच्चा का दो कतारा म खडा करक उनम गोलिया बागी। व गोलियाँ लकर इधर उधर बिखर गए लेकिन थाडी दर के बाद फिर वहाँ जमा हो गए।

दिन डल तीन साडे तीन बजे के बाद गिरजाघर का घटा बजना गुरू हो गया। बच्च पादरी के मना से हटकर गिरजाघर के सामने आ खडे हुए। कुछ उमक तीन ओर फसील पर चढकर घिडकिया म स अदर जाकिन लग। घटा बजन के बाद बाहर स आए हुए लोग गिरजाघर म जमा होने लग लेकिन प्रमुख और मात-पीत ईसाई पादरी का बठक म ही बठ रह।

थोडी दर के बाद पादरी के घर के दाना दरवाजे खुल गए। सबसे पहले बडा पादरी बाहर निकला। उसने दोना हाथा म काफी बडा त्रास उठा रखा था। उमक पीछे छाटा पादरी था। उसके हाथ मे बिताव था। बाद म नर्दासह था। उसके हाथ म सलीब पर लटके हुए यीसू मसीह की तसवीर थी। उमक साथ उमकी पत्नी और बच्च थे। उनके हाथा म भी यीसू मसीह की तसवीरें

धी । उनके पीछे बाकी लाग थे । यह जुलूस गीत गाता हुआ आहिस्ता आहिस्ता गिरजाघर की आर बढ़ने लगा । पहले एक आदमी बोल उठाता और बाकी उसका पीछे गात

धी दुनिया तारीकी म डूबी हुई ।
सुदा की तरफ से फिर रोशनी हुई ।
ए गुनाहगार इस रोशनी म आ ।
अब देखता हूँ, जो अंधा मैं था ।
तरे गुनाह वो दूर करेगा ।
कि दुनिया का नूर है यमूह ।

समूह-गान की आवाज सुनकर बहुत से लोग गिरजाघर के सामने आ खड़े हुए । डाक्टर काली बतू बतू और सतू के पास खड़ा था । उनसे थोड़ा हटकर निक्कू खड़ा खिस रहा था । परे जाटा के लडके थे । चमादडी की औरतें प्रीतो के नेतृत्व म गली के नुककड पर खड़ी थी और चौधरानिया और महाराज गिरजाघर के सामने हरीसिंह की छत पर बठी थी ।

जब गीत गाता हुआ जुलूस गिरजाघर के दरवाजे के सामने आ पहुँचा तो सब लोग एडियाँ उठाकर नर्दसिंह और उसके परिवार की आर देखने लगे कि ईसाई बनकर ब कैसे दीख पडते हैं । नर्दसिंह और उसके दोनो लडके नए बूटा के कारण पजा के बल चल रहे थे । उह इस तरह चलते देखकर कई लोगो को हँसी आ गई । उनके उजल कपडे देखकर कई लोगो के मन म ईर्ष्या की भावना जाग उठी ।

बतू, नर्दसिंह को ध्यान से देखकर बोला

‘इसम फक तो कोई पडा नही, बस सिख स माना हो गया है ।

‘तू क्या समझता है कि ईसाई बनने स उसका हुलिया बदल जाएगा । सब मजहब फरेब है । अमीरा और पूजीपतियो ने सूटने और उह गुमराह करने के लिए ये ढकोसले खडे किए हैं ।

नर्दसिंह को ईसाई बनने का फायदा क्या होगा ? सतू ने पूछा ।

‘तख्त मिल जाएगा । अब यह दुनिया पर राज करेगा । डाक्टर बटाभ करता हुआ बोला ।

दूरान पर बठकर जूत सियगा । पहल बाहे गुरु बाह गुरु कहता था अब यीगू-यीगू रहेगा ।

हाँ चार टक जरूर मिल जाएंगे ।’

डाक्टर न बहा और काली के बंधे पर हाथ रखना हुआ बोला

ये सब इन्बलाब के दुश्मन गेग हैं, चलो चलें।'

काली बही रुका रहा और डाक्टर अकेला ही आगे बढ़ गया।

जुनुस गिरजाघर के गेट में पहुँचा तो बचा पर बैठे हुए लोग उठकर खड़े हो गए और आवाज़ में आवाज़ मिलाकर गाने लगे। नन्द सिंह और उसके दोना बेटे पादरी के साथ थगले बेंच पर बैठ गए। उसकी पत्नी शकरी और बेटी पाशो दूसरी बनार में पादरानी के साथ सबसे आगे बठी।

बड़े पादरी ने ज्ञान दीवान पर लगी थीसू मसीह की बहुत बड़ी तस्वीर के नीचे रख दिया। उसके बाद बड़े पादरी न लोगो की आर देखा और सबका उठने का इशारा किया। लोग खड़े हो गए तो उसने गीत शुरू किया और सब उसके पीछे गाने लग

'ए खुदा तू दिन का नूर चमकाता है।

और धूप का जोर बनाता है।

झगडा की आग की बुझा।

तमाम झगडा का मिटा।

जस्मानी महत दे और दिल में राहत पदा कर।'

गीत के बाद बड़े पादरी ने अजील के कुछ भाग पढ़कर सुनाए। और फिर उन्हें नसीहतें दी। उसने वहाँ बैठे लोगो का समझाया कि थीसू मसीह किस तरह उनके सत्र पाप अपन सिर पर लेकर उन्हें मुक्त कर लेगा। भाषण खत्म हो गया तो सब लोग फिर खड़े हो गए। पादरी ने गीत गाना शुरू कर दिया

'अब रखस्त करो खुदायद।

कर सब बमूरा का माफ।

हम सबके सत्र गुनाहगार।

अब बदगी कर ते बबूल।

हम सब पर अपनी रहमत बरसा।

कर दिला को कलाम से साफ।

पस तेरा फजल तेरा है दरखार।

और रखस्त कर मलामती से।

पादरी के अमीन पत्न के बाद सत्र लोग गिरजाघर से बाहर आ गए और रखस्ती का दौर शुरू हो गया। नन्द सिंह और उसकी पत्नी गनी में बड़े लोगो को यू घुणा भरी तजर्रा में देख रहे थे जम के नीचे हा। दानो लडके कुछ हिरान और कुछ मुश थ। वे अपन नय कपणा और बूटा को बड़े चाव से निहार रहे थे और गली में बड़े बच्चा को देखकर मुमकरा रहे थे।

घरनी घन न अपना

शाम तक गीर गाती थी कब तक गीर गाती थी माता रत्ना तिन - तिन सामानिया
 भद्रहरी गिर ग ईगाई बन गया ५ ।

२७

बाची और बाला टपारी की लप पर लप का लप गग ध जो तब घुम क
 कारण कई स्थान। पर लप गई थी जीर लम्बा-लम्बा शरारें लप गई था । बाची
 एक दरार क पास बठकर उन ध्यात स लपता हुआ बाची

बाचा अभी ल लप जीर हागे तो लप पानी बागी ।

ही गुमग लप बाचा को कलई दो बार करा पर ही चढ़ी है । यह ता
 पची छन है जीर उपर लप भी मिट्टी का । मरी गलाह है आज लप गुम कर
 दू । नू काठनी की नाव घात ल । बरमान गुम हा म थग ता अभी लिन है पर
 रव जी का क्या पता बन बाचल भज ल । नू लप पर गारा चड़ा द, मैं मींग
 लप कर दनी हूँ । ल चार लिन क बाच लप पतला लप और हो जाएगा ता छन
 की मिट्टी पकरी हा जाएगी ।

बाली न छत पर गारा लाकर उसम पानी मिला लिया । बाची को कुछ समय
 तक वह लेप करत देखता रहा और फिर नीचे आकर बोठनी की नाव खोले
 लगा । वह इस काम म थस्त था कि बावा फत्तू लाठी देवता हुआ उसके पास
 आया । बाली न पुदाल रोव दी और उस बहुत नम्रता स मर्या टेकर सामने
 जा पडा हुआ । बावा फत्तू नीव की चौडाई का देखकर घोला

पकरी दीवार क लिए इतनी चौडी नीव की क्या जरूरत है ?

बावा जी सिफ स्तून पकरी बनाता है दीवारें तो बच्ची ही हागी । पकरी
 दीवारें बनाने के लिए जितनी रपम चाहिए उतनी मेरे पास नहा है । इसलिय
 यही सोचा है कि अभी स्तून ही पकरी कर लू ।

अच्छा, जो रव जी की मर्जी । मैं इसलिए आया था कि मुझे थोडी सी
 चाय की पत्ती चाहिए । मुहल्ले म किसी के पास अब्बल तो होगी ही नहीं, अगर
 होगी भी, तो कोई देगा नहीं । बाव फत्तू ने कहा ।

मेरे पास होनी तो चाहिए । मैं अभी देखता हूँ ।' बाली डयोनी म जा

गया। उमन कई वतन उठानर दबे, कई पुडिया खाली लेसिन चाय की पत्ती किसी म नही थी।

‘मैं चाची से पूछता हूँ। वह कई बार चीज ऐसे मँभाकर रखती है कि बाद म मिलती ही नही। काली डयोढी की छन पर चण गया।

वह ऊपर पहुचा तो चाची गारे के पास बहोश पडी थी। उसे इस हालत म देखकर काली का सास ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे रह गया। उसने भयभीत स्वर मे चाची को बुलाया और उसे हिला जुलाकर देखा। वह बिल्कुल बसुध थी। उसने चाची को हाथा म उठा लिया और नीचे लाकर खाट पर लिटाकर घबराई हुई आवाज म बाब्रे फत्तू से बोला

‘पता नही चाची को क्या हो गया है?’

‘घबराओ नही, गर्मी म कई बार चक्कर जा जाता है। मुह म पानी टालो और छोटे मारो।

बाब्रे फत्तू ने कहा और बाहर जाता हुआ बोला

‘मैं तारी ताई को भेजता हूँ।’

काली न चाची का मुह खोलकर पानी डाला और चेहरे पर पानी के छोटे मारो लेकिन चाची के शरीर म कोई हरकत नही हुई। उसने चाची के माथे पर हाथ लगाकर दखा और फिर उसके पेट को छुआ। उसका शरीर ठण्डा महसूस करके काली की आखा म आँसू आ गए। वह बहुत घबराया हुआ जीतू के घर की ओर दौड गया और ताई निहाली क बहुत पास जानर बोला

‘ताई, चाची को पता नही क्या हो गया है। उस हाश नही है और उसका शरीर भी एकदम ठण्डा हो गया है।’

काली ने जल्दी जल्दी कहा। ताई निहाली अपना सूत और जटेगन ममेटकर उसके पीछे-पीछे आ गई।

काली घर पहुचा तो बब हकमा चाची का नाम लेकर उस पुकार रही थी। थोडी देर के बाद ही प्रीतो और प्रसिनी भी आ गए। ताई निहाली काली से बोली

‘घर मे देसी थी है तो निकाल। घी म हाथ-पाव सूतन स हाश आ आएगा।’

काली न सारा सामान उलट पलटकर थी की कुजी (मिट्टी का छोटा-सा बतन) निकाली और चारा चाची के हाथ-पैर मूतने लगी। काली कुछ समय तक वहाँ खडा रहा। जब उसन दखा कि चाची के शरीर म जीवन के बाइ चिह्न ब्यक्त नही हा रहे ता वह बहुत घबरा गया।

डाक्टर कीचड़ भरी गली में सँभल सँभलकर बंदम उठा रहा था और उसकी चलन की रफ्तार बहुत ही कम हो गई थी। नर्दसिंह के घर के सामने आकर वह रुक गया और उसका बंद दरवाजा देखकर बोला

नर्दसिंह ईसाई क्या बना है दुनिया में अपन बराबर किसी को समझता ही नहीं। पादरी ने उसे चाँदी की जंजीर दी है जिसके नीचे मलीब बनी हुई है। उसे गले में डालकर वह यूँ चलता है जैसे सारी खुदाई उसका बंदमा में पड़ी हो।'

कानी में कोई उत्तर न दिया और डाक्टर की मुस्त रफ्तार पर मन ही मन खींचता हुआ अपन घर की ओर बढ़ता रहा।

दरवाजे के सामने बच्चा का जमघट देखकर और अंदर स्त्रिया का शोर सुनकर काली का दिल बँठ गया। उसने बच्चा को पीछे हटाया और अंदर जाकर चाची के ऊपर चुक गया। प्रीतो और प्रतिनी उसके पाव के तलवा का जोर जोर से रगड़ रही थी। चाची को कुछ कुछ होश आ गया था। वह बहुत कमजोर आवाज़ में हाय-हाय कर रही थी। काली ने सबका पीछे हटा दिया और दरवाजे की ओर देखता हुआ बोला

डाक्टर जी, आ जाओ।

डाक्टर ने डयान्ती के अन्दर आकर चारा आर नजर दौड़ाई। नई पक्की नीवारें, नई छत, पीतल के बरतन और लोहे के टुक को देखकर सोचने लगा कि काली भी छोटा मोटा दूरजवा बन गया है। फिर वह स्त्रिया और बच्चा का दौड़ता हुआ बोला

'कमा जमघट लगा रखा है। पीछे हट जाओ अंदर हवा आन दो। एस जमघट में तो अच्छा भला आदमी भी बहोश हो जाएगा।

काली ने बच्चा को वहाँ से हटा दिया। सब औरतें एक ओर खड़ी हो गई। डाक्टर स्टथोस्कोप के दाना सिरे कानों में ठासकर उसका मुँह चाची की छाती पर जगह जगह रखकर देखता रहा। फिर उसने चाची की पीठ का मुआइना किया। वह काली का दा गोलियाँ दता हुआ बोला

एक गोली पानी के साथ अन्न दे दो। दूसरी पूरी तरह होश आन पर दे दना। शोर बिलकुल न हो और हवा खुली हो। शाम का हाल बताकर और दवाई ले जाना।'

डाक्टर जी पस में शाम का ही दूगा। काली चाचा की आर देखता हुआ बोला

खाने-पीने के लिए क्या दना है ?'

म थोड़ा-सा दूध लाकर काली के गिलास में उँडेल कर वाली

‘तू काम घघा क्या नहीं कर लेता। अपना चमार को तो एसी जरूरत पूरी करनी ही पड़ती है हर किसी को तो दूध दिया नहीं जाता।’

काली का जी चाहा कि चौधरानी से कहे कि वह दूध के पमे ले ले लेकिन वह इतना साहम न कर सका। वह कोई उत्तर दिए बिना ही बाहर आ गया और गिलास को बहुत सावधानी से थामे हुए तेज-तेज कदमा से अपने घर की ओर आ गया।

चाची वैसे ही वसुद्ध-सी पडी थी। मक्खिया उसका हाठा क कोना पर भिनभिना रही थी। काली ने जर्दी से चूल्हा जलाया और उसके ऊपर पानी रखकर चाय की पत्ती और चीनी डूढ़ने लगा। पानी उबल-उमल कर सूख गया लेकिन उम दोना में से कोई चीज न मिली। उसने पत्तीली में और पानी डाला और स्वयं चाय की पत्ती और चीनी लेने के लिए छज्जू शाह की दुकान की ओर दौड़ गया।

चीजें लेकर वह फिर भी रुका रहा तो छज्जू शाह कहन लगा

‘काली दास, इतना घवराने की क्या बात है। बुखार है उतर जाएगा। पार साल में इन्ही दिना में दो महीने ताप से चारपाई के साथ जुड़ा रहा था। हौसला रखो, प्रभु जल्दी आराम देगा।’

‘शाह जी, आपकी बात ठीक है। दुख सुख इस शरीर के साथ बन हैं। मैं आप से यह कहना चाहता था कि कहीं से पाओ-आध मेर दूध का बदा बस्त करा दें। सवेरे चौधरी मुशी के घर में मांग कर लाया हू। चौधरानी न थोड़ा सा दूध दिया लेकिन साथ पचास बालें भी सुना दी। कहन लगी कि अपने चमार की हाजत पूरी करनी ही पड़ती है। हर एक कमरे को दूध तो क्या लस्सी देना भी मुश्किल है।’

बात तो उसकी ठीक है काली दास। सदावस्त तो कोई लगा नहीं सकता। आदमी वह कुछ भी लेकिन यह बात पक्की है कि आदमी उसके हाथ पर चीज रखेगा जिससे उस या तो कोई लाभ हा या उसके साथ कोई रिश्ता हो। बाकी रहा पाओ-आध पाओ दूध खरीदने का सबाल।’ यह कहकर छज्जू शाह सोचने लगा और फिर गली में जात हुए एक आदमी को आवाज देकर बोला

हरी सिंह चौधरी तू उदा बलिहाज हाता जा रहा है।’

छज्जू शाह न हैमते हुए क्या। हरी सिंह उसरी दुकान की ओर मुड़ता हुआ बोला

शाह जी बाग बलिटाबी की गहरी है । हुबली जा रहा था भग और बल का पट्टा-ग्या डागा है । युभा रिश की माँ का म मर गई है ।

‘चीधरी गया बल घरीग कि गरी ।

‘शाह जी गया बल बही म लुंगा । बल गावाए म एव बल ग्या था । उमक दा है गा । मागूम है उमरा मागिर रिता पर मांग रहा था ? छ भीतरों और दग ग्या । शाह दाता पर मर पाग बही है । सारी पगल बेचकर भी पूर गरी हाग । हरी गिट युग मा मूँ बनावत हुआ बाल ।

चीधरी दग जानत हा । छजू शाह त काअ की आर सता करा हुए कहा ।

क्या नहा जानता । पट बाली है गाग चमार का लडका । हरी गिह ने उत्तर दिया ।

इसरी चाची बीमार है । इस दूध की जरूरत है ।’

छजू शाह की बात सुनकर हरी सिंह भडक उठा

‘शाहा तरी अल ठिगान है कि नहीं ? गरीब हूँ तो क्या हुआ चीधरी तो है चमार का हाथ दूध बचूगा तो गाँव वाल क्या कहेंगे ?’

हरीसिंह पड स नीच उतर आया ।

छजू शाह हाथ मसलसा हुआ बाल

काली दास देखा तूने । घर म पाने की दाने नहा है । एन बल से हल जोतता है लकिन जबड राषडा जसी है । तुम किन्न न करा । मैं किसी और से पूछूगा ।’

काली सोना लेकर घर आ गया । उसरी परेशानी पहले स भी बहुत बड गई थी । हरी सिंह के शब्द गिरजाघर के घडियाल की तरह उसके काना म गूज रहे थे । उसन चाय बनाई और चाची को उठाता हुआ बोला

‘चाची चाय पी ले ।’

चाची की गदन का जिस ओर झुकाव होता उधर ही लटक जाती थी । काली ने बहुत यत्न करके उसको दो घूट चाय पिलाई और डयोनी म लिटाकर आटा गूधने लगा । जब ताई निहाली अदर आई तो काली रोटियाँ पका रहा था । वह खाट पर बठती हुई बोली

‘प्रतापिए, क्या हाल है अब ?’

चाची ने जाँघें खोलने की कोशिश की और उसके होठ हिले लकिन जवान स कोई शब्द न निकल सका । ताई निहाली ने इधर उधर देखा और

काली की तलाश में आँगन में आ गई। उसे रोटी पकाता देखकर बाली

हाथ में मर जाऊँ। पुत्ररा तू यह क्या कर रहा है? ठीक है प्रतापी बीमार है लकड़ा में तो चलती फिरती हूँ। जसा जीतू वैसा तू। खबरदार अगर फिर रोटी आप बनाइ।

ताइ निहाली ने बाली को प्यार से डाटत हुए कहा और उसे उठाकर खुद रोटियाँ पकाने लगी। बाली कुछ क्षणा तक आँगन में खड़ा रहा और फिर ताइ निहाली से बोला

ताई तुम यही रकना। मैं डाक्टर से दवा ले आऊँ।'

बाली ड्योली के अंदर चाची के पास आ गया। चाची की आँखों में पानी बह-बहकर चारपाई पर गिर रहा था। वह पूरी तरह होश में थी। वह बहुत कमजोर आवाज़ में बोली

पुत्ररा तू आप रोटी बना रहा था। चाची फिर राने लगी। बाली की आँखों में भी आँसू आ गए। वह प्रसन्न था कि चाची पूरी तरह होश में है।

फिर बाली डाक्टर की दूकान पर पहुँचा तो हकीमा का थोमा वहाँ बैठा था। डाक्टर उस समय रहा था कि रूस पर जर्मनी के आक्रमण का मुकाबला करने में रूसी छापामार दस्ता ने क्या-क्या काम किए थे। बाली पहले तो बहुत लिचस्पी में डाक्टर की बातें सुनता रहा लेकिन चाची का खयाल आत ही बट बचनों से बाली

डाक्टर जी, चाची का बुखार तो बढ़ता ही जा रहा है।'

कोई हरज नहीं। डाक्टर आँसू की सम्बोधित करता बहने लगा

'रूसी छापामार दस्ता ने जर्मन फौजा का नाक में दम कर दिया था। वे दुश्मन के भोचों के पीछे जाकर उसे परेशान करते थे।' बाली ने डाक्टर की बात टोनात हुए कहा

'डाक्टर जी, दवा दें। उस बुखार में बहाशी-सो हो रही है। सवरे से चाय के पिनकर सिर्फ लो भूट पिए हैं।'

काइ हरज गेहा।

डाक्टर ने अपनी बात जारी रखत हुए कहा

छापामार दस्त दुश्मन को न सान दत, न खान दत और न पीन दन थ। बरत बरले। बडे मजबूत हगि।'

ओमे ने आश्चर्य प्रकट करत हुए कहा।

हाँ भई, वे दस्त अपनी जान हर समय अपनी हथेली पर रखत थ। डाक्टर ने मुँह हात हुए कहा।

घरती धन न अपना

पानी में बाण लगी जाती दही तो दानव में बाण

'अच्छा दानव जो मैं पानी जो मैं मिल भावें । मुग दूध बाण है ।

दानव में पीतल उगरी भार देवा और उगे न । पान भाव को ताता करव भाव में बाणें करन लया ।

पानी पानी को पर पर ही मिल लया । बर उगव बरव ताता में मिला । और उग भाव बराबर चुगीं नर विगाया । पानी मुगलगाता हुआ थोता

गुताभा पानी नाम क्या आण ?'

'पानी जो बाधी को तात पड़ा हुआ है । दानव । क्या है कि उग मिल दूध, पाव या मागुताता देता है । भाव गरवे चौधरी मनी क पर न बतारा भर दूध लाया था । चौधरानी । दूध ता चिया लतिता बरव लामान जना कर । फिर छत्रु शाह । चौधरी लगे मिल न बाव की कि आय गर दूध पम लवर द दे । उगत मरी बरव बरवकी की । बरव लया कि बर गरीव है तो क्या हुआ आगिर जमीनार है चौधरी है । पमार को दूध बपता अच्छा लगता । बाली की आँखा में आँगु आ गए ।

पानी उस तसली दता हुआ बाला

बानी दास, पवराभा रहा । यीगू मगीह मुहारी सब मुगिरके दूर करेगे । मुहारी सब जरूरतें पूरी होगी । हमारा ईसाई धम तो यह बटना है कि चुन का बेटा यीगू मगीह हर ईसाई क पर न मौजूद हाना है भन यह नबर न आए । इसलिए कोई ईसाई किसी का यह चीज बन स इतर नही करगा जो उसक घर में मौजूद है । यह हम सबका पवित्र पिता है । उसकी आँखा क सामने चारी बँसी झूठ बसा, परेव दगा बसा ?'

पादरी अतर जातर एक पुढा उठा लाया और बाली क सामन खोलता हुआ बोला

'यह विलायती दूध है, गुया दूध । इसमें थोडा सा गम पानी मिलाकर उसे इतना रगडा कि पानी और यह दूध एक जौन हो जाए, फिर इसमें और पानी मिला दो, दूध तयार है । मरे पास भस है लेकिन फिर भी हम जवाना तर यही दूध इस्तमाल करत ह ।

मुझ पता है पादरी जी । शहर में भी ऐसा दूध मिलता है । एन गाव गाढा खडी जसा डिन्ने का दूध भी होता है ।

बाली डाक्टर की दूकान पर पहुँचा तो अभी रुसी छापामार दस्ता की बात जारी थी । डाक्टर विशनदास जोम स उनके चारे में प्रश्न पूछ रहा था ।

डाक्टर अपन प्रश्ना के उत्तर पाने के लिए आग्रह करने लगा तो ओमा बोला

अच्छा पहले मुझे एक बात बताओ ।

'क्या ? डाक्टर ने उत्सुकता से पूछा ।

'क्या छानामार दस्त लकड़ी के थे या लोहे के ?

आमे की बान सुनकर डाक्टर को एकदम क्रोध आ गया और वह उसके मुह में हाथ दता हुआ बोला

तेरा हाल तो उस जाट जसा है जिसने मारी रात रामायण सुनने के बाद पूछा था कि सीता राम की मा थी यह बहन ।

डाक्टर ने आमे को और भी बहुत सी ऐसी बातें कही और वह शर्मिन्दा होकर उठ गया । उसके जाने के बाद डाक्टर बोला

ऐसा खरदिमाग आन्मी मैं अपनी त्रिदगी में नहीं देखा । जितने साल इसने सात जमातों पास करने में लगाए हैं और पसा खच किया है उससे ता भम का कटुआ बी० ए० पास कर लेता ।

डाक्टर की बात सुनकर काली हँस लिया और कुछ क्षणा के पश्चात् डाक्टर से बोला

'डाक्टर जी, चाची के लिए दवाई दे दो ।'

'अच्छा । डाक्टर दात कटकटाता हुआ छत की ओर देखता रहा और जब काली ने दवाई का फिर जिक्र किया तो वह अपन आसन से उठा और एक कागज में चार गालिया बाँध कर बाला

'चाय दूध या गम पानी के साथ देना । दो अभी जाकर द दो, दा शाम को और मकर आकर हाल बता जाना और दवाई ले जाना ।'

दवाई लेकर काली घर पहुँचा तो तारी निहाली जा चुकी थी । वह जो राटियाँ बनाकर रख गई थी उन्हें एक कुत्ता उठाकर आगन के एक काने में दीवार की छाँव में बठा चमा रहा था । काली ने उसे घतकाग तो वह रोटियाँ छाड़कर चू चू करता हुआ भाग गया । उसने रोटियाँ उठाई और उन्हें बाह पूँछकर साफ किया । उसने सोचा कि इन्हें फेंक दे लेकिन उसे इतनी ज्यादा भूख लगी थी कि उसने चारों ओर ध्यान से देखने के बाद राटियाँ को दूधाली में लाकर छिपा दिया । चाची का दवाई देकर वह उन रोटियाँ को उसी तरह जल्दी-जल्दी चबाने लगा जम पहल कुत्ता चमा रहा था ।

काली अभी राटी खा ही रहा था कि भिस्वरी सतारिह आ गया । काली रोटी छोड़कर इस तरह खड़ा हो गया जम उसे देखकर कुत्ते ने रोटी छाड़ दी धरती धन में अपना

थी। सतासिंह चाची की ओर सवेत करता हुआ बोला

‘क्या बीमार हो गई है?’

हाँ, छत पर लेप करती करती बेहोश हो गई थी। पहले शरीर ठंडा हो गया फिर ताप चढ़ गया।’ काली ने चिंतित स्वर में उत्तर दिया।

‘अच्छा मैं हिसाब करने आया था। मैंने बुल सालह दिहाड़ियाँ लगाई हैं। सवा रुपये लिहाड़ी के हिसाब से बीच रुपये बात है और दो रुपये मत्त के। दस में ले चुका हूँ। बाकी बारह रह गए। मुझे आज पसो की जरूरत पड़ गई है शहर जा रहा हूँ।

‘मिस्तरी जी एक दिहाड़ी तो आधी थी। उसके पूरे दाम लगा रहे हो।’

दिहाड़ी आधी हो या पूरी, पमे पूरी के ही लगत हैं। मह बता दू कि आज कल अच्छा राज डेढ़ रुपये से कम दिहाड़ी नहीं लेना।’ सतासिंह ने कहा और फिर कोठड़ी की नीचा का देखकर बोला

‘इसे कब बनाना है? आजकल मुझे फुरसत है। दस दिन का काम बहोग तो मैं नहीं जा सकूंगा।

काली ने अपने ट्रंक से पस निकालकर सतासिंह के हाथ पर रख दिए। वह पसो को ध्यान से गिनकर जेब में रख कर बोला

‘उस कुत्ते की औलाद वाले साहब का क्या हाल है। साले ने अपने कस शहीद करा दिए हैं। गुरु के जमूत का अपमान किया है। धडडम चौधरी को तो तुम जानते ही हो मुह पट आदमी है। आज सबरे नद सिंह को देखकर बोला—सुना चमारा, इसाई बनन के बाद कुछ फक पडा है? क्या टट्टी पेशाब पहले की तरह ही करता है या तरीका बदल गया है?’ नद सिंह ने भा उलटा सीधा जवाब दिया। धडडम चौधरी ने जूता उतार लिया और लगा मारने। मजे की बात यह है कि जूता नद सिंह का ही बनाया हुआ था और उसे अभी उसके पसे भी नहीं मिले हैं। वह चार जूत खाकर ही पेशाब की याग की तरह बठ गया। धडडम चौधरी ने उससे कहा कि चमड़ा काला हो या लाल, कमाया हुआ हो या कच्चा, जाखिर चमड़ा है। नद सिंह खारिश खाए कुत्ते की तरह चू चू करता हुआ घर आ गया।

सतासिंह ने सारी बात लहक लहक कर सुनाई।

काली खामाश रहा और कुछ क्षणों के पश्चात् मिस्तरी से बोला

मिस्तरी जी! चाची बीमार है। मेरा ध्यान किसी दूसरी जगह जाता है नहीं। नौव ता मैं छोड़ दी है। आप दो लिहाड़ा लगा कर पवन स्तून बना दें। एन, दो तान चार, पाँच और छ स्तून बनाने हामे। दो नहा ता तीन दिन

म बन जाएंगे । मैं दीवार मिट्टी की बनाकर छत डाल दूंगा । जब हाथ में पम आ जाएंगे तो उन्हें भी पक्की कर लूंगा ।'

जसी तरी मर्जी । फिर कल आ जाऊँ ? 'गारा तयार रखना ।' मतासिंह गली में आ गया और दूसरे ही क्षण वापस आकर काली को कोठड़ी के एक कोने में ले जाकर बोला

'तरे माणूक पर जवानी तो खाद और कुएँ के पानी पर पली मकई की तरह फूटी है ।'

किस की बात कर रहे हो ?' काली ने उसकी ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा ।

वही जो तुम्हें मक्खन वाली लस्ती मिलाने आया करती थी । मणू की बहन जानो । ऐसा लगता है उसे खाद खुराक दोनों मिलने लगे हैं । और तरे पास तो दाना की कमी नहीं है । मिस्तरी ने काली के कंधे पर जोर से हाथ मारते हुए कहा ।

काली का चेहरा लाल हो गया और वह झुद्ध स्वर में बोला

मिस्तरी, कुछ अन्न की बात कर । किसी की माँ बहन के बारे में ऐसी बात कभी नहीं कर्नी चाहिए ।

काली, ये सब कहने की बात हैं । जो आत्मी राज पाजा भर अन्न खाता है वो हर जवान लडकी को अपनी बहन नहीं समझ सकता । बीबा, जवानी चीज ही ऐसी है । इसके सामने बड़े-बड़े भक्ता के मन डोल जाते हैं ।'

मतासिंह हँसता हुआ बाहर निकल गया ।

२८

मुहल्ल में एकदम बहुत शोर मच गया और एक साथ बहुत सी आवाजें आने लगीं । प्रीतो का बेटा अमरू खबर लाया कि बूटासिंह जाट के लडके पालो और जगत के भाई बग्गे का आपस में झगडा हो गया है । उसी दोरान में येरू खबर लाया कि बग्गे ने पालो का खूब मारा है और चौधरी बूटासिंह ने आदमिया को साथ लेकर सता की जोर मारा है ।

धरती धन न अपना

१६७

एक के बाप प्रीतू गधर लाया कि बगन का नूतानिग पातर आया था।
की जार ल गया है। वह बच्चा नूतानिग की हवेली की आर ली ग। बागी
देर के बाप एन बच्चा दीश-दीश आया और लीला हुआ बाग

‘बग्गा नूतानिग की हवेली म गहा है। मर उम चौधरी हरनाम सिंह की
हवेली ले गए थ लेकिन चौधरी न वहाँ म उम चौधरी मुशी की हवेली भ्रज
दिया है।

बगान्दी म इग शगड रा फरने वाली गटमा गहमी अमी बम हान ही
लगी थी कि दागू बाव फत्तू और ताव बगत को बुग्या आ गया। वह दोना
को चौगान म बुग्यार वाला

चौधरी मुशी की हवेली म पचापत हा रही है। वहाँ कुहें बुग्याप है।
बग्गे का क्या शगडा है?’

मुझे तो इतना ही पना चला कि बगन न चौधरी नूतानिग क लडक को
मारत है। जल्दी चला। वहाँ चौधरी हरनाम सिंह नूतानिग महाशय तीथराम
और लानू पहलवान सब बठ हैं।

‘इस गाँव म इरजत रा जीना बहुत मुशिल हो गया है। लडाईं छोररा
की और अब दाढी खाई जाणगी बूढ़ा की। बाव फत्तू न दुग्यो आवाज म
बहा। जब थ दोना चौधरी मुशी की हवेली की ओर चल तो कई आत्मी
और बच्चे उनक पीछे हो लिए।

चौधरी मुशी की हवेली के खुले आँगन म कई चारपाइयाँ बिछी हुई थी।
उन पर चौधरी हरनाम सिंह चौधरी मुशी, महाशय तीथराम और बहुत से
लोग बठे थे। वे सब बहुत शोध म थे ब्याकि गाँव के चमार ने चौधरी पर
हाथ उठाया था। आसपास मकाना पर कई स्त्रियाँ बठी थी। चारपाइया के
सामने बग्गा सिर झुकाए बठा था। बच्चा म प्राय यह एहसास बम ही होता
था कि वे चमारा के लडके हैं या चौधरियो के। परतु इस समय उह भी
अपनी जाति का बहुत एहसास था। चौधरिया क बच्चे चारपाइया के पास
खडे थे और चमारा क बच्चे परे हट कर तपती जमीन पर बठे थे।

जब बाबा फत्तू, ताया बसता जगता और चमादडी क बहुत से लाग वहा
पहुच गए तो चौधरिया म हो रही बातचीत बढ हा गई। बाबा फत्तू चारपाइयो
से थोड़ी दूर हटकर जमीन पर बठ गया और बाकी लोग उसके आसपास
बठ गए। सब चुप थे, केवल हुक्का गुडगुडाने और खांसने की आवाजें आ
रही थी। चौधरी मुशी ने चौधरी हरनाम सिंह से बात गुरू करने के लिए
कहा। लेकिन उसके इशार करने पर चौधरी मुशी खांस कर गला साफ करता

हुआ था

'आज हमारे गांव में एसी बात हुई है जो अनर्थ से कम नहीं। बग्ये चमार, 7 चौधरी पाला का उमी व मोत में मारा है। पहली बात तो यह है कि बग्या चौधरी वूर्तासह व मन में बिना पूछे गया क्या? दूसरे इमन चोरी से घरबूजे तोटन की कोशिश की। तीसरे यह कि पालो न उमे रोना तो बग्ये ने उम पर हाथ उठाया। है ना अंधेर साह का? जमीनार लोग अपने गेता में हमशा से घरबूजे बान आए हैं। व आप भी घात रह हैं और उनके कमीन भी। लेकिन चोरी करके नहीं मुह से मांग कर। आज चमारा के छोकरे न चौधरिया के लडके पर हाथ उठाया है। बल तो बात भाग बड सकती है। सयाने वह गए हैं कि शरारत छित्तर धार की तरह फलती और बढती है। अब यह बात पचा व सामन है। वह ऐसा फसला करे कि शरारत यही दब जाए।'

बग्ये को दण्ड देना चाहिए। एक आवाज आई।

मिफ बग्ये का ही क्या, उमक सारे घर वालों को दण्ड देना चाहिए। धनरा बाईकाट करना चाहिए। मार मार कर इनका मलीन कर देना चाहिए। बाई भी इह अपन गेता में न घुमने दे।' दूसरी आवाज आई।

गारे चमारा पर सा जूता मार कर एक गिनो और इस तरह सी जूता लगाओ। तीसरी आवाज आई।

'बग्ये को पुलिस के हवाले कर दो।' एक और चौधरी ने सुझाव दिया।

क्या हम मर गए हैं जो पुलिस का सहारा लें?' एक साथ कई आवाजें उठी।

चारपाइया पर बठा हर व्यक्ति अपनी अपनी समझ के अनुसार दण्ड का सुझाव देने लगा और वहाँ पर अच्छा खासा शोर मच गया।

बाबू फत्तू ने जब चौधरिया को इस प्रकार बातें करत मुना तो वह खडा होकर हाथ जोडता हुआ था

चौधरियो मुझे भी दो बातें करने का मौका ना।'

'शोर कम होने लगा और चुप चुप की कई आवाजें एक साथ उठी। जब सब लोग चुप हो गए तो बाबा फत्तू धीमे स्वर में बोला

'अगर आप लोगो को ही दण्ड का फसला करना था तो हम क्या बुलाया गया।

बाबू फत्तू ने अपनी बात जारी रखत हुए कहा

हम चमार हैं चौधरिया के कमीन। आप हमारे मालिक हैं। आप जो भी नण्ड देंगे, जिसको भी देंगे वह उस कबूल करना होगा। नदी में रहकर

धरती धन में अपना

मगरमच्छ स बर नहीं रखा जा सकता ।' बाबू फत्तू क इन शब्दों न उत्तेजित चौधरियों को किसी हृदय शांत कर दिया । बाबा फत्तू फिर बोला

'आप और हम इस गांव में पुष्पा से रहते आए हैं । हम आपको अपना चौधरी समझते थे और आप हम अपने चमार । हमारा नाम आपकी सेवा और सहायता करना था और आपका काम हमारी पालना करना हमारी हाजतें पूरी करना । हमारे दुःख सुख में सांझीदार होना । मेरी उम्र सत्तर से ऊपर है । हम सब इसी गांव में रहते आए हैं । पहले, गांव में चाहे चमार हो या चौधरी सबकी इज्जत सांझी होती थी । लडाईं झगडा तो दूर, कोई चमार चौधरिया के सामने आंख उठाकर नहीं देखता था । जब आप लोगों ने हमारी इज्जत को अपनी इज्जत समझना छोड़ दिया, जब जाट और चमार का खून मिलने लगा तो यह गडबड होने लगी । अगर आज आप के ही खून ने आपको बच्चे को मारा है तो आपको दुःख क्या हुआ ?

बाबू फत्तू ने बगों की ओर संकेत करते हुए कहा 'इसे देखकर कोई कह सकता है कि यह चमार की औलाद है ?

सब चौधरिया की गदन झुक गई । आसपास मकानों पर बड़ी स्त्रियां मुंह बंद करके हँस रही थीं । चौधरी एक एक करके वहाँ से घिसतने लगे तो बाबू फत्तू ने हाथ जोड़कर कहा

'मैं सिर्फ यही कहना चाहता था । अब आप जा चाहें दण्ड दें ।'

बाबू फत्तू ने अपना सिर झुका दिया ।

सब लोग चुप बठे थे । कुछ क्षणों के बाद चौधरी मुंशी ने खामोशी तोड़त हुए कहा

'जमाना बहुत बुरा आ गया है ।

'कलयुग में जा भी हो जाए सो थोड़ा है ।' महाशय ने कहा ।

चला दौड़ो यहाँ से । अगर फिर कभी चोरी की या झगडा किया तो उल्टी खाल उधेड लूंगा ।'

चौधरी मुंशी ने बगों का सम्मोचन करत हुए कहा और पचास जितनी जल्दी इकट्ठी हुई थी उमस भी कम समय में बरपास्त हो गई परन्तु चौधरिया की हबलिया में, बाजार की दूरान पर चमारों के तहिय में बलि हर घर में एक ही चर्चा हो रही थी और वह थी बाबू फत्तू की बातें । तमाशगीन लोग सारे गांव का चक्कर लगाने हुए आज की घटना पर लोगों की त्रिपणियां मुन कर चण्धार ल रहे थे ।

महाशय तीपाराम का दूरान पर मन्फू गम थी । धरती चौधरी का

इस घटना का पता चग तो वह सीधा महाशय के पास आ गया और नसवार की चुटकियाँ ले-लेकर जाटो और चमाग दानो की गालियाँ दन लगा । महाशय कभी जाटो के पग म बात करता तो कभी चमारो रा समयन करता ।

डाक्टर विशनदास साय से पहले ही हुकान बढाकर महाशय के चबूतरे पर आ बंठा । पण्डित सतराम मंदिर की आर जाता हुआ वहाँ तन रक्क गया । घडडम चौधरी उस चबूतरे पर चढते दखकर बोला

पण्डिता तुम्हें कय से कान गस हो गया है । जा, जाकर शख म पूक मार । नाइया का समदू कुत्ता और बलार्सिह का नाम पाटा कुत्ता तरी इन्जार कर रहे होंगे ।'

पण्डित सतराम न उसकी ओर धूरकर दखा और महाशय से बाला आज पचायत किसलिए हुई थी ?'

कुछ नही, चमारो के बग्गे ने ब्यूटार्सिह के लडके पालो से घाल घप्पा किया था ।'

अच्छा ।' पण्डित सतराम उतरने लगा ता घडडम चौधरी उसे बांह से पकडकर बिठाता हुआ बोला

वहाँ चला ? अभी तो एक घडी दिन बाकी है ।'

'नही चौधरी, जान दो, भुझे काम है ।' पण्डित सतराम न उठत हुए कहा ।

'ठाकुरा को गर्मी लग रही होगी । उह अश्नान (स्नान) करना होगा । घडडम चौधरी न नसवार की एक और चुटकी लेकर जोर से सांस खीचा और पण्डित सतराम के मुह सर छीक मारी । सतराम डर कर पीछे हट गया और ऊँचे स्वर म बोला

'दूरपिटट मुह । पापी वहाँ का । चौधरी, अब तू छोटा नही, छात्रखेल छोड दे । तू प्रभु का नाम लिया कर । कुछ अगला दुनिया की भी खबर कर ।

'पण्डिता तुम्ह पकी पकाई रोटी मिल जाती है । मेह हो या आधी, धूप हा या छाव तेरे हड़े (दान की रोटी) पक्के हैं । तुम्हे भक्ति नही सूझेगी तो और क्या सूझेगा । दा दिन मेहनत करके रोटी खानी पडे ता तुम्ह पता चल जाए कि पेट से बडा कोई पापी नही ।' घडडम चौधरी हँसता हुआ बोला

मैं ता कई दिना से सोच रहा हू कि तरे मरने के बाद मंदिर सँभाल लू । काम ही क्या है । सबरे शाम ठाकुरा को स्नान कराना घण्टी बजाना, धूप जलाना और शख बचाना । बाकी मौज ही मौज है । गर्मिया म सबस पहक गर्मियो के मेवे खाया सदिया म सदिया क । ठाकुरा का तो नाम ही है, असली भाग ता तू ही लगाता है ।'

की भी नहीं है। तू हमेशा वेमोंके की और वेतुकी बात करता है। जगर तेरी बात ठीक है तो तू अपन बच्चो के रिश्ते चमारा से कर देना।'

'चौधरी तू जाट की बात कर रहा है। तेरी बात में कोई तुक नहीं है। मैं साइटिफिक नजरिया (दृष्टिकोण) पेश कर रहा हूँ।' डाक्टर ने सख्त लहजे में कहा।

देखा है तेरा साइटिफिक नजरिया। तू नाम साफ करन बठना है तो आधा दिन लगा देता है। तेरी नजरिया साइटिफिक है या नहीं यह तो मुझे पता नहीं लेकिन तुम्हें फिटक (बुरी आदत) जरूर है।

धडडम चौधरी की बात पर सब खिलखिलाकर हँसन लग तो डाक्टर ने बुरा सा मुह बना लिया।

धडडम चौधरी महफिल पर छाया हुआ था कि मन्दिर में घण्टिया बज उठी और साथ ही शब्द की आवाज आन लगी। महाशय न मुह में गायत्री मंत्र पन्ते हुए लालटेन जला दी। लोग धीरे धीरे वहाँ से खिमकने लगे। धडडम चौधरी अपना जूता टटोलता हुआ उठ गया।

महाशय की दुकान पर केवल डाक्टर रह गया। वह महाशय को इसान के छून के बार में नवीनतम ध्यारी बना रहा था और वह मुह में गायत्री मंत्र का पाठ कर रहा था। गली में नाना आ रही थी और उसक पीछे-पीछे बूटासिंह का लडका पालो गा रहा था

इक बार चुम्मी लग दे।

तनू दे दिया मुरब्बे सारे ॥

२९

चाकी को दवा-दारू से लाभ न हुआ ता ताई निहाली और बब हुमा क आग्रह पर काली जादू टोन का सहारा लेने के लिए तैयार हो गया। उनमें जीनू द्वारा नजदीकी गाँव कधाला जटटा से रफने घेवर का बुला भेजा। वह थाड फूक और जादू टोन के लिए सारे इलाके में गरहूर था।

जधेरा काफी गहरा हो गया था जब गली में चिमटे की छनठनाहट मुनाई

घरती घन न अपना

२०३

दी । काली लपककर गली में आ गया और जीतू के साथ चिमटे वाले व्यक्ति को देखकर प्रसन्नभाव से बोला

‘आ गए जी ?’

हां । कहता हुआ जीतू डयाड़ी में घुस आया ।

उसने पीछे पीछे रखवा धेवर भी डयाड़ी में चारा ओर ध्यान से दखना हुआ अंदर जा गया । काली ने आंगन से खाट उठाकर डयाड़ी के अन्दर बिछा दी ।

बठो जी । काली ने रखे धेवर की ओर देखते हुए कहा ।

मिट्टी में दीए के प्रकाश में रखे का काला चेहरा जिस पर उसने सरसा का तेल पोंन रखा था बहुत चमक रहा था । उसने गले में मोटे-मोटे मनका नी माला पहनी थी और सिर पर मली सी पगड़ी थी । एक हाथ में थैला और दूसरे में लोहे का बड़ा चिमटा । चिमटे पर भी सरसा का तेल पोता हुआ था और उसकी दोनों बांहों पर कुण्डे लगे हुए थे जो थोड़ा-सा भी हिलाने पर छन-छना उठते ।

‘यह बठक नई बनाई है ?’ रखे ने पूछा ।

‘हां पन्द्रह बीस दिन हुए है । काली ने उत्तर दिया ।

‘हैं । रखवा जस सोच में पड़ गया और फिर काली की ओर आँखें फाड़ कर देखता हुआ बोला

इसमें बसेरा करने से पहले किसी समय को बुलाया था ?

‘नहीं ।

इसीलिए प्रेता का वास हो गया है । एक बात याद रखो जब कभी नई इमारत बनेगी उसमें प्रेम आ जाएगा । वे चोला चाहते हैं । रखे ने कहा ।

काली की समझ में कुछ नहीं आया और वह नीची नजरों से रखे की ओर देखन लगा ।

जीतू अपनी माँ को बुला लाया । ताई तिहाली ने आते-जाते गली में पाँच सात धरा में मूचना द दी । थोड़ी ही दूर में कई स्त्रियाँ काली के आंगन में इकट्ठी हो गई । सबने रखे के पाव की ओर झुककर उसे प्रणाम किया । ताई तिहाली उससे बातें करने लगी । रखे ने उससे कई चौधरियाँ और चौधरानियाँ का हाट पूछा और फिर बठोर स्वर में बोला

‘निहालियाँ! घट्टाडका तो बसमत है । तू ही इसे ममजा देती कि नई इमारत में भूना का निहाल बिना वास नही करना चाहिए । उसने काली की ओर आना धला वपान हुए कहा

इसे सँभालकर रखना । इसमें खरबूजे हैं ।' और फिर ताई निहाली से कहने लगा

जिसके अन्दर भूत है वह कहा ह ?

ताई निहाली दीया उठाकर उसके प्रकाश में रक्खे को आगन में ले आई । रक्खे ने चाची पर एक निगाह डाली और हाथ में पकड़ा चिमटा बजाया । चाची का शरीर डर से सिहर उठा ता रक्खा हँसना हुआ बोला

अभी तो मैंने कुछ किया ही नहीं तू पहले ही कापने लगा है । फिर वह काली को सम्बोधित करता हुआ बोला

'धूप गुग्गल ढकी वाली लाल मिच रखी है ?'

हा जी !'

ल आया सब चाजें । रक्खे ने अपना चिमटा फश पर रखते हुए कहा

कुछ खाने पीने का सामान ले आया । सूखा राशन लाना ।'

काली से पूछकर ताई निहाली थाली में आटा और गुड ले आई और रक्खे के सामने रख दिया । रक्खा थाली को देखता हुआ बोला

इसमें चार आने दूध के लिए भी रख दो । भूत जिद्दी लगता है । मेरे ख्याल में मुलह-सफाई से नहीं जाएगा ।

काली ने थाली में चार आने भी रख दिए ।

रक्खे ने धूप और गुग्गल बडछी में डालकर उसपर दहकता हुआ कौयला रख दिया और उम चाची के नथना के पास रख कर मुह बंद करके कुछ बुद बुदान लगा । वह थोड़े-थोड़े अंतर के बाद चिमटा जोर से फश पर मारकर ऊँची आवाज में कहता

निकल जा यहाँ से तरे पीरा फकीरो का खाना खिलाऊँगा । रक्खे ने यह क्रिया सात बार दाहराई परन्तु जब चाची के शरीर में हवा जितनी जुबश भी न हुई तो वह सब को देखता हुआ बोला

भून काफा ढीठ है । पता है किसका भूत है यह ?' और वह खिलखिला कर हस पड़ा । सब उमकी ओर देखन लग । लेकिन वह सबने बेपरवा ऊँची आवाज में बोला

मैंने तुम्हें पहचान लिया है । तुम्हारी भगई इसी में ही है कि मुलह सफाई में चले जाओ बग्ना तुम जानते हो मैं तुम्हें कही का नहीं रहने दूँगा । रक्खा आँखें ऊपर उठाता हुआ बोला

हरबगसिंह का नाम सुना है ? हरबेलसिंह पारिया ?

यह नाम सुनकर सबके दिल दहल गए । हरबेलसिंह व्यास नदी के पार का

घरती घन न अपना

नामी डाकू था। उसने बहुत से डाके डाले थे और कई बरत लिए थे। उसे पुलिस ने एक मकान में घेर कर जिंदा जला दिया था।

रक्खा चिमटा बजाता हुआ बोला

‘डाकू भी हमारे इलाके में डालता था और अब भूत बनकर भी इसी इलाके में घूमता है। जोड़े के तरघान के नौजवान लडके में वास कर गया था। मैंने वहाँ से इस कुत्ते का हाल बरके निकाला था।’ रक्ख ने बडछी उठा ली और कौयान पर फर मारकर चमका दिया और ऊपर लाल मिर्चें रख दा। मिर्चों के बडके धुएँ से बचने के लिए सबन नाक और मुह पर कपडा रख लिया और जायें बंद कर ली। रक्खे ने बहुत जल्दी जल्दी मुह ही-मुह में कुछ पडा और वह बडछी चाची के नाक के नीचे ले जाकर जमीन पर चिमटा जोर से पटककर बोला

निकल जा बरना तरे जनने वालो को चीटिया को खिलाऊंगा। उसन दा तीन बार जोर से चिमटा पटका। चाची का शरीर एक बार कांपा और उसके हाठा और पलको में जैसे कंपकंपी लग गई।

‘अब हिला है, देखता जा, मैं तुझे घोड़े की तरह दौडाऊंगा।’

रक्खे ने चिमटा बगानर कहा और बडछी में जब लाठ मिच के बीज जलन लगे तो उसने बडछी चाची के नाक के बिलकुल नीचे रख दी। चाची को ऊपर नीचे दो तीन छीकें आ गई तो रक्खा चिमटा चाची के सिर के बिलकुल पास बजाता हुआ बोला

वाल निकलेगा या नही। इस बार मैं तुम्हें ब्यास पार ही पहुचाकर छोडूंगा। रक्खे ने अपन मुह में फिर कुछ पडा और चाची के नाक के नीचे बडछी घुमान लगा। बडके धुएँ से चाची को खासी का दौरा-सा पड गया और उसकी बंद आखा से पानी बहने लगा। रक्खा आखा से बहते पानी को देखकर बोला

अब जा रो रहा हूँ पहले ही मेरी बात मान लेता और खा-पीकर मुल्ह सफाई से चला जाता।

स्त्रियाँ दम साथ सब कुछ देख और सुन रही थीं। वे कभी कभार एक दूसरे के धान में फुमफुसान लगतीं। छर्सी के मारे जब चाची का सारा शरीर मुकडन लगा तो रक्खा चिमटा बजाता हुआ ऊँची आवाज में बोला

अब अरुड क्या रहा है ? जाता क्या नहा ? क्या जूत धान का द्राना है ?

चाची का जब खासी से बुरा हाल हो गया तो वाली ने तारी जिहाली के

कान म कहा

चाची का सास पलट नहीं रहा ह । घाडा-सा पानी पिला दू ?'

काली रक्खे क पास आवर बठ गया आर उमरीं आर चुकता हुआ वाला
बहो ता चाची का एक घूट पानी पिला दू ।

इस मारने का इरादा है ? इस हालत म पानी पिलाना छाया का बुलाना
है । दुश्मन को दूध पिलाना है ?'

घाडी देर बाद अपने-आप ही चाची की खासी गुठ कम हो गई और साय
ही शरीर की एठन भी । उसका शरीर धीरे धीरे कापन लगा ।

'अब काप रहा है । मूखा मेरी बात मान लता ता इस दुदशा स वच
जाता ।

रक्खा चाची के कँपकँपात हाठा को देखर उसके मुह की आर चुकता
हुआ ऊँची आवाज म बोला

क्या कहा ? ओर फिर चिन्लाकर बोला

माफ कर दूँ ?' रक्खा खिराखलाकर हेमता हुआ वाला

'अच्छा अच्छा माफ कर दूंगा ? क्या कहा ? किराया चाहिए ?

क्या याज दाव की मडी पर ? हा हा वह मैं करवा दूंगा जटर करवा
दूंगा क्या कहा सवा पाच रुपये की नहीं नहीं दूसर आदमिया की हैमियत
देखकर याज मागा करो । य चौप्रिया का नहीं, चमारा का घर है । हा
क्या कहा सवा रुपय की याज हा यह हा जाणो । हा सवा रुपय की
करवा दूंगा ।

रक्खे न ऊँचे स्वर म कहा और फिर काली की आर चुकता हुआ वाला

बहता है दाव की मडी पर याज करा दो और कुछ नही मागता । वह
ता सवा पाच रुपय की याज मागता था लेकिन मैंन सवा रुपय पर मना लिया
है । थाली मे सवा रुपया अभी रख दो । क्या पता अपने वचन से मुकर जाए ।'

काली न ताई निहाली की ओर देखा और उमका सकन पाकर थाली म
सवा रुपया रख दिया ।

ले याज भी आ गई, अब जाओ निरले यहा से । रक्खे न फिर
चिमटा बजाकर कहा ।

इतना देर म गम हवा का एक वाका आया । दीव की लो फडफडाकर
बुन गई । कडली म सुलग रही छप और गुगल स कुछ शररे उडकर बिखर
गए । अगले ही धण हवा का पहुँचे स भी ज्वाला जारदार वाका आया । तबिए
म वृथा के पत्ते आपस म टकराकर शोर मचान लग । सानवा क चाँच की

घरती धन न अपना

चादनी मली हो गई और मुह, आंखें और नयने धूल से भर गए ।

लोग छत्ता से उतर जाए । आंधी के डर से गली के कुत्ते भौंकने और गाएँ भस डकारन लगी ।

यह तो जुम्मे शाह की जाघी ह ।

एक स्त्री ने हवा के दबाव में खटखटा रहे दरवाजा की आवाज सुनते हुए कहा

हा, जुम्मे शाह की आंधी ही मानूम होती है ।'

दूसरी स्त्री ने अपना दुपट्टा सँभालते हुए उत्तर दिया

'बहर साइ का ।

'हरवर्लसिह का भूत कोई ऐसा बसा भूत नहीं है । तूफान बनकर जाएगा । अपनी निशानी जरूर छोड़ेगा । माइ की अदर ले चलो ।' रबखे ने थाली और चिमटा सँभालते हुए कहा ।

काली चाची का अन्दर ले जा रहा था कि आगन में धूप की आवाज पडा करती हुई कोई चीज गिरी ।

क्या गिरा है ? ताई निहाली ने धबराकर पीछे हटते हुए कहा क्योंकि वह चीज उसके पाँव के पास ही गिरी थी ।

भूत ने जाने से पहले निशानी छोड़ी होगी । और क्या गिरा होगा ।

रबखे ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा । ताई निहाली फश पर बठकर टटोलती हुई एक इट तक जा पहुँची और उसके चारों ओर हाथ फेरकर बोली

इट गिरी है । ताई के मह कहते-कहते हवा का जोरदार झंका आया और जपन साथ एक और इट उखाड़ लाया । ताई पीछे हटती हुई बोली
ला एक इट और गिरी है ।

'इसका मतलब है कि भूत दोबारा यहा नहा आएगा । मरे सामने तो जरीं ने जरीं भूत भी नहीं ठहर सकता । रबखे ने सशक्त स्वर में कहा ।

चाची को अन्दर खाट पर लिटा दिया गया । आंधी बहुत जोर में चल रही थी । डयोढ़ी के द्वार के पट बार-बार बज रहे थे । भव स्त्रियाँ कोने में दुबककर बठी थी । वे पहल ही डरी हुई थी । तेज आंधी से और भी ज्यादा डर गए । रबखा आंधी को गाली देकर बोला

मैं इस एव जपन में बाँध दूँ लेकिन पुरा चल रहा है शायद बारिश आ जाए । क्या जीव क्या जन्तु क्या पक्ष क्या पेंडैर, क्या घास क्या वृक्ष (वृक्ष) मज पाना माँग रहे हैं । हम मान तो गर्मी भी नरक की आग की तरह पटी है ।'

फिर वह काली का सम्बोधित करता हुआ बोला

देख बन्त्या अन्न माई को पाँच दिन कोई सफेद चीज न देना करना भूत फिर वास कर जाएगा। और अब्बल तो निकलेगा नहीं अगर निकलेगा भी तो ईमकी जान लेकर जाएगा।'

इस बात का मैं ध्यान रखूंगी। ताई निहाली न बहा।

घोड़ी देर न वा हवा की चौका म बादला की गरज भी शामिल हो गई। फिर छोटे पड़ने लग और गम हवा म कुछ ऐसा परिवर्तन हो गया कि शरीर म नुईर्या-सी चुभन लगी। रक्खे न अपना शरीर के गिद चादर लपेट ली और हवा म ठडक महसूस करता हुआ बोला

'नरी माई के अन्दर भी ऐसी ही ठड पड गई है। दख लो किम तरह घोडे वच कर सोई हुई है। अच्छा अब मैं चलू। आधी रात हो गई है। दीया जला कर मुझे बडछी दो।

काली न दीया जलाया और बडछी रक्खे के हाथ म थमा दी। उसन बडछी म गुगल और धूप को दीयासलाई जलाकर मुलगाया और मुह म बुन्बुनाता हुआ उसे हाथ म पकडे डपोड़ी के चारा कोनो म गया। कमरा धूप की मुगधि से भर गया ता रक्खे ने बडछी चाची का खाट के नीचे रख दी और काली से बोली

'इमे यहा से हिलाना नहीं। भूत निमाल दिया है अन्न इसे सवरे तक परछाई से बचाना है। अच्छा लया मरा थल।

काली ने थला रक्खे के हाथ म दे दिया। उसने थल को टटालकर देखा और थाली मे पडा हुआ आटा और गुड कपडे म बाध कर उसम डाला और डेड रुपया उठाकर जेब म रख लिया।

'अच्छा मैं अब जाऊंगा।'

रक्खे को तैयार देखकर ताई निहाली ने काली से कहा

पुतरा, उस सवा रुपया धूप जलाई द दो।'

काली ने उसके हाथ पर सवा रुपया रखा तो रक्खे उसे देखता हुआ बोला

हरबेलसिंह का भूत निकान्न के मैं सवा ग्यारह रुपय से कम नहीं लवा क्याकि ऐसा भूत कभी-कभी उलटा भी पडजाता है। खर यही काफा है। रक्खे न सवा रुपय को एक बार फिर देखत हुए कहा जोर बाहर निकल गया। उसके पीछे-पीछे सब स्त्रियाँ भी चली गई।

काली ने दीय के प्रनाश म चाची की जार दखा। वह आँखें बन्द किए सीधी पडी थी। उसका साम धीरे धीरे चल रहा था। उसकी शकल देखकर धरती धन न अपना

कात्नी को विश्वास हो गया कि भूत सचमुच निकल गया है । उसने इत्मीनान की सास ली और आँगन में खाट बिछाकर सो गया ।

३०

सुबह तक चाची के हाठ नीले पड़ गए थे आँख पथरा गई थी और चेहरा का रंग हल्दी हो गया था । सास उखड़ी उखड़ी थी और ठहर ठहर कर वह सास इस प्रकार खीचती थी जैसे साँस कहीं फँसी पड़ी हो । काली चाची की यह दशा देखकर बहुत घबराया । उसने चाची के कान के पास मुह ले जाकर आवाजें दी लेकिन उसके किसी अंग में हरकत न हुई । चाची की शकल निर्जीव पगु की तरह थी । भारे घबराहट के काली का कलेजा मुह को आने लगा । वह तज-तेज कदम उठाता हुआ दरवाजे तक जाता और फिर लौट जाता । चाची की मृत्यु के विचार से ही उसके मन प्राण काँपने लगे थे ।

जीतू ने जब डयोड़ी में कदम रखा तो काली लपककर चिन्तित स्वर में बोला

जीतू देखो चाची की शकल कितनी भयानक हो गई है । उसकी साँस कस चल रही है ।'

क्या इतना घबरा रह हो । भूत निकला है कमजोरी तो होगी ही । भूत निकलने बाद कई लोग तो छ छ महीने खाट से नहीं उठते ।

तू दौड़कर ताई को बुला ला । काली ने कहा ।

जीतू के जाते ही बाद काली चाची पर झुक गया और उसके हाठों के कानों पर बठी हुई मक्खियाँ को दखने लगा । मक्खियाँ थोड़ी के देर पश्चात् उड़ जाता और चाची के इद गिद में डराकर फिर वहाँ आ बठती ।

ताई निहाली के आने पर काली उठ गया । लेकिन जब वह झुककर चाची को दखने लगी तो काली भी बठ गया । ताई कुछ क्षण तक चाची का दृष्टकर उम आवाजें देने लगी ।

चाची न कोइ उमर न दिया तो काली पीछे हटना हुआ मध स्वर में बोला

‘चाची कुछ नहीं सुनती, कुछ नहीं बोलती ।

‘घबराओ नहीं भूत निकल जान के बाद ऐसी ही खुमारी आती है ।’ ताई निहाली फिर चाची को पुकारने लगी । कई आवाजें देन पर भी चाची क शरीर मे मामूली-भी हरकत भी न हुई तो वह उसे झकथोरन लगी । उसने चाची की ठोड़ी को हिंसाया लेकिन वह उसके हाथ के साथ ही मुड़ गई । यह देखकर ताई भी घबड़ा गई परन्तु काली की आंखा में आसू देखकर वह अपनी घबराहट को छिपाती हुई बोली

‘हीश तू रोने लगा है ।’ प्रतापी को भूत निकलन के बाद बहुत कमजोरी हो गई है । पुतरा तू आप सोच, शरीर से दा बूदें लहू की निकल जाएँ या घुटने, गोडे पर चोट लग जाए तो सारा शरीर यूँठा पट जाता है । इसके अंदर से तो नामी डाकू का भूत निकला है । भूत आता है ता तग करता है, जाता है तो जान सूली पर चढ़ा देता है ।

ताई निहाली उसे दिलासा देने लगी । लेकिन चाची न जब जार स हिचकी ली तो वह बहुत घबड़ा गई और दोड़कर प्रीतो और दवे हुकमा को बुला लाई । काली सहमा हुआ सा परे चला गया । वेवे हुकमा न चाची के माथे पेट, कलाइया, टांगो और पाव पर हाथ लगाकर दखा और पीछ हटती हुई बोली

‘प्रतापी का शरीर घन फागुन के कोहरे की तरह ठण्डा है ।’ उसन काली को अपन पास बुलाया और स्निग्ध स्वर म वाली

पुतरा हीसला रख । इस दुनिया मे हर एक को डेर सवेर से जाना है ।’ फिर उसन निहाली ने कहा

निहालिए प्रतापी का जमीन पर उतार दे । इसका साँस अब ऊपर-ऊपर ही है ।’

यह सुनकर काली का खून सूख गया । उसने मन ही मन म दृढ निश्चय किया कि वह चाची को मरन नहीं देगा । उसने अपने आसू पी लिए और डाक्टर विशनदास की दूकान की जोर दौड़ गया ।

डाक्टर की दूकान पर मोटा-सा ताला दखकर काली का तिर बठ गया । वहाँ ने वह डाक्टर के घर चला गया और दरवाजा पीटता हुआ जोर जोर से उस आवाजें देने लगा । अन्दर स डाक्टर की पत्नी न उत्तर दिया

वह शहर गया है । दिन ढं आएगा ।

काली के शरीर म सारा बल खत्म हो गया । वह गदन युकाय धीरे धीरे बदम उठाना हुआ अपन घर की आर चलने लगा । उसकी आंखा के सामन धरती घन न अपना

अंधेरा छा रहा था। वह यह विश्वास नहीं करता चाहता था कि चाची मर जाएगी। लेकिन उसकी जान बचाने का भी कोई उपाय नजर नहीं आ रहा था। बेबसी से उसकी आँखों से टप टप आसू गिरने लगे। परंतु जब उसे याद आया कि शहर में हस्पताल है तो उसके आसू खुश्क हो गए और उसकी सारी शक्ति लौट आई। वह एक बार फिर अपने घर की ओर दौड़ने लगा।

काली घर पहुँचा तो उसके दरवाजे के बाहर बच्चा की भीड़ जमा थी। ड्योढ़ी में बहुत सी स्त्रियाँ बठी थीं। जीतू के अतिरिक्त धन्तू और सतू भी वहाँ खड़े थे। स्त्रियाँ ने चाची को जमीन पर लिटा दिया था। उसके सिरहाने दीया जल रहा था। काली का देखकर प्रीता बोली

काका, प्रतापी के सिरहाने अनाज रख दो। अन्न में दान पुन (पुण्य) ही साय जाता है।'

काली ने सब लोगों पर सरसरी-सी नजर डाली और टुक खोलकर सारे पैसे जेब में डाल लिए और चाची के पास बठी स्त्रियों से बोला

चाची को मैं शहर के हस्पताल ले जाऊँगा।

यह सुनकर वे चकित-सी उसकी ओर देखने लगीं। काली घाट के पाँवों के साथ रस्सियाँ बाँधने लगा तो बेबे हुकमा बोली

पुतरा अब तू बुझी भाग में फूक मार रहा है। प्रतापी के श्वास पूरे हो गए हैं और वह घड़ी पल से ज्यादा नहीं गिरेगी। उसे क्या घसीटना चाहता है। जीत जी ता उस आराम नहीं मिला अब चैन में भरने तो दो।

'नहीं बबे मैं चाची का हस्पताल ले जाऊँगा।

काका उम्र बड़ी हो तो दवा दारू के बिना भी जान बच जाती है। लेकिन अन्न आ गया हो तो बच्च हकीम डाक्टर दवा दारू सत, पगम्बर कोई कुछ नहीं कर सकत। तार्द निहाली ने कहा। बाकी स्त्रियाँ ने भी उसकी हाँ में हाँ मिलाई परन्तु काली अपने काम में व्यस्त रहा। उसने चाची को घाट पर लिटा दिया और जीतू से बोला

जीतू तयार हो जा चाची को शहर के हस्पताल ले जाना है।

अपनी माँ का व्यवहार देख कर जीतू आना कानी करने लगा तो काली फूट फूटकर रोना हुआ वाला

मरा भी कोई भाइ हाना तो मुझे आज किसी की मिनत न करनी पडती, दिनी का माट्नाज न होना पडता।

काली का रात हुए दक्कर सबक लिल पसाज गए। तार्द निहाली अपनी आँखें मलना नूइ बागी

‘पुत्ररा, यह तू क्या कह रहा है ? ये सब तरे ही भाई हैं ।’

ताई ने वहाँ खड़े जीतू, बतू और सतू की ओर सकेत करत हुए कहा ।
यह सुनकर जीतू काली के कंधे पर हाथ रखकर बोला

‘अगर जाना है तो जल्दी करो ।

पुत्ररा, शहर जाने से पहले गाँव के डाक्टर को बुलाकर दिखा दो ।’

विशानदास शहर गया है ।’ काली ने अपने आँसू पोछत हुए कहा ।

‘तो हकीम लम्भू राम को बुला लाओ ।’ बेबे हुक्मा ने कहा ।

काली सोच में डूबा हुआ हकीम को बुलाने चला गया । प्रीतो पास बठी प्रसिन्नी के कान में फुसफुसाई

काली तब बुड्डी के पीछे पागल हो रहा है । वह आज नहीं मरेगी तो कल मर जाएगी ।

‘कुछ भी कहो काली ने चाची को जिस तरह अपने सिर पर बिठाया है कोई कोख जाया भी इतनी सेवा नहीं करेगा । आजकल तो लोग यही चाहते हैं कि बुड्डी को अगर कल मरना है तो आज मर जाए ।’

थोड़ी ही देर में हकीम लम्भूगम आ गया । उसने चाची की नब्ज सिर से पाँव तक देखी और हाथ हिलाता हुआ बोला

अब दवा-दारू का समय निकल गया है । परमात्मा का नाम गो और प्रनापों की जात्मा के लिए शान्ति की प्रार्थना करो ।

यह कहकर हकीम लम्भूगम चला गया परंतु काली को उसकी बात पर विश्वास नहीं आया । उसने छाँव करने के लिए खाट के गिद रस्सिया से चादर बाँध दी और पायती पाना का बतन रख दिया । लम्बा मजबूत लठ दोना और के पाँवों से बँधी रस्सियों से निकालकर डोली तयार कर दी ।

काशी पुत्ररा क्यों अन्ध करने लगा है । यह तेरी भूल है कि आई मौत को टाला जा सकता है ?’

बेबे हुक्मा ने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि चाची ने जोर की हिचकी ली । उसकी एक बाहू जोर से फड़फड़ाई ।

‘उतार ला नीचे ।’ बेबे हुक्मा ने शोर मचा दिया । काली एक आर हट गया । ताई निहाली और प्रीतो ने चाची को खाट से उठाकर ज़मीन पर लिटा दिया । ताई निहाली ने अनाज का मटका उसके सिरहाने उडेल दिया और प्रीतो दीया जलाने लगी ।

‘वे काली अनाज में कुछ पस डाल दे ।

काली ने जब से पसे निकालकर अनाज में फेंक दिए । बेबे हुक्मा चाची

प्रतापा के वफा जैसे ठंडे शरीर को छूती हुई बोली, 'हाय, प्रतापी गई।' उसने बहुत ऊँची दहाड़ मारते हुए चाची के मुह पर बपड़ा पीच दिया। कुछ स्त्रियाँ सचमुच रोने लगीं और कुछ लाज-लाज के डर से रोने का स्वाँग भरने लगीं। कुछ ही क्षणों में काली के घर में चीखें गूजने लगीं।

काली को जब विश्वास हो गया कि चाची सचमुच मर गई है तो वह उससे लिपटकर जोर जोर से रोने लगा। उसका विलाप सुनकर वहाँ पर उपस्थित लोगों के दिल पसीज गए। रोने का स्वाँग भरने वाली स्त्रियाँ भी सचमुच आसू बहाने लगीं। जब काली का रोना धोना कुछ कम हो जाता और चीखें सिसकियाँ कम बदल जातीं तो उनमें से कोई स्त्री चाची का नाम लेकर ऊँचे स्वर में वन गुरु कर देती। चाची के मुह पर से पल्लू उठाकर कहती कि प्रतापिए तू सचमुच साय छोड़ गई है। उनके वन सुनकर काली का दिल भर जाता और वह फिर जोर जोर से रोना शुरू कर देता।

जब दिन ढल गया तो ताया बसन्ता काली के पास आकर बोली

अपने आचाय रलदू राम को कोई बुलाने गया है कि नहीं। अभी से तैयारी शुरू करोगे तो शाम तक अर्धो निकाल सकाये।

सतू आचाय को बुलाने गया है। जीतू ने उत्तर दिया।

कम से-कम लकड़ी ही शमशान पहुँचा दो। इस तरह हाथ पर हाथ रख कर तो कोई काम होगा नहीं।' ताया बसन्ते ने कहा।

लकड़ी हम पहुँचा देते हैं। सतू उठता हुआ बोला।

'काली, लकड़ी घर से ही निकालोगे या मोल लेनी है। ताया बसन्त न पूछा।

मोल किसलिए लेनी है, ये लकड़ी ही है।' काली ने कड़ियाँ और शहतीरा की आर दखत हुए कहा।

यह तो इमारती लकड़ी है।

अब किस काम की। काली के मन में अपनी हार चीज से अत्यंत वराम्य उत्पन्न हो गया। उसने आगे बढ़कर सतू की सहायता से एक शहतीर जलंग कर लिया और कुछ अच्छी-अच्छी कड़ियाँ निकाल दी।

यह ले जाओ कम हो तो और कड़ियाँ ले जाना। काली ने सतू से कहा।

चमादही के आचाय रलदू के आन पर सब स्त्रियाँ और मद सतक हो गए। स्त्रियाँ चाची का स्नान कराने की तयारियाँ करने लगा और मद अर्धो यनान में जुट गए। ताई निहाली, प्रीतो प्रसिन्ती और मुहल्ल की कुछ अय

स्त्रिया या व्यस्त हो गई जैसे विवाह की तयारी कर रही है। प्रीतो पानी तैयार कर काली के पास आ गई और बावे फत्तू आर ताये वमत को देखत ही छाटा सा घूँघट निकालकर धीमे स्वर में बोली

'चाची के कपड़े कहा है ?'

काली ने अंदर जाकर एक कनस्तर खोला और उसमें से एक गुच्छा मुच्छा-सा सूट निकाल दिया। चाची के पास यह सूट कई वर्षों से था। इन वह केवल विशेष अवसरों पर ही पहनती थी।

चाची यह सूट पहनकर निकलती थी तो बिल्कुल रानी लगती थी। हाथ के रब्बा आज यह सूट भी उसके साथ ही भस्म हो जाएगा।'

'प्रीतो, तन के कपड़े भी साथ नहीं जात कुछ भी साथ नहीं जाता। ताई निहाली ने भराई हुई आवाज में कहा।

सूय काफी नीचे चला गया तो ताया वसन्ता डयाही के द्वार के पास जाकर स्त्रिया से कुछ श्रद्धा स्वर में बोली

'जल्दी करो बातें कम करो, काम ज्यादा करो।' फिर वह अर्थी को दखता हुआ बोली

रस्त्रिया कसकर बाधना। डीली अर्थी को उठाना मुश्किल हो जाता है।

चाची का स्नान कराकर स्त्रिया ने कपड़े पहना दिए तो जीतू और बाणी उस अर्थी पर डालकर बाहर ले आए। ताई निहाली दहाड मारकर रोती हुई बोली

प्रतापिय तू तो सचमुच ही हम छोड़कर जा रही है। स्त्रिया एक बार फिर रोने लगी। काली के द्वार के आगे बच्चा की बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई थी। ताया वसन्ता बच्चा को पीछे हटाता हुआ बोली

बादल आ रहे हैं जल्दी करा। छीटे पड़ने लग तो बहुत मुश्किल बनगी।

चाची की अर्थी उठी तो काली एक बार फिर फफक्कर रोने लगा। अर्थी के पीछे मद चल रहे थे। उनके पीछे बच्चे और स्त्रियाँ थीं। चा के पार पहुँचने पर बच्चा को लौटा दिया गया। शमशान भूमि से कुछ दूरी पर अर्थी रख दी गई और चाची के मुँह पर से पल्लू हटा दिया गया ताकि सब स्त्रियाँ अन्तिम दर्शन कर सकें। स्त्रिया की चीख पुकार एक बार फिर बहुत बढ़ गई। वे सचमुच फफक्कर रा रही थीं। चाची से उम्र में छोटी स्त्रिया ने उसके पांव छूकर उस अन्तिम बिदाई दी। उसकी सखिया ने रो रोकर अपना बुरा हाल कर लिया। उन्हें यह विचार बार-बार सला रहा था कि प्रतापी को इसके पश्चान्

व कभी नहीं देख सकगी। आचाय रलदू राम न उह उपदेश दिया और धीरे धीरे उनका रोना घोना कम हो गया।

रलदू राम ने चाची की अर्थी के पास वठकर कुछ मंत्र पढे और काली को घमारक (पानी से भरा हुआ मिट्टी का छोटा-सा घडा) तोडने के लिए कहा। आचाय के कथनानुसार काली बहुत तनम्यता और श्रद्धा से सब गति विधिया को पूरा कर रहा था ताकि उसकी किसी ब्रुटि के कारण चाची की आत्मा को कष्ट न पहुचे।

शमशान तक पहुचते-पहुचते सूर्य पश्चिमी क्षितिज को छूने लगा था। पूव म काली घटा उमड रही थी और सूर्य की अन्तिम किरण ने उनम मला सा लाल रंग बिखेर दिया था। सूर्य को डूबता देखकर ताय बसता जोर देने लगा कि चाची को शीघ्र से शीघ्र चिता के सुपुद कर दिया जाय। रलदू राम ने मन्त्र पढकर काली से सक्ल्प कराया। चाची का शव अर्थी सहित चिता पर रख उसके मुह पर से कपडा हटा दिया। चाची को देपते ही काली फूट पडा। वह दिवाना बार-बार रो रहा था। रलदू राम उसे समझाता हुआ बोला

‘पुतरा अगर आँसू बहाने से भरा हुआ आदमी जिन्ना हा सकता तो इस दुनिया म कभी कोई न भरता। मौत हर किसी को आएगी। इससे कोई नहीं बच सकता यह कुदरत का अटल कानून है। इसलिए सबर से काम लो।’

काली के लिए उस समय ये शब्द अयहीन थे क्यार्कि वह अपनी आँखा स देख रहा था कि आधे घंटे के बाद चाची का अस्तित्व केवल कुछ हड्डिया और राख के रूप म ही रह जाएगा। ताय बसन्त न काली को पक्ड कर उसक हाथ से चिता म आग लगवाड। हवा के झोका और सामग्री की सहायता से आग धीरे धीरे फलने लगी। चिता से कुछ दूरी पर बठी हुई स्त्रियाँ सामग्री और धी की सुगन्ध सूँघ रही थी। प्रीतो नयने फुलाती हुई बोली

दसो धी है मैं तो खुशरू सूघ कर बता सकती हूँ। फिर वह कुछ ईप्या भरे स्वर म कहन लगी ‘भाभी प्रतापी न पिछले जन्म म बहुत ही अच्छे काम किए हंगे जा उसकी चिता पर भी देमी धी डाला गया है। एक हम हैं जिहाने जीत जो भी देमी धी चखकर नहीं दखा।

चिता म जब आग चारा आर फल गई और लकडियाँ चटाख-चटाख जलन लगी ता काला का धम और सयम बिलकुल जवाय द गए। वह पागल की तरह चिता की आर दौडा। जानू, ताय बसन्त और रलदू राम न उम लपक कर पक्ड लिया और उन पाछ घमोट लाए। काग हाथ-गाँव मारता हुआ

अपने आपको छुड़ाने लगा ।

क्या पागल हो गया है ? चिता में कूद कर तू भी जल जाएगा लेकिन प्रतापी जिंदा नहीं होगी । रत्नू राम और ताय बसंत न सज्जत स्वर में कहा । काली न धीरे धीरे हाथ-पाव मारन छोड़ दिए और बेवसी से भड़कती चिता की आर देखता रहा ।

चिता जब लपकते शोला और भड़कती आग में खो गई तो रत्नू राम न काली के हाथ में लम्बा-सा बास देकर कहा

‘इससे अपनी चाची का सिर ठाक दो ।

काली हैरानी से उसकी ओर देखन लगा तो वह उसे आगे धकेलता हुआ वाला

‘अगर तू ऐसा नहीं करोगे तो प्रतापी की गति नहीं होगी ।’

काली ने रत्नूराम के आदेश के अनुसार चाची का सिर बास से ठाक दिया । रत्नू राम न चिता की ओर ध्यान से देखा और लोका को उठन का सज्जत दता हुआ कहने लगा

चलो ।’

सब लोग अल्साए हुए-से उठ बठे और धीरे धीरे गाव की आर चलन लग ।

काली ने रक कर चिता की ओर देखा । डूबते सूर्य ने पश्चिम में काले और लाल रंग के बड़े-बड़े पहाड़ और हाथी और घोड़े बना दिए थे । पूर्व में उठ रही घटा धीरे धीरे आकाश पर छा रही थी । लपकत शोला जोर आकाश पर फली हुई मैली-सा लालिमा और मटमली कालिमा दखकर उसे डर-सा महसूस हुआ और वह चिता की ओर पीठ मोड़कर धीरे धीरे बदन उठाता हुआ सिर झुकाए गाव की ओर चल पड़ा ।

३१

काली पिखरा हुआ सामान समेटकर झाड़ू लगाने लगा तो प्रीतो न उसका हाथ पकड़ लिया और भर्साई हुई आवाज में बोली

‘हम मर तो नहीं गए जो तू आप चाड़ लगाने लगा है । वह काली के

हाथ म चाडू छीनती हुई बोनी

हाथ भर मुट्ठल क सिर म मिट्टी डालन लगा था ।'

प्रीतो त्रिखर हुए गामान और वनना पर एक नजर डालती हुई कहने लगी

त्रिखा (त्रिया) कम हान तक तर घर म स्त्रिया और मर्ते का ताना बंधा रहेगा । चलो जीरतें यहा बठ जाएगी मर्ते के बटने का क्या बन्धायन त्रिया है ?

अभी तो कही नही त्रिया ? काली न अधीर स्वर म उत्तर त्रिया ।

प्रीतो भी सोच म डूब गई और फिर गली म जात हुए अपने बच्चे का जावाज देकर बोली कि अपन चाचे को जल्दी भेज दें । बहुत देर तक प्रतीभा करन के बाद भी निक्क नही आया तो प्रीतो उसे गाली देकर बोली

मैं इस आत्मी से बहुत दुखी हूँ । ऐस आत्मी क मुहाण स तो रडापा अच्छा जिस अपने हाण (हानि) लाभ का भी पता न हो । प्रीता बफरी हुई उठ गई ।

काली मटका को ठीक ढग से रखन लगा । गहूँ के मटके म हाथ डालन पर उस एक लड्डू मिला जो मूखकर हडडी की तरह सस्त हो गया था । काली को याद हो आया कि अपनी मृत्यु स कोई एक मास पूव चाची ने उसे यह लड्डू खान के लिए दिया था परंतु उस समय उसने इकार कर दिया था । चाची ने उसे संभालकर मटके म रख दिया होगा तानि बाद म उसे दे सके ।

काली लड्डू को कुछ क्षणा तक देखता रहा जीर फिर उसकी आँखा म आँसू छलक आए । चाची की याद जून की जाँधी की तरह उमड आई । काली सिर को घुटा म दबाए चाची की याद को आसुआ म वहाता रहा ।

काली को कुछ पता नही था कि पादरी कम डयोनी म आया । उसे उस समय खबर हुई जब उसे महसूस हुआ कि कोई बहुत ही प्यार स उसके सिर पर हाथ फेर रहा है । काली उसे देखकर फुफक उठा तो पादरी पश पर उसक निकट बठता हुआ बोला

काली दास यह क्या हो गया । आज सवेरे मुझे पता चला तो मेरा कलजा फट गया । खुदा अपने उन बदा को इस दुनिया के दोख म ज्यादा दिन नही रहन देता जो नेकी की राह पर चलते हैं ।

पादरी की आँखें भी नमदार हो गई । वह उस दिलासा देता हुआ बोला

नद सिंह न बात टालन की पागिन की ता पाग्री कुछ बुद्ध म्बर म बोला

न मगीह कुछ अपना भला भी माचो । वाली मुहल म मबम अच्छा लडवा है शरीफ ह तदुस्त है चार जमानें भी पना है । आज उग पर मुसीबत पडी है उसरी मन्द करा । हा गयना है एव तिन वह भी तरी मुश्किल हल कर न । तरी लडरी जवान है । बल का अगर वाली ईसाई बन जाए तो तुम्ह पर बडे प्रिठाण इनना अच्छा पर मिल जाएगा ।

नद सिंह कुछ धणा तर सोच म हुआ हुआ चुप रहा और फिर चीर कर बोला

म वाली को बाठा दूगा और जा मद मांगगा वह भी करगा ।'

पादरी म अपनी बात उसन त्तिमाग म अच्छी तरह प्रिठा दी और अपन घर की जोर बढ गया ।

नद सिंह न अपनी पत्नी टाकरी के साथ पादरी क साथ हुई अपनी बात चोत के वारे म परामश विधा और य दाना मिलकर कोठा साफ करन लगे । ज्या-ज्या पादरी की बाता का अथ नद सिंह की समझ म आ रहा था उसकी फुर्ती बढती जा रही थी । कोठा साफ करके उसने दूज की सफें बिछा दी और स्वय ही पाग्री को बुलाने चला गया ।

वाली का अपने साथ ही लापर नद सिंह सफा की और सकेत करता हुआ बोला

जफसोस के लिए आन वाले मद यहाँ बठेंगे । वाली दास असली आदमी वही होता है जा मुसीबत म दूसरा क काम जाए ।

नद सिंह की बातें सुनकर वाली का मन भर आया और कृतगता स उसकी जोखा म जांसू छलक आए । नद सिंह उसे दिलासा देता हुआ उसक पास ही बठ गया । उनकी आवाज सुनकर टाकरी भी वहाँ आ गई और काली के गले मिलकर रोने लगी । फिर वह अपने आंसू पोछती हुई बोली

काली मैं गली मे निकलती हूँ तो मुझे ऐसे महसूस होता है जैसे चाची ने मुझे आवाज दी हा ।

वाली को कोई उत्तर नही सूझ रहा था । वह सोचने लगा कि ससार म अच्छाई अभी बाकी है और सन लोग बुरे नही है ।

नद सिंह वाली के पास बठकर जूत सीता हुआ उसक साथ बातें करन लगा । उसकी बातें सुनकर काली की उदासी कुछ कम हान लगी । उसके मन म बार-बार विचार आ रहा था कि नद सिंह से उसक ईसाई बनने का

कारण पूछे परन्तु उसे साहस नहीं हो रहा था। धीरे धीरे नद सिंह अपने मन की गाठ स्वयं ही खोलने लगा। वह जूता एक ओर रखता हुआ बोला

‘मुझे गाँव में रहना बिलकुल पसन्द नहीं है क्योंकि यहाँ गरीब आदमी की, खास तौर पर कम्मी कमीन की कोई इज्जत नहीं है। गाँव में इज्जत से रहना हो तो आदमी का जमीन का मालिक होना चाहिए। यहाँ सिर्फ जमीन और जूते की इज्जत है, बाकी चीजों को कोई नहीं पूछता।’

काली उसकी बातों में इस हद तक तल्लीन हो गया कि उसे चाची की मृत्यु तक भूल गई। वह मुहँ छोले उसकी ओर देख रहा था। नद सिंह ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा

गाँव में चमार होना तो सबसे बड़ा पाप है। घोर लाछन है। दो कौड़ी का मालिक काश्तकार अपने चमार को छटी का दूध पिला देता है। मुझे चमार’ शब्द से ही नफरत है। मुझे कोई चमार कहे तो गुस्सा आ जाता है।

नद सिंह की बातों ने काली को जस मोह लिया था। शाम की परछाईया खेना से उठकर छना पर फल गइ और फिर सिमटती हुई अंधकार की कोख में लुप्त हो गई परन्तु वे बातों में मग्न रहे। ठाकरी उनके पास आई तो उन्हें एहसास हुआ कि रात पड़ गई है। काली उठता हुआ बोला

अच्छा मैं चलता हूँ। बातों-बातों में बहुत देर हो गई।’

‘अब रोटी खाकर जाना—हथेली सूखी तयार है।’

काली ने बहुत इन्कार किया परन्तु ठाकरी का आग्रह बतता ही गया।

नद सिंह ने कौठे के द्वार पर ताला लगाकर चाबी काली को दे दी और वे दूकान के भातरी दरवाजे से होकर छोटे से आँगन में आ गए। ठाकरी ने आग बत्तक खट बिछा दी और दोना को बठने का संकेत किया। काली नद सिंह की बड़ी पुत्री पाशा का राटियाँ पकाते हुए देखने लगा। उसे जानो याद आ गई और वह सोचने लगा कि चाची के मरने पर वह जफ्तोस करने नहीं आई। उसका मन एकदम बहुत उदास हो उठा। जानो उसके दिमाग पर छाने लगी और जब नद सिंह ने उससे वापस शुरू की तो वह चौंक गया।

ठाकरी जूता पहने चुली रसोई में दूध उधर घूम रही थी। काली दिल चस्पी जार हैरानी से उसकी ओर देखता हुआ साचने लगा कि चाची ठाकरी की जादतें कुछ दिनों में ही उदल गई हैं।

पाशा ने दाल से भरी दो कटोरियाँ उनके आगे रख दी और राटियाँ उनके हाथों में थमा दी तो ठाकरी पाव पटकती हुई बोली

घरती घन न अपना

'पाशो, तू चमारन की चमारन ही रही । तुम्हे अकल नहा आई । रोटी पिच (प्लेट) म रखकर दो । वह प्लेट लाने के लिए कमरे म जान लगी तो काली ने उसे रोक दिया ।

मैं हमगा हाथ पर रखकर ही रोटी खाता हूँ ।'

परन्तु ठाकरी ने उसके हाथ स रोटी छीनकर प्लेट म रखत हुए कहा बड़े साहिवा की तरह रोटी खाओ । पादरी जी एस ही खाता है । कहती हुई ठाकरी उनके पास बठकर दाना को पखा करने लगी ।

नद सिंह ने काली के हाथ पर एक प्याज रखत हुए कहा

पादरी जी कहता है कि इस मौसम म प्याज जरूर खाना चाहिए बीमारी से बचाता है ।

पादरी जी को दुनिया भर की बातें मालूम है । कोई बात पूछा ऐसी सलाह देगा कि दि० खुश हो जाए ।

यह कहती कहती ठाकरी सोच म पड गई और फिर नद सिंह को सम्बोधित करती हुई बोली

वह कौनसा बाप कहता है भला सा नाम है उसका ।'

नद सिंह ने अपने दिमाग पर जोर देन हुए कहा

मुकददस बाप ।

यह सुनकर ठाकरी उछल पडी ।

कितना अच्छा नाम है । हमारे यहा किसी के बाप का नाम है नत्थू फत्तू तो किसी के बाप का रलद्ध या रला । पादरी जी उसकी बहुत प्रशंसा करता है ।

काली मुसकरा दिया और अचानक ही उसके मुह स निकल गया

'चाची तू घर म जूता पहनकर क्या घूमती है ?'

पुत्तरा पादरानी जी भी घर म जूता पहन रखती है । मैं सोचा शायद इसाइया म एसा रिवाज है । इसलिए मैंने भी घर म जूता पहनना शुरू कर दिया है । हम जब ईमाई बन गए हैं तो रिवाज भी उही क करन हामे ।'

खाना खाकर नद सिंह ने हुक्का गम किया ता काली चरित्त-सा बोला

चाचा यह क्या ? तू तो हुक्का नहा पीता था ।

'पहन पाता था लकिन मजहबी बनन क बाद छाट दिया था अब मैं मजहबी नहीं रहा ता हुक्का क्या छोड़ूँ ।

नद सिंह ने चाँमन हुए कहा । यह हुक्का की नय काली की थार माफना हुआ वाला

‘पादरी जी तुमसे बहुत प्यार करता है। कहता है कि काली बहुत अच्छा लडका है।’

काली उत्तर में मुसकरा दिया। नद सिंह अपने ईसाई बरन से मिलने वाले फायला का खिन्न करने लगा तो ठाकरी बोली

‘काली, तू भी ईसाई क्या नहीं बन जाता। चमार रहने में क्या मिलता है।’

नद सिंह न भी अपनी पत्नी का समर्थन किया। काली का दिल धवरान लगा और वह वहाँ से भाग आया।

घर के सूनेपन से उसे धबराहट होने लगी। उसने दीया जलाया और उसके मद्धम प्रकाश ने सूनेपन को और भी गहरा कर दिया। काली ने दीया बुझा दिया और दरवाजे की ओट में सफ बिछाकर लेट गया। गली में लोग का आना-जाना बहुत कम हो गया था। हवा की साँसा और घोर अंधकार देखकर एहसास होता था कि जोर की वर्षा आणगी। उसकी आँखा के सामने चाची की बहुत-सी तस्वीरें घूम रही थीं। हवा की साँसा, दूर गज रहे बादल की घनघनाहट और घुप अंधेरे ने ऐसा वातावरण पदा कर दिया कि काली पर उदासी और भय छाने लग। उस बार-बार एहसास होता जैसे बहुत दूर से उसे कोई आवाजें दे रहा हो। यह आवाज बिलकुल अपरिचित थी और वह चौंकर बार-बार उठता-बठता। फिर ऐसी स्थिति हो गई कि उदासी और नींद में भी भेद मिटने लगा।

जब रात बिलकुल टिक गई और धरती और आकाश दोनों मनुष्य की नजरों से आजाद हो गए तो उसे अपने दरवाजे पर हल्की भी दस्तक सुनाई दी। वह आँखें फाड़ फाटकर अंधेरे में ही दरवाजे की आर दखन लगा। जब दाबारा दस्तक हुई तो वह उठ खड़ा हुआ और लपककर दरवाजे के पास पहुच गया। उसने इस नमी से साकल उतारी जस किसी मुटियार के मिर से चुनी उतार रहा हा और आहिस्ता से दरवाजा खोल दिया। उसके सामने जानो खडी थी। कानो को पता था लेकिन फिर भी उसने पूछ ही लिया

‘कौन है?’

‘मैं हूँ।’ कहकर जानो अंदर आ गई। काली ने आहिस्ता से दरवाजा बंद कर दिया और जानो के सामने आ खड़ा हुआ। वह कुछ क्षण ता चुप रही और फिर भारी हुई आवाज में बोली

‘क्या चाची अब कभी नहीं आएगी?’

जानो फफक कर रो पडी। काली ने उसके सिर पर हाथ रख दिया। उने

रोत दखकर काली का दिग् भी भर आया। पानो उसके साथ सट गई। उसका माया काली के कंधे को छू रहा था। उसकी ठोड़ी पानो के सिर पर टिक गई थी। काली की जाँखा स आसू टप टप उसके बालों पर गिर रहे थे।

जब रोकर दोना का दिल हल्का हो गया तो वे सफ पर बठ गए। पानो ने अपनी चुन्नी के पल्लू से दो रोटियाँ खोली और काली स बोली

रात की रोटी खाई थी ?

हाँ, एक रोटी खाई थी।'

'उससे पेट भर गया था ?'

नहीं।'

'अच्छा तो ये खा लो। उसने रोटियाँ काली की ओर बढ़ा दी। काली ने रोटिया की तह खालकर टटोला और खुश होकर बोला

'साथ अचार है ना ?'

'हाँ आम का।'

काली को सचमुच ही बहुत भूख लगी हुई थी। उसने जल्नी जल्नी रोनी खाकर पानी पिया।

काली का जी चाहता था कि पानो से खुलकर बानें करे। उमन वान गुरु करने के लिए कहा

चाची न साथ छोड हा लिया। मुझे उस दिन सवेरे ही पना चल गया लेकिन मैं मरीन नहा करना चाहता था। मरी काशिश थी कि किमी-न किमी तरह उसे बचा लू। जब यह मोचता कि चाची मर जाएगी तो मरे लिंग म हीन मा उठन लगता।

पानो खामाशी स राती हुई काली की बानें मुननी रही। यात्री थुप हो गया ता वह अपन आँसू पाछनी हुई वाली

'चाचा न मर बार म कभी नहीं पूछा था ?'

'रोज पूछनी थी, लेकिन । कहकर कानी थुप हा गया। उम पर पाप था एमाम छान लगा और बाधी दर बाध परसाई हुई आवाज म बोला

'पाना अब घर जाओ। बहुत दर हो गई है।'

'बाद बाद नहा चगी आऊँगा।'

कानी न पाप के एमाम म छुट्टवारा पान के लिंग फिर चाची की बान गुरु कर दा। उमका हर बात के उत्तर म पाना मरी कहता कि मम पना है।

काली उस बाला से पकड़ता हुआ बाला

'तुम्हें कैसे पता चल जाता था। तू तो हमारे घर की ओर आख उठा कर भी नहीं देखती थी ?

'पता चल जाता है। तुम नहीं बताते थे तो क्या हुआ गली गवाड़ बता देता था। वह नहीं बताते थे तो मेरा मन बता देता था। ज्ञाना ने ठंडी आह भरते हुए कहा।

यह सुनकर काली उदास भी हुआ और खुश भी और जानो का अपनी आर खींचता हुआ बाला

'अब जा अपने घर। किसी को पता चल गया तो दोना की शामत आ जाएगी।'

चली जाऊंगी। ऐसा महसूस होता है तुम्हें मेरा यहां आना अच्छा नहीं लगा ?' जाना ने काली से परे हटने का यत्न करते हुए कहा।

'तू यदा बठी है तो इस कोठड़ी में चानन (प्रकाश) ही चानन हा गया है।

काली ने जानो को घमाट कर अपने बाजूओं में जकड़ लिया। काली के हाठ उसके सिर से हाकर भाये तक पहुंचे और वहां से उसकी गालों पर जा गए। उसके हाथ भी उसके कंधा से नीचे रीगन लग तो ज्ञाना पूरा जार लगा कर अपने आप का उसके चंगुल से छुटाकर बोली

'फिर वही बात। आत्मिया की जात ही कमीनी होती है।

वह उठ खड़ी हुई और उछलकर दरवाजे के पास पटुच गई। पशतर इमक कि काली उस तक पहुंच पाना वह दरवाजा खोलकर गली के अंधेरे में खो गई।

३२

क्रियाक्रम तक काली न सांग मनाया क्योंकि चमाण्डी के आचायक आत्मश अनुसार वह सब कुछ करने के लिए तयार था जिसमें चाची की गति हो सके और उस स्वयं में स्थान मिले। उसने मिनत-समाजत करके मुहल्ल की म्त्रिया

घरती धन न अपना

२२५

को इस बात के लिए मना लिया कि वह त्रियायम व दिन तत्र अपन अवधान के समय म उसके घर बठगी । वह समय मिलन पर वहाँ आ जानी और चाची की मृत्यु को भूलकर निंदा गुणली म ध्वम्न रहती या फिर म अनुमान लगाता कि चाची क्या कुछ छोडकर मरी हागी ।

वे ए-दूसरी की आँख बचातर वाली के घर से कोई वनन या कोई अय वस्तु भी उठा लेती ।

त्रियायम व दिन चाची की बहन भी आई जा पत्रह कोम दूर एक गाँव म रहती थी । वह आत ही बहुत रोई और अपनी बहन का स्थापा किया । वह वाली पर बहुत नाराज हुई कि उसन यदि पहले पता दिया होना तो वह अपनी बहन के अन्तिम दशन तो कर लेती । परन्तु कुछ समय बाद ही वह वाली को ए-ओर ल जाकर बोली

मेरी बहन क्या कुछ छोडकर मरी है ?

वाली अपनी मौसी के प्रश्न पर चकित रह गया ।

मौसी, चाची क्या छोडकर मरती । न तो उसके घर म कोई कमाने वाला था और न ही उसके हल चलत थे ।

मुझे तो पता नहीं । तेर मुहल्ले वाली कहती हैं कि गली म ब्याज पर पैस देता थी । पल्ले था तो देती हागी ।

वाली ने मौसी को समझाने के बहुत यत्न किए परन्तु जब उसका अविश्वास बढ़ता ही गया तो वाली अपना द्रब उठा लाया और खोलकर उसम से चाची की की हुई पोटली तलाश करने लगा । पोटली नहीं मिली तो उसकी घबराहट बढ़ने लगी । उसने सब कपडे बाहर फेंक दिए । फिर भी पोटली न मिली तो वह सिर पकडकर बठ गया और बहुत घबराई हुई आवाज म बोला

पोटली किसी न चुरा ली है ।

मौसी उसकी ओर नस तरह दखने लगी जस मजाक उडाना चाहती हा और फिर परे हटती हुई बोनी

मकर की क्या जरूरत है । उसने जो कुछ छोडा है वह तेरा ही है । मैं तो केवल इतना ही चाहती हूँ कि मेरी बहन का मरना खराब न करना ताकि उसका गति हा सके ।

अय स्त्रिया को जब पता चला कि वाली व पस चोरी हा गाए हैं तो व सफाई म अपना सतान की सौगध धान लगी । एक-दो ने दबी जवान म यह भी कह लिया कि स्वय उसन ही पसे छिपा दिए हैं और दोष मुहल्ले के लोग पर धोपना चाहता है । मौसी थोडे-थाडे समय के बाद दोहृत्थड मारकर चीखती

हुई कहती कि उसकी बहन का मरना खराब हो गया। अब उसकी गति नहीं होगी।

प्रीता न ताई निहाली पर चोरी का संदेह प्रकट किया ता वहा हगामा खडा हो गया। ताई निहाली ने पहले तो राकर अपनी सफाई पश की और बाद म भडक उठी और चीखकर बोली

‘चोरी उसी सिरमुनी ने की हागी जिसने मेरा नाम लिया है।’

प्रीता उठकर ताई निहाली की ओर लपकी और उसके मुह म हाथ देती हुई बोली

‘तू ही सारा दिन काली के घर म घुसी रहती थी। तू ही हर चीज रखती ढकती थी। चोरी घर के भेदी ने की होगी किसी ने बाहर से आकर नहा की।’

काली की समझ म नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह हैरान था कि उसी की चोरी हुई है और उसी पर लाछन लगाया जा रहा है। वह धक्काकर कभी ताई निहाली के सामने हाथ जोड़ता और कभी प्रीतो के कि व यह तमाशा बद कर दें। हगामे म कोई किसी की बात सुनने को तयार नहीं था। काली के घर के बाहर लोगो की भीड एकत्रित हो गई थी।

थक्-हारकर काली एक ओर बठ गया और फूट फूटकर रोने लगा। उने इस बात का बहुत दुख हा रहा था कि चाची उसकी मरी पस उसक चोरी हुए, लाछन उस पर लग और लोग नाराज भी उसी पर हो रहे हैं।

यह हगामा पता नहीं कब तक जारी रहता यदि आचाय रलदूराम उस खतम न कराता। उसने सबको चुप कराकर समझाया कि होनी को कोई नहीं टाल सकता। काली के भाग्य म जा लिप्ता है वह उसे अवश्य मिलकर रहेगा। लोग शान्त हो गए तो वह काली को सम्बोधित करता हुआ वाला पगडी बांधन का समय हो गया। मद चौगान मे बठे हैं। तुम वहाँ पहुच जाओ।

काली का कोई एमा नजदीकी रिश्तदार नहीं था जो इस अवसर पर उसके लिए पगडी लाता। उसन रलदूराम स पुरानी पगडी ही अपन सिर पर बँधवा ली।

पगडी के बाद वहाँ मौजूद लागा ने काली को लिप्ता और रलदूराम न उपदेश दिया कि वह घर का काम-बाज गुरू करे क्योंकि ससार म रटकर कम किए बिना गति और गुजारा नहीं है। लेकिन काली के सामन प्रश्न था कि वह क्या काम करे। पसा की चोरी के बाद कौठडी के निर्माण का प्रश्न ही नहीं उठता था। जमीन होती ता वह खता म हल चलाता डोर टँगरा को चारा-

पानी डालता । दूबान होनी तो उसे खोलकर बंध जाता ।

बाबा फत्तू उसके असमजस को भांपता हुआ बोला

‘पुत्ररा, वही काम करो जो चमार लोग पिता पुत्रों से करते आए हैं ।
घादर और सुर्पा उठाओ और घास घोंग कर लाओ ।

जीतू ने काली को सुर्पा और चादर लाने दी और उस साय लेकर बाहर आ
गया । वह बला सिंह जाट के भुएँ से भी पर चले गए । काली एक जगह अच्छी
घास देखकर छोड़ने लगा । आधे पौन घंटे में ही काली ने घास से चादर भर
ली तो जीतू आश्चर्य से बोला, मैं समझता था कि तू शहर में जाकर निरापुरा
बाबू बन गया है लेकिन तरे हाथ तो चलते हैं ।’

काली घास उठाकर गाँव की ओर चल पड़ा । जीतू उसके पीछे-पीछे आता
हुआ बोला

‘इस घास का क्या होगा ?’

देखो, क्या करता है ।’

काली तेज तेज कदम उठाता हुआ गाँव में आ गया । वह अपने मुहल्ले
की ओर मुड़ने की बजाय सीधा दूकाना की ओर चला गया । जीतू ने उस रोकना,
उसे पुकारा लेकिन काली महाशय की दूकान की ओर जान वाली गली में मुड़
गया । महाशय की दूकान पर पहुँचा तो वह बंद थी । वह सीधा छज्जू शाह की
दूकान की ओर चले गया । उसके शरीर से पसीना बहकर पावा के तलवों
तक को गीला कर रहा था । छज्जू शाह की दूकान पर पहुँचकर उसने घाम
सिर से उतारे बिना ही कहा

‘शाह जी घास चाहिए ।’

कौन काली है ? छज्जू शाह ने हैरानी से पूछा ।

हाँ जी ।

‘घास है तो सही

छज्जू शाह बात को लटकाकर घास का निरीक्षण करता हुआ बोला, चलो
फॉन दो बल भी तो जरूरत पड़ेगी ।’

काली ने चबूतरे पर एक ओर घास छाल दी ।

छज्जू शाह हरी और लम्बी घास देखकर खुश हो गया लेकिन एक तिनका
उठाता हुआ बोला

बरमाती घास है । इसमें पानी ज्यादा होता है । कितना पस दू ?

जो खुशी है ।

फिर भी ?

जो मर्जी हो दे दें । मैं आप से कोई सौदा थोड़े ही करूँगा ।'

'आज के लिए ही लाए हो या रोज लाओगे ?'

'जसा आप कहें ।'

छज्जू शाह ने काली की ओर देखा और मन ही मन में सोचने लगा कि चमार को खुशहाली उसकी जवानी की तरह चार दिन ही रहती है । वह उसकी हथेली पर तीन आने रखता हुआ बोला

'जीतू को मैं तीन दिन के बाद आठ आने देता हूँ । तुम्हें रोज तीन आने दिया करूँगा । लेकिन शत यह है कि गर्मी हो या सर्दी बरसात हो या बहार इसी मोल घास लूंगा ।'

काली कोई उत्तर दिए बिना थड़े से नीचे उतरकर सीधा मिस्तरी सतारसिंह के पास आ गया और उसके हाथ पर तीन आने रखता हुआ बोला

मिस्तरी जी मुझे एक खुरपा चाहिए, बढ़िया-सा, कीमत इससे ज्यादा हो जाए तो परवाह नहीं ।'

मिस्तरी न हैरानी से काली की आर देखा और अपनी छदरी दाढ़ी को संवारता हुआ बोला

तुम स क्या करोगे ?

घास खोदूंगा ।'

सच ?

'हां ।

आ गया तू भी टके वाली घा (जगह) पर ।

मिस्तरी न हँसत हुए कहा

बल ले जाना ।'

सबरे चाहिए ।

'सबरे ही ले जाना ।'

अपन घर की ओर आते हुए काली ने अपने चौड़े चौड़े हाया को देखा, अपनी मजबूत बाँहा पर नजर दौड़ाई और मुट्ठियाँ भीचता हुआ सोचने लगा कि वह चाहे तो अपने बल स धरती को एक सिरे से पकड़कर उलट सकता है । वह किसी दूसरे क हाया की ओर क्या देखेगा ।

व्याई गुरू होत ही गाँव के किसान और चमार काम म बहुत व्यस्त हो गए । सुबह का तारा निकलते ही हाली हल पजाली लेकर निकल जात और दिन चढ तक खेता म घुघरआ की छन छनाहट सुनाई देती रहती । चमार या तो अपने चौधरी की हवेली म पहुच जाने या फिर सीधे खेतो म । यदि कोई नीद का मतवाला सोया रहता तो उसे घर स उठा लिया जाता । टेढी भेडी पगडडिया पर मुटियार बहुएँ काली सूफ के घघरे पहन और छोटा-सा घूघट काढकर हालिया के लिए भत्ता लेकर जाती ।

काली अभी तक किसी चौधरी की हवेली मे काम पर नहीं लगा था । वह केवल दो समय घास लाकर एक गटठा छज्जू शाह के और दूसरा महाशय तीथ राम की दूकान पर फेंक आता । वह घास खोदकर वापस आ रहा था कि रास्ते म उसे लालू पहलवान मिल गया और उसका हाल चाल पूछकर बोला

‘घास खोदना फिरता है किसी की हवेली मे काम क्या नही कर लेता ? इन दिनों म तो वही चमार घास खोदेगा जिसके अदर दम न हो ।

चौधरा जी आपकी बात ठीक है लेकिन किसकी हवेली म काम करूँ ? हर हवेली का अपना चमार है ।

जाजबल तो जितने आदमी हा, उतने ही कम हैं । पहले चाई फिर नलाई, उसके बाद कटाई और आखिर मे छटाई । सावनी बहुत मेहनत मागती है । अगर तुम्ह कोई नही रखता तो मेरी हवेली आ जाना ।’

अच्छा, चौधरी जी ।

पक्की बात करो । कब से आआने ?

तब से आप कहो ।

बल सवेरे ही आ जाओ ।

अच्छा, चौधरी जी ।

लालू पहलवान आगे वढ गया और काली गाँव की ओर आ गया । घास फेंककर काली ने छज्जू शाह से नकद पैसे लेन की बजाय आटा, नमन और तल ले लिया और अपन घर आ गया । वह गर्मी का सताया हुआ आँगन म खाट बिछाकर लेट गया और सामने कोटडी के खण्डर को देखकर सोचने लगा कि चौधारा बनान का स्वप्न देखत देखत अपना कच्चा कोठा भी गिरा दिया । उसने ठडी आह भरी और सिर झटकता हुआ अपन भाग्य को कोसने

लगा ।

घर में बड़े जब काली का मन उब गया तो वह उठकर गली में आ गया । उस समय में नहीं जा रहा था कि कहा जाए । वह अनमना सा कुर्से की ओर चल पड़ा । उस गली में जाते देखकर नद सिंह ने आवाज दी । काली उसके पास पहुंचा तो वह उसकी ओर मूढ़ा धकेलता हुआ बोला

‘मुनाओ काली, क्या हाल चाल है ?’

‘ठाक है ।’ काली ने ठंडी आह भरत हुए कहा ।

काली की उदासी भापकर नद सिंह बहुत नम्र स्वर में बोला

‘काली दास, स्याना आदमी कुछ न करे खाट पर ही लेटा रहे लेकिन उसका बहुत सहारा होता है ।

‘क्या किया जाय । अपने बस से बाहर की बात थी ।’

‘तरे घर में बात करने के लिए दूसरा जीव भी तो नहा है । दो चार महीने गुजरने के बाद शादी करा लेना । ससार का सिलसिला इसी तरह चलता है ।

नद सिंह कुछ क्षणा तक काली की प्रतिक्रिया देखता रहा और बात का पलटता हुआ बोला

‘काम-काज का क्या साचा है ? गांव में तो महानत मजदूरी है ।’

‘अभी कुछ खाम तो सोचा नहीं । कई बार सोचता हूँ शहर चला जाऊँ ।

तुम जानते ही हो मेरा बच्चा लडका प्रकाश सिंह बहुत दूर तक बंकार रहा । वहीं काम घधा नहीं मिलता था लेकिन जब हम इसाई बन गए तो पान्सी जी ने कह-मुनकर उस जल्दी ही नौकरी दिला दी । अपनी विरादरी बन जाए तो नौकरी चाकरी और शादी-ब्याह के सब बंदोबस्त हो जाते हैं । सबमें बड़ा फायदा यह हुआ कि अब हम चमार नहीं रहे हैं ?’

ये बातें भी मग्न थे कि एक सख्त आवाज ने उन्हें चौंका दिया । दूकान के द्वार पर चौधरी मुशी खड़ा उस आवाजें दे रहा था । नद सिंह बाहर जाया तो चौधरी मुशी गाली देकर बोला

‘चमारों, तूने क्या भग पी रखी है ? आवाजें दे-देकर मेरा गला बँठ गया है । चौधरी मुशी तब आवाज में बोला

‘ला भरा जूता दे दे ।

अभी बना नहीं । नद सिंह ने क्रुद्ध स्वर में कहा क्योंकि चौधरी मुशी के मुँह से अपने लिए चमार का सम्बोधन मुनकर वह गुस्से में आ गया था ।

क्या जूता बनाने में पूरा साल लगाएगा ? चमारों, काम किया कर करना झूठा भर जाएगा । चौधरी मुशी ने उदण्ड लहजे में कहा ।

‘चौधरी, जवान सँभालकर बात कर। मुझे बार-बार चमार मत कह।’
नद सिंह ऊचे स्वर म बोला।

तो क्या तुम्ह सरदार वहादुर कहूँ ? कुत्ता चमार, बान भू करता है जस गाव का नम्बरदार हो।

‘जा चला जा। जब तब तू पहले पस नहीं देगा मैं तुम्हारा जूता नहा बनाऊँगा। नद सिंह ने निणयात्मक स्वर म कहा।

यह सुनकर चौधरी मुशी पहले तो चुप हो गया और फिर जोर-जोर स गालियाँ देने लगा।

कुत्ता चमारा, तरी यह मजाल ? अपनी दूकान पर मुझसे पसे मागता है। जूता बनाने से इन्कार करता है ? मैं तरी खाल उधेड लूंगा। तू पागल तो पहले ही था ईसाई बनकर सवाया हो गया है। चौधरी मुशी उसे बाँह स पकड़कर बाहर धीचने लगा तो काली उठा और चौधरी मुशी को परे धकेलता हुआ बोला

चौधरी, क्या जोर जबरदस्ती करता है। अपनी मेहनत के पैसे माँग है कोई डाँग (लाठी) नहीं मारी है।’

चमारा तेरी यह हिम्मत ? मुझे धक्का देता है ? तरे बाप-दादा मेरे टुकड़ा पर पलत रहे है। मैं तुम दोनो को जमीन मे जिदा गाड दूंगा। चौधरी मुशी के मुह स क्रोध के कारण झाग बहने लगी।

शोर शराबा सुनकर कई लाग इकट्ठे हो गए। ताया बसता धीच बचाव कराने लगा और चौधरी मुशी के सामने हाथ जोडता हुआ रोला

‘चौधरी, बात क्या हुई है ? इतने गम क्यों हो ?’

चौधरी के कुछ कहने से पहले नद सिंह बोल उठा

यह मुझे चमार कहता है। मैंने पचास बार कहा कि मुझे चमार मत कहो।

‘तो क्या बहे ?’

मैं चमार नहीं, ईसाई हूँ।

‘बाह, बाह नद सिंघा। तेरे सिर पर अभी सींग तो उग नहीं पागला तो कुछ भी बन जा लेकिन रहेगा चमार का चमार ही। जात कम स नहीं जन्म से बनती है। अगर चमार कहलवाना पसद नहीं तो अपनी माँ स कहो कि तुम्ह दोबारा जन्म दे।

चौधरी मुशी इस हद तक क्रोध म आ गया कि उसन नद सिंह को गदन स पकड़कर झुका दिया और उसकी पीठ पर जोर जोर स मुझे मारता हुआ बाला

चमारा, तरी अकड मै ऐसी तोडू भा कि तू साल भर हडिग्या को तापेगा ।
 नद सिंह को पित्त देखकर वाणी से न रहा गया । उमने पीछे न जानर
 चौधरी मुशी की दाना बाह अपने शिक्जे म ले ली और उमे पीछे घसीट लाया ।
 चौधरी मुशी अपने-आपको काली की गिरपत से छुडान के लिए हाथ पाव मारता
 हुआ बोला

चमारा, तेरी यह हिम्मत ? मेरा हाथ पकडता है ?' चौधरी मुशी
 नन्द सिंह को भूल गया और काली का गालिया देने लगा

'बल तेरी चाची मरी और आज तू दगे फिसाद पर उतार हो गया है ।
 मैं तुम्हे कच्चा खा जाऊंगा ।'

ताया बसता काली को दोहृत्यड मारता हुआ बोला

'बगडा चौधरी और नन्द सिंह के बीच हो रहा है, तू बल के सींगो पर क्या
 चढता है ? चल दौड महा से ।' ताए बसते न धक्का देकर काली को परे धकेल
 दिया और स्वय चौधरी मुशी के आग हाथ जोडता हुआ बोला

'चौधरी, नन्द सिंह तो पागल है । इसे बाडले कुत्ते ने काटा है ।'

चौधरी निरंतर काली को गाग्या और धमकियाँ दे रहा था । वह पाव
 से जूता उतारकर वाणी की आर फरता हुआ वाला

'मैं तुम्ह गाव की गलिया म कुत्ते की तरह घमीट्गा ।

जूता उसस पर जा गिरा ता चौधरी उम आर लपका और काली को
 गरेबान से पकडकर झडोडने लगा । खीचानानी म काली का गरेबान फट गया
 और उसकी छाती के बाल बाहर झारने लगे ।

गली म शोर सुनकर उस आर आ जा रहे कुठ चौधरी लोग भी वहा आ
 गए । उहोने गालियों का तूमार बाँध लिया । जब चौधरी हरनाम सिंह वहाँ
 पहुचा तो शोर कुछ कम हो गया । उमने चौधरी मशी का गुस्स मे आग-बगूठा
 देखा तो उसके बहुत निकट आकर वाला

'चौधरी क्या हो गया ? किस पर इतना बरस रहे हो ?

'माखे की हराम की औलाद काली पर । उमने मुझे धक्का दिया । मरी
 बाँह पकडी और मुमे मारने के लिण जाया ।

'देख ओ काली के पुत्तर, जूते मार मारकर तरा सिर पोला कर दूगा ।
 सौ मारकर एक गिनूगा । तू शराग्ती आग्नी है । तने खर इसी म है कि गाव
 छोड जा ।'

काली न अपनी सफाई पेश करन की कोगिश की तो चौधरी हरनाम सिंह
 भडक उठा

‘आग से टर टर करता है। तू यहाँ का धम पुनर है। वान घोर-घोर गुन ले, चौधरी के मुवात्रले म मल्ली हमेशा बमीन की हाती है। जयाग जाड और पूं पां दिखाई तो तरी लाश तन नगी मिलेगी।’

चौधरी हरनाम सिंह ने काली को बहुत बुरा भला कहा और चौधरी मुशी को साथ लेकर कुएँ की ओर बढ़ गया। तामा वसंत ने भी काली पर फटकार डाली और उसे बाँह से पकड़कर बोला

‘जा, अपने घर म जाकर बठ। चौधरिया से ज्यादा मत्या लगाणगा तो नुबसान मे रहेगा।’

काली गदन झुकाए धीरे धीरे कन्म उठाता हुआ अपने घर की ओर आ गया। अभी वह ताला खोल ही रहा था कि प्रीतो आ गई और कल्ले मटनाती हुई बोली

‘चौधरी क्या तुम्हे गालियाँ दे रहा था ?

पता नहीं।’ काली ने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया। प्रीतो की उत्सुकता बहुत बढ गई और वह दरवाजा पीटती हुई बोली

‘दरवाजा तो खोल।’

काली ने जब दरवाजा नहीं खोला तो उसने कई अनुमान लगाए और उह मूत रूप दती हुई मुहल्ले म चली गई। वह जसो के पास बठी थी जब मगू भी आ गया। उसने प्रीतो के सब अनुमानो और आशकाआ की पुष्टि कर दी तो वह बहुत प्रसन्न भाव स बोली

‘काली मोया आते ही घनपट्टी लेकर लेट गया। मैं तो उसका चेहरा देखकर ही भाप गई थी। अच्छा हुआ माया जकड ऐस दिखाता है जस चार बक उसी की जागीर हो। मैं कहती हू चौधरी सचमुच मार देता तो अच्छा होता।’

‘अगर वह कभी तुम्हारे साथ तू-ताँ करे तो मुझे बताना। हाँ, जब वह पिछली कोठनी बनान लगे तो रोक देना। आगे मैं सँभाल लूगा। मगू न रोटी चबाते हुए कहा।

बना चुका कोठडी। अब तो वह राटी के टुकडे को तरमता है। उस रडी निहाली ने उसका घर माफ कर दिया। वह भी हर समय ताई-ताई कहता फिरता था। (वर्षा की) झडी लगने दो—तो-ता निन के फाके न काटे तो मरा नाम बदल देना। प्रीतो ने न तज लेकिन धीमी आवाज म कहा।

जानो अपन काम म मगन थी लेकिन उसके वान उननी वाता की ओर व। वह अपने अंदर ही-अन्दर श्राध स पन रही थी। जब उसन यह गुना कि काली

कभी पाका भी काटता है तो वह एबदम उदास हो गइ। उमका सारा शरीर झिथिल हो गया। उसने वनन उठाया ता वह हाय से गिर गया। बाठडी की आर बढी ता पाव रास्ते मे पडे चरखे म उर्रग गया। प्रीतो उमकी जोर ध्यान से देखती हुइ जस्तो स वाली

जस्तो, तुम्हे रात को नीद कसे आ जाती है ? जानो तो अब वहुत जवान हो गई है।'

लडके ढूढना मर्दों का काम है। मैं तो लटका बता सकती हूँ। मगू को न अपना फिक्र है न वहन का। दिन रात चौधरी की हवेली पडा रहता है। इसे शिकारी कुत्तो और घाडी से ही फुरसत नही मिलती।'

फिर वह मगू से वाली

सुन ले, अब तो आस पडोस वहन भी लगा है। पुतरा जानो की शादी करना तेरा फज है और इसे तुझे ही पूरा करना है।'

फिर वह प्रीतो को सम्बोधित करती हुई बोली

'इसे एक लडका बताया तो था लेकिन यह ध्यान ही नहीं देता।'

प्रीतो कुछ क्षणा तक चुप रही और फिर ठण्डी आह भरती हुई बोली

मेरे तो अपने गले गले तक पानी आ गया है। साचनी हूँ तो दिल डूबने लगता है। मेरे पाम चार टल्के (कपडे) होत तो म लच्छो का व्याह कर देती। निहाली रही से कहा था कि चोरी के माल से मुझे भी आध पचाध हिस्सा दे दे लेकिन वह परा पर पानी नहीं पडन देती।

जस्तो के घर स उठकर प्रीतो फिर काली के घर आई। उसका दरवाजा अभी तन अदर स बंद था। उसन गली म इधर उधर लेखा कि कोई आ-आ तो नहीं रहा और फिर दरवाजे के पटो की दराडा म स अरर बाकने लगी। उसन देखा कि काली अपन कपडे बाध रहा है। चीजा को ठिकान लगा रहा है जैसे मफर पर जाने की तयारी कर रहा हो। वह दीडी लीनी फिर जस्तो के घर आ गई और मगू को शँझोडती हुई बोली

'काली सामान बाध रहा है। कही जान की तयारी कर रहा है।

हूँ। गाव म रहेगा कसे। चौधरी ने उसे कह लिया है कि गाव छोडकर चला जाए वरना उसकी लाश तक नही मिन्गा।

जानो यह सुनकर एकत्म वचन हो गई। कभी वह किसी उहाने छन पर जा चढती कभी नीचे उतर आती। यह बसवरी से इतजार कर रही थी कि मगू और प्रीतो चल जाएँ। जब उहान उठन का नाम तन न लिया तो वह चक्की के पास आ लटा और जस्तो क पूछन पर पट को दवाती हुइ बोली

'भरे पट म घेर (ह) ग उठ रहे हैं ।'

जा बाहर हो आ । जम्मो न कर्ता । यह गुना ही जाना बागी त मकान की आर भाग गई ।

वहाँ ताला लगाने जानो का स्त्रि बट गया । बट घनराई हुई कुर्से की ओर निबल गई और इधर उधर घूमकर फिर गली म आ गई । काली क मकान पर ताला पडा देखा तो अपने घर बापम आकर तारी क पास लेट गई । मगू जा घुमा था ललित प्रीतो उमरी माँ क साथ बाते कर रही थी ।

जानो को घर म घन न पडा तो गली म चली गई । ताली क घर क सामने पहुँची तो वहाँ अज भी ताला लगा था । वह मेना की ओर चली गई । कुर्से के पास पहुँची तो वहाँ मुहल्ले क कुछ लोग नहा रहे थे । शमू सबको बता रहा था कि चौधरी ने काली को बहून डाँटा है । उन वहा है कि गाँव छोडकर चला जाए वरना उसकी लाश तक नहीं मिलगी ।

क्या बात है ?' बाजे फत्तू न पूछा ।

वही चौधरी मुशी वाला पगडा ।'

हनेर (जधकार) है साइ का । चौधरी नाहन बात कर रहा है । बाज फत्तू ने कहा ।

जानो कुर्से से थोडी दूर परे जाकर सिर हिलाती हुई अपन-आपस बोली हूँ तो ये बात है । माए चौधरी को ऐसी प्लेग निबले कि सूरज का मुह न देखे ।' वह अपने मन ही मन म सोचने लगी कि कौन कौन सी ऐसी बीमारियाँ हैं जो आदमी को पल क्षणवत्ते म खा जाती हैं ताकि परमात्मा से प्राधना करे कि चौधरी को वही बीमारिया हा ।

थोडी देर के बाद वह फिर गली म वापस आ गई । काली का मकान अभी तक बन्द था । जानो का जी चाहा कि वह उसे जल्दी से जल्दी मिल जाए । वह घर जाने की बजाय पीछे लौट आई । उसे विश्वास था कि काली किसी न किसी दूकान पर बठा होगा । इसलिए पहले वह डाक्टर की दूकान पर गई । वहाँ से महाशय तीथराम की दूकान पर । उसे वहाँ भी काली नजर न आया तो उसका विश्वास टूटने लगा । वहाँ से वह छग्जू शाह की दूकान की ओर बढ़ गई । काली वहाँ भी नजर न जाया तो वह पश्चिम म गण्डियो के मुहल्ले की ओर मुड गई । लानू पहलवान की हवेली म भी काली दिखाई न दिया तो वह उस गली मे दाखिल हो गई जिसम पाटरी का मकान था । जब वह उसके घर के सामने पहुँची तो उसे बठक म काली की आवाज सुनाई दी । वह वही ठिठक गई और फिर दरवाजा खटखटाने लगी । काली पादरी से वह

रहा था

‘बाहर कोई है।’

‘दूसरी तरफ है। कोई पादरानी स मिलने आई होगी।’ यह कहकर पादरी ने फिर बात गुरू कर दी।

कुछ क्षणों के पश्चात् दरवाजा खुल गया। सामन प्रीता की लडकी लच्छो को देखकर नानो चकित सी रह गई। और लच्छो ऐसे डर गई जैसे चोरी करती हुई पकड़ी गई हा। लेकिन पादरानी न नाना का देखत ही प्रसन्न भाव से कहा

‘आ ज्ञाना, तू आज कस भूलकर इस घर म आई है।’

नानो आगे बढ़कर घड़प से उसके पास बठ गई। पादरानी उसकी बेचनी और घमरादट का भापती हुई बोली

आराम स बठ जा। हाड की घूप स तो आदमी पागल हो जाता है।’ उसन नानो की ओर पखा फकत हुए कहा। नानो कोन म बठी लच्छो की आर देखने लगी लेकिन उसके कान बठक की आर थे।

नानो की समझ म नही आ रहा था कि पादरी काली का क्या समझा रहा है। कुछ देर तक बठक म खामाशी रही तो ज्ञानो पादरानी की ओर देखन लगी जो सिलाइ की मशीन चला रही थी। नानो को अपनी ओर देखन पाकर वह बोली

लच्छा को मैं सिलाई कटाई सिया रही हू। देखो लच्छो अब उलटा सीधा दाना तापे लगा लती है।

नानो दिलचस्पी दिखाती हुई बोली

मुझे ता सीना पिरोना बहुत अच्छा लगता ह लेकिन सिखान वाला काई नही है।

पादरानी नाना को उत्तर देन ही लगी थी कि पादरी अंदर आया। उसे देखकर पादरानी भी अंदर घनी गई।

नानो साचन लगी कि बठक म पादरी जिस आदमी के साथ बात कर रहा था शायद वह काली न हो। अपनी इस आशका पर वह घबरा गई और जब पादरानी वापस आई तो नाना ने बेचनी स पूछा

‘पादरी जी किस के साथ बात कर रहा है?’

‘तुम्हार मुहल्ले क काली नाम क साथ। उस पादरी जी से बहुत प्रेम है।’

नानो चुप रही और जब पादरी की आवाज सुनाई दी तो वह उस आर शुकनर उनकी बातें सुनने लगी।

पादरी काली से कह रहा था

यह लो ।'

'पादरी जी, मैं यह खम आपको जल्दी से जल्दी लौटा दूंगा ।

'नहीं, मुझे मत लौटाना । यीसू मसीह को ही लौटाना जो यह खम तुम्हें दे रहा है ।' पादरी ने थोड़ी ऊँची आवाज में कहा

दे तो आप रहे हैं ।'

मैं तो सिर्फ गहाना हूँ । देने वाला वही है ।

'पर मुझे वह मिनगा कहाँ ?'

जब तुम उस पर ईमान ले जाओगे उसका बन्धन तो गिर जाओगा तो वह तुम्हें अपन आप ही मिल जाएगा । वह अपन भक्तों को फौरन पहचान लेता है ।

थोड़ी दूर तक बैठक में घामोशी रही और जब काली ने उठत हुए पादरी को बन्धी की तो जाना चीन गई । पादरी ने बैठक का दरवाजा बंद किया तो जाना भी उठ बठी और किसी से कुछ कह मिनगा और पादरानी की आवाजों को अनमुना करती हुई गली में भाग गई ।

गिरजाघर के पास उसका बन्धी का जा लिया और उस गली के मोड़ की आठ में रोस्वर बोली

'पादरी से पस कर आण हो शहर जाने के लिए ?'

काली उमक बेहरे पर हन्ता दरवार चरित-मा रह गया और हाँ में सिर हिला दिया ।

अभी वापस करके आया । घर घर जाकर पस माँगत हुए तुम्हें शरम नहीं आती । जा अभी वापस करके आ ।

'जानो अगर किसी ने हम वाने करत हुए दण लिया तो दाना की शानत आ जाणगी ।'

दया जाएगा । पट्टे नू पस वापस कर ।

कल वापस कर दूंगा । अभी कर आया हूँ । उठते पाँव वापस करत जाऊँगा तो पादरी क्या कहेगा ।

'जा मन्त्री कहे लखिन ग्यज अभी वापस करके आया । मैं यही ख्या हूँ । जाना ने हड़ स्वर में कहा ।

काली गन्त शुकान गाव में दूया हुआ पादरी के मरान की धार मुक्त गया । जाना पादरी में कर दिया का आत जात स्थानी तो आत-गाय हा जात और फिर यही की मुक्त म जात बड़कर स्थान लगता कि काली था रहा है या नया ।

थाड़ी ही दर के बाद वाली वापस आ गया । जानो ने बहुत बेचनी स पूछा

दे आए रुपये ?'

'हू । अब तुम जाओ ।'

'जाती हूँ । रात का आऊँगी । तुम्हारी अच्छी तरह खबर लूँगी ।'

जानो ने मुसकरात हुए कहा और तब-तब कदम उठाती हुई काली से आगे निकल गई । उसकी एक मुसकराहट से काली सार दिन की परेशानी भूल गया, और बेसजरी से रात का इंतजार करने लगा ।

३४

शाम तक वाली दिन की तलबी भूल गया । वह बेसजरी से रात पडने का इंतजार कर रहा था । अभी दिन बाकी ही था कि काली ने रोटी पका ली । जल्दबाजी में उसने अपनी उँगलियाँ खुलसा ली और उसके दाएँ हाथ पर छाला पट गया ।

घर पर बड़े बड़े समय बहुत धीरे धीरे गुजरने लगा तो काली बाहर आ गया । वह चो की आधी सूखी और आधी भीली रेत पर दूर तक चलता गया । कच्चे की जान वाल रास्ते पर पहुँचकर वह चो के किनारे ऊँचे बंध पर चढ़ गया । चारा ओर मक्की की छाटी छोटी फसल शाम की मद पवन में लहलहा रही थी । दूबत सूरज की सुनहरी किरणों ने उसे बहुत ही सुन्दर रूप दे दिया था । सामने कधाल गाव का हल्का हल्का शहर सुनाई दे रहा था । बाबुक गाव की ओर जाने वाली पगडंडी पर कुछ लोग तब-तब कदम उठात हुए जा रहे थे । चा म भसों बड़े-बड़े निशाग छोड़ती हुई गाव की ओर जा रही थी ।

चो के नशेव के निकट टाली के वृक्षों के बुड में पक्षियों का ऊँचा शोर सुन कर महसूस होता था जैसे उनमें सख्त भगडा हो रहा हो । बुड से परे खाली खेतों में मोर पक्ष फलाकर नाच रहे थे । आकाश पर डूबती किरणों की केवल लालिमा ही रह गई तो मंदिर में शब्र की ऊँची आवाज गूजी और उसके साथ ही घटियाँ बजने लगी । इसके पश्चात् अघवार धुएँ की तरह फलन लगा तो

वाली के मन में एक अजीब सा कौतूहल उठना आरम्भ हो गया। वह चाहता था कि रात एकदम ही बहुत गहरी हो जाए ताकि वह जानो की प्रतीक्षा में अपने द्वार खुले छोड़ दे।

जानो के बारे में सोचकर वाली के मन में गुदगुनी सी होने लगी। वह सोचने लगा कि यदि जानो उसे मना न करती तो वह पादरी से पास लेकर सुबह की गाड़ी से गांव छोड़ गया होता। जानो उसे क्या नहीं गांव से जाने देना चाहती? इस प्रश्न के कई उत्तर उसके मन में आए परंतु उसकी तसल्ली किसी से भी न हुई। बहुत सोचने के बाद उसके मन में केवल एक ही बात रह गई कि जेधेरा गहरा होने पर लोग सो जाएंगे और जानो उसके पास आएगी।

जब वृद्धों के झुंड का आजार अंधेरे में छोड़ दिया और उसमें सांसां की आवाज उठन लगी तो वाली गांव की ओर चल पड़ा। वह अभी गांव से दूर ही था कि उस डाक्टर विश्वनाथ और जोमा मिल गए। वाली को देखाकर डाक्टर प्रसन्नभाव से बोला

मुना वाली, तू कहां रहता है। कभी कभी तो ऐसे छिप जाता है जस सदिया में मरिषया।

डाक्टर जी मैं तो यहीं हूँ, आप ही नहीं मिलते।'

मैं तो मुना है चौधरी हरनाथ सिंह ने तुम्हें बहुत बुरा भला कहा और डराया धमकाया है।'

वह गांव का चौधरी और मैं ठहरा चमार। वह चमारों को यूँ समझता है जस वे उमक घरीदे हुए दास हैं।' वाली ने कुछ उत्तेजित स्वर में कहा।

'वाली दास, दरअमल सारी खराबा बपिलिस्ट मिस्टम यानी पूँजीवाण का है। हमारे देश में तो हालत और भी गम्भीर है। यहाँ अभी पूँजीवाण भी पूरी तरह नहीं आया। दुनिया समाजवाण की तरफ बढ़ रही है और हम अभी तक जागीरदारी के चक्कर में फँस हुए हैं।' डाक्टर ने आश्चर्य भाव से कहा और कुछ क्षणों के लिए चुन रह कर सोच

वाली, यह हालत क्याकर दर तर तना रह सक्ती। इन्तजार आणगा जकर आणगा और पूँजीपनिया जागीरदारी और उनका पण्डित का घम कर तना उनका नाम विमान मिता दगा। फिर हर आणमा आबाण होगा। वार्द चौधरी नहा रहगा और बाद वामा नहा होगा। अमार और गरव का पण भिण जाणगा। पणधर क माणन सांती मण्डियन हणि। हर आणमी अपनी तीमार क मुनामि क नाम करगा और अनन घब क मुनामि पण लगा।

इन्तजार क आणगा? वाण न वणन उणुनना म पूछा।

देखा, जल्दी ही आएगा। कई देशों में आ चुका, कई में आ रहा है और कई में आने वाला है।' डाक्टर ने जाश से कहा।

काला न कोशिश की कि इन्कलाब के बारे में सोचे कि वह कसा होगा, किधर से आएगा और कब आएगा लेकिन जब वह असफल रहा तो डाक्टर से बोला 'डाक्टर जी, इन्कलाब में क्या होगा?'

बहुत उथल-पुथल होगी। पूँजीवाद और जागीरदारी सिस्टम इन्कलाब को असफल बनाने की कोशिश करेंगे। अपने एजेंटा की मारफत इन्कलाबी ताकतों में फूट डालेंगे, उन पर हमले करेंगे, खून-धरावा होगा, खून की नदियाँ बहेगी, हज़ारों लोग मरेंगे।

उसकी बात सुनकर काली उदास हो गया और सोचता हुआ बोला 'पादरी जी भी कहता है कि इन्कलाब आ रहा है। वह कहता है कि इन्कलाब सिर्फ एक आदमी लामा है। वह सारी दुनियाँ के पाप अपने सिर पर लेकर मृत्यु सूली पर चढ़ गया।

पादरी पाखण्डी है। वह मजहब की अधीन पिलाता है। वह लोगो को फर्की किसी कहानियाँ सुनाता है लेकिन मैं साइंटिफिक बातें करता हूँ।' डाक्टर ने घणा से कहा।

पादरी चुपचाप गया और अपनी सोच में डूबा हुआ उनसे आगे निकल गया तो बोला

'काली, तू तो हमें सब छोटे छोटे मसलों की तरह भाग रहा है।' काली मुसकरा दिया और अपने कपड़ों को रोककर उनके साथ चलने लगा।

डाक्टर और आमा अपने मुहल्ले की ओर मुड़ गए तो काली छलापें लगाता हुआ अपनी गली में आ गया। वह बहुत खुश था और उसका अग-अग एँठ रहा था। वह तेज़-तेज़ कदम उठाता हुआ जेधेरी गली में अपने घर की ओर बढ़ गया।

काली कभी घाट पर लेट जाना और कभी टहलना शुरू कर देता। मामूली सी सरसराहट पर उसके कान खड़े हो जाते और वह सावधानी से द्वार की ओर बढ़ता। पहरेदार गावें दो चक्कर लगा चुका था। कुत्ते भीकते भीकते धरत से गए थे परन्तु जानो अभी तक नहीं आई थी।

जब जानो ने दरवाजा छटखटाया तो उसका उत्साह खत्म हो चुका था। वह अनमना सा उठा और दरवाजा खोल दिया। जाना अंदर आ गई तो वह उससे पास आ खड़ा हुआ। जानो ने बहुत धीमे स्वर में कहा

दीया जला दो।

घरती धन न अपना

काली के मन में अब अभीव सा वीरुहल उठना आरम्भ हो गया । वह चाहता था कि रात एकदम ही बहुत गहरी हो जाए ताकि वह पाना की प्रतीक्षा में अपने द्वार खुले छोड़ दे ।

ज्ञानो के बारे में साचकर वाली के मन में गुत्गुनी सी हाने लगी । वह सोचने लगा कि यदि पानो उसे मना न करती तो वह पानरी से पस लेकर सुबह की गाड़ी से गांव छोड़ गया होता । ज्ञानो उस क्या नहीं गांव से जाने देना चाहती ? इस प्रश्न के कई उत्तर उनके मन में आए परन्तु उसका तसल्ली किसी से भी न हुई । बहुत सोचने के बाद उनका मन में केवल एक ही बात रह गई कि अधरा गहरा होने पर लोग सो जाएंगे और ज्ञानो उसके पास आएगी ।

जब वृषो के झुंड का जानार अधरे में प्यो गया और उसमें सा सा की आवाज उठने लगी तो वाली गांव की ओर चल पड़ा । वह अभी गांव से दूर ही था कि उस डाक्टर विशनदास और जोमा मिल गए । वाली को देखकर डाक्टर प्रसन्नभाव से बोला

‘सुना वाली तू कहां रहता है । कभी कभी तो ऐसा छिप जाता है जैसे सदियों में मक्खियां ।’

डाक्टर जी मैं तो यहां हूँ, आप ही नहीं मिलते ।

मैंने सुना है चाधरी हरनाम सिंह ने तुम्हें बहुत बुरा भला कहा और डराया धमकाया है ।

वह गांव का चौधरी आर मैं ठहरा चमार । वह चमारा को यूँ समझता हूँ जैसे वे उसके घरीदे हुए दास हैं ।’ वाली ने कुछ उत्तेजित स्वर में कहा ।

‘वाली दास दरअसल सारी खराबी कपिलिस्ट सिस्टम यानी पूजीवाद का है । हमारे देश में तो हालत आर भी गम्भीर है । यहां अभी पूजीवाद भी पूरी तरह नहीं आया । दुनिया समाजवाद की तरफ बढ़ रही है और हम अभी तक जागीरदारी के चक्कर में फसे हुए हैं । डाक्टर ने दाशनिक् भाव से कहा और कुछ क्षणा के लिए चुप रह कर बोला

वाली, यह हालत क्या देर तक नहीं रह सकती । इकलाव आएगा और आएगा और पूजीपतियों जागीरदारों और उनके एजेण्टों को खत्म कर देगा, उनका नाम निशान मिटा देगा । फिर हर आत्मी आजाद होगा । कोई चौधरी नहीं रहेगा और कोई कामा नहीं होगा । अमीर और गरीब का फरक मिट जाएगा । पदावार का साधन सांख्यी मलकियत हागे । हर आदमी अपनी तौफीक का मुताबिक काम करेगा और अपने खर्च के मुताबिक पस लगेगा ।’

इकलाव अब आएगा ?’ वाली ने बहुत उत्सुकता से पूछा ।

‘देखा, जल्दी ही आएगा। वह देगा म आ चुका, कई म आ रहा है और कई म आने वाला है।’ डाक्टर ने जोश से कहा।

काली ने कोशिश की कि इन्वलाय के बारे में मोचे कि वह कसा होगा, किधर से आएगा और कस जाएगा लेकिन जब वह असफल रहा तो डाक्टर से बोला
डाक्टर जी, इन्वलाय में क्या होगा ?

बहुत उथल पुथल होगी। पूँजीवाद और जागीरदारी सिस्टम इन्वलाय को असफल बनाने की कोशिश करेंगे। अपने एजेंटा की मारफत इन्वलायों तकतो में फूट डालेंगे, उन पर हमल करेंगे, खून धराबा होगा, खून की नदिया बहगी, हजारों लोग मरेंगे।

उसकी बात सुनकर काली उदास हो गया और सोचता हुआ बोला

‘पादरी जी भी कहता है कि इन्वलाय आ रहा है। वह कहता है कि इन्वलाय सिर्फ एक आदमी लाया है। वह सारी दुनिया के पाप अपने सिर पर लेकर स्वयं मूली पर चढ़ गया।’

पादरी पाखण्डी है। वह मजहब की अफीम पिलाता है। वह लोगो को फर्जी मिस्से कहानिया सुनाता है लेकिन मैं साइंटिफिक बात करता हूँ।’ डाक्टर ने घणा से कहा।

काली चुप हो गया और अपनी सोच में डूबा हुआ उनसे आगे निकल गया तो ओमा बोला

‘काली तू तो हल से छूटे हुए मंस की तरह भाग रहा है।’ काली मुसकरा दिया और अपने कदमों को रोककर उनके साथ चलने लगा।

डाक्टर और आमा अपने मुहल्ले की ओर मुड़ गए तो काली छलांगें लगाता हुआ अपनी गली में आ गया। वह बहुत खुश था और उसका अंग-अंग एठ रहा था। वह तड़-तड़ कर उठाता हुआ जँधेरी गली में अपने घर की ओर बढ़ गया।

काला कभी खाट पर लेट जाता और कभी टहलना शुरू कर देता। मामूली सी सरसराहट पर उसके कान खड़े हो जाते और वह सावधानी से द्वार की ओर चला। पहरेदार गाव के दाँ चक्कर लगा चुका था। कुत्ते भीकत भीकत धक कर सो गए थे परन्तु जानो अभी तक नहीं आई थी।

जब जाना ने दरवाजा खटखटाया तो उसका उत्साह खत्म हो चुका था। वह अनमना सा उठा और दरवाजा खोल दिया। जाना अंदर आ गई तो वह उससे पास आ खड़ा हुआ। जानो ने बहुत धीमे स्वर में कहा

दीया जला दा।’

काली के मन में एक अजीब-सा कौतूहल उठना आरम्भ हो गया। वह चाहता था कि रात एकदम ही बहुत गहरी हो जाए ताकि वह नानो की प्रतीक्षा में अपने द्वार खुले छोड़ दे।

ज्ञानो के बारे में साचकर काली के मन में गुदगुनी सी होने लगी। वह सोचने लगा कि यदि ज्ञानो उसे मना न करती तो वह पादरी से पैस लेकर सुबह की गाड़ी से गांव छोड़ गया होता। जानो उसे क्या नहीं गांव से जान देना चाहती? इस प्रश्न के कई उत्तर उसके मन में आए परन्तु उसकी तसल्ली किसी से भी न हुई। बहुत सोचा के बाद उसके मन में केवल एक ही बात रह गई कि अधेरा गहरा होने पर लोग सो जाएंगे और ज्ञानो उसके पास आएगी।

जब वृक्षों के झुंड का आकार अंधेरे में खो गया और उसमें सा सों की आवाज उठने लगी तो काली गांव की ओर चल पड़ा। वह अभी गांव से दूर ही था कि उस डाक्टर विशनवास और जोमा मिल गए। काली को देखकर डाक्टर प्रसनभाव से बोला

सुना काली, तू कहा रहता है। क्या अभी तो ऐसे छिप जाता है जस सदियों में मखिया।

‘डाक्टर जी मैं तो यहां हू, आप ही नहीं मिलत।

मैंने सुना है चाधरी हरनाम सिंह न तुम्ह बहुत बुरा भला कहा और डराया धमकाया है।

वह गांव का चौधरी और में ठहरा चमार। वह चमारा को यू समझता है जैसे वे उसके घरीदे हुए दास हैं। काली ने कुछ उत्तेजित स्वर में कहा।

‘काली दास दरअसल सारी खराबी कपिलिस्ट सिस्टम यानी पूजावाद का है। हमारे देश में तो हालत और भी गम्भीर है। यहाँ अभी पूजावाद भी पूरी तरह नहीं आया। दुनिया समाजवाद की तरफ बढ़ रही है और हम अभी तक जागीरदारी के चक्कर में फसे हुए हैं। डाक्टर ने दार्शनिक भाव से कहा और कुछ क्षणों के लिए चुप रह कर बोला

काली, यह हालत क्या-का दर तक नहीं रह सकती। इकलाव आया जहर आया और पूजापतिया जागीरदारा और उनके एजेंटों को खत्म कर दगा, उनका नाम निशान मिटा दगा। फिर हर आत्मी आजाद होगा। कोई चौधरी नहीं रहेगा और कोई बामा नहीं हागा। अमीर और गरीब का फर्क मिट जाएगा। पन्धवार के साधन सांझी मलत्रियत होंगे। हर आत्मी अपनी तौफीक के मुताबिक काम करेगा और अपने स्वयं के मुताबिक पैस लेगा।

‘इक्लाव क्या आया?’ काली ने बहुत उत्सुकता से पूछा।

‘दखा, जल्दी ही आएगा। कई देशों में आ चुका, कई में आ रहा है और कई में आने वाला है।’ डाक्टर ने जोश से कहा।

काली ने काशिश की कि इन्कलाब के बारे में सोचे कि वह कसा होगा, किधर से आएगा और कैसे आएगा लेकिन जब वह असफल रहा तो डाक्टर से बोला

‘डाक्टर जी इन्कलाब में क्या होगा?’

‘बहुत उथल-पुथल होगी। पूँजीवाद और जागीरदारी सिस्टम इन्कलाब को असफल बनाने की कोशिश करेंगे। अपने एजेंडा की मारफत इन्कलाबी ताकतों में फूट डालेंगे, उन पर हमला करेंगे, खून खरावा होगा, खून की नदियाँ बहेंगी, हजारों लोग मरेंगे।’

उसरी बात सुनकर काली उदास हो गया और सोचता हुआ बोला

‘पादरी जी भी कहता है कि इन्कलाब आ रहा है। वह कहता है कि इन्कलाब सिर्फ एक आत्मी लड़ाई है। वह सारी दुनिया के पापों अपने सिर पर लेकर स्वयं सूली पर चढ़ गया।’

‘पादरी पाखण्डी है। वह मजहब की अफीम पिलाता है। वह लोगों को फर्जी किस्से कहानियाँ सुनाना है लेकिन मैं साइंटिफिक बातें करता हूँ।’ डाक्टर उधर से कहा।

काली चुप हो गया और अपनी सोच में डूबा हुआ उनमें आगे निकल गया तो ओमा बोला

‘काली तू तो हल से छूटे हुए भस की तरह भाग रहा है।’ काली मुसकरा दिया और अपने कर्मा की राककर उनके साथ चलने लगा।

डाक्टर और ओमा अपने मुहल्ले की ओर मुड़ गए तो काली छलांगें लगाता हुआ अपनी गली में आ गया। वह बहुत खुश था और उसका अग-अग एठ रहा था। वह तब-तब कर्म उठाता हुआ अँधेरी गली में अपने घर की ओर बढ़ गया।

काली कभी घाट पर लेट जाना और कभी टहलना शुरू कर देता। मामूली सी सरसराहट पर उसके बान खड़े हो जाते और वह सावधानी से द्वार की ओर बढ़ता। पहरेदार गाँव के दो चक्कर लगा चुका था। बुद्धि भक्ति भक्ति धक्कर से गए थे परन्तु जानो अभी तक नहीं आई थी।

जब जानो ने दरवाजा खटखटाया तो उसका उत्साह खत्म हो चुका था। वह अनमना सा उठा और दरवाजा खोल दिया। जानो अंदर आ गई तो वह उससे पास आ खड़ा हुआ। जानो ने बहुत धीमे स्वर में कहा

दीया जला दो।

'तया ?'

'या' म अताऊंगी । पट्ट दीया जलाभा ।'

काली न दीया जला के लिए मात्तम की तीरा जलाइ ता जाना वान
म पडे द्रव और उग पर बध मिन्नर का दग पर धोनी

'रहन दा नीया ।'

और फिर महुा ही उदाता म्यर म बाली

वर ली तयारी ?

बगी तयारी ?'

'महर जान थी ।

काली १ बाइ उत्तर रही लिया । जानो अपनी जगह पर धडी चित्तिया
लती हुई रोने लगी । काली कुछ समय तर ता उपचाप घडा रहा फिर उसन
पास जानर उमना तिर धपयमान लगा । जानो उसना हाथ गन्तती हुई
दरवाजे की जार बढ़ गई । काली न उसना रास्ता रोन लिया तो वह राती
हुई बोली

तुम तो शहर जा रह हा मेरी राह क्या रोमत हो ?

नही जा रहा नही जाऊगा । काली न भरी हुई आवाज म बहा ।

अपनी मर्जी से जा रहे हो या चौधरी के कहन पर ? जानो न पूछा ।

'रोज की बक वर शर शर स तग आकर सोचा था कि गाव छोड दू ।
चौधरी ने तो यह कहा था कि गाव म रहना है तो शरीफो की तरह रहो ।

और क्या कहा उसन ?'

बहुत सी बातें कही थी । सब याद नहा रही ।

'हूँ ।' जानो ने लम्बी सांस छोडी और फिर तीखी आवाज म बोली

'और तुमने गांव छोड देने का फसला कर लिया । इसलिए पादरी से पस
मागने चले गए ।

काली चुप रहा तो जानो कहन लगी

'धोल्ते क्या नही ?'

काली फिर भी चुप रहा तो वह क्रुद्ध स्वर म बोली

'मैं तो समझती थी कि तू जिगरे वाला जाग्गी है । तू आसानी स दबने
वाला नही है । तरे स गली के कुत्ते अच्छे हैं जो मारने पर जाग से धूरत
तो हैं ।'

जानो फूट फूट कर रोने लगी । काली लज्जित सा उसके सामने खडा रहा ।
जब रा रोकर जानो का मन हल्का हो गया तो वह काली से बोली

'सुना है कि मद तो मिट्टी का भी जोरावर होता है। तू तो तगडा है।'

काली शम से जमीन में गडने लगा। नानो उसे बाजू में पकडकर झँपोडने लगी तो उसकी हल्की सी चीख निकल गई।

'क्या हुआ।' नानो घबराइ सी बोली।

'बाजू जल गया, छाला पड गया ह।'

'कसे ?'

'रोटी पचाते हुए।'

'हू।' नानो ने उसका बाजू पकडकर छाला टटाला और फूँके मारती हुई बोली

'अब गाँव छोडकर तो नहीं जाओग ?'

नहीं जाऊँगा। जब तक तू गाँव में है मैं यही रहूँगा। जब तू चली जाएगी तो फिर सोचूँगा।

'घाबा मरी सौग घ।'

'तेरी सौग घ।'

काली ने नाना के सिर पर हाथ रखत हुए कहा।

इसके बाद वे बहुत दूर तर बाँते करत रहे। उनकी बातापूसी कभी-कभी दबी-दबी हँसा में बदल जाती।

व समय से बंयाज बाता में मग्न थे कि मुहल्ले में एक औरत की चीख गूज उठी। व नाना चुप हो गए और उनका ध्यान उस चीख की ओर चला गया। शीघ्र ही एक मद न बटा

क्या हुआ।'

कुछ सुरक सुरक कर कहा था। शायद साँप था।' स्त्रा न बहुत घबराइ आवाज में कहा।

नानो घबराकर उठ खड़ी हुई।

'बस घबरा गई हो ?' काली न हँसते हुए कहा।

'तुम होमला रगोने तो मैं कभी नहीं घबराऊँगी।'

मुहल्ले में साँप निकलने की खबर से कई लोग जाग उठे। नानो चिन्तित स्वर में बोला

'अब घर कस जाओगी ?'

'चली जाऊँगी।'

नानो न दरवाजा धाँ दिया और गली में चारा और देखकर अंग्रेज में पा गई।

घरती घन न अपना

बाकी लगी उपाय बसू व घर की भाँव बड़ लगा । जग्गा व। जग्गा व म
बड़ जग्गा व भाँव खोती

माँ बसू व घर म, बड़गा गाँव जिन्ना है ।

सू गाँव म घर म ही बड़ी बड़गा गई थी । जग्गा म बड़ा और भाँव गाँव
की मोर्दाई और लज्जाई का बड़ा बड़ा ही बड़ा म जग्गा व म, गुलान लगी ।
बाकी व बाँवें गुलान गुलान जिन्ना ही म घर लज्जा वगी म बड़ा जग्गा व
पर बड़गा व जग्गा लगा ।

३५

आपाइ व बाँव गाँव भाँव और भाँव म हरियाँ। धनी हान लगी ।
गाँव की बड़ा व गाँव गाँव उर जाई । उगी व गाँव पर भाँव व गाँव । गी
साँवें बुर जिन्ना व बुर हा गई । वता व दाँव जिन्ना लज्जा व की धार की
तरह बड़ा हो गए ।

साँव व साँव जिन्ना जिन्ना पुन व लेखिन लज्जा व भी वगा नहा हूँ थी ।
साँव जिन्ना बड़ा व की धूँ व जाती । वगाँव व साँव वगाँव वगाँव वगाँव
लगा और उस पर भाँव व दल व लज्जा व हो गए ।

वगाँव की जिन्ना जिन्ना बल वगी वम हाँ वर मुल्ल व वीष म बरी
वे नीचे आ बठी और चुगली जिन्ना हँसी मजाँ लज्जा वगाँव और दुख मुख
के वृत्तान्त व बाद अपने-अपने घर व लौट जाना ।

साँव व महीने व आठवें जिन्ना धूँ व बहुत ही तज और हवा बदा थी । अरेड
आयु की जिन्ना अपनी वमीजें उतारकर और जगा धड पर कोई वगाँव लपेटे
हथपल की डडी स पीठ की चुजाती वमी परमात्मा स दवा की भीष माँगती
और वमी उस गालियाँ देने लगती । वज हूँमा तो बहूत ही परशान थी ।
उसका साँव शरीर पित्त से भरा हुआ था और वह माटे बाण की चुनी
हुई घाट स पीठ रगडती हुई परमात्मा को गालियाँ दे रही थी । प्रीतो उस
टोकती हुई बोली

‘वेव, रय व नाम ले, क्या अपनी जवान धराव कर रही है । साँव के गीत

गा ताकि वारिण पले और तरी पित्त कुछ कम हो ।

'भूने नो बात नही तू ही सावन के गीत गा ।' वर हुक्मा ने गप्पे हाथ से बाधा बाजू खुजाने हुए कहा ।

मुझे ता एक ही गीत आता है । बहरर प्रीनो मरद स्वर म गान लगी ।

'सावन खीर ना खादिया

क्या जम्मया अपराधिया

घर न होव अपने

ते कित्यो खावा पापा ।'

(सावन म खीर नही खाई तो अपराधी तूने जम क्या लिया । अपने घर म खीर न हा ता पापी—बता कहा से खाऊँ ।)

सच कहती हो प्रीता । खीर तो सपना ही हो गइ ह । पहले जब लोग दूध पृत बचते नही ये ता चौधरिया के घर से गरीब गरदी को भी शशमाही साल म पाओ आध पाओ दूध मिल जाना था । दूध नही मिलता था तो खरबूजा तरबूजा के बीज पीसकर उनका दूध बनाकर खीर पका लेत थे ।'

वर हुक्मा न अफमोग भरे लहजे म कहा और एवज्म चुप हो गई उस उसक मुह म पाना भर आया था ।

चाची प्रीता, तू जम भी बात करती है, खाने-पीन की करती है ।' प्रसिनी ने हँसत हुए कहा ।

भूया आत्मी जब भी बात करगा तो रोटिया ही की करेगा ।' फिर वह हाथो पर जबान फेरती हुई बोली

मरा जी चाहता है कि एक बार कटोरा भर कर खीर खाऊँ ।'

शराध आ रह है पण्डित मनराम स बान कर ले । एक बार उसके चौबारे म चाडू लगा आ खीर भी खिलाएगा और श्खना (दक्षिणा) भी देगा ।'

'भोए के सिर पर झाडू न माहेंगी ।

प्रसिनी की बात और पीता का उत्तर सुनकर स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पडी ।

प्रसिनी पण्डित सत राम और बग्गे की मा रकड़ी का किम्सा लहक लहक कर मुनाने लगी ता स्त्रियाँ हँसी ब मारे गोटपाट हा गइ । प्रसिनी सत राम की नकल उतारती हुइ नाक म स आवाजें निवाली हुई बोली

'रकिग्रए । मेर चौबारे म चाडू लगा दे र्मे तुम्हें दा आन के पगे दूगा ।

जम रकड़ी सीलियाँ चल गई तो सत राम भी पीदे-पीछ चल गया और उसकी कलाई पकडकर बाला

'रखिए तू मरा काम तू' मैं तुम्हें नया सूत ले दूंगा और साथ पैसे भी दूंगा।

यह सुनकर प्रसिन्नी हँसी व मारे बल घान लगी। प्रीतो पत् को दबाती और हाँपती हुई बहुत कठिनार्थ से बोली

प्रसिन्नीए बरा बर। मरा तो हँसत हँसत दम घुटने लगा है।

लेकिन प्रसिन्नी अपनी हँसी को रोकती हुई बोली

'रखी सत राम को झाड़ू से मारती और उसका दाढ़ी-गाना बरती हुई नीचे ले आई।

प्रसिन्नी यह कहकर प्रीतो से कहने लगी

'चाची प्रीतो तू एक बार फरमावश बरके देख तो सही वह तेरे लिए खीर की बाल्टी ला देगा। दाना मिलाने घाना और सावन गाना।

इस बात पर फिर बहुत ऊँचे और लम्बे ठटके उठे। प्रीतो अपनी सास ठीक बरती हुई बोली

मोए का पाखण्ड देखो। बस हम दूर से ही देखकर धू धू और दुर-दुर करना शुरू कर देता है और उसका काम।

प्रीतो की बाकी बात ठहाका म डूब गई।

'बडा काया आदमी है। उसनी छूत छात पानी और रोटी तक ही है। एक बार उसके हाथ म दूध की गडवी थी। मरा जी चाहा कि दूध मिल जाए तो चाय बनाकर पियू। मैंने जान नुसकर उसे छू दिया। उसन मुझे बहुत क्यादा भला-बुरा कहा। मैं चुपचाप खड़ी सब चुछ सुनती रही इस उमीद पर कि वह दूध फरने लगेगा तो मिनत बरके कहूँगी कि मुझे दे दे। लेकिन उसने दूध की गडवी मन्दिर के दरवाजे पर रख दी और श्रुत से घाम का तिनका लाकर उसम डाल दिया और फिर दूध उठाकर घर चल गया। प्रसिन्नी यह कह कर फिर बोली

वह घास के तिनके से हर चीज शुद्ध कर लेता है। तिनके से शुद्ध न हो तो मत्त मार कर शुद्ध कर लेता है।

प्रीतो नाक सिक्कीनी हुई बोली

'बद से बटनाम बुरा। मरे क्याल म सत राम ऐसा आदमी नहीं है।

अगर तुम्हें यकीन नहीं तो तू उसके पास जाकर देख ले।

प्रसिन्नी ने प्रीतो की चुटकी लेते हुए कहा।

क्या तू हो आई है ?

प्रीता ने पूछा। व सब चिन्खिलाने हँसने लगी।

तुम बहुत बरस हो ।'
 जब हुआमा १ उठन हुए कहा और ठहाना के बीच अग म्त्रिया भी चली
 गई ।

३६

मुझे म अभी काफी चहल-पहल थी और चूल्हे गम व जब पुर्वा चलने
 लगा और आकाश म गहर काले रंग की घटा उठ जाई । बपा आने की खुशी
 म बच्चे तालिया बजात और शार मचात हुए गम्भ्या म दौडन लग । स्त्रियां
 छना पर जाकर चन्नी घटा का देखने लगा । हवा के पाके प्रति क्षण ठडे हाने
 लगे । थाली ही देर म वाल सार आकाश पर छा गए और एकदम जघेरा
 हा गया । फिर मोटे भाटे लीटे गिरन लग और दखत ही दखत वर्षा का शोर
 इतना बर गया जम वाल जा रही हो । गर्मी और उमस के सताए हुए लागा
 ने मुख का सास लिया और दरवाजे खोलकर वर्षा का नजारा करते हुए सो
 गए ।

सारी रात बपा हानी रही । कभी कभी बपा घाडी देर के लिए रुक
 जाती जस थकावट दूर करने के लिए आराम कर रही हा और फिर जार का
 छराटा जाता । सब लोग बहुत देर तक घाटा पर लेटे रहे क्यकि बादला की
 घन गज और बपा म किसी को ममय का अनुमान नहीं रहा था । गली म
 पानी भर गया । छूने पर हर चीज गीली मानूम हान लगी । भीगने स बच्चे
 मवाना का रंग बरल गया ।

दिन चले जब वर्षा कुछ थमी तो सारा गाव खेतो म आ गया । चो म
 टखना तक गहरा पानी बह रहा था । बच्च बहन पानी म छत्रागें मारत हुए
 नहा रहे थे । बडे भी बहने चो का देखने गए । चा के पानी को दखकर एक
 न कहा

यह ता खेतो का पानी है । पहाटी पानी दोपहर तक पहुचेगा ।'

धुए हुए तृशा नहाई हुई फसल की ताजगी, चो म पानी को देखकर
 लोगो क मन खिल उठे लकिन साथ ही आकाश म घन बादला और उनकी
 धरती घन न अपना

धीमी धीमी घा गज मुनकर उनका हल्का सा भय भी महसूस होना लगा ।

आधा घंटा बंद रहने के बाद बहुत जोर की वर्षा आरम्भ हो गई । चमादडी की गलियां में गाँव के बड़े रामन में और चा में पानी चढ़ना लगा । चमादडी नशेबंद में थी इसलिए वहाँ पानी बहुत ही तेज़ी से बर रहा था क्योंकि गाँव का पानी चो में जान की वजह से अभी जमा हो रहा था ।

दोपहर के बाद वर्षा फिर बर हो गई और आकाश में कहीं-कहीं बालू फट गए । चो में पहाड़ी पानी आना शुरू हो गया । चमादडी की गलियां में टखने तक और बाहर कुएँ के पास कमर तक पानी था । सब लोग पानी में छप छप करने चो के किनारे जमा हो गए । पीले रंग का गहरा पानी काफी तेज़ी से बह रहा था और उसकी लहरों पर मटमली बाग के साथ साथ बंधा की टहनियाँ तरंगों के लम्पर, गले सड़े आम और चीन्हे के बंधों के खपेरे तर रहे थे । चा में पानी प्रतिक्षण बढ़ रहा था और पूव उत्तर में शिवालिक की पहाड़ियाँ पर अब भी जोर की वर्षा हो रही थी ।

शाम तक बादल फिर गहरे हो गए और जरा लोग घरा का लोटे तो चमादडी के कुएँ के पास पानी कमर से भी ऊपर आ गया था और चा का मटमला पानी गाँव के पानी में मिलने लगा था ।

चमादडी में सब लोग रात जागकर गुजारी क्योंकि गली का पानी घरा में भरना लगा था ऊपर से छतें टपक रही थी । पानी को रोकने के लिए नालियाँ बंद कर दी गई और दहलीज़ के आगे मिट्टी की छोटी छोटी दीवारें खड़ी की गई । सब लोग रातभर परमात्मा और खवाजा पीर की मन्तों मांगते रहे ।

प्रातः लोग घरा से बाहर निकले तो चमादडी का कुआँ कहीं नज़र नहीं आ रहा था । गली में खड़ा पानी घुटना तक उठ आया था और कुएँ के आसपास छाती से भी ऊँचा था । कुएँ के पानी में डूब जाने पर चमादडी में कुहराम मच गया । सब के सामने प्रश्न था कि पीन के लिए पानी कहाँ से आएगा । चिन्ता-ग्रस्त लोग वर्षा में खड़े आपस में सलाह-मशवरे करने लगे ।

जाटा के दोना कुएँ वहाँ से काफी दूर थे और वहाँ से चमारों को पानी भरना बर्जित था । मन्दिर का कुआँ सत्स नजदीक था लेकिन वहाँ पण्डित सन्त राम था जो किसी चमार को कुएँ के निरट से गज तक फटने नहीं देता था ।

वे इसी सोच-विचार में मग्न थे कि प्रीतो के लडके अमर ने खबर दी कि नन्द सिंह की लडकी पाशो पादरी के घर में नल से पानी लाई है । अमरू

अपनी वहन लच्छो को साथ लेकर पादरी के घर की ओर भाग गया। थोड़ी देर के बाद ही वे दोना दा घड़े भर कर ले आए। इसके बाद दा-तीन स्त्रिया गइ और पानी भर लाइ। उनकी देखा-देखी पाच उ स्त्रिया घड़े उठाकर पादरी के घर चली गइ। वे वापस आइ तो आठ-दस और वहा पहुंच गइ।

नल के इद गिद बहुत कीचड हो गया। चमादडी की स्त्रिया आपस म लडती-झगडती जोर-जोर स नल चला रही था। पादरानी द्वाग् म खडी उन की भार क्रोध भरी नजर स देखती हुई चीख कर कहती

आहिस्ता चलाओ। इस तरह चलान स यह टूट जाएगा।

परन्तु स्त्रिया उसकी डाट डपट से बपरवा दोनो हाथा से नल का हत्या ऊपर-नीचे उठा रही थी।

पादरानी का क्रोध उस समय अपनी सब सीमाएँ पार कर गया जब एक औरत की गोद म बच्चे ने वही टट्टी कर दी।

इसे साफ करो। इस घर म आदमी रहते है।' पादरानी न नाक पर पल्लू रखते हुए बहुत क्रुद्ध स्वर मे कहा। उस स्त्री ने घबराकर हाथ से ही बच्चे की टट्टी साफ कर दी और जगह को पानी क दा घड़े गिराकर धो दिया। पानी भरकर उसने बच्चे को धोए बिना ही गाद म ले लिया और चली गई।

स्त्रिया पानी भरकर बाहर निकल गई तो पादरानी अंदर जाकर पादरी को बुला लाई और उसे नल के इद गिद कीचड दिखाकर बोली

जब मैं किसी को पानी नहीं भरने दूगी। इतनी तमीज नहीं है कि बच्चा को टट्टी यहा नहीं करानी चाहिए। पाव साफ करके अंदर आना चाहिए। पादरानी ने झाडू उठाकर वह जगह धोई और अंदर स साकल लगाकर वाली

अगर भ्रव दरवाजा खोला तो भुझसे बुरा कोई नहीं होगा।

अगर कोई आवाज देगा तो मैं दरवाजा खोलने से इकार नहा करूँगा।' पादरी ने उत्तर दिया।

पादरानी ने उसकी ओर बहुत क्रोध से देखा और बठक का दरवाजा खोलकर डयोडी के दरवाजे पर बाहर स ताला लगा दिया और बठक का दरवाजा अंदर से बंद कर कहने लगी

अब चुपचाप बठना। ये वसे ही गद लाग हैं कीचड म स होकर आत हैं अपन साथ पचास वीमारियां भी लात हागे।

पादरानी ने ~~ही~~ उत्तर नहीं दिया और ~~अंदर~~ अंत म सुतन वाल

दरवाजे की ओर घसीटकर अजील पढ़न लगा ।

थोड़ी ही देर के बाद दरवाजे के सामन कई स्त्रिया की आपस म बातें करने की आवाजें आइ । ताला देखकर उन सब की जम साँस रुक गई थी । हाय हाय, यहाँ तो ताला लगा है । जय पानी कस लेंगे । मैं ता घड म जो थोडा बहुत पानी था वह भी गिरा आई हूँ ।

‘य गए वहाँ ? एक स्त्री न ताले की ओर दखत हुए कहा ।

वहाँ गए हाग । पादरानी का दिमाग तो सातवें आसमान पर रहता है । बाहर से ताला लगाकर अदर बठी होगी ।’

ये बातें सुनकर पादरी और भी ज्यादा ध्यान से अजील पढ़ने लगा । पादरानी उसके सिर पर खडी थी । कुछ देर के बाद स्त्रियाँ भामुराद और उदास-सी खाली घडे लेकर वापस चली गई ।

पादरी और पादरानी की इस हरकत पर चमादडी मे बहुत बचनी फल गई । लोग अपनी बवसी पर क्रुद्ध उहे जी भरकर गालियाँ देत रहे और जब मन कुछ शांत हो गया तो उनका ध्यान फिर इस प्रश्न की ओर गया कि पीन का पानी वहाँ से लेंगे । उन्होने सोचा कि चौधरिया की मिन्नत करके उहे कहे कि या तो कुए पर चढने दें या अपने-आप पानी भर दें । यह प्रस्ताव कई स्त्रिया न रखा परंतु चौधरियो से ऐसा कहने का साहस किसी को नही हो रहा था ।

बहुत सोच विचार के बाद उन्होने निणय किया कि पण्डित सत राम की मिन्नत की जाए । जोर की वर्षा के बावजूद कई स्त्रिया घडे उठाकर मंदिर की ओर चली गई । मंदिर की चारदीवारी बहुत ऊँची थी । उसमे एक बडा और ऊँचा सदर दरवाजा था । सामने की दीवार से काफी पीछे एक और दीवार थी । इस दीवार म एक छोटा दरवाजा था जो दो ऊँचे मंदिरा के आँगन म खुलता था । मंदिर की पीढी आँगन के मुकाबले मे बहुत ऊँची थी ।

मंदिर की दोना दीवारा के बीच म काफी खुली जगह थी जिसम वाइ ओर छोटी दीवार के पास कुआँ था । वाइ ओर एक दालान और पीछे दो कोठडियाँ थी जो कभी-कभार बारात घर के तौर पर और प्राय सत राम की गाएँ बाँधने और चाय रखने के काम आती थी । उसके साथ ही वाइ ओर पण्डित सत राम का घर था । वे बाहरी द्वार पर रुक गई और पण्डित सत राम को आवाजें दी तो वह बाहर आ गया । मंदिर के दरवाजे पर भीड देख कर उसने अपना यन्त्रोपवीन कान पर लपेट लिया और रखाई स बोला

‘यहा क्या आई हो ?’

‘पण्डित जी हमारा कुआ पानी मे डूब गया ह । हमारे पास पीन के पानी की एक बूद तक नही है । एक बुजुग स्त्री न हाथ जोडकर नम्रता से कहा ।

तो तुम मन्दिर क कुएँ पर चढना चाहती हो ?’ पण्डित सत न बहुत तल्ख लहजे म पूछा

नही पण्डित जी । उस स्त्री ने वान' का छूत हुए कहा ।

‘आप प्रकाश धेवर से कह दें कि वह कुएँ स पानी खीचकर हमारे घडे भर दे ।

वह तुम्हारे बाप का नौकर है ? क्या वह तुम्हारा सेपी (कामा) है ?

‘पण्डित जी, तो आप भर दो ।’ प्रसिनी ने कहा ।

‘मैं तुम्हारा पानी भरूँ ?’ पण्डित सत राम क्रोध से लाल-पीला हो गया और डडा उठाकर उनके पीछे दौडा ।

स्त्रियाँ भय स भाग निकली । इस भगदड म कई नीच गिर गइ और उनके चच्च घडे टूट गए । पण्डित सत राम गालियाँ देता हुआ चमादडी की ओर मुडने वाले रास्त तक उनका पीछा करता रहा ।

अपने मुहल्ले के निकट पहुचकर उहनि दम लिया । उनके सास इतने फून्ने हुए थे कि मुह से बात नही निकल रही थी । क्रोध और बवसी स कई म्त्रिया की आखी म आमू भर आए । उहान अपन ही परनालो स घडे भरे आर घर चली गइ ।

दोपहर तक चा म पानी और भी चढ गया । गाव के चारो ओर पानी ही पानी था । बडे रास्त पर पानी स्कूल तक जा पहुचा । तकिया चो का एक हिस्सा बन गया और वहा भी पानी की गहरें उठने लगी था । तकिय के कोठे की छत बहुत पहले ही गिर चुकी थी । चो ने अब एउ दीवार भी गिरा दी । बहुत पानी का शोर गाव के दूरमे भिरे पर भी सुनाई दे रहा था ।

दिन ढले सारा गाव फिर चो क किनार जमा था । पानी म लकडी का एक मुहागा, कई रस्से, मिट्टी का घडा और एक पजाली बहुत जा रह थ ।

चौधरी मुशी इन चीज्जा को बहुत ध्यान स देखकर बोला

किमी की हवेली चाबुद हो गई है ।

लानू पहलवान न चित्ता भरी हूँ म उत्तर लिया और बुन्नी हुइ आवाज म कहा

अगर पानी इमी तरह चढता रहा तो गाव का क्या बनेगा ?’

इसका उत्तर सबको मानूम था लेकिन कोई भी हाठा पर नही लाना

शरती घन न अपना

चाहता था। चाहता था खवाजा पीर को बलि देने से शायद पानी बच जाए।

लानू पहलवान न मुझाव दिया। चौधरी मशी बला सिंह और बहा पर छडे सब लोगो ने इस मुझाव की पुष्टि कर दी। फिर प्रश्न पैदा हुआ कि बकरा किस स लिया जाय। कई लोगो न मुझाव दिया कि हर घर स चन्ना जमा करके बकरा खरीद लिया जाय।

किन इससे फिर बखेड छडे हागे कि चन्दा जमीन की ढेरी के मुताबिक हो या आत्मिया की गिनती के मुताबिक। लालू पहलवान न कहा।

यह बात भी ठीक है।' चौधरी मुशी ने कहा।

बला सिंह न दो बकरियां पाल रखी थी। वह एक बन्म आगे बढता हुआ बोला

अगर मेरी बात मानो तो मैं एक बकरी दे देता हूँ।

तू अकेला क्या दे। चो से नुकसान सिफ तुम्हे नही पहुचगा। तेरा घर तो ऊँचा जगह पर है। नुकसान सारे गाव का होगा।

मैं भी गाव म ही रहता हूँ।

बेला सिंह ने तीखी जावाज म कहा। बेला सिंह के जोर देने पर उसकी बात मान ली गई।

बलि की तयारी शुरू हा गई। बेला सिंह का लडका पालो बकरी खोल लाया। उसके माथे पर सिंदूर का टीका लगाया गया। दिलमुख अपनी बर पान उठा लाया। अब प्रश्न था कि बकरी को चो के घारे म कैसे फका जाय। बहुत सोच विचार क बाद वे इस निणय पर पहुचे कि गुड फकाने वाला बडा बडाहा लाया जाय और उसके दोना कुण्डा स रस्स बांधकर उसम एक आदमी बठ जाय। बडाहे को चो म उतार लिया जाय। लानू पहलवान हवेली स बडाहा और रस्से ले आया।

मत्र तयारी हा गई तो क बकरी का एक आर ले गए। बकरी बहुत डरा बनी जावाज म मिमयान लगी। लानू पहलवान न हाथ जोड आँखें बन् और आकाश की आर मुट्ट उठाकर खवाजा पीर स मिनत माँगी कि क उनकी भू-चूक बन्ग दें और अपना बहर और त्रोग्र वापस ल लें। यान् म उसन दिलमुख या मक्न लिया। बला सिंह क लन्क न बकरा क गल म बँधी रस्मी पाडा हूद था और चौधरी मुशी उसकी टाँगो का घाम हूण था। दिलमुख न बकरी क गल पर निगाना माघर करपान खलाई लकिन उमका मिर घन् म जुग नहा हुआ बन्नि लटक गया।

‘हट जा परे मा ने तुम्ह भी पूत जना था । बेला सिंह ने उसके हाथ से करपान लेते हुए कहा और एक ही वार म बकरी का सिर घड से अलग कर दिया ।

‘असल म बकरी हिल गई थी । दिलमुख ने घसिपानी सी हँसी हँसते हुए कहा ।

तड़पती बकरी को बोरी म बाद करके कडाह म रख दिया गया । दिलमुख बोला

‘मैं जाता हूँ ।’

‘रहते दो । बकरी फँकते फकत कही आप भी न गिर जाता ।

बेला सिंह अपन बट को सम्बोधित करता हुआ बोला

‘बल पुतरा, तू फक आ । साथ बग्गे को ले ले । दो जने हान से कडाहा डोल्गा नही ।

बग्गा और पालो कडाहे की ओर बढे तो दाना एक-दूसरे की ओर दख कर मुसकरा दिए । पिछल त्तिना दोना म लडाई के कारण बोल चाल बाद थी ।

कइ लोग ने मिलकर कडाहा पानी म उतार दिया । एक रस्सा दिल-सुख और बेला सिंह न पकड लिया और दूसरा रस्सा लातू पहलवान और चौधरी मुशी ने थाम लिया । व जाहिस्ता-आहिस्ता रस्सा छोड रह थे और बग्गा और पालो लठा से चो म पानी की गहराई मापते हुए कडाहे को धारे की ओर ल जान लगे । जब वे धारे के पास पहुच गए तब उसम ऊ-ऊँ और उर छर की आवाज पदा करती हुई एक लहर उभरी और कडाहा डालने लगा । यह देखकर दोना के दिल दहल गए । वहाँ पानी काफी गहरा था क्याकि दोना के लठ कधा के बराबर ऊब रह गए थे । लातू पहलवान ने रस्सा खींच लिया और उह आवाज देकर बोला

आग मत जाओ बोरी का मुह खोलकर पहले बकरी का सिर और बाद म घड पानी म फक दा ।

बग्गा कडाहे म बैठकर अपने लठ को चो की तह म ट्वाकर कडाह की स्थिर रखन का यत्न करने लगा । पालो न जल्दी जल्दी बोरी का मुह खोल कर पहले बकरी का सिर और बाद म घड चो मे फक दिया । वह इम क्रिया म अपना बजन खो बठा और डावाडोल हो गया । कितार पर खडे लोग ने भयभीत होकर सँभाले-सँभाले की आवाजें लगाइ और बग्गे न अपना लठ पानी म ही छाड दिया और पालो को मजबूती से बाजुआ म थाम लिया ।

घरती घन न अपना

बड़ाहा बुरी तरह डाल रहा था। किनारे पर खड़े लोग ने उसे बहुत तजी म अपनी जोर खींच लिया।

लोगों को विश्वास था कि बलि देने के बाद चो का पानी उतर जाएगा। शाम तक चो के किनारे पर लोगों की भीड़ इस उमीद में खड़ी रही कि शायद पानी उतरना शुरू हो जाए और वे यह देखकर जाएँ। लेकिन दिन ढले तकिए में चा के किनारे शीशम का बड़ा बक्ष पानी के बहाव की ताव न लाकर घडाम से गिर गया तो लोगों के दिल हिल गए।

बक्ष गिरने से बाढ़ का रख चमादडी की जोर बदल गया। कुछ ही समय के पश्चात पानी उस जोर जमीन काटने लगा। धीरे धीरे बाढ़ न खराल बनाना शुरू कर दिया। मिट्टी के ढेले घडाम की आवाज पदा करत हुए गिरत और अनेक छोटे-बड़े भँवर उभरत जैसे पानी ने मिट्टी के ढेला का पाचन कर लिया हो।

लोगों के देखत-देखते खराल इच इच करके चमादडी की ओर बढ़ता गया। कुछ ही घटा में पानी की लहरा से उडने वाली छोटे बाने फत्तू के कोठे की पिछली दीवार पर गिरत लगी। गाँव के लोग विशेषत चमादडी के वासी बाढ़ के क्रोध की सहमी हुई नजर से देख रहे थे।

खराल में पानी के पैचताप खाते हुए भँवर देखकर चौधरी मुशी बोला

अगर चो इसी तरह जमीन काटता रहा तो रात तक आधी चमादडी छा जाएगा।

हाँ चमादडी पानी में बह गई तो बाकी गाँव भी नहीं बचगा।

लाग बाल में ही हानि पर टिप्पणी कर रहे थे कि जमीन का एक बहुत बड़ा टुकड़ा घमाक में पाना में गिरा और छोट कुछ दूर घड लोग के पाँव में आकर गिरे और खराल बाव फनू की दीवार के बहुत निमट पहुँच गया। बाबा फत्तू यह दृश्यर बहुत ब्याकुल हो उठा और वहाँ पर उगम्यन चौधरिया के सामने हाथ जाडता हुआ बोला

मरे मारि बाप में मरे गया। मरा कोठा नहा बचगा। मरे काट का बचाआ।

चौधरिया से कोई उत्तर न पाकर बाबा फनू निराश-मा खराल की ओर दृश्यन लगा वहाँ चा की लहरें सुबक पहलवान की तरह छाना के जाल पर उमरी दीवार का ललरार रही थी। वह चौधरिया के सामने फिर लिम्पितान लगा

चौधरिया उस भी हा मरे मरा बांग बचाआ। मरा बांग गिर गया

तो मुनसे दोबारा नहीं बनेगा और मेरे पास सिर छिपाने की भी जगह नहीं रहेगी।

बाबू फत्तू का इसरार बढ़ता गया तो चौधरी मुशी कुछ क्रुद्ध स्वर में बोला

‘हम तो कोई सूरत नज़र नहीं आती। तू कहे तो बाढ़ न आगे बाँह दे देते हैं।’

बाबा फत्तू निराश होकर बुदबुदाता हुआ पीछे हट गया। चौधरी उसकी जिद पर टीका टिप्पणी करने लगे। चौधरी मुशी उसके कोठे की ओर दखता हुआ बोला

‘शोर तो ऐस मचा रहा था जैसे उसका सोने का महल गिर।’

अभी वह अपना वाक्य पूरा न कर पाया था कि तर्किए में शीशम का एक और बक्ष तडाख-तडाख की आवाज़ पदा करता हुआ झुका और फिर घड़ाम से चोके बीच आ गिरा। बाढ़ के बहाव में वह खिसक खिसककर दूसरे बक्ष के साथ आ लगा। बाढ़ का जोर चमादडी की ओर कम ही गया और पानी लपकता हुआ बड़े रास्ते में बहने लगा और स्कूल से आगे चौधरी हरनाम सिंह की हवली के सामने से होता हुआ चौधरिया की हवेलिया और उनके निकटवर्ती खेता में फलने लगा।

लोगों का हज़ूम चमादडी से हटकर बड़े रास्ते पर इकट्ठा हो गया। पानी की लहरों और छोटे छोटे भँवर देखकर चौधरी गहरी सोच में डूब गए।

अब क्या होगा? बेला सिंह न उपस्थित लोग पर निगाह दौड़ाते हुए कहा।

‘होगा क्या? कोठे और हवेलियाँ गिर जाएंगी और खड़ी फसल तबाह होगी। चौधरी मुशी बोला।

सब चौधरी गुममुम और भयभीत कुत्ते की तरह गुर्राते हुए पानी को देख रहे थे कि चौधरी हरनाम सिंह भी वहाँ आ पहुँचा।

चौधरी अनथ हो गया। अगर बाढ़ का इसी तरह जार बना रहा तो गाँव का निशान तक मिट जाएगा।’

चौधरी हरनाम सिंह सामन फैल रहे पानी की ओर देखने लगा। लानू पहलवान हक हककर कहने लगा

‘गाँव और फसल में से केवल एक ही को बचाया जा सकता है।’

यह सुनकर सब लोग उसकी आर देखने लग तो वह कुछ ऊँच स्वर में बोला।

‘पानी गले-गले तत्र आ पहुँचा है । मेरे ख्याल में अगर तबिए स ऊपर परली जार बध काट दिया जाय तो गाँव बच जाएगा ।’

बध काटने का प्रस्ताव सुनकर कई चौधरी बिगड़त हुए बोले

‘भक्ती की फसल का एक डठल तब नहीं बचगा ।’

गाँव तो बच जाएगा । फसल तो हर दूसरे-तीसरे साल खराब होती ही रहती है । कभी ज्यादा बारिश से कभी पानी की कमी से ।

लालू पहलवान का तब सुनकर सब लोग चुप तो हो गए परन्तु उसका साथ सहमत नहीं हुए । वे गुमगुम खड़े बाढ़ से हो रही तबाही को धूर धूर कर देख रहे थे कि स्कूल की पुरानी और बोसीदा दीवार कीचड़ पर फिसले व्यक्ति की तरह जमीन पर बिछ गई और बाढ़ का पानी दवे पाँव स्कूल के आँगन में घुस गया ।

जितनी ज्यादा देर करोगे उतना ही ज्यादा नुकसान उठाओगे । अभी स्कूल की दीवार गिरी है थोड़ी ही देर में किसी का कौठा बठ जाएगा ।’

लालू पहलवान के ये शब्द सुनकर लोग चौंक गए और बध काटने के विषय में परामर्श करने लगे ।

कुछ बहस मुबाहसे के पश्चात् उन्होंने तबिए से परे उस स्थान पर बध काटने का निणय किया जहाँ चो की चौडाई दो अर्धों जरीब थी । गाँव की ओर चो के किनारे के निकट पानी में ठहराव था और बाढ़ का जोर दूसरे किनारे की ओर था । वहाँ से आगे आकर चो तबिए की ओर मुड़ आता था ।

सब लोग गलिया से होत हुए कुछ ही समय में बध के उस स्थान के सामने पहुँच गए जहाँ परले किनारे पर बध काटने का निश्चय किया गया था । मगू चौधरी हरनाम सिंह की हवेली से कई रस्से और तीन चार कुदाल उठा लाया । चौधरी हरनाम सिंह लालू पहलवान बेल सिंह जाट चौधरी मुशी चौधरी फत्तू महाशय तीथराम इत्यादि रस्से छाँटने और खीचकर उनकी मजबूती जाचने लगे । यह काम समाप्त करके वे सब इधर के किनारे पर शांत और परले किनारे पर ठाँठें मारत हुए पानी को देखने लगे ।

‘मेरा ख्याल है दो आदमी उधर जाएँ ।’ चौधरी हरनाम सिंह ने कहा ।

‘दो भेज दो ।’ लालू पहलवान ने उत्तर दिया ।

‘कौन-कौन जाएँगे ?’

चौधरी मुशी ने वहाँ पर खड़े युवकों पर नजर डालते हुए कहा । लालू पहलवान ने भी युवकों की ओर देखा और काली और हरब को बुलाकर बोला
‘क्या तुम दोनों चो पार जाओगे ?’

‘जूरर जाएँगे ।’ दोना ने उत्साह से उत्तर दिया ।

चौधरी हरनाम सिंह न हरदेव को कपड़े उतारने के लिए कहा ।

किसी को भेजकर सरमा का तेल मँगवा लो । तल मलकर पानी म उतरेंगे तो खारिश स बच रहग । गदे पानी स खारिश होने का डर रहता है ।

‘इतना समय कहाँ है । खारिश हो गई ता बाद म इलाज करा लिया जाएगा ।’

काली और हरदेव चो के किनारे पर आ गए । सबने मिलकर उनकी कमर के गिद रस्सा लपेटा और व दोना परमात्मा का नाम लेकर चो म कूद पडे । दोना एक-दूसरे का हाथ थामे आहिस्ता-आहिस्ता और फूँक-फूँक कर कदम उठात हुए आग बढ रहे थे । धार के निकट पहुँचकर पानी उनकी छाती तक पहुँच गया ।

‘रस्से मजबूती से पकड लो ।

लानू पहलवान ने सब को चेतावनी देते हुए कहा और धीमे स्वर म प्रार्थना करने लगा ।

धारे के पास पहुँचत ही पानी उनके गले तक आ गया । पानी का जोर इतना ज्यादा था कि उनके पाव जमीन पर नहीं टिक रहे थे । हरदेव और काली ने एक-दूसरे को बहुत मजबूती मे पकडा हुआ था । कई बार बड़ी लहर का पानी उनके सिर के ऊपर स गुजर जाता और व एक-आध क्षण के लिए लोग की नजरा से ओझल हो जाते । व पानी के बहाव के साथ साथ खिसरते हुए बहुत आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ रहे थे । किनारे पर सब लोग दम साधे खडे अपने-अपने ढग से परमात्मा स प्रार्थना कर रहे थे ।

अचानक ही काली और हरदेव उनकी नजरा मे आझल हो गए । उनका खून खृष्क हा गया और साँस जस गले म ही अटक गया था । चौधरी हरनाम सिंह घबराहट मे एकदम आगे बढ गया लकिन कुछ क्षणा के बाद पहले काली और उसके साथ ही हरदेव नजर आ गए । काली न हाथ उठाकर उह मकेत दिया ता सजन लम्बी साँस ली ।

कुछ देर क पश्चात काली बध पर चढ गया और उसन हरदेव का हाथ पकडकर उसे भी ऊपर खींच लिया । दूसरे बध पर खडे लोग ने तालियाँ बजाइ । कुछ जोश म आकर बकरे बुलाने लगे ।

चौधरी हरनाम सिंह के पीले चेहरे पर एक बार फिर सुर्खी बल्कने लगी । लानू पहलवान न एक रस्सा मे सपप जो कुदाल जडाँ, दिए और उस उस रस्से के साथ गाठ दे दी जिसका एक मिरा काली की कमर के गिद लपेटा था । लानू पहलवान न दोना कुदालें उठाकर काली को दिखाइ और पाती म फेंककर उसे रस्सा खींचने का सकेत दिया । काली रस्सा घाचकर कुदालें अपनी और

ले आया। उसने एक कुदाल अपने पास रख ली और दूसरी हरदेव का दे दी।

काली कुदाल उठाकर दूसरे किनारे की ओर देखने लगा। चौधरी हरनाम सिंह मुहू के गिद दोनों हाथ रख कर ऊँची आवाज़ में बोला

‘थोड़ा आगे जाकर बंध काटो।’

काली कुदाल लेकर उस जगह जाकर खड़ा गया और दूसरे किनारे की ओर देखने लगा। चौधरी हरनाम सिंह ने उसे थोड़ा और आगे बढ़ने का इशारा किया। फिर दो बंदम पीछे हटने का संकेत दिया। जब काली वहाँ पहुँचकर उसकी ओर देखने लगा तो उसने दोनों हाथों की मुठियाँ भीचकर बाँध काटने का संकेत दिया।

वे दोनों शत बाँधकर कुदाल चलाने लगे। दूसरे बंध पर खड़े लोग उनका उत्साह बढ़ा रहे थे। आधे घंटे तक कुदाल चलाने के बाद काली और हरदेव ने बंध में इतना शगाफ बना दिया कि उसमें से पानी बहने लगा। खेत में गिरता हुआ पानी बंध की मिट्टी को खदेड़ने लगा था। काली कुदाल से शगाफ का मुहू चौड़ा और गहरा बनाता रहा।

कोई एक घंटे के बाद आधा गज चौड़ा शगाफ तीन गज तक फल गया और उसकी हाथ-डेढ़ हाथ गहराई बंध की बुनियाद तक जा पहुँची थी। चो का ज्यादा पानी शगाफ में स जाता हुआ खेतों में फल रहा था। शगाफ में मिट्टी के बड़े-बड़े ढेले गिरते तो चौधरी मुहू दूसरी ओर फेर लेते। दूसरे किनारे के साथ-साथ पानी उतर रहा था। तब्लिए के पास भी पानी का जोर पहले से काफी कम हो गया। एक घंटे में गाँव के बराबर चो में हाथ डेढ़ हाथ पानी उतर गया।

दूसरे किनारे से लातू पहलवान ने काली का आवाज़ दी कि वह रस्ते के साथ दोनों कुदाल बांध दे। काली के ऐसा करने पर पहलवान ने रस्सा खींच लिया। इससे बाद हरदेव और काली पानी में उतर पड़े। पहले जहाँ पर पानी में ब नज़र नहीं आते थे वहाँ अब पानी उनकी छाती से नीचे तक रह गया था। वे दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े आसानी से चो पार करके दूसरे किनारे पर पहुँच गए।

दिन ढल बादल फट गए। जब कभी बादल की जोट से मूस बाहर आता तो धूप में वक्षा के गीले पत्ते गीले मकान चारा और फला हुआ मटमला पानी सब चमकने लगते। पूर में आनाश बिल्कुल साफ हो गया तो पश्चिम में जा रहे मूस की रोशनी में बर्षा से धुली हुई शिवालिक की पहाडियाँ बहुत ही भली मानस हान लगीं। ऐसा लगता था जैसे वे भी चो पार करके पानी में बहकर नज़दीक

खिसक आई हैं। डूबते सूर्य की किरणों में आकाश पर तैरते हुए बादलों के आवारा टुकड़े, शिवालिक की पहाड़ियाँ, उनसे बहुत पीछे हिमालय की ऊँची चोटियाँ सब स्पष्ट और सुनहरी नज़र आ रही थी। पक्षी तीन दिन तक अपने घोंसलों में बंद रहने के बाद चारा आर उड़ रहे थे। चिड़िया चोंच के पानी में नहाकर बघ या किसी बक की टहनी पर बैठकर पर फड़फड़ा रही थी।

गाँव में ऐसा वातावरण था जैसे वह किसी बहुत बड़ी प्रलय से बच गया हो। चोंच के पार अपने कोठा से बजीगर उनकी स्त्रियाँ और बच्चे गाँव आए तो लोगों ने उनका ऐसे स्वागत किया जैसे वे मौत के मुह से निकलकर आए हैं। अधिकतर चौधरी चोंच के पार अपनी फसल देखने के लिए खेतों में चले गए।

सब लोग वर्षा और बाढ़ से होने वाले नुकसान का लेखा जोखा करते हुए भेड़ों के बहुत ज्यादा शोर के बावजूद रात को गहरी नींद सो गए।

३८

सुबह तक बाढ़ का जोर खत्म हो गया लेकिन खेता में चारा और पानी भरा हुआ था। मक्की की फसल मिट्टी में जान से जमीन पर बिठ गई थी। खेता में बल खाती हुई पगडंडियाँ और रास्त पानी में डूबे हुए थे और जहाँ तक नज़र जाती थी हरियाली के नीचे बिछी हुई पानी की चादर वहीं मली और वहीं चमकदार दीख रही थी। ऐसा लगता था जैसे पानी ने गाँव के गिद घेरा डाल रखा हो।

जिन स्थानों से बाढ़ का पानी उतर गया था वहाँ पतल कीचड़ की माटी तह जम गई थी और उस पर रीगत हुए कीड़े मकौड़े और गट-गडोले पतली पतली राह बना रहे थे।

चोंच में पानी की पतली-भी लकीरें रह गई थी। उमका गदलापन खत्म हो चुका था और इसका पाठ वहीं पर पहले से जगान चौग और वहीं पर बम हो गया था। वहीं पर रत भर गई थी और वहीं पर गडड़े बन गए थे।

चौधरी हरनाम सिंह चुपचाप गाँव की ओर चल पड़ा। चौधरी मुशी और बिला सिंह भी उसके पीछे-पीछे हो लिए।

जब वे चमादडी के कुएँ के पास पहुँच तो मुहल्ले के बहुत स मद्र और बच्च मंडेर क इद्र गिद खड थ। कुएँ क आस-पास पानी ही-मानी था और सामने गली बीचड स भरी हुई थी। उह देखर बालटिया रक गइ और सब हाय चौधरिया को बद्रगी करने के लिए उठ गए। उनके पूछने पर कई लोग न एक साथ बोलना गुरु कर दिया कि कुआँ चो के पानी से भर गया था, इस खाली कर रहे हैं।

‘सब लोग तो कुआँ खाली नही कर रह हो। दो चार आदमी कुदाल लेकर आओ। जहा बध काटा था उसके आगे मिट्टी का ढेर बन गया है। उसम रास्ता बनाना है ताकि खेतो मे जमा पानी निकल जाए।’

चौधरी की बात सुनकर कुएँ पर खडे सब लोग एक-दूसर की ओर देखने लगे क्योकि उनके सामने सबसे बडा प्रश्न कुआँ साफ करने का था। लेकिन जब चौधरी ने सतू बतू, जीतू और बग्गे के नाम पुकारकर आने के लिए कहा तो उहनि बालटिया छोड दी और अपने घरी से कुदाल लेकर चौधरियो के पीछे चो की ओर चल पडे।

बच्चो की एक पल्टन उनके पीछे हो ली। जब वे उनके बहुत नजदीक पहुँच जात तो बला सिंह पीछे मुटकर ऊँची आवाज मे उह धतकारता तो वे भाग जाते लेकिन कुछ क्षणो क बाद फिर उनका पीछा गुरु कर देत।

बध पर जाकर चौधरी लोग वहाँ रक गए और चमार बध के शगाफ के सामन रेत के ढेर पर जाने के लिए खेतो म उतर गए और पानी म छप छप करत हुए आगे बढत रहे। धूप से पानी मामूली-सा गम हो गया था और मक्की के पत्ते तलवार की धार की तरह तेज थे। बध पर खडे चौधरी मक्की के हिलते पत्तो को देखकर उनकी प्रगति का अनुमान लगा रहे थ। जब पत्ता की खडखडाहट बाद हो जाती तो व समझ जात कि चमार कही रक गए हैं और वे कुछ क्षणा तक प्रतीक्षा करन के बाद उह आवाजें देत।

उनकी आवाजें सुनकर सतू को क्रोध आ गया और वह बदले की भावना स मक्की के पौधो को रौंदता हुआ चलन लगा।

यह चौधरी मुशी का खेत है। जीतू ने सतू से यह बात इस अभिप्राय के साथ कही कि वह उसके चौधरी की फसल का न उखाडे।

किसी साले का हो। मुझे सिफ इतना पता है कि इस खेत की फसल मरे घर म नही जाएगी। जीतू ने खिन स्वर म कहा।

लम्बा चक्कर काटकर वे रेत के ढेर पर पहुंच गए। उन्हें देखकर चौधरी प्रमत्त हो गए और हाथ के सकेता के साथ-साथ जादेश देने लगे। थोड़ी देर में उन्होंने रेत के ढेर में नाली खोद दी और उसमें से पानी गढ़े में आने लगा। जीतू और सतू कुछ समय तक वहां खड़े बहुत पानी को देखते रहे और फिर गांव की ओर आ गए।

चौ म पानी की पतली लकीर चौड़ी हो गई और बच्चे उसमें दौड़ते हुए क्लिकारियाँ भरने लगे। चौधरी बघ से नीचे उतरे और गांव की ओर आते हुए उन्होंने निणय किया कि बघ के शगाफ को शीघ्र ही भर देना चाहिए क्योंकि पानी सूखने पर फसल की नलाई गुरू हो गई तो यह काम बीच में ही रह जाएगा। न तो चौधरिया को अवकाश हागा और न चमार ही यह काम करेंगे। चमादडी के कुएँ के पास से गुजरते हुए उन्होंने वहां उपस्थित सब लोगों से कहा कि कल शाहबेला (ब्रक फास्ट) के बाद कुदाल और टोकरिया लेकर वहाँ पहुंच जाएँ।

चौधरिया के इस आदेश में चमारों में खुशी की लहर दौड़ गई। उन्हें प्रसन्नता थी कि बाढ़ और वर्षा के बावजूद अब उन्हें बेकार नहीं बैठना पड़ेगा। लेकिन साथ ही हैरानी थी कि उन्हें शाहबेले के बाद क्यों बुलाया गया है। अनुमान के घोड़े दौड़ान पर उनके मन में कई प्रकार की शक़ाएँ भी सिर उठाने लगीं। लेकिन जब ताय बसंत ने उन्हें यह तथ्य निकालकर बताया कि उन्हें निहाडिया क नक़द पसे मिलेंगे तो उनके मन में प्रफुल्लित हो गए और वे पहले से भी ज्यादा जोश से बालटियाँ खींचकर कुएँ से गढ़ा पानी निकाने में जुट गए।

३९

चमादडी के लोग अपनी टोकरिया और कुदालें लेकर शाहबेले से पहले ही दध पर पहुंच गए। मुक्क एक दूसरे पर भिट्टी फेंकते हुए आपस में खिलवाड़ करने लगे। अघेड और पकी उन्न के पुरपबघ पर खड़े होकर शगाफका सर्वेक्षण करते हुए उसमें भरे पानी की गहराई का अनुमान लगाने में व्यस्त हो गए। तब

धूप के बावजूद उन्हें गर्मी महसूस नहीं हो रही थी और वे प्रतीक्षा भरी नज़रों से बार-बार गाव की ओर देख रहे थे ।

जब उन्होंने चौधरी हरनाम सिंह, लालू पहलवान, बला सिंह, चौधरी मुशी और महाशय तीर्थ राम को अपनी ओर आत दखा ता उनमें खुशी की लहर दौड़ गई । खेल खिलवाड़ और गपशप बढ़ हो गई और वे आँखा पर हाथा की छतरियाँ बनाकर उनकी ओर यूँ देखने लग जस उनके बदन गिन रहे हा ।

चौधरी जब चो म उतर आए तो कुछ लाग उनकी ओर बढ़ गए जस अगवानी करना चाहत हा । वे बध पर आकर आपस म परामश करने लग कि शगाफ का भरने के लिए मिट्टी कहाँ से खोनी जाय । चौधरी हरनाम सिंह ने सुझाव दिया कि मिट्टी परले किनारे की ओर से खोनी जाए क्योंकि इससे चो का रुख परली ओर हो जाएगा और बध का यह हिस्सा भविष्य म बाढ़ की टरतबूद से बचा रहेगा । लेकिन बेला सिंह को यह सुझाव स्वीकार नहीं था । बहुत देर तक बहस मुबाहसे के बाद वे इस निणय पर पहुँचे की मिट्टी चो के बीच से खोदी जाए ।

फसला होते ही काम तनदही से बुदालें चलाने लगे और मिट्टी स टोकरियाँ भर कर शगाफ म फेंकने लगे । चौधरी हरनाम सिंह ने उन पर नज़र डाली और बेला सिंह से बोला

ऐसा लगता है कि सब चकार नहीं आए हैं । इन लोगों को तो शगाफ भरने म छ सात दिन लगेंगे । तीन चार दिन के बाद फसल की नलाई भी जरूरी है । बेला सिंह ने उनकी गिनती करन का प्रयास करते हुए कहा

‘हाँ, सारा मुहल्ला नहीं पहुँचा है ।

चौधरी हरनाम सिंह ने ताए बसत का अपने पास बुलाकर पूछा

‘बसतया बाकी लोग कहाँ हैं ?’

‘मेरे ख्याल म तो सब आ गए हैं । बसत न सरसरी नज़र डालत हुए कहा ।

‘नहीं, सब नहीं हैं वाली नहीं है जीतू नहा है बग्गा नहीं है ।

चौधरी हरनाम सिंह को नाम गिनाता सुनकर कुछ चमार उसक पास आ गए और गिनती पूरी करन लग ।

‘बग्गा नहा है भजना नहीं है पीरी नहीं है निक्कू नहीं है मगू नहीं है ।

‘मगू का छाटा वह भरी हवनी म काम कर रहा है । तुम जाकर सक्का बुला लाओ उन्हें कहना कि टोकरियाँ लेकर जल्दा ही यहाँ पहुँच जाएँ ।

‘चमारनें घरा म बठी अपन बफा स जुएँ निकाल रही होगी, उह भी बुला लो । वे टोकरिया म मिट्टी भरकर फेंकती रहनी ।’ बला सिंह ने हँसते हुए मुझाव दिया । चौधरी हरनाम सिंह ने गाव की ओर दौड रहे अमरू को रोक लिया और आवाज दी कि चमादडी म स्त्रिया स भी कह दे कि वे टोकरियाँ लेकर यहाँ पहुच जाएँ ।

‘अमरू, मरी माँ को कह देना अपनी मामी स कह देना अपनी चाची ने कह देना ।’ एक साथ ही कई आवाजें उठी और व अपन मन म सोचन लगे कि यदि बाढ आने ने इस प्रकार काम मिल सकता है ता प्रतिदिन बाढ आनी चाहिए ।

थोड़ी देर के बाद काली जीतू बग्गा और मुहल्ल के अय लोग आत दिखाई दिए । उनके पीछे कुछ स्त्रियाँ भी सिरा पर टोकरिया उठाए आ रही थी । उह देखकर बध पर काम कर रह लोग म कोलाहल मच गया और कुछ क्षणा के लिए कुदाल रुक गए । उनके आन क बाद वे फिर मिट्टी खदेड कर शगाफ म फकन म ब्यस्त हो गए ।

चौधरी बध पर खडे उन्हे आदेश द रहे थ और अगर चमारा के हाथ और कदम सुस्त पड जाते तो वे गाली गलाच पर उतर आत । उनम से काई फसल के नुकसान का जिक्र करता तो शेष लोग उसने साथ सहमत होन हुए यह कहकर बात खत्म कर देत कि परमात्मा का नुक है कि चमादडी बच गई । इन कौटे पानी म बह जाते ता सिर छिपाने के िए भी जगह न रहती ।

सूय सिर पर आ गया तो चौधरी चमारा का काम जारी रखने का आदेश दकर गाव की ओर बढ गए । उनके पीठ मोडत ही चमारो न कुल्ल और टोकरिया फेंक दी और हाँफने हुए रेत पर बठ गए । गीली रेत स उठ रही भाप और उमस से उनके शरीरा म विचित्र-मी बेचनी फल रही थी । कुछ मिले-मिलाएगा या बगार म ही काम ले रह है ? जीतू ने पूछा ।

‘चौधरियो ने कुछ कहा तो नहीं है लेकिन मेर ख्याल म वे नकद दिहाडी देंगे ।’ सतू ने प्रसनभाव से उत्तर दिया ।

शाहबला तो दिया नहीं इसलिए पूरी दिहाडी के पसे ही देंगे । बतू ने समयन किया ।

कुछ कहा तो हागा ?’ काली ने पूछा ।

एक आदमी का मामला हो तो कह भी दत । सारे गाँव का मामला है इसलिए पसे जमा करके ही वांटेंगे । ताए बसत न सब की शकाआ का समाधान करत हुए कहा ।

काली कुदाल लेकर उठा तो जीतू ने उसका हाथ पकड़ लिया ।

'हम दिहाड़ीदार ह काम की क्या जल्दी है । सौ टोन्नी फकोगे तो भी उतने ही पस मिलेगा पंचाम फेंकोगे तो भी उतने ही ।

काली ठिठक गया और धीरे धीरे सब लोग रोटी पाने और प्यास बुचाने के लिए चमादडी की ओर आ गए ।

दिन ढलने के बाद शगाफ की पूर्ति का काम एक बार फिर खोर शार में आरम्भ हो गया । साय के समय बध पर लोगो की अच्छी खासी भीड़ लग गई । चौधरिया के छोकरे डार डंगर को संभालने के बाद वहाँ जमा हो गए । उन्होंने मिट्टी खोदने का काम स्वयं संभाल लिया और चमार केवल मिट्टी ढोने में लग गए । वे आपस में शन बांध कर मिट्टी खोदने लगे और चमार दौड़-दौड़कर टोकरिया फेंकने लगे । बध पर खड़े चौधरी कलकारियाँ मारते हुए शोर मचाने लगे । शगाफ का पानी चो की ओर फल रहा था लेकिन रेत उस अत्यन्त ब प्यासे की तरह पी रही थी ।

सूर्यास्त तक शगाफ लगभग एक चौघाई भर गया । चौधरिया के मन प्रफुल्लित हो उठे और वे चमारा को सवेरे शीघ्र ही आने की ताकीद करके गाँव की ओर बढ़ गए । चमार वही खडे हैरत से एक दूसरे का मुहू तकने लगे कि दिहाड़ी के पसे कब मिलेंगे । चौधरी चो के पार चले गए तो चमारा में खुसर फुसर शुरू हो गई और ज्यो ज्यो चौधरियो से उनका फासला बढ़ता गया उनकी खुसर फुसर शोर में बल्लती गई और पसे न मिलने पर निराशा क्रोध में परि वर्तित होन लगी । वे हताश से रेत पर बठकर चौधरियो को गालियाँ देने लग ।

धीरे धीरे लग बुदबुदात हुए चमादडी की ओर चल पडे । सबके सामन यही प्रश्न था कि उह आज की दिहाड़ी के पसे मिलेंगे भी या नहीं—यदि मिलेंगे तो कब ? ताया बसता अब तक चुप था । जब कई लोगो ने उसस इस प्रकार पूछ ताछ शुरू की—जस उसकी जवाबतल्बी कर रहे हा—तो ब् भटक उठा

'यू तो हर गरीब आत्मी जाम से ही ओठा होता है लेकिन तुम कुछ ज्यादा ही हा । जाम की गुठली जमीन में दबात ही चाहत हो कि उस पर पत्त लगना शुरू हा जाए और तुम उम तोड़कर पा ला । तुमने आज काम किया है फल पस मिल जाँगे । कल नहीं मिलेंगे तो परसा मिल जाँगे ।

ताया, उह बनाना तो चाहिए था । काम में कम यह बता दन कि दो चार या पस न्नि के बात पस देंगे । सतू ने कहा ।

'तून उनम मांग प ?'

नहीं ।

‘तो फिर शोर क्या मचा रहा है तुम्हें काम नहीं मिलता तो रात हो, अगर मिलता है तो रोत हा ।’

ताए बसन्त की बातें सुनकर थ चुप तो हो गए लेकिन उनकी तसल्ली नहीं हुई । काली उनके उदास चेहरा को देखकर बोला

‘शहर में पन्द्रह दिन के बाद मजदूरी मिलती है लेकिन फुटकर काम करने वाला को रोज के वैसे रोज मिल जात है ।’ काली की शह्र पाकर ताया बसन्त शोर हा गया और सत्रका वेतुकी सुनाने लगा । लोग के तेवर एक बार फिर बदलने लगे तो काली बोला

‘काई अंधेर-नगरी तो नहीं है । चौधरी बगार अपने खरीदे हुए कमीन या चमार से ले सकता है, सारे गांव से नहीं ले सकता । कल शाम को अगर बे पस नहीं देंगे तो हम आप माग लेंगे ।’

ताया बसन्त अपनी विरादरी के ओढ़पन को राना हुआ आगे निकल गया और अंध लोग कुछ अपने आप में लज्जित और कुछ चिन्ता-ग्रस्त उसके पीछे-पीछे चमादडी की ओर कदम उठाने लग ।

४०

दा दिन तक चमादडी के सब मद शगाफ भरने में लगे रह । व चौधरिया के जाने के बाद आपस में लड़त झगडत लेकिन उनमें में किसी में भी इतना साहम न होता कि चौधरिया से तिहाडी के बार में बात करें । रह रह कर वे ताए बसन्त का कोसत जा स्वयं या ता एक आर बठा हुक्का गुडगुडाता रहता या फिर उह आदेश दता रहता ।

तीसरे दिन लाग नित्यप्रति की भाति शाहवल के पश्चात बघ पर पहुच गए लेकिन व अपनी कुदालें और टोकरियाँ रानी के नीचे दबाकर बठे थे । बघ का शगाफ आधे से ज्यादा भर गया था । सब की नजरें गांव की ओर लगी हुई थी । ताया बसन्त चुप था और उनकी अनाप शनाप बाना को बिना किसी प्रतिक्रिया के सुन रहा था ।

जब गाँव के बाहर उह तीन चार चौधरी बघ की ओर आत दिखाई दिए तो उनमे अजीब सी बेचनी फल गई। भय से उनका निश्चय डंवाडोल होने लगा और व ताए बसत के इद गिद एकत्रित हो गए।

'ताया, पिछली तीन दिहाडिया व पँस मिलेंगे तो हम काम करेंगे। सतू न कहा। इसके बाद हर व्यक्ति ने ताए बसत स यही बात कही। वह फिर भी चुप रहा तो बतू भडक उठा

ताया क्या त् अतर्ध्यान हो गया है ? इतनी बार किसी मुर्दे को बुलाते तो वह भी हूँ हाँ करने लगता।' ताए बसते ने उसके कटक का भी कोई उत्तर न दिया।

ज्या ज्या चौधरी निकट जा रहे थे चमारा म भय और बेचनी बढ़ रही थी। उनम से कुछ ने अपनी कुत्तों ऐस सँभाल ली जस मिट्टी खोदने के लिए तयार हा।

काली अब क्या करना है। तीन दिन तक इस उम्मीद पर काम करत रहे है कि दिहाडिया के पस मिल जान पर उधार चुका दगे। जीतू त चिंतित स्वर म कहा। जब स काली न चौधरियो का काम करना शुरू किया जीतू ने उसे बाबू जी कहना बंद कर दिया था। काली हाथ पीछे फँक कर जोर टाँग पसारते हुए बटा रहा। जीतू न अपनी बात फिर दोहराई तो वह पिन स्वर म बोला ताए बसन्त से पूछो।

चौधरी बहुत निकट आ गए तो चमारा म भय की भावना तास बन गई और वे एक-दूसरे की ओर दखत हुए उठ खडे हुए। ताया बसता विचारमग्न बटा रहा। उसके माथे पर सब नसों तन गई थी। चौधरी मुग्गी ने चमारा का बेकार और बकरार दख कर कहा बकार क्या बडे हा। क्या सलामी लन के बाट काम शुरू करोग ?

चमारा म मामूगी सी हरकत हुई लेकिन उनक कुदाल और टोररियाँ रेत म पडी रही। चौधरी हरनाम सिंह न उनक बन्ले हुए तवर देखकर कहा य बटा नामुराद बौम है। इनरी सब आन्तों भँस म मिलती हैं। गिर पर पडे रहा ता यत् हाथ दिगाने रह्य। नजर उधर कर लो तो बठ जाते हैं।

चौधरी उनक बीच म आ पडे हुए ता ताया बसता भी अलसाया-गा उठ बटा। चौधरी मुग्गी कुछ नुज्ज स्वर म बाग

रगनया यनी क्या अम्न (अन्धिया) चुनन आण हा जा इस तरह बठ हा। उगी काम करा। गूरज पहे ही गिर पर आ गया है।

सब चमारा का नजरें ताए बसत पर लगी हुई था। व मन ही-मन म

बापते हुए अधछुले हाठा से उसकी आर दख रह थे ।

चौधरी हरनाम सिंह ने सनका मा की गाली देत हुए कहा

य तो जूते के यार है । और फिर वह चमारा की आर दखता हुआ क्रुद्ध स्वर म बोला

तुम्हारी क्या नीयत है ?'

काली अब भी हाथ पीछे फक और टागें पसारकर बठा था । ताया वमता आग बढता हुआ बोछा

'चौधरी बात यह है कि तीन दिन से मारी चमादडी यहा नाम कर रही है लेकिन किसी को अभी एक दिहाडी के भी पसे नही मिले हैं । जो आदमी रोज का रोज कामकर खाता है, उसे तीन दिन मजदूरी न मिता वह कहीं से खाएगा ?'

तुम्हें किसने कहा था कि इस काम के पसे मिलेंगे ?' चौधरी हरनाम सिंह ने तरख स्वर म कहा और फिर वह चौधरी मुशी को सम्बोधित करता हुआ वाला

इनके दिमाग म जरूर कोई-न-कोई कीडा है जो कभी कभी इस किस्म की चानें करन लगते हैं ।

चौधरी मुशी भी भडक उठा और मोटी सी गाली देता हुआ बोला

कोइ दिहाडी नही मिलेगी । उठो काम करो वरना मार मार कर एक एक का सिर तरबूज के खप्पर जसा बना दूगा ।

चौधरी, गालिया बाद म दे लेना, पहले मेरी बात तो सुन लो । ताए वसत े समय से कहा ।

क्या बात सुनू तरी । सीधी तरह काम करो वरना । चौधरी मुशी ने जूता उतारत हुए कहा ।

चमादडी से चो की ओर जा रही स्त्रिया शोर शराबा सुनकर वापस पलट गई और उहाने मुहल्ले म कुहराम मचा दिया । बाबा फत्तू लाठी टेकता हुआ बध की ओर चल पडा । गाँव के अय चौधरियो को इस घटना की सूचना मिली तो वे भी बध की ओर भाग गए ।

जब व बहा पहुचे तो शोध के कारण चौधरी मुशी क मुह स झाग वहने लगी थी, और उखल, सास, फूल, दूध, थ, और वह चमारा को घमकियाँ दे रहा था । चमार सहमे हुए खामोशी से सब-कुछ सुन रहे थे । बाबा फत्तू गिरता पडता बहा पहुचा और चौधरिया की बतुकी गालियाँ सुनकर उन्हें हाथ से चुप रहने का सकेत करने लगा । लेकिन चौधरी गालियाँ देत हुए वह रहे थे कि

काम करने से इन्कार करने की चमारा को हिम्मत कस हुई ।

काली बतुकी गालिया सुनकर क्रोध में फूक रहा था । वह उठकर चौधरिया के पास आ गया और ऊँचे स्वर में बोला

काम करने से कौन इन्कार कर रहा है ? हमन सिर्फ अपनी दिहाडिया के पसे मांगे है । इसमें इतना गाली गलोच करने की क्या बात है ?

दिहाडी किस बात की ? यह बध अपन-आप नहीं टूटा था । इसे गाव और चमादडी को बचाने के लिए तोडा गया था । हमारी कई घुमाआ फसल बरबाद हो गई । बपास की फसल देने वाले खेतों में गन्त विछ गई और वहाँ अब घास भी नहीं उगेगी । और तुम लोग इतने बशम हो कि बध में पडे शगाफ में मिट्टी भरने के लिए पसे मांग रहे हो । चौधरी हरनाम सिंह ने उत्तजित स्वर में बोला । चमारा में से किसी के पास कोई उत्तर नहीं था ।

ताया बसता और बाग फत् चुप थे । बाकी चमार खाली खाली नजरों से एक-दूसरे की ओर देख रहे थे । काली कुछ बोलने लगा तो चौधरी हरनाम सिंह ने उस बहुत क्रुद्ध स्वर में टोक दिया

‘य सब तरी शरारत है । बकीलो की तरह बहस कर रहा है ।

‘चौधरी जी इसरी बात तो सुन लो । बागे फत्तू ने कांपती हुई आवाज में कहा । काली क्रोध में भूल गया कि वह क्या कहना चाहता था । वह चुप रहा तो बाबा फत्तू नम्र स्वर में बोला

‘चौधरी जी आप की बात ठीक है । हम आप लोगों के चमार हैं । हम आप नहीं बचाएंगे तो और कौन बचाएगा । लेकिन यह तो साचो कि अगर आप दिहाडी नहीं लेंगे तो हम लोग छाएंगे वहाँ से । एबाध तिनकी बात होती तो ठीक था लेकिन इसमें छ सात दिन लग जाएंगे । इतने तिनके लिए गरीब आत्मा अपन घर से रोटी खाकर बगार नहा कर सक्ता ।

फत्तू तरा तिनका भी खराब हा गया है । तू सयाना है कुछ अबल का बात कर । चौधरी हरनाम सिंह ने डाँटते हुए कहा ।

सब चमारा का चौधरी हरनाम सिंह का लहजा बहुत चुग लगा परन्तु वह चुप रहे । काली पीछे हटकर रत पर जा बठा । बाग फत्तू रहाँगा-भा होकर चुप हा गया । चौधरी मशी एक बार फिर गालियाँ देने लगा और बफरी हुई आवाज में बोला

‘सात-आठ तिन तर बग भी तुम लोग का काद काम नग हागा । मेना म पानी भरा है मशी की मलाई बढ रहेगी । उन तिनका म यूँ भी तो घाँगा बठकर अनन परा में गान ।

‘चौधरी जी, आपकी बात ठीक है लेकिन खाली बठने पर आदमी दो रोटियाँ खाकर दिन काट सकता है। लेकिन जो आदमी सारा दिन कुदाल चलाएगा जोर टोकरी ढोएगा उसका दो रोटियाँ स कुछ नहीं बनगा और फिर आप मालिक लोग हैं आपको किसी चीज की कमी नहीं है। हमारे लिए तो एक दिन काटना भी मुश्किल है।’ ताए बसत न कहा।

लालू पहलवान अब तक चुप खड़ा था। वह बहुत गंभीर और उत्तम मासकी बातें सुन रहा था। जब उमन देखा कि बात बतनी जा रही है तो वह चौधरिया को सम्बोधित करता हुआ बोला ‘एमा करा कि हर घर अपने-अपने चमार को पसे या अनाज दे दे। ज्यादा शार शरावे से काइ फायदा नहीं।’

लालू पहलवान की बात सुनकर चौधरी हरनाम सिंह उत्तेजित हो गया।

‘चमारो का दिमाग खराब क्या न हो उह शह दने वाले जो मौजूद है।

मैं किसी को शह नहीं दे रहा, मैं तो सिर्फ हक की बात कह रहा हूँ।’

लालू पहलवान ने कहा। ‘बस जो फसला आप लोग करग, वही मेरा फसला होगा।’

चौधरी हरनाम सिंह न अपने इद गिद खडे चौधरिया पर नजर दौड़ाई और हर मुहल्ले के दा चार आदमिया को उपस्थित पाकर बोला

‘तुम लोग एक मुटठी हा जाओ तो चमारो को एक लिन म सीधा किया जा सकता है लेकिन मुश्किल यह है कि हम लोग म ही शह देने वाले मौजूद हैं।’

उसने चमारो की ओर बतत हुए कहा

‘देखो तुम आग से खेल रह हो। भलमानसा की तरह काम शुरू कर दो वरना तुम्हारी कुत्तो से भी बुरी हालत करूँगा। कान खोलकर सुन लो यह काम तुम्हें करना है और इसम छ दिन लगे या दस एक पसा नहीं मिलेगा। चमार खामोश रहे तो चौधरी हरनाम सिंह न एक बार फिर उह ललकारकर कहा और ताए बसते से बाला

बसतया क्या मशा है तुम्हारी ?

‘चौधरी जी, पसे क बिना काम करके हम घाएँग वहाँ से ?’

अपनी मा के सिर स खाओ मुझे इससे काई मतलब नहीं। जो मैं पूछता हूँ उसका जवाब दा।

मैं क्या बताऊँ। सब लोग यहा खडे ह इनम पूछ लो। ताए बसते की मजरें वारी-वारी सब पर घूम गइ।

सब चमार खामोश खडे थे। चौधरी हरनाम सिंह जिसकी ओर देखता वह मिर झुका लेता और उसके प्रश्न का कोई उत्तर न दता। चौधरी न काली की

घरती घन न अपना

ओर देखा तो वह सशक्त स्वर में बोला

‘मैं बिना पस के काम नहीं करूँगा।’ काली ने अपनी टोकरी उठा ली।
चौधरी हरनाम सिंह ने उसे गाली दी तो वह भड़क उठा

चौधरी यह गालियाँ मुझे भी आती हैं। मुझे संभालकर बात कर। हम
मेहनत बचत हैं, इरजत नहीं। भाएँ वहनों सबके घर में हैं।’

यह सुनकर अचानक चौधरी भी श्रोत्र में आ गए। चौधरी मुझी यह सोचकर
आगे पानी हो रहा था कि गाँव के चमार को इतना साहस कैसे हुआ कि उनके
सामने मुझे खोले। वह दात पीसता हुआ बोला

इन सबको गाँव से निकाल दो।’

इनका खेत में आना जाना बन्द कर दो।

इनकी औरतें खेतों में आएँ तो उन्हें वहीं घेर लो।

‘चमार खेत में आएँ तो साले को जान से मार दो।’

कुत्ते चमारा तुम एडिया रगड़ रगड़ कर मरोग। हम तुम्हें भूखा मार
देंगे।’ कई चौधरी एक साथ झोल उठे।

‘चौधरिया आत्मी किसी का राज़क नहीं है। हमारा राज़क भी वही है
जो तुम्हारा है। तुम लोगो को ज़मीना का अहकार है। हमने तुम्हारी बहुत
बातें सुनी हैं। लेकिन हर चीज़ की हद होती है। हम पत्यर नहीं हैं हम
भी इंसान हैं।’ काली ने आगे बढ़कर उत्तेजित स्वर में कहा।

बाबू पत्तू ने काली का समयन किया तो बला सिंह बोला

पत्तू मर तो तू बस ही जाएगा। क्या अपना खून किसी दूसरे के गिर
पर घोपना चाहता है।

चौधरी, रहती दुनिया तक ज़िंदा रहने का पन्ना तरे पाम भी नहीं है।
ताएँ बमत न कहा।

बमतया तरी यह मजा कि हमारे सामने मुझे खोले। चौधरी मुझी ने
पाँव से जूना उतारत हुए कहा। काली टोकरी फेंककर ताएँ बमत के सामने
जा घड़ा हुआ। लालू पहलवान मामूग बड़न दखकर सबको शान्त करने का यत्न
करने लगा। चौधरी मुझी उम एक आर घबलता हुआ बोला

‘मैं देखना हूँ काम करने से काम इन्कार करते हैं?’ वह अपने पाम छूटे
चमार का कपड़े में पकड़ कर शमाफ की आर घबलने लगा। तब उगने काली
की आर जूना लहंगत हुए काम करने का कहा ता वह दड़ म्बर में बाग

‘मैं बिना पसा के काम नहीं करूँगा। मैं किसी के पाम गिरवी नहीं पड़ा
हूँ जा बगर का’।

काली अपनी टाकरी और कुल्ला उठाकर गाव की ओर चल पडा। उसे जाते देखकर अय चमारो का साहस भी बढ़ गया और वे उसके पीछे पीछे आने लगे। चौधरियो न उन्हें जात देखा तो वे आघ स वापने लगे। चौधरी हरनाम सिंह ने बाइकाट की धमकी दी तो ताया बसंता बोला

'चौधरिया, अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो य भी कर देखो।

चौधरिया का क्रोध शिखर तक जा पहुँचा। वे नई-नई धमकियाँ और गालियाँ दे रहे थे और चमार उत्तर म बुदबुदाने हुए चमादडी की आर बर रहे थ।

४१

बध स चौधरी महाशय की दूकान पर आ गए। व क्रोध म अनाप शनाप बोल रहे थ लेकिन उनम से किसी का निमाग भी स्पष्ट नहा था कि नई स्थिति का कसे सामना किया जाए। महाशय तीयराम चौधरिया को और भी ज्यादा भटका रहा था और छजू शाह उस विचार म मग्न था कि वह इस स्थिति स कसे लाभ उठा सकता है। डाक्टर विशनदास बहुत उत्तेजित था और हुक्के की नय को हाठा से अलग करत ही उसे दोबारा मुह से लगा रता।

छजू शाह न लानू पहलवान को रुप देखा ता निकट जाकर उसके कान म बोला

पहलवान जी तुम क्या चुप हो ?

'मैं क्या कहूँ। ये लाग हवा म लाठियाँ घुमा रह है। छजू शाह हाठो मे मुसकरा दिया और इस प्रतीभा म बठा रहा कि चौधरी चुप हा तो बह बात करे।

शोर शरावा कुछ कम हाता तो कोई और चौधरी बहा आ जाता और नए सिरे मे गाली गलोज गुरू हो जाता। वहा पर इतने लोग इकट्ठे हो गए कि महाशय की दूकान व चबूतरे पर तिल फेंकने की जगह न रही। प्रत्येक व्यक्ति चमारो को तहस नहस करन की बात कर रहा था। उन्हें दण्ड न के नए नए तरीका को सुना रहा था।

लानू पहलवान उठ कर खडा हो गया और सबका चुन रहन का संकेत

घरती घन न अपना

२७३

करना हुआ और तब तुम मरना मरना मरना

मेरी बात मानो तो हमारा का बुलाने मामला रफा-रफा कर दो। टोली
न गिर बगनी तरह सभी कुछ नहीं बिल्का है। उम्हारे बिना मुझाग
है और मुझारा उक्त बिना मरना।

तब तुम पहलवान की आवाज प्रतिराध क नुस्खा म दूब गई। चौधरी
एक बार फिर भय उठ। छजू गाह इस भयान का उद्युक्त जानकर बोला

‘चौधरिया, मामला आप लाया और हमारा का है। मुझे बोन म दखल
न का कोई हक नहीं है। फिर मैं जाता उम्हरे कटूना कि मुझ का पूरा और
बोध को छोड़कर यह माफो कि आप क्या करना है?’

छजू गाह की बात सुनकर चौधरी और भी खाना भडर उठे और बहुत
म लाग एक साप बोलन लग।

चौधरी हरनाम सिंह न उहें शान्त रहन का दसारा सिचा और एक-एक
मरु पर जार देना हुआ बाला

छजू गाह ठीक कहा है। इस तरह शोर मचान से कोई फायदा नहीं।
अब यह साफो कि हमारा को दण्ड क्या देना है?’

चौधरी हरनाम सिंह न अपनी बात समाप्त करके लखू पहलवान की ओर
दया तो वह एक बार फिर मम्भीर स्वर म बाला

मेरी मानो तो हमारा को बुलाने मामला रफा-रफा कर दो। मने
उस्ताद ने यही पढाया था कि झगडे को बढ़ाना नहीं, पटाना चाहिए।’

चौधरी जोग शार मचा रहे थे कि घड्डम चौधरी वहाँ आ पहुँचा और
उन सबको गुपगपाडा करत देखकर बोला

क्या हो गया है जा कौआ की तरह काँ काँ कर रहे हो।’

चौधरी हमारा से झगडा हो गया है। महाशय न कहा।

तो धान जाकर रफ्ट दख कराओ यहाँ क्या बठे ही?’ घड्डम चौधरी
सब पर उचटती सी नजर डालता हुआ बोला

तुम्हारे साथ अपने गाँव के चमार ही झगडा करन लग हैं तो बाकी गाँव
के जाट तुम्हें कच्चा खा जाएँगे।

घड्डम चौधरी की बात सुनकर लोग एक धार फिर उत्तेजित हो गए।
चौधरी मुशी भी मुझ से बोल-बोलकर थक गया था। वह गला साफ करता हुआ
बोला

खेता म जाने पास छोड़ने और गाँव की गलिया म जान से मना कर दो।

‘आज से कोई आदमी उहें अपन घर न आने दे। उनसे कोई काम न

कराए, साला को दो दिन फाके काटने पडे तो माये (माँ बाप) याद आ जाएंगे।' चौधरी हरनाम सिंह ने कहा।

उनका चमालाडी से बाहर जाना जाना बदकर दो। एसी नाका बंदी करो कि साले टट्टी-नेशाव करन के लिए जगह न पा सकें।' बला सिंह ने मुझाव दिया।

तुम उह चो और बडे रास्त पर आन जाने से नही राक सकन। ऐसा करना जुम है।' घडडम चौधरी ने कहा।

छज्जू शाह चौधरिया का निणय करत देखकर वाला, 'आप लाया ने ता चमारो के बाईकाट का फसला कर लिया है लेकिन हमारे बारे म क्या सोचा है। आप उह बाहर नही निरलन देंगे ता हमारे डंगर भूख मर जाएँगे। हम उह चारा कहा से डालेंगे। हम अपनी दूकानदारी करेंगे या डंगरा के लिए घास खोदते पिरगे।' छज्जू शाह ने महाशय की ओर देखत हुए कहा।

छज्जू शाह बिल्कुल ठीक कह रहा है। आप दाना के झगडे म हमार जानवर भूखे मर जाएँगे। महाशय बोला।

चौधरी जोश मे थे। बला सिंह ने छज्जू शाह से कहा कि वह अपनी भस के लिए उसके गेत से बरसम काट लिया करे। जिस दिन वह न जा सके उमका लडका बरसम का गट्टा फेंक जाया करेगा। चौधरी हरनाम सिंह ने महाशय के लिए ऐसा ही प्रबध कर दिया तो छज्जू शाह और महाशय चमारा को गालियाँ देत हुए चौधरिया का ताकीद करने लगे कि उह ऐसा सबक मिखाएँ कि व भविष्य म उनके सामने आँख उठाने का भी साहस न कर सकें।

डाक्टर विशनदास अब तक हुक्के से चिमटा हुआ था। महाशय ने हुक्के की नय उसके हाथ से खींचते हुए कहा

तू तो हुक्क के साथ चीचड की तरह चिमट गया है।

इस बात पर हल्का सा ठहाका गूजा और चौधरी एक एक करक वहाँ म खिसक गए। जब महाशय की दूकान पर दो चार आदमा रह गए ना शक्य दाशनिक भाव से बोला

'यह प्रोल्तारिया और पूजापतिया की टक्कर ह। मरगात्र न उमकी बात का अनसुना करनिया तो विशनदास जार-जार म मिर दिगता दुवा वाला

चाचा तीथ राम मेरी घान याग रखा मह बजमान गेत मजदूरा और त्रिमीदारो की लडाई है। यह प्रोल्तारिया और पूजापतिया का तग है।

महाशय तीथ राम ता चुप रहा परन्तु विशनदास का अपना ही कही हुई बात पर आश्चय हुआ। उस याद हा आया कि ममार म मरगा और असफ

घरती घन न अपना

श्रान्तिर्पा एसी ही छोटी छोटी घटनाआ स आरम्भ हुई थी। जहाँ इन्कलाबी ताकत को अच्छी लीडरशिप मिल गई वहाँ वे सफल हो गईं और जहाँ श्रान्तिकारी ताकतें पूरी तरह सगठित न हो सकी, वहाँ उनकी हार हो गई। डाक्टर अपने मस्तिष्क में इतिहास के पन्ने पलटता हुआ, रूस, फ्रांस और स्पेन तक जा पहुँचा। उसके मन में प्रतिक्षण उत्तेजना बढ़ रही थी। वह हुक्मे के दो चार तख्त-तख्त कश खींचकर जल्दी से उठा और जूता धसीदता हुआ चमादडी की आरंभ आ गया।

डाक्टर विशनदास चमादडी के घुएँ के पास पहुँचा तो उसे मुहल्ले में कुछ लोग ऊँची आवाज़ में बातें करते हुए सुनाई दिए। वह वहीं ठिठक गया और ध्यान से उन आवाजों का सुनने लगा। फिर वह गली में आगे बढ़ गया। गली में सब मनानों के द्वार खुले थे लेकिन अंदर कोई नहीं था। चौगान में उठ रहे शोर की ओर वह खिचता चला गया। वह चौगान से पीछे ही रुक गया। अब उसे आवाजें स्पष्ट सुनाई दे रही थीं।

चमार भी चौधरियों की बाईकाट की घमकी से पदा हाने वाली स्थिति में निपटन की विधिया पर विचार कर रहे थे। युवक चमार चाहत थे कि बाईकाट का उत्तर बाईकाट से दिया जाए। चौधरी बाद में मान भी जाएँ तो उन्हें अपना बाईकाट जारी रखना चाहिए। यह यानें सुनकर डाक्टर प्रसन्न हो गया और मन ही मन में सोचने लगा कि मेहनतकाश तबका (श्रमिक वर्ग) जब जाग उठता है तो दुनिया की कोई ताकत उसका मुकाबला नहीं कर सकती।

तुजुग चमारा की व्यवहार कुछ नम था। उनका तब था कि चौधरिया के साथ हमेशा के लिए विगाड पदा करके गाव में रहना सम्भव नहीं है। यह ता हो नहीं सकता कि रह इस गाँव में और काम दूसरे गाँव में करें। लेकिन जब युवक चमार अपनी बात पर अड गए तो बाबा फत्तू उन्हें समझाता हुआ बोला

पुतगे यह भी तो सोचो कि दस दिन काम न मिला तो खाएँगे नहीं ते। तुम काम करो या न करो लेकिन पट ता रौटी माँगगा।'

बाहर जाकर मेहनत मजदूरी कर लेंगे। कई आवाजें एक साथ आईं।

तुम अभी बच्चे हो तुमने दुनिया नहीं देखी है। चौरा के चौर घार और जाटा के जाट घार तुम्हें दूसरे गाँव में कोई काम नहीं देगा। फिर दूसरे गाँव में भी तो चमार बसत हैं। उनकी जगह तुम काम कराग तो वे कहीं जाएँगे? बाबा फत्तू न कहा।

‘घास छोदकर बचेंगे ।’

घास आसमान पर से तो छोदोगे नहीं चौधरी अपनी जमीन से घास नहीं छोदन देंगे तो क्या करोगे ?’

‘भूखे रहकर दिन काट लेंगे ।’

तुम्हारी मर्जी ।’ बापे फत्तू न निराश स्वर में कहा ।

डाक्टर का मन यह साचकर प्रफुल्लित हो उठा कि प्रोलतारी बग सघप के लिए दृढ़ निश्चय किए बठा है । वह जोश में दो चार कदम ओर आगे बढ़ता हुआ सोचने लगा कि अगर इन्हें अच्छी लीडरशिप मिल जाए तो इनका सघप सफल हो सकता है । वह अपनी सोच को छोडकर फिर उनकी बातें सुनने लगा । अब चमारों के सामने यह समस्या थी कि बल प्रात उनकी स्त्रियाँ चौधरिया की हवेलियों से गोबर उठाने जाएँ या नहीं । युवक चमार न जाने के पक्ष में थे जबकि प्रौढ चमार चाहते थे कि एक बार जाना चाहिए यदि चौधरी मना कर दें तो उसके बाद बिलकुल नहीं जाना चाहिए । इस मामले पर बहुत देर तक बहस करने के बावजूद वे किसी निणय पर नहीं पहुच पा रहे थे ।

जब बात लम्बी हाती गई और वे आपस में ही उलझने लग तो काली जो अब तक चुप था सबको शान्त करता हुआ बोला

‘देखो शोर उठाने से कोई फायदा नहीं । चौधरिया की ज्यादाती के आगे बिलकुल नहीं झुकना चाहिए लेकिन हम पहल नहीं करनी चाहिए । आज भी उहाने पहल की है । बल भी उह ही पहल करने दो ।’

काली के समझाने-बुझाने पर बत्तू सत्तू इत्यादि मान गए । जब यह घोषणा की कि बल प्रात मुहल्ले की स्त्रियाँ नित्यप्रति की तरह चौधरिया की हवेलिया में काम-काज के लिए जाएँगी तो डाक्टर सटपटा उठा । उसे क्रोध आ रहा था कि काली ने चमारों का इन्क्लाबी जोश ठंडा कर दिया है । वह सोचने लगा कि शहर में चार पैसे कमा लेने के बाद वह कुछ बुजबा विचारा का बन गया है ।

चौगान से बच्चे और स्त्रिया बिखरने लगे तो डाक्टर बाहर कुएँ के पास आ गया । वह चो की ओर जाता परन्तु थोडे ही समय के पश्चात फिर पलट आता । वह काली की प्रतीक्षा में था कि वह इधर आए तो उससे बात करे और उसके आदर इन्क्लाबी स्प्रिट उभारे ।

कुछ समय के बाद कुएँ पर लोग का आना जाना शुरू हो गया । डाक्टर कुछ दूर खेता में जाकर बठ गया और काली की प्रतीक्षा करने लगा । वह यह

नहीं चाहता था कि किसी को यह एहसास हो कि वह बाली की प्रतीक्षा कर रहा था ? वह यह भी चाहता था कि बाली के साथ उसकी मुलाकात को अल्प लोग सहजभाव म लें । बाली जब कुएँ पर आया तो डाक्टर खेता से निकलकर आहिस्ता आहिस्ता कदम उठाता हुआ उस ओर चल पड़ा ।

जब वह कुएँ के बराबर पहुँचा तो बाली स्नान के पश्चात् अपना साफा निचोड़ रहा था । उसे देखते ही बाली न बदगी की तो डाक्टर रक गया और सहज स्वर में बोला

‘सुनाओ डाक्टर जी ’ काली बालटी उठाने उसकी ओर बढ़ आया ।

‘आज चौधरिया और तुम लोग का झगडा कैसे हो गया ?

आपका नहीं पता ? काली न आश्चर्य से पूछा और फिर डाक्टर को पूरी बात बता दी । डाक्टर लम्बी सी हँस के पश्चात् बोला

‘पूजीपति और जिमीदार हमेशा से मेहनतकशा और प्रोलतारी तबके पर जुल्म करते आए हैं, उसको एक्सप्लायट करते रहे हैं । लेकिन जब प्रोलतारी तबके में इन्वलाबी स्ट्रिट जाग उठती है तो वह बाढ बनकर इन ताकता को तिनका की तरह बहा ले जाता है ।’

बाली जू जू चौधरिया की ज्यादातिया का जिक्र कर रहा था डाक्टर का जोश बढ़ रहा था । वह काली को टाकता हुआ बोला

मुझे सब मालूम है । महाशय की दूकान पर सब बानें मेरे सामने हुई है । गाँव के जिमीदारा के साथ गाँव के पूजीपति भी मिल गए हैं । लेकिन विश्वास रखो जीत प्रोलतारी तबके की ही होगी । बस तुम्हें अच्छी लीडरशिप की जरूरत है । उसका बन्दोबस्त मैं कर दूंगा ।

डाक्टर विशनदास बाली से साथ को फिर मिलने का बचन देकर तड़-तड़ कदम उठाता हुआ कधाले की ओर बढ़ गया । वहाँ उसका मित्र और इलाके का सबसे पुराना कामरेड टहल सिंह रहता था । डाक्टर चाहता था कि घोड बाहा के चमारा के बग सघष का नेतृत्व पार्टी के हाथ में आ जाए । वह स्वयं इसलिए सामन नहीं आना चाहता था क्योंकि उसका अपन गाँव का मामला था । टहल सिंह अन्य गाँव का रहने वाला और दूसरे जाट था । गाँव वाला को पता चल भी गया तो ब उसका कुछ बिगाड नहीं सकने ।

डाक्टर विशनदास का कामरेड टहल सिंह घर पर ही मिल गया । दोनों न मुक्का खिचकर एक-दूसरे का लाल सलाम किया और हान अहवाल पूछकर खाट पर बैठ गए । टहल सिंह अघेड आयु का तिरछी हुई दाढ़ा वाला सिग था । उसने डाक्टर से चाय-पानी के लिए पूछा ता वह उत्तेजित स्वर में बोला

चाय पानी किसे सूचता है ? हमारा गाँव में आज जबरदस्त चणन हो गया है ।

क्या हा गया ?' टहल सिंह ने बचनी से पूछा ।

चमारो और चौधरिया का चणन हा गया ।

'यह तो राज की बात है । टहल सिंह न हँसत हुए कहा ।

यह बसा चणन नहीं है । दोना ने एक-दूसरे का वाइकाट कर दिया ह ।

डाक्टर की उत्तेजना और भी ज्यादा बढ गई ।

डाक्टर विशनदास शगडे का विस्तारपूर्वक चणन करने लगा । टहल सिंह बहुत ध्यान से सुनता रहा था । जब डाक्टर ने अपने जाने का अभिप्राय बताया तो वह सोच में पड गया और गम्भीर स्वर में बोला

इन चमारो का कोई भरामा नहीं है । पहले अकडते हैं और फिर शाग की तरह बठ जात हैं ।

एसी बात नहीं है । मामला बहुत सजीन ह । गाव के दूकानदार भी चौधरिया का साथ दे रहे हैं । गाँव के मेहनतकशा के खिलाफ जिमीदार और युजवा दोना मिल गए हैं ।

टहल सिंह और डाक्टर विशनदास बातें करते-करत उठ खडे हुए और दाना गावा के बीच चो के किनारे शीशम के वृक्षा में आ बठे । बहुत सोच-विचार के बाद दोना इस निणय पर पहुचे कि उनकी सहायता के लिए अंधेरा होन पर उसकी दूकान में भीटिंग हा । काली बतू और सतू को बुलाया जाए । आमा और ऊँचे मुहल्ले वाल चन्नन सिंह भी आ जाएँगे ।

डाक्टर विशनदास ने ओम और चन्नन सिंह को सूर्यास्त से पहले ही बुला लिया । वह काली और टहल सिंह की प्रतीक्षा करता ओमे और चन्नन सिंह को देश में घटने वाली श्रातिकारी घटनाआ के बारे में समझाने लगे कि किस प्रकार देश के कोने-कोने में दूर-दूर के प्रदेशों में, गावा और शहरा में प्रोलतारी और इकलावी ताकतें पूजोपनिया के पडयन्त्र को असफल बनाकर इन्वलाव का निकट ला रही हैं ।

टहल सिंह के आन पर डाक्टर चुप हो गया । टहल सिंह तीना को वग-सघय की विधि, रूस में व्यापत श्राति की मिसालें देकर समझाने लगा । टहल सिंह वालने-घोलत धक गया और ओमा सुनते सुनते ऊँघने लगा तो डाक्टर का एहसास हुआ कि अंधेरा गहरा हा गया है । टहल सिंह तिली के फूल की तरह आकाश पर फल हुए तारे देखकर चिंतित स्वर में वाला

वामरेड, तरे आदमी अभी तक नहीं आए ।' और फिर वह निणायत्मक

स्वर में बोला

कामरेड, चमारा को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इन लोगो में जद्दोजहद (सघष) करने का दम घम नहीं है। जोरावर तबके के साथ हस्त पजा लेने के लिए बहुत हीसला चाहिए।

कामरेड, तुम्हारी बात ठीक है लेकिन काली हीसले वाला जवान है। वह छ साल शहर में भी रह आया है। इस टक्कर में हम चमारा में केडर (पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता) तलाश और तयार करने का मौका मिलेगा। हमारा सल में जाट खतरो, ब्राह्मण सब जातिया के कामरेड है लेकिन चमार एन भी नहीं है।' डाक्टर ने कहा।

काफी देर तक प्रतीक्षा करने पर भी चमाराडी से कोई नहीं आया तो चन्नन सिंह स्वयं जाकर काली और बन्तू को बुला लाया। डाक्टर से इस भीटिंग का अभिप्राय सुनकर काली को बहुत प्रसन्नता हुई कि उनकी सहायता के लिए कुछ लोग तयार हैं।

उन्होंने गर्मी के बावजूद द्वार बंद कर लिया। व एक मले-स दीपन के इद गिद बठ गए। डाक्टर ने टहल सिंह का काली और बन्तू से परिचय कराया। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद टहल सिंह ने उन्हें विशेष रूप से काली और बन्तू का सघष का महत्त्व समझाया। थोड़ी ही देर में डाक्टर, टहल सिंह और चन्नन सिंह अच्छी खासी बहस में उलझ गए। दोना सिगरेट फूँकत हुए माकम एजल्स, लेनिन और दूसरे बड़े-बड़े कम्यूनिस्ट नेताओं के हवालें कर रहे थे। आमा फिर ऊँघन गया था। टहल सिंह डाक्टर का उँगली से अंकित करता हुआ जोश में बोला

कामरेड, तरी अपराच (ब्यवहार) ट्राटरकी लार्दन में मिलती-जुलती है।'

डाक्टर ने उत्तर में और कई नाम गिनवा दिए और व अपन-आप पाम बठे हुए व्यक्तियों का भूलकर फिर बहस में पम गए।

इस सारी बहस का कारण यह था कि डाक्टर काली के इस कथन का समर्थक था कि चमारा को अगर पाने न बान्ने पडे ता व बन्तू जिना तन जाटा के बार्दवात का मुकाबला कर सकेंगे। परन्तु टहल सिंह का विचार था कि काली की यह सोच प्रोत्तारी मिस्ट क विरुद्ध है क्योंकि इसमें यह आभास मिलता है कि ये लोग काम चोर हैं। इसका मिस्ट का मतलब यह है कि पाने बान्नेर गाणियों गाकर और जिल्लगी का हथका पर रखकर गपन किया जाय।

बन्तू लम्बी चौड़ा बहस के बाद यह निष्पत्ति किया गया कि सरस पहल

गाँव में चमारा के पक्ष में प्रापेगण्डा किया जाय । बाकी बात बाद में सोची जाय । ओमा इस समय तक गहरी नींद सोया हुआ खुरटि के रहा था । डाक्टर ने उसे बहुत कठिनाई से जगाकर घर भेजा । टहल सिंह जगले दिन मिलन के लिए नहकर जल्दी जल्दी बाहर निकल गया ।

चमादडी की ओर आते हुए बतू काली से बोला

य ता धूक से पकौड़े पकात रहे हैं ।

‘देखने जाओ, शायद कल तल भी आ जाए । काली ने उत्तर दिया और वे चमादडी की ओर मुड़ गए ।

४२

चमारनें अपने मर्दा के कहने के अनुसार मुह अघेर ही चौधरिया की हवेलिया की ओर चल पडी । कुछ मद् चौधरिया की प्रतिभिया जानन के लिए चौगान में टक्कठे हो गए और बाकी लोग घास खानन के लिए अपनी चादर और खुर्चे लेकर बाहर निकल गए ।

चमारनें उल्टे पाव वापस आ गई और अपने मर्दों का कासती हुई चौधरिया को गालियाँ देने लगी । चौधरिया ने उह चमादडी से बाहर कुएँ के पास से ही वापस कर दिया और साथ ही उह बहुत बुरी बातें कही । प्रसिन्नी अपना टोमरा फेंकता हुई क्रुद्ध स्वर में बोली

‘मूल निकले माए चौधरिया को । हम से काम नहीं कराना है ता न सही, अदातवा बकने का क्या हक है ।

फिर वे रानी हुई आवाज में कहने लगी

‘मोयो के अपने घरों में भी माएँ कहने हैं बुरा काम उनके साथ करें ।’

चमारन चौधरिया का गालियाँ देती हुई अपनी-अपनी जाप-बीती सुना रही था कि घास खादन के लिए बाहर गए हुए मद् भी वापस आ गए । वे बहुत भिनाए हुए थे । उनके आने पर स्त्रिया का शोर बढ़ हा गया । ताया बसता घरती पर अपनी चादर फेंककर बठ गया और अपने सिर का दोना हाथा में पकडता हुआ बाग

घरती घन न अपना

२८१

‘बहर खुन का आन्मी, आन्मी का राजक’ (रोटी रोखी दन वाला) बन बठा है। इतना अहकार तो शायद बागशाहा की भी नहीं होता हागा जितना इस गाँव क चौधरिया का हो गया है।

क्या हुआ ताया ?’ सन्न न उत्सुकता से पूछा। उसके उत्तर देने म पहले ही बाली और जीतू भी कघा पर चादरें रभे और हाया म खुर्चें लटकए हुए आ गए। ताए बमत न उह दखत ही पूछा

‘तुम विघ्न गए थ ?’

गाँव के पच्छिम म गप्पिया क खेता की तरफ।

‘क्या हुआ बापम क्या जा गए ?’

‘चो तक तो किसी न कुछ नहीं कहा। बडे रास्त पर चलत रहे तब भी किसी न नहीं रोका लेकिन जू ही हम खेता की आर मुडे तो गप्पिया के लठक लडका न राक दिया। बाली ने उत्तर दिया।

मैं दक्खिन म गया था। मरे साथ निक्कू का अमरू भी था। हम तकिए स परे जाकर पगडण्डी की ओर मुडे तो चौधरी मुशी का पुत्तर मेरी तरफ लाठी उठाता हुआ बोला कि उसक खेत म आया तो टाँगें तोड देगा।

चारा तरफ नाकाबदी की हुई है। सवेरे मुहल्ले की कुछ औरनें जगल पानी के लिए खेता म जाकर बठी ही थी कि चौधरियो के लडको ने उन्हें उठा दिया और क हाथा म नाले (आजार बंद) धामे हुए कुएँ की आर भाग आइ।’

इतनी देर म जानो न सिर से टोकरा उतारकर दरवाजे से पटक दिया और बफरी हुई आवाज म बोली

‘मैं मोए बला सिंह और मुशी के घरा म कभी नहीं जाऊँगी। मोया पाले लाठी लेकर मेरे पीछे दौटा और मेरी गुत (चोटी) पकड ली। मैंने भी मोए को टोकरे स मारा। जाना को यह कहते-कहत अपनी छातियो मे कसक सी महसूस हुई और उसका गुस्ता और भी बढ गया। मोए बइरजती करने पर उतारू हो गए हैं।

सब लोग जानो की आर देखन लगे। जो स्त्रिया चौधरिया की हवेलिया की ओर गई थी उहान अपना-अपना दुखात सुनाया तो ताया बसता ऊँचे स्वर म बाला

‘हमारी बहू बेटिया की बइरजती करने वाले ये कौन होते हैं। हम इनकी बहू-बेटिया की बइरजती करेंगे।’

उसके पास छडे युवक चमारा की रगें पडकने लगी। बतू बाली को बाजू स पकडता हुआ बाला

‘काली, चलो लाठिया लेकर साला जो भी रास्त में आए उसका सिर फोड़ दो। आज घर में मरने या मारने का फसला करके चलो।

काली का ध्यान पालो की ओर था और वह बहुत गम्भीरता से सोच रहा था कि उससे जानो की वेइज्जती का बदला लेकर रहेगा। उसने बत्तू की ओर ध्यान से देखा और सब लोगो को सम्बोधित करता हुआ बोला

काम करना और कराना उनकी ओर हमारी मर्जी पर है लेकिन उन्हें हमारे मुहल्ले की जोरतो और लडकियो की वेइज्जती करने का कोई हक नहीं है।

बाबू फत्तू और तुमने ही यह सलाह दी थी कि जोरता को सवरे चौधरिया की हवलियो में काम करने के लिए जाना चाहिए।’ बत्तू ने कटाक्ष करते हुए कहा।

हम क्या पता था कि वे इनकी वेइज्जती करने पर उतर आएँगे।’

सब लोग चौधरियो की इस ज्यादती का उचित उत्तर देने के बारे में सोच रहे थे कि बग्गा दौड़ा हुआ चौगान में जाया। उसका सास फूला हुआ था। उसके पीछे पीछे गालिया देता हुआ पालो आ रहा था। उस दखत ही काली भडक उठा और लपककर उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला

खड़ा रह अपनी मा के पार। मैं तेरी बदमाशी निवाल्ता हूँ।’

पकड़ लो साले को। जब ये हम अपने मुहल्ले और खेता में आने से रोक सकते हैं तो इनका हमारे मुहल्ले में आने का क्या काम है ?

काली को अपनी ओर आता देखकर पालो ठिठक गया और फिर पीछे मुड़ पड़ा लेकिन काली ने दौड़कर उसे गली के नुक्कड़ के पास पकड़ लिया और सिर के बालों से पकड़कर झेंझाड़ता हुआ बोला

तेरे ऊपर कोई अनोखी जवानी नहीं आई है। उम्र अपनी मा पर तूने हाथ उठाया। मैं तेरा खून पी जाऊँगा।

काली ने पालो का अच्छी तरह झेंझोड़ा और उसके चुतड़ा पर लात मारना हुआ बोला

अगर फिर कभी ऐसी हरकत की तो कच्चे को खा जाऊँगा।

काली जब चौगान में वापस पहुँचा तो बहुत सन्तुष्ट था। बग्गा का मास दुरस्त हुआ तो कई लोगो ने एक ही साथ उस पर प्रश्ना का बौछाड़ कर दी। वह हकलाता हुआ बोला मैं चो में बठा था, पाला चारे का गटठा उठाकर आ रहा था। वह मेरे नजदीक गटठा फेंककर दम लन लगा और सुस्ताने के बाद मुझे गटठा उठवाने के लिए कहा। मेरे इन्कार करने पर उसने मुझे गालिया

धरती घन न अपना

जाखिर मे प्रोत्तारी तावे की जीत हागी और पैदावार के तमाम साधन—
जमीनें, मशीनें जनता के मल्लकीयत हो जाएंगी।

वहाँ पर बैठे लोग डाक्टर के मह स इम प्रकार की बातें पहनी बार नहीं
सुन रहे थे। परन्तु जब वह गाँव के लोगो के बारे में बोलने लगा तो महाशय
भडक उठा

‘जा तू भी अपना धण्डा डेर उठाकर चमाण्डी में चला जा। तू उह
सगे शरीकेदार बना रहा है।

डाक्टर महाशय को उत्तेजित देखकर जीर भी ज्यादा जोश में आ गया
और उस हस के इन्वलाब में उदाहरण देकर समझाने लगा। जब डाक्टर
बोलता ही गया तो महाशय उसे डाँटना हुआ कहने लगा

दख विशनदाम तू अपना अजीब (निकट सम्बन्धी) है। मुझे केवल
इतना बता दे कि क्या तू चमारो के सहारे गाँव में जितनी बातें सक्ता है ?

डाक्टर के उत्तर देने में पहले ही मगू ने चाने का गण्डा महाशय के चपूतरे
पर फेंक दिया। महाशय हरा चारा देखकर प्रसन्न हो गया और उनकी ओर
बोलता हुआ बोला

‘चौधरी हरनाम सिंह स बोलना कि मौका निकालकर इधर का भी चक्कर
लगा जाए।’

महाशय जी आज बहुत काम है। चौधरी जी आप भी पढे-दखे में लगे
हुए हैं।

मगू के जाने के बाद डाक्टर बोला

यह चमारो में वाली भेड है फिफ्य कालमिस्ट है रिएक्शनरी बुजुवा
का पिठ है। ऐसे लोग ही प्रोत्तारी इन्वलाब को साबोताज करत हैं।

महाशय डाक्टर की बात को धनमुना करता हुआ चौधरी मुशी से बोला

‘चौधरी देख लो मगू के वाप में चौधरी हरनाम सिंह से पाँच सौ रुपये
उधार लिए थे। वह सारी उन्न काम करता भर गया लेकिन करजा नहीं
उतरा। पाँच-साल तो इसे भी चौधरी का काम करत हो गए होंगे। तू
भी ऐसा कामा रख लेता तो आराम से रहता। सारी चमाण्डी ने काम करत से
इन्वार कर लिया है लेकिन मगू इन्वार नहीं कर सकता।

यह स्लेवरी (गुलामी) की निशानी है। स्लेवरी के बाद जागीरदारी
मिस्त्रम जाया। इसके बाद पूजीवाद और इसका खामा करके अब समाजवाद
आएगा। डाक्टर ने कहा।

विशनदाम हमें भी बात करने दे। जब स तू आया है टर टर लगा रखी

धरती धन में अपना

है। अगर तू चमारों के हथ में चलाया जाये तब तो तू तब ही जाती ब-
कर लिया जाएगा। चौधरी मशी त कुछ म्बर म बना।

हम पर पर म गरी-मली म, गाँव गाँव म इस स्ट्रगल की खबर पहुँचा
देगे और गारा दगाता तुम्हारे सिंगल खरा हा जाणा।' गारर त जात म
बहा।

गरी बात गर पर म बार्द तग गुता बाहर कोन गुोगा। महागय ने
उगरी यिन्ती उडाा हूण बहा।

दापहर क परचाय बहत म चौधरी गाम-नाज म त्रिभुत हातर महागय
की दूकान पर एगिन हा गए। चौधरी बग सिंह न बत्ताया रि आज
चमारा की पूरी नाराबनी की गई। चमारनें काम करन भाद तो उन्हें
गात्रियाँ दकर बापस कर दिया। जो चमार पास घानन मना म आए उह
दोडा लिया। सबर चमारनें जगल पानी के लिए सेता म भाद तो लडरा की
दयकर ब नाल हाया म परब कर भाग गई। साला को दा तिन म हाश आ
जाएगा बल तक बान परबकर तात न रगडेँ तो नाम बल दना।

डाक्टर उनरी बाता म दयत्र देने की कोशिश करता तो उसम स बोर्ड-
न-बोर्ड उस झाड दता और बह उदास और घसियाना-सा होकर हुका गुड
गुडाता हुमा यह सोचकर अपने-आप को तसल्ली दे लेता कि त्रान्ति आने क
बाद वह एक एक स बल्ले लेगा।

चन्नन सिंह चमारा के पक्ष म बोलने लगा तो बहुत से चौधरी एक साथ
उसे गालियाँ देने लगे और वह भी घसियाना सा होकर चुप हो गया। डाक्टर
उसे उठन का सक्त करता हुआ बोला

इस सबके के दिन अब पूरे होत वाले हैं। रिएक्शनरी तबका जब खत्म होत
पर आता है तो उसम फ्रस्टेशन आ जाती है।

डाक्टर लामा की दुर दुर के बीच म चन्नन सिंह को साथ लेकर अपनी
दूकान पर आ गया।

शाम को चौधरी और चमार एक दूसरे से जलग अपने-अपने काम-नाज
म व्यस्त हो गए। डाक्टर विशनदास अपनी दूकान पर बठा गाँव म चल रहे
धग सपप को 'बापक' रूप देता हुआ इन्लाब के बदमा की चाप सुनता रहा।

चौधरिया क बाईकाट के पहले कुछ दिन चमारा का चावहार ऐसा रहा जस व छुट्टी पर हा । चमारनें चौगान मे बरी क नीचे बठकर मून की अट्टिया बनानी हुइ आपस मे गपगप लडातो और चौधरिया को गालियां देती । मद छक्की, चौपट और ताश खेल कर दिन गुजारत । जीतू और बनू इस बीच म शहर का भी चक्कर लगा जाए ।

चौथे दिन चमादडी पर बाईकाट का प्रभाव महसूस हाने लगा । अनाज के साथ इधन और उपले भी खत्म होने लगे और उह चि ता हुई कि अगर बाईकाट खत्म न हुआ तो शायद फाका तक नौबत आएगी । परंतु व एक-दूसरे का साहस बँधाते । इस स्थिति ने उनको परस्पर बहुत निकट कर दिया । स्त्रिया आपस मे बहुत कम लडती झगडती । वे सब किसी दुग म घिरी हुई सेना की तरह चौकस रहन हुए एक दूसरे का हाथ बटात ।

पाचवें दिन प्रीता के घर म खान के लिए कुछ नहीं था । वह चोरी छिप मगू के पास गई और रोती हुई फरियाद करन लगी कि निक्कू और अमरू को चौधरी की हवेली म काम दिलवा दे । मगू ने मुहल्ले के लोगा की ओर से आपत्ति का जिक्र किया ता वह भडक उठी

‘आग लगे मुहल्ले का । मेरे बच्चे भूख स विलख रह हैं । व मुझे कौनस पक्वान पका कर भेजते हैं । तू उह काम दिलवा दे, मुहल्ले को मैं अपन आप सँभाल लूगी ।

मगू घर से निकला ही था कि जानो ने काली को खबर दी कि प्रीतो ने निक्कू और अमरू को चौधरी की हवेली म काम दिलवान क लिए मगू से कहा है । काली तुरत ही प्रीतो के घर गया लेकिन उसक भूख स विलख रहे बच्चा को देखकर उलटे पाव वापन आ गया । उमने अपना अनाज का मटका उठाया और प्रीता के पास ले जाकर बोला

चाची ल बच्चा को रोटी पकाकर खिला । यह मुसीबत हमन मांगी नहा है हम पर जबरदस्ती ठूमी गई है । हौसला रखा । अगर रोटी खाएंगे तो सब खाएंगे भूखे रहेंगे तो सब रहेंगे ।

काली की बातें सुनकर प्रीतो का मन छिल उठा और वह अपनी हरकत पर लज्जित-सी बोली

देखो ना, मैं जाटा मांगने मगू के घर गई थी । वह ठहरा चौधरी का पिच्छलगू बहन लगा, फाके क्या काट रही हो—चौधरी स कहकर अमरू

घरती धन न अपना

और उसके बापू को काम दिलवा देता हूँ। मैंने मना कर दिया मैंने साफ कह दिया है कि पाके गेट लग लेकिन मुहल्ले का साथ नहीं छोड़ेंगे।'

काली चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा और उसका साहस बढ़ाकर बाबू फत्तू के घर चला गया। बाबू के घर में भी खाने के लिए कुछ नहीं था और बमखोरी के मार उसके गले से आवाज़ नहीं निकल रही थी। वहाँ से वह ताई निहाली के पास गया तो वह भी ऐसा ही दुखड़ा लेकर बठ गई। बाबू का जोश भी बहुत ठंडा पड़ा हुआ था। ताए बसते के पास पहुँचा तो वह भी उगास सा खाट पर लटा था। काली ने हाल पूछा तो उठने की कोशिश करता हुआ वाला

पहल दो रोटी खाता था फिर एक पर आया, जब जाधी पर, बल चप्पा रह जाएगी और परसा शायद फाका काटना पड़ेगा।

काली चिंता में डूबा हुआ अपने घर आ गया और कुछ देर तक बठा रहा उस महसूस हो रहा था कि मुहल्ले के लोगों का साहस टूट रहा है। कुछ मिले मिलाएगा भी नहीं और बढ़ज्जती अलग हागी।

धेता में बाढ़ का पानी सूख गया था और चिक्की जमीन पर पपडिया सी बन गई थी। मक्की के डठले की जड़ें जमे उसमें जकड़ी हुई थी और वे कुम्हलाने लगे थे। चौधरिया ने अपने स्कूल में पढ़ने वाले बच्चा को भी नलाई के काम पर लगा लिया था। चौधरानिया ने ढोर डगर संभाल लिए थे। लेकिन उनकी अनथक कोशिशों के बावजूद मक्की की रहीं-सही फसल बरबाद हो रही थी।

हर चौधरी बाजीगर के कोठी तक हो आया था। अतल तो बागीगर नगाई गुडाई का काम करना नहीं चाहते थे। हजार हजार नखरे करने के बाद कोई मानता था तो दुगनी दिहाड़ी माँगता था। बाहर से काम करने के लिए कोई चमार तयार नहीं था क्योंकि एक तो उनके लिए अपने गाँव में बहुत काम था, दूसरे अपनी विरादरी का भी लिहाज था। गर्मी के सताए हुए और थकावट से चूर चौधरी चमारों को गालियाँ देते हुए उनकी हठधर्मी और मूर्खता का कासत रहते और मन ही मन में चाहते कि झगड़े का जल-म जलद निपटारा हो जाए। चमार सूख रही मक्की को देखकर दिल ही दिल में कुदत और चौधरिया का बुरा भला कहते कि अपना हठ से फसल बरबाद कर रहे हैं।

इस झगड़े के गुरु के तिन में छत्रू शाह और महाशय दाना प्रसन्न थे। उन्हें क्या प्यारी इस बात की थी कि घर बँटें बिठाए ही मुफ्त चारा मिल

रहा था। तीन दिन तक तो चौधरी उनके घर चारा पहुँचात रहे लेकिन बाद में उन्होंने बंद कर दिया। छज्जू शाह ने चौथे दिन बला सिंह से शिवायत की ता वह भड़क उठा और छज्जू शाह से तलख स्वर में चाँग कि वह उमकी भत के लिए चारा लाए या अपनी ढोर डँगर को संभाँटे। ज़रूरत है तो स्वयं जाकर उसके खेत से चारा पाट लाए। वह उसका नौकर नहीं है।

छज्जू शाह का दूसरा नुकसान यह हुआ कि उमकी दूबान पर बिक्री कम हो गई। चौधरी लोग नमक तल के सिवा कम चीजें ही खरीदते थे। उसके ज्यादा ब्राह्मण चमार ही थे जिन्हें अपनी हर ज़रूरत के लिए उसके पास आना पड़ता था।

पाचवें दिन चौधरी हरनाम सिंह के खेत से चारा लात हुए रास्ते में महाशय तीर्थ राम की गदम में बल पड़ गया। वह बड़ी कठिनाई से गाव तक पहुँचा और अपनी दूबान से थोड़ा परे ही चारे का गटठा फेंककर बैठ गया। उसे निगल दखकर घड़घड़म चौधरी धवतरे से नीचे उतर आया और हँसता हुआ चाँग

रडियो का भी चरखा कातना पड़ गया है। महाशय चारा ढाना बड़ी मारा और सूदखोरो के बस की बात नहीं है।

महाशय का रोष तो बहुत आया परन्तु वह बात टालता हुआ बाला

इन चमारा ने नाक में दम कर दिया है। सारे फाँके काट रहे हैं लेकिन सीस (सिर) नहीं निवात।

डाक्टर विशनदास चहकता हुआ बाला

चाचा तीर्थ राम प्रालतारी दुनिया की सबसे बड़ी इकलावी ताकत है। उनका आगे कोई नहीं ठहर सकता। उनका मुकाबला लाखों करोड़ों फौजा के मानिक रूस का महाराजा ज़ार न कर सका तो इस गाव के चौधरी किस बाग की मूली हैं ?

महाशय ने घूर कर डाक्टर की ओर देखा और तलख स्वर में बोला

विशनदास इस समय दौड़ जा यहाँ से। सारी उम्र की रखी रखाई बिगड़ जाएगी।

'इम्पिरियलिस्ट और कपिटलिस्ट तबके अपनी द्वार से पहल बुखलाहट का शिकार हो ही जाते हैं। उस समय उन्हें अपने पराए का होश नहीं रहता।

डाक्टर महाशय के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही तब तक कर्म उठाना हुआ गली में बढ गया ताकि कामरुड टाल सिंह के साथ नई स्थिति के

बारे में बातचीत कर सके ।

चमादडी के कुर्से पर बठा काली डाक्टर को देखत ही उचककर उसकी ओर बढ़ा ।

डाक्टर जी, मैं आपकी ही राह देख रहा था ।'

तुम मर साथ मत आओ । चो के रास्ते से शीशमा के कुज में पहुँच जाओ । मैं कामरेड टहल सिंह को लेकर वहाँ जाता हूँ । वहाँ मीटिंग करेंगे । डाक्टर आगे बढ़ गया ।

काली को डाक्टर के व्यवहार पर कुछ हैरानी भी हुई और कुछ क्रोध भी आया और वह वहीं पर ठिठक गया । परन्तु इस आशा के साथ वह कुज की ओर चल पड़ा कि शायद वे कुछ सहायता दे सकें और फाका तक नौबत न आए ।

दिन काफी ढल गया था जब काली को डाक्टर और कामरेड टहल सिंह कुज की ओर आत दिखाई दिए । वह उत्सुकता से उनकी प्रतीक्षा करने लगा और उनकी गति मुस्त देखकर वह उनकी ओर चल पड़ा । वह उनके निकट पहुँचा तो कामरेड टहल सिंह ने लाल सलाम करके काली के साथ हाथ मिलाया । उस टहल सिंह के साथ हाथ मिलाकर अजीब सी खुशी महसूस हुई क्योंकि निधन से निधन जाट भी चमार वं साथ हाथ नहीं मिलाता था ।

कुज के पास आकर वे बाएँ ओर घूमकर चो में गहरे गड्ढे की ढलान में जा बठे । कामरेड टहल सिंह ने डाक्टर और काली को सिगरेट देकर स्वयं भी सिगरेट सुलगा लिया और दो चार कस खींचकर बोला

'कामरेड क्या पोजीशन (स्थिति) है । डाक्टर पहले तुम बताओ कि कपिटलिस्ट कम्प का क्या हाल है ?'

उनके कान धगमगा गए हैं । अपनी हार से पहले वे बुखलाहट का शिकार हो गए हैं । उनमें आपस में फूट पड़ने लगी है ।' डाक्टर आवेग में आ गया । उन पर थाना-सा दबाव और डाला जाए तो वे मरान छोड़ देंगे ।'

कामरेड टहल सिंह डाक्टर की हर बात पर मिर हिलाना रहा और पहला सिगरेट घूम ही गया तो उसने साथ ही नया सिगरेट सुलगा कर काली की ओर दखना हुआ बोला

कामरेड तर मुन्ना में क्या पाबोयन है ?'

बूझ बुरी है । कागो न तुम्हें उतर दिया और फिर अपने कपन का ध्यान करता हुआ बोला

'कुछ लागे व पाम चूट में जगन व लिए दधन और पसान व लिए

अनाज नहीं है। उनके हाँसेले टूट रहे हैं। एक औरत तो चौधरी हरनाम सिंह के बामे (नीकर) मगू के घर गई थी कि वह उसके घर वाले और पुत्र को बाम दिलवा दे। मैं उसे अपना सारा अनाज दिया तो फिर कहीं जाकर उमन अपना इरादा बदला।

‘कामरेड तुम्हारी अपरोच रिफार्मिस्ट (सुधारवादी) है। ऐसी बातों से प्रालतारी तबके की इन्कलाबी स्प्रिट कमजोर पड़ती है। उह समझाओ कि कुरबानी के लिए तयार रह अच्छा आग कहा।’

काली हैरानी में उसकी ओर देखता हुआ बोला

‘अगर यही हालत रही तो लोग ज्यादा-स-ब्यादा एक दो दिन और निकाल लेंगे। बाम घघा मिलता नहीं, पहले पसा नहीं है ऐसी हालत में कितने दिन मुकाबला करेंगे। एक दिन फाका काटना पड़ा तो वे चौधरिया के पाँव पर जा गिरेंगे।’

कामरेड टहल सिंह सोच में पड़ गया और डाक्टर को सम्बोधित करता हुआ बोला

कामरेड, ऐसा लगता है कि तेरे गाँव में प्रोलतारी तबके का संगठन कमजोर है और इसका संगठन उसी समय कमजोर होता है जब उनके जेहन साफ न हों और वे आईडिलोजीकली अभी कच्चे हों। मेरे स्थान में तुमने समय से पहले ही स्ट्रगल शुरू करा दी है।’

कामरेड मेरा जवाब है कि प्रोलतारी तबके का जेहन स्ट्रगल के दौरान ही पुख्ता (पक्का) होता है। यह बात तारीखी एतबार से भी सिद्ध हो जाती है। इस में पहला इन्कलाव इसलिए कामयाब नहीं हुआ था क्योंकि वहाँ की जनता ने पहले कोई स्ट्रगल नहीं की थी।

लेकिन दूसरे कामयाब इन्कलाव से यह बात भी सिद्ध होनी है कि प्रोलतारी तबके के जेहन साफ हो और वे आईडिलोजीकली पुख्ता हों तो कामयाबी यकीनी है। कामरेड टहल सिंह ने उत्तर दिया।

अंधेरा बढ़ रहा था और उनकी बहस का कोई अंत नज़र नहीं आता था। काली बेचनी से पहनू बदलता हुआ बोला

अगर आप अनाज का बंदावस्त कर दें तो बाईकाट जारी रखा जा सकता है।

कामरेड मैं तुम्हें पहले भी समझा चुका हूँ कि यह बात इन्कलाबी स्प्रिट के खिलाफ है। मेरे जवाब में इसे प्रापेगण्डे की रफतार तज कर देना चाहिए। इस मुकाम (स्थानीय) स्ट्रगल का ‘माम मूवमेंट (जनता का व्यापक संघर्ष)

घरती धन में अपना

सतू और जीतू बाईबाट खत्म करने जोर चौधरिया से माफ़ी माँग लेने के लिए ज़ार दे रहे थे कि काली वहाँ से उठकर चला गया। वह थोड़ी दूर ही गया था कि बतू की ओर झुकता हुआ सतू बोला

‘बीन लाता है इसके लिए पक्वान ?’

‘पानो !’ उसने सतू के कान में कहा।

‘मैंन यह तो सुना था कि दोनो का आपस में आख-मटकरा चल रहा है। सतू बोला।

आँख मटक्का तो पुरानी बात हो गई है। प्रीतो से कभी पूछना, वह तुम्हें पूरी कहानी सुनाएगी।

काली चाँस से होता हुआ लालू पहलवान को हवेली चला गया। लोह की चादरा का फाटक बद था। काली ने धीरे से उसका एक पट खोला। पहलवान बरामदे के बाहर अकेला लेटा हुआ था। काली को अपनी ओर आता देखकर वह उठ बठा और ऊँची आवाज़ में ललकारता हुआ बोला

‘बीन है ?’

‘मैं हूँ काली, माखे का पुत्तर।’ काली ने उसकी ओर तेज़ कदमा से बढते हुए कहा। लालू पहलवान का लहजा एकदम नम हो गया। काली जब उसकी खाट के पास जा खड़ा हुआ तो लालू पहलवान ने पूछा

‘सुनाओ कैसे आए हो ?’

‘बहुत खरूरी काम में आया हूँ। कहकर काली रुक गया।

काली ने कुछ क्षणा के लिए कोई उत्तर नहीं दिया तो पहलवान ने फिर पूछा। काली रुक रुक कर बोला

‘चमादडो में कई घरा में अनन का एक दाना नहीं है। किसी ने आधी रातों खाई है और किसी ने चप्पा कुछ लोगा ने तो पानी पी-पीकर पट भरता है।’

लालू पहलवान साँच में पड गया और कुछ क्षणा के पश्चात् बोला
‘ता फिर मुसस क्या चाहत हो ?’

‘अगर आप दाँस मन अनन द दें तो हम लोगा के दाँस चार दिन निरक्त जाएँगे।’

लालू पहलवान फिर साँच में पड गया और बहुत उत्साह स्वर में बोला

‘काली दाँस, मैं तुम्हें दाँस की बजाय चार मन अनाज द दना लकिन मैं बचन का बाधा हुआ हूँ। जब तक बाँसल जारी है मैं तुम्हें पाव भर अनाज नहीं दे सकता। बादशाह खत्म हो जाए तो चाहें हम मन में जाना।’

लालू पहलवान का उत्तर सुनकर काली चुप हो गया और कुछ भ्रमा के बाद उसे बदगी करके चमादडी की ओर वापस आ गया। वह सोच रहा था कि मुह्ले क लोग के पास खाने के लिए अनाज होता तो शायद उह नानो के रोटी खाने की बात इतनी न चुभती। अगर किसी को पता भी था तो भरी मट्फिल म इसकी चर्चा न की जाती। अगर उसे पहलवान से मन दो मन अनाज मिल जाता और वह सबम वांट देता तो उठी हुई बात भी दम जाती। उसका मन घणा से भर गया और वह ताए वमते ने शब्दा 'जाटा क जाट यार चोरा क चोर यार को दाहराता हुआ सारी रात करवटें बदलता रहा।

४४

मुह अंधेरे नानो काली को रोगी देन आई लेकिन उसने रोटी समेत उसे वापस जान के लिए कहा। नानो ने उसके साथ बात करनी चाही लेकिन काली ने उसे द्वार स बाहर निकाल जदर से सांकल चडा ली।

काली की समझ म नहा आ रहा था कि वह क्या कर। दापहर तक वह घर म लेटा रहा। जब भूख का एहसास जोर पकडता तो वह उठकर पानी पी लेता और फिर लेट जाता। शायद वह शाम तक इसी तरह लेटा रहता लेकिन उसे नद सिंह का बुलावा आन पर घर से बाहर निकलना पडा।

नद सिंह का सदेश पाकर उस तुरंत ही पादरी का ख्याल आ गया। वह अपने-जाप को धतकारन लगा कि डाक्टर के पीछे भागने और लालू पहलवान के आगे हाथ फलान से ता वेहनर या कि वह पादरी के पास जाता उससे मदद मागता और शायद कुछ न कुछ पा लेता।

वह इही विचारा म मग्न नद सिंह की दूकान पर पहुँच गया। पादरी भी वही उपस्थित था। काली का उतरा हुआ चेहरा देखकर वह नम्र स्वर म बोला

कहो काली दास, ठीक हा ना ?'

ठीक हूँ पादरी जी।' काली ने उसे बदगी करत हुए उत्तर दिया। पादरी

न उमरी आर भूजा विमता लिया और बटन का मकन करता हुआ बाग

कहा, चौघरिया का गाय काई फगला हुआ या गही ।

'अभी तो कोई फगला नहीं हुआ । लकिन अगर मने हाल रहा ता शायद
जाज कल म हा जाएगा ।

मैं तुम्हारी बात समझता नही ।' पादरी न चीर कर पूछा ।

यही कि कुछ लोग फास काट रहे हैं और कुछ आधी राटी घाबर मुजारा
कर रहे हैं । मुहल्ले म शायद ही काई एमा घर हागा जा आजकल पूरी रोटी
घाता हो ।

'योसू मसीह रहम करें । अपने बग की मुसायनें दूर करें । पादरी न छाती
पर शॉस का चिह्न बनात हुए कहा और फिर काली की आर झुकता हुआ
बोला

गरीब आदमी का भूखा मारना सबसे बडा पाप है । एम आदमी को
बहिषत (स्वग) म कभी जगह नहीं मिल सकती चौघरिया की ज्यान्ती है ।
यह मुनकर नद सिंह न भी कुछ कहना चाहा लकिन पादरी न उस हाथ के
सवेत स मना कर लिया और एक एक शब्द पर जोर दता हुआ बोला

अगर चमार इसाई विरादरी म शामिल हो गए होत तो हमारा मिशन
इन पर फास की कभी नीरत न आन दता । हम बदे को बदे का राजन नहीं
मानते । लेकिन हमारे लिए मजबूरी है । मैं किस रिश्त स तुम्हारे मुहल्ले वाला
की मदद करूँ ।

काली के पास पादरी की बात का कोई उत्तर नहीं था लेकिन वह फिर
भी बोला

पादरी जी, अगर आप कुछ अनाज दे सकते हैं तो जरूर दें ।

'अनाज की तो बोरियां भिजवा दू लेकिन सवात्र है किस रिश्त से गाव
वाले कहे ता ला सकता हूँ वे कहगे नहीं ।'

काली चुप रहा तो पादरी फिर बोला

तरी बात और है, तू चाहे तो दस बीस सर अनाज तुझे दे सकता हूँ ।

काली ने कोई उत्तर नहीं दिया । उसके मन म बार-बार विचार जा रहा
था कि पादरी स अनाज लेकर मुहल्ले म बाँट दे । सबका कम स कम एक डग
ता निकल जाएगा । पादरी ने जब अपनी बात दोहराई तो काली ने हाथ जाड
दिए और उठता हुआ बोला

'आपकी महरबानी है । मुझे अभी जरूरत नहीं ।

काली नद सिंह के घर से निकलकर चौगान म आ गया । वहाँ पर भूख

स सताए हुए नडाल लोग आपस म झगड रहे थे । काली चुपके से एक जोर जा बैठा । वह बहुत ही उदास था । मुहल्ले के सब लोग वाच फत्तू और ताए बसते को घेरकर बठे थे और उनसे अपनी समस्या का समाधान चाहत थे ।

ताया बसता उनके बार-बार पूछने पर रुहासा हाकर बोला

और क्या किया जा सकता है । मैं और चाचा फत्तू जात हैं जोर चौधरियो के पाव पर अपने साफे रखकर माफी माग लेत है ।

कुछ भी करो हमसे भूख से बिलखते हुए बच्चे नहीं देखे जात । पाम ही बठी स्त्रिया मे से एक ने कहा ।

'अगर बुलाये मे हमारी नाक कटवाना चाहत हो तो तुम्हारी मर्जी लेकिन एक बात सोचो अगर मूखा पड जाता ता फिर क्या करत पुनरा, तुमने वे दिन नहीं देखे जब हमने वृक्षा के पत्ते, सूखे घास की जडें और जाम की गुठलिया खाकर दिन काभे थे । ताया बसता चुप हो गया । उसकी काली पर नजर पडी तो वह उसकी ओर मुडता हुआ बोला

'काली पुत्तरा तू पढा लिखा है दस देसावर घूम आया है तू ही कुछ उता ।

ताए बसत की बातें सुनकर सब लोग गम्भीर हो गए थे । इसलिए किमी की काली पर कटाक्ष करने का ख्याल नहीं आया । काली की आखें भीगी हुई थी । वह जमीन की जोर घूरता हुआ बहुत धीम स्वर म वाला

मैं क्या बतता सकता हूँ । मेरी समय म कुछ नहीं जाता । मुझे उम्मीद थी कि डाक्टर हमारी कुछ मदद करेगा । वह राज कहता है कि वह गरीबा के पाम म है । उससे अनाज मागा तो उसने जवाब लिया कि वह हमार हक मे जल्सा करेगा । वह बहुत लम्बी चौडी वानें करता है जो मेरी समय म नहीं आती । काली रक्कर फिर बोला

'मैं लालू पहलवान के पाम भी हा आया । सोचा था वह दयालु आदमी है, मन-दो मन अनाज दे देगा लेकिन वह बचन-बद्ध है । वह कहता है कि जब तक बाइकाट जारी है वह एक पाओ अनाज नहीं दे सकता । बाइकाट खरम हो जाए ता चाह मन अनाज ले जाना ।

काली की बातें सुनने के लिए स्त्रियां नजदीक खिसक आई । मर्दों पर गहरी खामोशी छा गई । काली सब पर सरसरी नजर डालता हुआ बोला

उसके बाद मैं पानरी से भी मिठा । यहाँ आन से पहल उसने अपन-आप ही मुने नद सिंह के घर बुलाया था । उसने मदद माँगी तो वह बिरान्नी की बातें करने लगा । वह कहता है कि तुम्हारी किस रिश्ते से मदद करें ।'

वह तो चाहता है कि हम इसाई बन जायें । ताए बसत न मुड स्वर

म कहा। काली कुछ दूर चुप रहकर कहने लगा

मेरी समझ में तो कुछ नहीं जाता। चौधरी भी सुखी नहीं हैं, वे भी बहुत तंग हैं। अगर मैं यह कहता हूँ कि हम चौधरिया के पास नहीं जाना चाहिए तो बट्टन में लोगो को मरी बात बुरी लगगी। यह कहने को मेरा मन नहीं मानता कि हम चौधरिया के पास पड़ कर माफी माग लें। गांव में पहले ही हमारी कोइ इज्जत नहीं है। ऐसा करने से सारी उम्र उनकी बातें सुननी पडगी। हम कभी अपना हक भी नहीं माग सकते। लोगो को फाँके मारत जीर बच्चो को भूख से विव्रखत देखता हूँ ता जी चाहता है कि अभी जाकर माफी माग लें। काली ने लम्बी सास छोडी और ताए बसते की आखा में चकितता हुआ बोला

‘आप सब मेरे घर चलें। एक एक चीज की तलाशी ले ल। जो कुछ मिल आपस में बाँट कर खा लें। मेरे पास पैसे थे कुछ डयाडी बनाने पर गग गए कुछ चाची के दवा ताल पर खर्च हो गए। बाकी चोरी हो गए और जो बचे थे व चाची के मरने पर चले गए।’

काली के बात खत्म करने के बाद बहुत देर तक सब लोग चुप बडे रह। स्त्रिया में बठी मगू की मा आसू पाछती हुई बोली

‘इन चार दिना में ही मेरा मगू सूख कर जाधा रह गया है। अबल तो रात को घर आता नहीं। अगर कभी जाता है तो सारी रात हाय हाय करता है।

फिर वह प्रीतो के बान के पास मुँह ले जाकर बोली

मगू कह रहा था कि अमर का भेज दो।

‘ना ना। प्रीतो ने उसकी बात काटत हुए कहा। जब सारा मुहल्ला जाएगा।

दिन ढल गया तो लग उठ खड हुए। स्त्रियाँ घरा का चली गई। वे पुँए से पानी भर लाइ तो मद्र स्नान के लिए वहाँ पहुँच गए। इसना-सुसा चौधरी मिर पर चार का गट्टा उठाए बड रास स गुजर रहा था। कुएँ पर नहा कर चमार उह आँखें भरकर दउन और फिर तहान में पस्त हो जात।

भूख की त्रिपें वृथा की छत्रिया पर था जब चौधरी मुगी और उमक पीछे उमसा मगू में पन्ना बना निरजन मिर पर चार का गट्टा उठाए हुए कुँए के पास पहुँचे। उनमें पीछे बला मिह त्रिपार और उजागर था रहे थे। कुँए के बराबर आर निरजन ने मिर से चार का गट्टा नाच पेंत दिया। चौधरी मुगी ने पीछे मुँह कर लधा और उम गागी दकर बाग स्कुल में गया पढ़ना है। घर के बाम-बाज में त्रिपुत्र रह गया है। दम मर

बोझ उठाने पर ही इमकी गदन टूटने लगती ह ।'

चौधरी, लडका एक ही काम करेगा । या चारा उठाएगा या अन्धर (अधर) उठाएगा ।' बेल सिंह ने भी अपना गटठा फेंकते हुए कहा

तीन-तीन फरे लगाने पडत हैं, गदन तो टूटेगी ही ।'

लकिन तुम इन चमारा का हाल देखा । अपनी मा के चमम फाके फाट रहे है लेकिन काम पर नहीं जात । चौधरी मुशी न कुएँ की आर देखन हुए कहा और फिर वह ऊँचा आवाज म वाला

ओए बसतया तू यह बता तुम्हारा हमारे बगर गुजारा है ? चौधरी मुशी ने दो तीन गालिया और सुना दा ।

चौधरी हमने कम कहा ह कि हमारा तुम्हारे बिना गुजारा है । हम तो सदा यही कहते आए हैं कि तुम हमारे मालिक हा और हम तुम्हारे बाम । हम लोग न ता सिफ इतनी परियाद की थी कि काम करवा कर उजरी नहीं दागे ता हम छाएँगे कहा स तुम लोग ने बाईकाट कर लिया ।'

बसतया तू उस समय ऐस बात कर रहा था जैसे फौज का सूबदार हो ।

चौधरी तू भी ता कप्तान बना हुआ था ।

चमार कुएँ से उतरकर चौधरिया क नजदीक आ गए । चौधरी मुशी और बला सिंह इत्यादि भी कुछ आगे बढ़ आए । बला सिंह गालिया दता हुआ बोला

ओ कुनया चमारो कुछ शम करा कुछ फमल बाढ ने बरवाल कर दी हे जोर बाकी नगाई न होन की बजह मे सूख रही है । अगर प्राण देने पर उतार हो ता गाडी के नीचे जाकर सिर द दा ।

तुमने हम फसल की नलाई के लिए बुलाया है ? ताए बसत न कहा ।

अच्छा यह बताओ अब तुम्हारी क्या मशा है ?'

हमारी क्या मशा हागी । मशा मालिका की होती है । जा तुम्हारी मशा है वह बता दो ।

ताए बसते का उत्तर पाकर चौधरी मुशी न निरञ्जन की बध की ओर दौग दिया कि वहाँ से चौधरी हरनाम सिंह का बुला लाए । लिजदार का लालू पहलवान का बुगाने के लिए भेज दिया जोर स्वय चारे के गटठे पर बैठता हुआ अपने घुटना की दवान लगा । वह अनप शनाप गालिया दे रहा था जोर इद गिद खडे लोग हँस रहे थ ।

याडी दर के बाद गाव के सब चौधरी वहाँ इकट्ठे हा गए और एन बार फिर गाली-मलोच गुन हो गया । लालू पहलवान चौधरी हरनाम सिंह और चौधरी मुशी को एक ओर ले गया और धीमे स्वर म वाला

धरती धन न अपना

'यही फंसला कर ला । इम गण्डे म न उह कुछ मिला है और न हम कोई काम हुआ है ।'

डे़ दिन क पास दे दो तो व घुम हा जाएँगे । बार गरीब आत्मी हैं । कोई पराए नही अपन हो चमार हैं ।' चौधरी हरनाम सिंह न कहा ।

हर घर अपन-अपन चमार का पग द दे । लालू पहलवान के इस मुधाव का सबन समथन किया और चमारा क पास आउर चौधरी हरनाम सिंह न निणय सुना दिया । ताए बसत न वारी-वारी सब चमारा की ओर दखा और उनकी अनुमति पाउर मिर सुवाता हुआ बाला

हम लोग आप के दास हैं ।'

फिर बल सवरे स काम पर आ जाओ ।

बल क्या अभी स ।' चौधरी मुशी ने कहा और जीतू को गाली देता हुआ बोला

'ल यह गठठा हवेली म फँव आ ।

यह खबर जाधी म उडती घूल की तरह तुरत ही सारे गाव मे फल गई । चमादडी की स्त्रियाँ चौधरानिया के घरा की ओर दौड गई । मद सौंग लने के लिए दूकाना पर चले गए । गलियो म चमार और चौधरी आपस मे ऐसे मिलत जस मुह्त के बिछडे हुए हा । चौधरानिया अपनी चमारना को देखकर पसन भाव स बहती

'नी तू पाच छ दिन नही आई तो मन उदास होन लगा था ।

साय हात ही गाव पर धुएँ की चादर गहरी होती गई । चमादडी के हर घर म आज दो तीन दिन के बाद चूल्हे जले थे । गाव से खुली हँसी, खिलवाड और गालिया की जावाज आ रही थी ।

डाक्टर विशनदास चा म खडा सोच रहा था कि इस गाँव के चमारो की जेहनीयत भी सुधारवादी है जो सघप करन की बजाय समझौते पर उतर आए ।

४५

चमादडी के सब मद काम पर चले गए थे, स्त्रियाँ गोबर और कूडा-बरतट उठान के लिए चौधरिया की हवेलिया म पहुच गई थी । छोटे बच्चे अपनी

मानाओं या वहना के साथ थ और बड़े बच्चे चौगान में शोर मचात हुए गुल्ली-डंडा खेल रहे थे ।

काली डयोढ़ी का द्वार बंद किए खाट पर लेटा करवटें बदल रहा था । उसका पूरा शरीर टूट रहा था और उसे या महसूस होता था जैसे बुखार हो । पिछले एक सप्ताह में घटित घटनाएँ उसके दिमाग पर छाई हुई थी । उन सात दिनों का एक एक क्षण उसकी आँखों के सामने धूम रहा था लेकिन जब उस मत्तू के ये शब्द याद आए कि उसे पके-पक्वाए पक्वान मिल रहे हैं तो उसका दिमाग वहीं रक गया । नानो के प्रेम और स्नेह के बारे में सोचकर कभी वह डर से वापने लगता और कभी इतना खुश होता कि उसका जी चाहता कि उछल कर छत को छू ले ।

वह पानी पी पी कर भूख को मिटाने का यत्न करता रहा लेकिन जब पानी पेट में घुर घुर करता हुआ ढोल की तरह धोलन लगा तो वह उठ बैठा । उसके घर में आटे की एक चुटकी भी नहीं थी । उसे पछतावा हान लगा कि उसने प्रीतो को खाह भुखाह अपना सारा आटा दे दिया लेकिन यह सोचकर अपने आप को तसल्ली दे ली कि वह मौका ही ऐसा था । यह याद करके वह हैरान रह गया कि कल सबरे से उसने कुछ नहीं खाया केवल पानी पी-पीकर पेट भरा है । उसने सोचा कि लालू पहलवान की हवेली चला जाए लेकिन उसका मन नहा माना । लालू पहलवान में उसके साथ कौन सी नकी की है । बठिताई में जो काम न आए वह आदमी किस काम का । अगर वह बुलाएगा तो सोचूंगा ।

वह करवट बदलता तो उसके शरीर में कई हिस्सों में टीसों-सी उभरती और वह चित्त लट जाता । उसे ध्याल आया कि शायद बुखार न हो भूख के कारण शरीर टूट रहा है यह सोचकर उसकी भूख एकदम चमक उठी । वह उठकर बैठ गया और सोचने लगा कि यदि नद सिंह के घर चला जाए तो शायद वह राटी खिला दे । परन्तु मन में यह विचार आत ही वह उपास हो गया कि नद सिंह कबो राटी खिलाएगा, वह ईसाई ठहरा उसके साथ क्या रिश्ता है । गाव में उसका किसी के साथ भी कोई रिश्ता नहीं है । यह सोचकर वह फिर उपास हो गया । नानो के साथ रिश्ता है लेकिन उसे कौन मानता है । उसने एक डग रोटी दी तो लोग तोहमत लगाने लगे ।

काली सोच सोचकर तग आ गया । इससे भूख कम हाने की बजाय बढ़ती गई । वह अपने आपको घसीटता हुआ उठा और द्वार के दाना पेट धोलकर दहलीज में खड़ा हो गया । तब घूप में उसकी आँखें पूरी तरह नहीं खुल रही

थी। उसने गली में चाककर देखा वह बिलकुल खाली थी। इसके एक किनारे से नद सिंह के चमड़ा कूटन और दूसरे किनारे से बच्चों के गुल्लि डडा खेलने और लडने चगडने की आवाजें आ रही थी।

वह दहलीज से उतरकर गली में आ गया। उसने प्रीतो के द्वार पर निगाह डाली। किवाट खुल था लेकिन अंदर कोई नहीं था। उसका जी चाहा कि अंदर जाकर देखे कोई रोटी पडी है। अपने इस टपाल पर वह हँस दिया। वह गली में हटकर फिर दहलीज पर आ गया।

कुछ समय के बाद उमे कुएँ की ओर से जानो आती दिखाई दी। काली ने गली की दूसरी ओर जल्दी से एक नजर डाली और मुसकराता हुआ जानो की ओर देखने लगा। वह सिर पर टोकरा उठाए बहुत गम्भीर भाव से चल रही थी और उसकी चोली में पडी रोटिया या हिलती थी जैसे साँस रु रही है। काली बहुत प्यार और दिलचस्पी से उसकी ओर देखता रहा लेकिन जब जानो का चेहरा और भी गम्भीर हो गया और वह उसकी ओर देखे बिना ही गुजरन लगी तो वह गली के दोनों ओर एक बार फिर देखकर बहुत धीम स्वर में बोला:

जानो।

जानो ने उसकी ओर आँखें तन उठाकर न देखा लेकिन एक क्षण के लिए उसका कदम रुक गए। काली ने फिर उसका नाम रिया तो वह चौंकर रुक गई।

बोलती क्या नहीं ?

काली ने घाड़ी उची आवाज में कहा। जानो आगे बढ़ने लगी तो काली ने दहलीज में उतरकर उसकी राह रोक ली। वह एक आर हटती हुई बोली

तू ममता है कि जय तन जी चाहे मुझ बुलाए और जय जी जाह दुनवार द।

उसकी यह बात सुनकर जानी कुछ लज्जित मा हा गया और बाद उत्तर लिए बिना ही अगले द्वार की ओर मुड़ आया। जानो ने चार कदम आगे बढ़ कर रुक गए और फिर उमरी आर पल्लु कर शोरी में पटी रागी उमर हाथ में धमा कर तडा में आगे बढ़ गई।

काली दहलीज में खड़ा उन स्थिति रूनी ओर जय वह अगले घर में दाखिल हा गई तो अन्दर जाकर घान पर बैठ गया और रात्रिया की तन घागन लगा। रात्रिया में कुछ की दूरी रिया हुई थी। कुछ स्थित उमर मन स्थित गया

और उसने गुड मुह की ओर बढ़ाया लेकिन रुक गया। वह साब म डूबा हुआ राटिया को घूरता रहा और उसके अंदर भूख का एहसास एकदम मिट गया।

पानो घर में टोकरा फेंककर उलट पाँव वाली के पास आ गइ और द्वार के दोनों पट बंद करके उसके सामने आ खड़ी हुई। वाली उदास सा बटा रहा। पानो उसके हाथ में रोटी देखकर कुछ तल्लख स्वर में बोली

‘इसे खा लो।’

वाली चुप रहा तो पानो ने उसके हाथ से रोटी लेकर एक नवाला तोडा और उसके मुह में ठूसती हुई बोली

‘अन को मत घतकारो ! सात दिन सिर्फ इसलिए फाक काटते रह हो ताकि पेट भर रोटी मिल सके। वाली हँस दिया और नवाला जल्दी-जल्दी चवाने लगा। पानो पाम बठकर उस पखा करने लगी। वाली उसकी ओर मुसकराता हुआ बोला

‘घड़ी भर पहले तो मुझे ऐसे घतकार कर गई थी जस मरी शकल से ही नफरत हो।’

पानो चुपचाप पखा हिजाती रही और फिर तीखे स्वर में बोली

‘मैंने कभी तुम्हें धक्के नहीं दिए, कुत्ता की तरह नहा झिडका है।’

काली के मुह का नवाला गले में रुक गया और वह उस कठिनाई में नीचे उतारता हुआ वाला

‘तुम्ह क्या पना मेरा कभी-कभी क्या हाल होता है। लोग मुझ पर तोहमनें लगाते हैं ठण्ठे करते हैं बल तू मुझे रोटी देकर गई ता शायद तुम्ह प्रीतो न देख लिया था या सतू न देखा था चौगान में सबके सामने मेरे मुह चढकर कहा कि तू तो बाईजाट जारी रखना चाहेगा क्याकि तुझे पके-पकवाए पखवान मिलते हैं।’

पानो उसकी आर ध्यान में देखती हुई बोली

‘ताहमतें दूसरे लगाते हैं और तुम गुस्सा मुझ पर निकालत हो।’

काली उसे समझाता हुआ बोला

‘मैं नहीं चाहता तेरे खिलाफ कोई बुरी बात कहे मुझसे बदरास्त नहीं हाता।’

और उनके सामने चुप रहत हो ओर मुझ पर रात्र डालत हा मुझे भी मुहल्ले की स्त्रियाँ बहुत कुछ कहती हैं। यह राँड प्रीतो ता राज मरी मा के बाना में फुसफुसाती है। चौघरिया के लडके बोलियाँ मारत (आवाजें फसत) है। अपने मुहल्ले के लडके मुझे देखकर खांसत हैं। मुझ भी गुस्सा आता है

घरती घन न अपना

लेकिन मैं तुम पर नहीं निर्याती। जो हूँ स बड़े उसका वही दाग-धानी कर देनी हूँ।

काली के पास उसकी बात का थोड़ी उत्तर नहीं था। वह लज्जित और उदास-सा हाया म रोटी पकड़े बठा रहा।

‘रोटी तो खा लो या अज इसके साथ भी नाराज हो गए हो?’ नानो न मुसकरात हुए कहा।

काली गहरी सोच म डूबा हुआ अनमना-सा राटी खान लगा।

उसन रोटी खा ली तो नानो उठतो हुई वाली

मैं जाती हूँ वरना पाडी दर के बाद फिर धक्के दवर निकालाग। नानो द्वार की ओर बन्दे लगी लेकिन काली ने बाह पकडकर उसे अपनी ओर खीच लिया और अपने वाजुआ म भीचकर लम्बे-लम्ब सांस लेता हुआ उसके शरीर की गर्मी को अपने अदर सजोता रहा।

कुछ समय के बाद काली के हाथ जानो के शरीर के कई हिस्सा पर रीगने लगे। वह उम पीछे धकेलती हुई बोली

‘यस इसी काम के लिए तुम्हें मैं अच्छी लगती हूँ।’ काली उसकी ओर बढ़ा तो नानो एक कोने मे जा खडी हुई। काली उस जोर लपका तो वह फुदफवर दूसरे कोने मे चली गई। वह उस ओर बढ़ा तो नानो वहाँ से भी दौड पडी लेकिन उसकी चोटी काली के हाथ मे आ गई। जानो दबी जवान मे हँसती हुई अपने आपको छुडाने लगी लेकिन काली ने उसका शरीर सीधा करके उसे अपनी छाती से लगा लिया और पूरे जोर से भीचता हुआ बोला

‘क्या तू अपन आपका भुझसे क्याग जार वाला समझती है?’

‘अगर ऐसा समझती तो बार बार घतकारन पर भी तेरे पास न आती।’ नानो ने हारी हुई आवाज म कहा।

काली हँसता हुआ घाट पर बठ गया और जानो एक मटका उलटा रखकर उस पर बैठ गई। काली बहुत प्यार स उस निहारता हुआ बोला

‘लोगा की तोहमतेँ मुनकर मैं कभी फमला करता हूँ कि तरे साथ काई मल जाल नहा रखूगा। मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह स तरी बइज्जता हा।’

‘और तू मरी वइज्जती जब मौवा मिले कर ले।’

‘मैंन तरी वइज्जती कब की है?’

अभी क्या करन लगा था। तू क्या समझता है इस काम स मेरी इज्जत बन्नी है।

काली और नानो बात म खोय हुए थ कि गली म लाठी पटकने और

खासन की आवाजें सुनाई दी। व दोना चौंक गए। काली के चेहरे का रंग बदलने लगा और वह कुछ कहने ही वाला था कि नानो ने हाठा पर हाथ रखकर उस मना कर दिया। मगू निकल गया तो काली सहमी हुई आवाज में बोली

‘मगू गया है।

नानो उसका भयभीत और सहमा हुआ चेहरा देखकर बोली
डर गया ?

‘नहीं तू चाहे तो मैं दरवाजा खोलकर भी तुम्हें यहाँ बिठा सकता हूँ।’

नानो मुमकुराती हुई द्वार की ओर बढ़ी लेकिन काली ने उसे रोककर पकड़ लिया और बाजुआ में भीचता हुआ उसके गाला को चूमकर बोला
‘रात को आना।’

नानो अपने गाला को हाथ से पाछती हुई हाँ कहकर गली में चली गई।

४६

मक्की और धाजरे की फसल बढ़ने के साथ साथ नानो और बानो के प्रेम के चर्चे भी फलते गए। फसल की नलाई के दौरान घास निकाल दिया जाता ताकि उस कोई हानि न पहुँचे। घास फूस फिर उग आता तो दोबारा नलाई कर दी जाती। नानो और काली के प्रेम की कहानियाँ फलन लगती ता नाना की मार पीट और फटकार से उह कम करने का यत्न किया जाता। दोना की मुलाकातें बढ़ हो जाती लेकिन कुछ दिनों के बाद यह सिलसिला फिर शुरू हो जाता।

दाना की मुहबत के चर्चे चमान्डी से बाहर खेता, हवलिया और दूकाना पर भी हाने लगे। गाव के युवकों ने नानो को रंग रूप और चाल-ढाल के अनुसार उसे मारनी का नाम दे दिया। और जब लोगो को विश्वास हो गया कि मारपीट और प्रतिबन्धा के बावजूद भी उनका प्रेम नहीं टूटा और वे चारी टिपे अँधेरे सवरे, गलिया में खेतों में तक्रिए के झाड़ झखाड़ में और कोठा की छता पर मिलते रहते हैं ता उन्होंने जानो के नए नाम में थोड़ा सा परिवर्तन करके

धरती धन न अपना

उग 'काली की मोरनी' कहना शुरू कर दिया।

चमाराही के गुप्ता के गाए जाते के लड़का भी इन पक्षों में पाएगा उठाया जाएगा। उहारे जाते में एक छान शुरू कर ली उग छमरियाँ में लखिन यह पक्ष में भी उपाय मूँह पर और गिटर बन गई। गली हो या पगडण्डा, गेन हो या हवली जहाँ भी उग कोई दरता वह गाळियाँ गुना दनी और बर बार तो हायागार्द के लिए भी तयार हो जाती।

चमारा के लड़के काली के सामने तो चुप रहें लखिन उतारी अनुगम्पिन में बहुत घसाव लखकर दोना के बारे में बातें करत। ये बातें काली तर भी पहुँचती और यह अपना गुस्ता निशालन के लिए किसी न किसी बहाने सबमें लड़ चुका था। जाटा के लड़के उस घेर कर पूछत कि उमके पास कौन-भी गिटर सिंधी (ऐसी चीज जिससे किसी बुकती का बग में किया जा सकता है) है जिससे उसने जाना का बग में कर रखा है, कौन-सा जाऊ, दोना यत्र या तावीज है जिससे उसने जानो के तन-मन पर अधिकार पा लिया है। काली कभी हँसी में बात टाल दिया करता और अगर कोई जाना के सम्बन्ध में अनुचित बात कहता तो वह भरने मारने पर भी तयार हो जाता।

चमारा के लड़के डर के मार मगू को तो कुछ न कहते लेकिन जाटा के लड़के उसे किसी न किसी तरह जताते रहते कि उसकी बहन काली के साथ फँसी हुई है। मगू उनको तो कोई उत्तर न देता लेकिन जानो को पीटता और माँ को डाँटता। काली को उस देखकर बहुत शोध आना लेकिन इस ख्याल से चुप रहता कि बात बढ गई तो गाँव के बड़े बूढ़ो तक भी जा पहुँचेगी।

लोगों को यह तो पता था कि जानो और काली आपस में मिलत रहत हैं लेकिन आज तक उह किसी ने देखा नहीं था। चमारा और जाटा के लड़के को खेता में घूमते हुए कहीं पर बाजरे या मक्की के पाच-दस डण्ठल चुके या टूटे हुए दीख पडते तो वे एक-दूसरे को आँध दबाकर मुसकराते हुए कहते कि 'काली की मोरनी' शायद यहाँ नाचकर गई है।

लोगों की ताक-झाँक बढने लगी तो उहोंने मुलाकात के तरीके और स्थान बदल दिए। काली अधिकतर लालू पहलवान की हवेली में रहने लगा। यह रात टिक जाने के बाद दब पाँव मुहल्ले में आता और बाबे फत्तू के कोठे से होता हुआ मगू के घर पहुँच जाता।

जब लोगों को इस बात का भी पता चल गया तो वे बहुत सवेरे खेतों में मिलने लगे। वे दोना अलग-अलग रास्ता से आत और निश्चित स्थान पर मिल जात। दोना ने कई बार एक-दूसरे से पीछे हटने की कोशिश की और

कभी न मिलने का सक्त्प भी किया लेकिन यह मक्त्प दो चार दिन के बाद ही टूट जाता ।

एक दिन काली और जानो सुबह-सवेरे तक्लिए के पास झाड झखाड म बठे थ । उह न ता भूत प्रेतो का डर था, न साप-सँपालिये का ही । उह यह भी याद नही था कि पी फट चुसी है । लेकिन कुछ फासले पर उह किसी के खँखारन की आवाज सुनाई दी ता वे चौक गए । जब उहाने दखा कि वह ब्यक्ति उमी ओर आ रहा है तो वे उठ खडे हुए । काली तक्लिए के पीछे सेता की जोर निकर गया और जाना झाड-झखाड से वाती-बचाती चा की आर आ गई । वह ब्यक्ति झाड झखाड से बाहर खडा था । जाना उसे अपने सामन देखकर ठिठक गई तो उसन आगे बढ़कर जानो का हाथ पकड लिया और ऊँची आवाज म बोला

‘हो गई तसल्ली, अपने यार को कहा दौडा दिया ? घडडम चौधरी खी-खी करके हँसता हुआ बोला

भोरनिये तरे अदर कितनी आग है जा बुझने म नही आती ।

जानो हाथ छुडाकर कुछ बहे बिना गाँव की ओर दौड आई और घडडम चौधरी मारे गाँव को गालिया देता हुआ आगे बढ़ गया ।

दिन चत्ने तक घडडम चौधरी ने इस बात को सारे गाँव म फला दिया । मगू के घर आकर घडडम चौधरी ने उसे और उसकी मा जस्तो को बहुत गालियाँ दी । उसके जाते ही मगू द्वार बंद करके जाना को लाठी स पीटन लगा । उसकी चीखें सार मुहल्ले पर छाई हुई थी और युवको को यह चीखें सुनकर अजीब सा इमीनान महसूस हो रहा था ।

बाबा फत्तू और ताया बसता जमान को बुरा भला कह रहे थे । जाना की चीखें सुनकर बाब फत्तू ने पूछा

यह कौन रा रहो है ?

ताया बसता अफसास भरे स्वर मे बोला

‘यह खुशिय की घर वाली पुन्नो होगी या फिर मगू की बहन जानो । एसी चीख या नो बाँझ औरत की होती है या फिर प्रेम की मारी मुटियार की । बजर जमीन बाँझ औरत और प्रेम की मारी मुटियार का कोई पसन्द नही करता ।

मुहल्ले म बहुत गद फलने लगा है । मगू को समझाओ कि लडकी का कहा ठिकाना करे । बाब फत्तू ने कहा ।

उस ता तब समचाऊँ अगर उरा पता न हो । ताये बसत ने उत्तर लिया और जब जानो की चीखें दहाड म बदल गई तो वह गालियाँ देता हुआ मगू

घरती घन न अपना

वे घर की ओर चला गया ।

यहाँ स्त्रियाँ और बच्चा की भीड़ इकट्ठी हो गई थी । ताए बसते को दायर स्त्रियों पीछे हट गए और बच्चा की उमरी सिद्धाकार भगा लिया । वह द्वार पीटता हुआ मगू का आवाजें देन लगा

जाना व साय-साय जम्मा भी विडाय कर रही थी । वह जानो की बजाय मगू को गालियाँ देती हुई बहन लगी

मोया बस कर क्या जगती जा एकर ही छाडेगा माग घडहम चौधरी तो सयाप की नाया है ।'

ताए बसत न द्वार पर जोर स पाँच मारा और मगू को बहून ऊँची आवाज म पुकारता हुआ बोला

आए चमाहो की म गूम दरवाजा तो गाल । मगू न फिर भी बाई उत्तर न दिया ता वह उस गालियाँ देता हुआ बाये पत्तू की छन पर जा चला और वहाँ स मगू की छन पर आ गया ।

कुछ समय तक वह मँडर पर बठा नीचे देखता रहा । जानो पग पर अधमोई सी लेटी हुई थी । जस्सो मगू का पनहें खडी थी और वह हाँपता हुआ दात पीस रहा था । मगू का साँस थोडा दुस्त हा गया तो उसने जस्सो को धक्का देकर परे फेंक लिया और जानो का गला दोना हाथो म पकडकर दवाने लगा ।

ताया बसता लकडी की सीली के तीन डण्डे एक साथ उतरता हुआ नीचे आ गया । उन देखकर जस्सो ने छोटा सा घूँघट निकाल लिया और फुफकर राने लगी । ताया बसता मगू व हाथ पकडता हुआ क्रुद्ध स्वर म बोला

पागल हो गया ह ? बराबर की बहन पर हाथ उठाता है ? तरे सामने खडी हो जाण तो तरी क्या इज्जत रहेगी ?'

मगू न ताया बसत को धक्का देकर परे कर दिया । वह बडी बठिनाई स अपने-आपको सभाल मवा और मगू के कालो पर दोनो हाथो से दोहत्वड मारता हुआ बाला

'तुझे अपन से बडा का भी लिहाज नही । इसे तू मार देगा तुम्हें पुलिस फासी लगा देगी इस बचारी का क्या बनेगा ?' ताए बसत ने जस्सो की आर सकेत करते हुए कहा ।

यह सुनकर जस्सो जीर भी फुफकर रोने लगी ।

माया लागा के सिखाए-पढाए बहन की जान का दुश्मन हो गया है ।

ताए बसत ने बहुत मुश्किल से मगू को उठाया और उस परे धकेलता हुआ

जाना के सिर पर झुक गया और उसे अच्छी तरह देख भाँककर जस्सो से बोला

'पुत्ररा, इसे पानी पिला । रो रोकर इसका गला सूख गया है ।'

ताया बसता मगू को रोठडी म ले गया और उसे समझाता हुआ बोला बराबर की बहन पर हाथ नही उठाना चाहिए ।'

ताया, मैं लागा की बातें सुनकर तग आ गया हूँ । इसने मरी इज्जत मिट्टी म मिला दी है । जहा जाता हूँ एक ही बात कान म पडती है । मैं उस अपनी माँ क खस्म की भी बोटिया उडा दूंगा । मगू लाठी उठान के लिए लपका ।

ताए बसते न उसे अपने बाजुआ म ले लिया और समझाता हुआ बोला 'पहले मेरी बात मुन ले फिर जिस भा के खस्म की चाहा बोटिया उडा दो ।

मगू हाँफता हुआ ताए बसत की जार देखन लगा ।

मैं तुम्हें यह कहना चाहता हूँ कि यह तरीका ठीक नहीं है । तू सारी दुनिया का तमाशा दिखा रहा है । ऐसे मामला म पर्दापोशी से काम लेत हैं, शार नही मचात । इससे तरी और भी ज्यादा बेइज्जती हागी । जरा दरवाजा खोलकर दख सारा मुहल्ला वहा खडा है । मैं तरी बात समझता हूँ लेकिन इसका यह इलाज नही जो तू कर रहा है ।

ताया बसता कुछ समय तक चुप रहा और फिर जस्सो का आदर बुलाकर धीमे स्वर म बोला

'कोई लडका तलाश करके इसे ठिकाने लगावा । कँवारा नही मिलता ता कुहाजू देख ला । भटके हुए आदमी को सीधी राह दिखानी चाहिए उस मारना नही चाहिए । तू लडकी पर नजर रख । बगर मतलब बाहर मत निकलने दे । इस तरह शार मचाओगे तो नुकसान म रहोगे ।

ताये बसते की बातें सुनकर मगू कुछ नम पड गया । जस्सा ने नानो को उठाकर खाट पर लिटा दिया । ताया बसता उसके पास आकर बहुत सख्त स्वर मे वाला

देख हर आदमी की इज्जत अपन हाथ म होती है । अगर मैंने फिर कभी तरे वारे म बुरी बात सुनी तो मेरे से बुरा कोई नही हागा । जिसको माँ-बाप और भाई बहन की इज्जत का ख्याल न हो वह औलाद किस काम की ।'

ताया बसता, मगू जस्सो और नानो को एक बार फिर अपन कर्तव्य-पालन का उपदेश देकर काली के घर की ओर आ गया । वहाँ ताला देखकर वह

लानू पहलवान को हवेली की ओर बढ़ गया। काली वहाँ भी नहीं था। लानू पहलवान से पूछा तो वह केवल इतना बता सजा कि शायद शीशम वाले खेत में होगा, अगर वहाँ नहीं गया तो कीकर वाले खेत में होगा।

ताया बसता हवेली से बाहर जाने के लिए मुड़ा तो लानू पहलवान ने उसे राक लिया और बहुत गम्भीर स्वर में बोला

‘बसतया तू सयाना आदमी है शायद कुछ बता सके। काली में मैं कुछ दिन से एक वान देख रहा हूँ अभी-अभी वह सारा दिन काम को हाथ नहीं लगाता या फिर इतना काम करता है कि उसे रोटी पानी की भी सुध बुद्ध नहीं रहती मैं पहले ममवता था कि शायद उस अपनी चाची या आती होगी लेकिन आज सबरे नत्या सिंह (घडडम चौधरी) मुझे कुछ और ही बता गया है।

लानू पहलवान दिलचम्पी से उसकी ओर देखने लगा। ताया बसता उसकी आदत से परिचित था। पहलवान की सारी खेती बरबाद हो जाए वह परवाह नहीं करेगा लेकिन ऐसे आदमी को नहीं रखेगा जो लँगोट का डीला हा। वह बहुत इत्मीनान से बोला

पहलवान जी, तुम नत्या सिंह को जानते ही हो कोई बच्चा कुतिया के पीछे दौड़ा जा रहा हो तो उस शक हो जाता है। तुम सोचो औरतें जगल पानी के लिए झाड़ बछाड़ या फसल में नहीं बढेंगी तो क्या खुली चो में बढेंगी।

मैं ममझ गया मैं पहले ही जानता था कि सारी बात नत्या सिंह के त्तिमाग का खल्ल है।

सबसे पहले ताया बसता लानू पहलवान के शीशम वाले खेत में गया। वहाँ से कीकर वाले खेत में और फिर आम वाले खेत में। आधाउ देन पर काली बाहर आ गया और ताया बसता का देखते ही उमका रंग पन हा गया।

‘दापहर हा गई है क्या गाँव नहीं जाओग ?’

मरत डेर मरत की नलाई रह गई है। काग न पसीना पाछन हुए कहा।

काली मन-ही मन बाँध रहा था कि ताया बसता अभी-अभी गुजर की घन्ना का जिक्र छेन दगा। उमके चेहर पर एक रंग आ रहा था और एक रंग जा रहा था। अगर ताया बसता उमका गीघा प्रश्न पूछता कि सबरे क्या हुआ था तो शायद काग उमके पाँव पत्कर माफी माँगता लेकिन उमके हर पैर से बातें करन से काग की ममलन का अवसर मित्र गया। वह घडडम चौधरी की पन्नाई हुई बात और जाना की मारपीट की कहाना इस तरह इत्मीनान

मे मुनता रहा जैसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं था ।

उसके एक ही बार कहने पर काली गाँव जान पर राजी हो गया तो ताव बमत को विश्वास-मा हान लगा कि उसकी जगह शायद कोई और लडका होगा । लेकिन फिर भी उमन काली को शराफत मुहन्ले म प्रत्येक क्वारी मुटियार को बहन समझन का उपदेश लिया । काली उसकी बात पर मिर चुकाता हुआ जानो स मिल पाने की तरकीब सोचता रहा ।

गाम हात ही काली ताला लगाकर सब के सामने गली स होना हुआ गानू पहलवान की हवेली चला गया । लोग का अग्र जानो के साथ महानुभूति और काली स घणा हान लगी थी । जानो न लगभग पक्का सकल्प कर लिया कि वह अग्र कभी काली स नहीं मिलेगी । लेकिन जब उसने रात गए अपनी मीनी पर नीचे उतरती हुई छाया-सी देखी तो उसका हृद सकल्प एक क्षण म ही टूट गया और वह काली की बाहा म लिपटी खामाशी स रोती हुई अपने स दु ख धाती रही ।

४७

प्रातो का जग पता चला कि जस्मो जानो की मगनी करने के लिए उतावली है ता वह उसके घर गई और इधर उधर की बातें करने के बाद वह जस्मो क कान म बहुत धीम स्वर म बोली

मुना है तुम जाना की कुडमाई (मँगनी) कर रही हो ?

जस्मो ने हा म मिर हि गया तो प्रीतो कुछ ऊँचे स्वर म बोली

मैं तुम्ह पहले भी कई बार कहा था लेकिन तू मेरी बात पर कान नहीं धरती थी ।

प्रीतो यह काम मदों के हैं । मैं मगू का पिछले छ महीन से कह रही हू कि जाना बडी हो गई है । इमना कही ठिकाना करो । जस्मो न हृद स्वर मे कहा ।

सच तो यह है कि जवान बहनें और पेटियों समुराल म ही अच्छी लगती ह । जब तक ब्याह न हो जाए हर समय धुडकू लगा रहता ह । मैं यह नहीं कहती कि हर जवान लडकी बदमाश होती है । लेकिन एक कच्ची उम्र हमरे

धरती धन न अपना

पराए घरा जीर खेता मे आना जाना । एसी हालत मे कई लडकिया अपना हाण लाभ (हानि लाभ) भूल जाती हैं । '

'सच कहती हो । जस्सो ने बुझी हुई आवाज मे उत्तर दिया ।

तूने पानो को छुट्टी भी बहुत दे रखी थी । फसल के इद गिद वाड न हो तो राह जात जानवर भी मूह मारते हैं । जिसे आदत पड जाए वह तो सी कोस का बल खाकर भी वहा पहुचेगा । मार कर परे करो तो मौवा मिलत ही फिर आ जाएगा ।

प्रीतो की बात सुनकर जस्सो को शोध तो आया परन्तु वह उसे पी गई और लम्बी सास खीचती हुई बोली

'कोई अच्छा सा लडका मिल जाए तो आज ही कुडमाइ कर दू ।'

'लडका तो है ।

कौन सा ?' जस्सो ने चौंक कर पूछा ।

पर भी अच्छा है । वे अपना ही काम करत है । लडके का बाप खड्डी चलाता है और लडका जूते सीता है । व ग्यारह भाई वहन थे लेकिन अब सात रह गए हैं ।' प्रीतो बोली ।

'कहा के रहन वाले हैं उनका कोई अता पता तो होगा । जस्सो की जिनासा जाग उठी ।

यहाँ से बहुत दूर गही रहत । ननोवाल यहाँ स दो कोस है ननावाल से मीकरी एक कोस है सीकरी से डेढ कोस पर गेरपुर है । वहाँ रहत हैं वे । प्रीता ने कहा ।

तरी उनमे जान-पहचान है ?'

'जान पहचान ? मेरे ता नजदीकी रिश्तदार हैं । लडका है बमाऊ पहलू देशी जूत बनाता था अउ विलायती बूट बनाने लगा है । प्रीतो बात को लटकाती हुई बोली ।

जस्सा उम लडके के बारे मे एक ही बार सब-कुछ जान लना चाहती थी लेकिन प्रीतो इधर-उधर की उपरी-उपरी बातें ज्वाण बना रही थी ।

'लडके का उम्र क्या हागा ?'

'पक्का ता मुझे याद नहीं पानो का हाण प्रवाण (हम उम्र) ही हागा । दो चार साल का हागा । जब मरा ब्याह हुआ था ता वह मर छोट अमरू त्रिनना बडा था । अमरू अगले बमाख मे बारह साल का हा जाएगा । आग हिमाउ मुम लग ला । प्रीता ने साचन हुए उत्तर दिया ।

दुवना बग हा गया है अभा तक उमरा विवाह नडा हुआ ? क्या अग रग

ठीक है ?' जस्सो ने पूछा ।

'जो इतना कमाऊ है उसका अग रग ठीक नहीं होगा । अग तो उमने अपने साथ दो लडके शागिद पशा भी रख लिए है ।'

जस्सो बार बार अग रग के बारे म पूछती और प्रातो उसकी कमाइ के बारे मे 'याध्यान लेना' गुरु कर देती । जब जस्सो जोर देकर पूछने लगी तो प्रीतो कुछ खीझ कर बोली

देख, पानो के लिए ठीक रहेगा ?'

'क्या मतलब ? जस्सो ने भी सल्ल स्वर म पूछा ।

'मतलब यह है कि बचपन मे उसे बड़ी माता निवली थी । उसम उसकी एक आख चली गई थी । लेकिन दूसरी आख बिगोर की तरह माफ है । प्रीतो ने कहा ।

'साजी तरह क्यों नहीं कहती कि लडका काना है । जस्सो ने क्रुद्ध स्वर म कहा ।

'अपनी लडकी कान का दे दू वडा रिश्ता बता रही है ।' जस्सो जैसे फूट पडी ।

'तरी लडकी भी तो कोई मुच्चा भोती नहीं है । छोटे माल का काई काना, लंगडा-भूला ही कबूल करेगा ।' प्रीतो ने भी तल्ल स्वर मे उत्तर दिया और बाहर चली गई ।

मुहल्ले की कुछ दूसरी औरता ने भी लडका का पता दिया लेकिन उनम कोई चेचक का खाया हुआ और काई टाइफाइड का मारा हुआ था । जस्सो परेशान होकर रो उठती और पानो को बुरा भला कहती । परन्तु आशा का आचल धाम कर फिर कोशिश गुरु कर देती ।

एक दिन वह घर मे अकेली ही बठी थी कि प्रमिनी आ गई । वह इधर-उधर की वानें करने के बात जस्सो म कहने लगी

'चाची, मैं तरे साथ गन बात करन आइ हूँ ।'

जस्सो हैरानी और भय स उमने मुह की आर तान लगी तो वह मुगहरानी हुई बोली

मैं किसी पर लालच लालच नहीं आई । कभी कालें तो बड़ी रूठें करती हूँ जिना अपना कम पाट है ।'

जस्सो के चेहरे पर फिर इमीनान झगवन लगा तो प्रमिनी बोली

मेरी पत्नीरी वाणी भोपी का लडका है । उमर कोई बीग माऊ होगी । अग रग सग ठीक है । साग म र महीन हमीरे का गना मिल म काम करना है

घरती धन न अपना

और छ महीन गाव मे मेहनत मजदूरी । छ भाइ उहन हैं । वह सबसे बडा है । कहो तो नानो के बारे म बात कहूं ।’

जस्सो सोच म पड गई । प्रसिनी उमके मन का भय भापती हुई बोली

‘लडके का अग रग सब ठीक है । मुझ पर यकीन नही है तो आप जाकर देख आओ या भगू को भेज दो । आजकल वह गाव म ही है ।’

प्रसिनी को विश्वस्त स्वर म बात करते देखकर जस्सो की शका दूर हो गई और वह निणय त्मक स्वर म कहने लगी तेरी तसल्ली है तो मेरी भी तसल्ली है । तूने लडका अच्छी तरह देखाभाला हुआ है ना ?’

मैं तो पिछले साल मौसी के घर म महीनाभर रहकर आया हूं । यह काम हो जाए तो नानो सुख पाएगी बच्चो उम्र म बोन गलती नही करता । य जो बढ चढकर बानें बनाती है इन्हे अपन त्तिन याद नही रहे । चलो बे न सही अपनी औलाद की करतूता को क्या नही देखती ?

जस्सो पर फिर उदासी छाने लगी तो प्रसिनी ने बात का रुख पलट दिया । और लडके और उसके मा-बाप के बारे म विस्तार से बताने लगी । जस्सो ने अपनी तसल्ली करने के बान अनुमति दे दी तो प्रसिनी सिर हिलाती हुई बोली

‘पर एक शत है ।

क्या ?’ जस्सो चौंक गई ।

‘मरे ताये की लडकी का रिश्ता भगू के लिए लेना हागा ।’

प्रसिनी जस्सो के उत्तर की प्रतीक्षा किए त्तिन ही तेज स्वर म बोली

‘लडकी सालहवें साल म है । रग मरे रग स साफ है । लत्तिन आंघा म बुकरे हैं । बडी हो जाएगी ता अपन आप ठीक हो जाएग । मुर्मा टाल ल ता उनका अम भी पता नही चता । दखन म दुवगी-मतली लत्तिन बाम म गडडा है । तरे घर स एक नानो जाएगी और दुगरी जाएगी । उमना नाम भी नानो है ।

जस्सा उमकी आर दखनी हुई बागी यह तो अट्टा-बट्टा हो गया ।’

अट्टा-बट्टा कसा ? नाना मरो मौमी क घर जाएगी और मरे ताय का त्त्ती तरे घर आएगी ।’

‘अच्छ, तरे ताय की लडकी है । मैं ममनी धी माम (मामू) की है । जस्सा न गुन हात हुए कहा और प्रसिनी स बागी

‘मुन्हे म अभी रिमी म बात न करना । गुन चग गया ता लागा का

अपन-आप ही पता चल जाएगा ।

चाची मैं इस मुहल्ले का अच्छी तरह जानती हूँ । तू चिंता न कर ।'

तू आजकल मैं ही पण्डोरी चली जा । उधर बात पक्की करके जानो का शगुन ले जा और फिर अपने मने जाकर मगू के लिए शगुन ले आ । तू य काम पक्का करा दे तो मैं सारी उम्र तरे गुण गाऊगी ।'

सात दिन के बाद तापा बसता जोर मगू जाना का शगुन दे आए । दोनों को लडका पसंद आया और वे उसकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे । कुछ दिना के बाद प्रसिन्नी का भाई मगू को शगुन द गया ।

ज्ञानो की मँगनी के बाद प्रसिन्नी का उनके घर जाना जाना बहुत बढ़ गया । प्रसिन्नी जानो के पास बठनी तो हमेशा उसके मगतरी की बातें करती । उसके गुण गानी जोर उस विश्वास दिलाती कि वह उस उँगली के छल्ले की तरह रहेगा । ज्ञानो अपन ही खयालो में छाई हुई सिर हिलाती रहती ।

काली अधिकतर लानू पहलवान की हवेली में रहता । वही खाता-पीता और वही सो जाता । मुहल्ले में जिस समय भी जाता तो कोई न-कोई उस यह घर पर खरूर मुनाता कि जानो की मँगनी हो गई है । बात मुनात का ढग एसा हाता जैसे पूछ रहा हो कि जब उसका क्या बनेगा । जाटा के लडके उस आवाज देकर बुलाते और मजाक उडाते हुए कहते

'चमारा, तू मोरनी के जीते जी रडा (रँडवा) हो रहा है ।

दूसरा पुचकार कर कहता, तू इस नही जानता यह चमादगी का गीना है । यह काई और हीर तलाश कर लगा ।

लागा की बातें सुनकर काली को सपेह होने लगा कि जाना अपनी मँगनी पर मतुष्ट है । वह रात को उठकर हर उम स्थान पर जाना जर्न व मित्र करत थे । मुहल्ले में जाना तो भी जानो गली में नजर न आता । यह सब-कुछ देखकर उसका सदेह विश्वास में बदलने लगा । कभी कभी यह मावज्ज उगके दिल में हूक सी उगती कि जानो ने मँगनी के बाद उसका मुझ मगू दिया है । उसका जी चाहता कि वह कम से-कम एक बार मिल जाए ताकि वह अपनी बीबी में देख सके अपन जाना से मुन सकें कि वह प्रसन है ।

गलिया में अंधेरा छा गया था और घरा में दाप रत रत थे । काली लालू पहलवान की हवेली में अपने घर आ रहा था । रात में उसका सामन में गुजर कर वह मोड़ पर पहुचा ता उसने पाव स्थित में अपनी दुर्ग पर ही जानो का घर था । परन्तु वह सिर को झुकाता हुआ आगे बढ़ता गया । उसके घर के द्वार के दोना पट खुले थे । आगन में एक लडकी के ठक

घरती घन न अपना

दीया जल रहा था और वह चूल्हे के पास दाना धुन्ना पर ठोड़ी रंगे बठी थी। उसके चेहरे के एक हिस्से पर चूल्हे में जल रही मद्धम आग की राशनी पड़ रही थी और बालों की लट्टें चेहरे पर झुकी हुई थी।

बाली उसे देखकर ठिठक गया और फिर उसकी दहलीज की ओर बढ़ता हुआ बहुत धीमी आवाज में बोला

‘नानो !’

वह उसी तरह चुपचाप और गुप्त मुम बठी रही तो उसने एक बन्म आगे बढ़कर उसे फिर आवाज दी। नानो न चौंकर उसकी ओर दृष्टि और एकदम उठ खड़ी हुई और तेजी से उसके पास आ गई। उसकी आँखें फटकर बहुत बड़ी लग रही थी। हाठ कँपकँपा रहे थे। वह एकटक उसकी आर देखती रही।

बाली कुछ क्षण तक खड़ा उस तकता रहा और फिर लम्बी सांस छोड़ता हुआ सिर झुकाए द्वार की ओर मुड़ पड़ा। नानो ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया।

वे अभी कोई बात न कर पाए थे कि ताई निहाली आ गई और बाली को वहाँ खड़ा देखकर तीखे स्वर में कहने लगी

‘वे तू यहाँ क्या कर रहा है ?’ फिर वह जससो को आवाजें देती हुई ऊँचे स्वर में बोली

‘जससो रडी का भी कोई ठिकाना नहीं है। लडकी पहले ही मुशटडी है और ऊपर से वह उसे अकेली छोड़ कर चली जाती है। ताकि वह याराने पाल सके।’

ताई निहाली की आवाज सुनकर मुहल्ल के कई लोग इकट्ठे हो गए। बाली का तन और मन कापने लगे। वह जहाँ खड़ा था वही खड़ा रहा। नानो उसका हाथ छोड़ कर पीछे हट गई। जससो आते ही बाली को दोहत्थडें मारने और गालियाँ देने लगी। बाली चुपचाप खड़ा रहा। मगू ने बाली की गदन दबोच ली और जोर-जोर से मारने लगा। यह देखकर जानो तडप उठी और उसे छुड़ाने के लिए आगे बढ़ी लेकिन जससो ने धक्का देकर उसे पीछे हटा दिया।

मगू की देखा देखी जीतू बतू सतू और बग्गे ने भी बाली को मारना शुरू कर दिया तो वह जोश में आ गया। उसने बतू की कलाई मरोड़ दी। जीतू की बदनपटी पर मुक्का मारा और सतू को धक्का देकर पीछे फेंक दिया लेकिन मगू से वह चुपचाप मार खाता रहा।

ताय बसते ने मगू को मना कर दिया और बाली को बालों से पकड़कर

झंझाड़ता हुआ बोला

‘कुत्ते के पुत्ररा, यहा क्या लेन आया था ?’

काली ने कोई उत्तर नही दिया ता ताय बसत ने उस खूब झंझोडा जीर उसके मुह पर दो-तीन थप्पड मार । स्त्रिया गली म खडी काली को भात भात की गालियां देती हुई शोर मचा रही थी । मगू लोणा की शह पाकर काली का खून करन पर तैयार था ।

बाबा फत्तू आ गया ता ताया बसता पीछे हटता हुआ वाला

चाचा, माखे का पुत्रर तो अनय कर रहा है । न शम न हया देखो हनेर (अँधेर) साइ का ।’

बाबे फत्तू ने सबकी चुप रहन का सकेत किया आर बहुत सयत स्वर म बोला

‘तू यहा किसलिए आया था ? क्या मगू स कोई काम था ?’

काली ने इकार म सिर हिला दिया तो वह बोला

‘क्या कुछ माँगन आया था ?’

‘नही ।’

क्या चारी करने आया था ?’

नही ?’

तो फिर यहाँ अपनी मा । ताय बसते ने त्रोध से कहा । बाबे फत्तू न उसे खामोश करत हुए काली से पूछा

क्या बन्माशी करने आया था ?

नही ।’

तो फिर आप ही बता दे किसलिए जाया था । काली का उत्तर मुनन के लिए लोणा ने सास तक रोक ली और वे आगे बढ़कर एक दूसरे के साथ फँस कर खडे हो गए ।

काली ने कोई उत्तर न दिया तो वह उस समझाता हुआ बोला

देखो जिस समय तुम मगू क घर म आए तो वहा पानो अकेली बठी थी । अगर तुम्हार मन मे कोई पाप नही था तो तुम यह कह दा कि जानो तुम्हारी बहन लगती है । हम सबकी तसल्ली हो जाएगी और मामला रफा दफा हो जाएगा ।

बाबे फत्तू न अपना प्रश्न कई बार दोहराया तो काली धीम स्वर म वाला पहले पानो से पूछा ।

उससे पूछ लते हैं । बाब' फत्तू पानो का पुकारता हुआ बोला । पुत्ररा,

धरती धन न अपना

दीया जल रहा था और वह चूल्हे के पास दाना धुटना पर ठोडा रमे बठी थी । उसका चेहरे के एक हिस्से पर चूल्हे म जल रही मद्धम आग की रागनी पड रही थी और बाला की लट्टे चेहरे पर झुकी हुई थी ।

काली उस देखकर ठिठर गया और फिर उसकी दहलीज की आर बग्ना हुआ बहुत धीमी आवाज म बोला

‘नानो ।’

वह उसी तरह चुपचाप और गुम गुम बठी रही तो उसने एक बंदम आगे बढ़कर उसे फिर आवाज दी । नानो ने चौर कर उसकी ओर देखा और एकदम उठ पडी हुई और तेजी से उसके पास आ गई । उसकी आँखें फँकर बहुत बडी लग रही थी । हाठ कँपकँपा रहे थे । वह एकटक उसकी ओर देखती रही ।

काली कुछ क्षण तक खडा उमे तबता रहा और फिर लम्बी साँस छोडता हुआ सिर झुकाए द्वार की ओर मुड पडा । नानो ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड लिया ।

वे अभी कोई बात न कर पाए थे कि ताई निहाली आ गई और काली को वहाँ पडा देखकर तीखे स्वर म कहने लगी

वे, तू यहाँ क्या कर रहा है ? फिर वह जस्तो को आवाजें देती हुई ऊँचे स्वर मे बोली

‘जस्तो रडी का भी कोई ठिकाना नहीं है । लडकी पहले ही भुसटडी है और ऊपर से वह उसे अकेली छोड कर चली जाती है । ताकि वह याराने पाल सके ।’

ताई निहाली की आवाज सुनकर मुहल्ले के कई लोग इकटठे हो गए । काली का तन और मन कांपने लगे । वह जहाँ खडा था वही खडा रहा । नानो उसका हाथ छोड कर पीछे हट गई । जस्तो आते ही काली को दोहत्तबडें मारने और गालिया देने लगी । काली चुपचाप खडा रहा । मगू ने काली की गदन दबोच ली और जोर जोर से मारने लगा । यह देखकर नानो तडप उठी और उमे छुडाने के लिए आग बनी लेकिन जस्तो ने धक्का देकर उसे पीछे हटा लिया ।

मगू की देखा देखी जीतू, बतू, सतू और बग्गे ने भी काली को मारना शुरू कर लिया तो वह जोश म आ गया । उसने बतू की कलाई मरोड दी । जीतू की कनपटी पर मुक्का मारा और सतू को धक्का देकर पीछे फेंक लिया लेकिन मगू से वह चुपचाप मार खाता रहा ।

ताये बमत ने मगू को मना कर दिया और काली को बाला से पकडकर

बैसाडता हुआ बोला

‘कुत्ते के पुत्तरा, यहा क्या लन आया था ?’

काली ने काइ उत्तर नही दिया तो ताये बसत ने उसे खूब झण्डा और उसके मुह पर दो-तीन थप्पड मारे। स्त्रिया गली म खडी काली को भांत भांत की गालियां देती हुई शोर मचा रही थी। मगू लोगा की शह पावर काली का खून करने पर तयार था।

बाबा फत्तू आ गया तो ताया बसता पीछे हटता हुआ वाला

चाचा, मामे का पुत्तर तो अनथ कर रहा है। न शम न हया देखो हनेर (अँधेर) साईं का ।

बाबे फत्तू ने सबकी चुप रहने का सकेत किया और बहुत सयत स्वर म वाला

‘तू यहा किसलिए आया था ? क्या मगू स कोई काम था ?’

काली ने इकार म सिर हिला दिया तो वह बोला

‘क्या कुछ मागने आया था ?’

‘नही।’

‘क्या चारी करने आया था ?’

‘नही ?’

‘तो फिर यहा अपनी मा । ताय बसत ने त्रोध स कहा। बाबे फत्तू ने उसे खामोश करते हुए काली मे पूछा

‘क्या बदमाशी करने आया था ?’

‘नहां।’

‘तो फिर आप ही बता दे किसलिए आया था।’ काली का उत्तर सुनने के लिए लागे ने सास तक रोष ली और व जाग बढकर एक दूसरे के साथ फँस कर खडे हो गए।

काली ने कोई उत्तर न दिया तो वह उस समझाता हुआ बोला

‘देखो, जिस समय तुम मगू क घर म आए ता वहा जानो अबे ली बठी थी। अगर तुम्हारे मन म कोई पाप नही था तो तुम यह कह दो कि जानो तुम्हारी बहन रंगती है। हम सबकी तसल्ली हो जाएगी और मामला रफा दफा हो जाएगा।’

बाब फत्तू न अपना प्रश्न कई बार दोहराया तो काली धीम स्वर म बोला
‘पहल जानो से पूछो।’

‘उससे पूछ लेत है।’ बाब फत्तू जानो का पुकारता हुआ वाला। पुत्तरा,

घरती धन न अपना

पहले सू वह दे नि यह तरा भाई लगना है ।

पाना चुग रही तो जस्ता चौधरर बागी
सिरमुनिय, बालती क्या रही ।'

जाना न सय पर नजर डाली और वाली की आर सकेन करती हुई
बोली

'अगर वह अपनी छाती पर हाथ रख कर वह द कि वह मुझे अपनी बहन
समयता है ता मैं मान लूगी ।

वाली न चौक कर पाना की ओर दया और ताय बसत की गिरफ्त से अपन
हाथ छुटाता हुआ बोला

नही, मैं नहा बहूंगा ।'

लोग एर वार फिर शोर मचान लगे । वाली हजम का धीरता हुआ तज-
तज बदमा से आग निरल गया ।

४८

अगले ही दिन लालू पहलवान ने वाली को निवाल दिया । तीन दिन के
बाद प्रसिनी ने नानो और मगू दोना की भँगनिया तोड़ दी । कुछ दिन के लिए
नानो और वाली दाना को बहुत कष्ट उठाने पडे । काली को गाँव का कोई
चौधरी और दूकानदार काम देना तो दरकिनार मुह लगान को भी तयार नहीं
था । मुहल्ले का कोई व्यक्ति उस की शकल नहीं देखना चाहता था । वह सारा
दिन घर के अन्दर बन्द रहता और गली में आत जात लोगों की गालिया और
आवाजें सुनता रहता ।

मगू जस्तो और मुहल्ले के लोग नानो पर कड़ी निगरानी रखने लगे । वह
बाहर जाती तो जस्ता उसका पीठा करती । सान को खाट पर लेटती ता उसका
हाथ-पाँव रम्सा में बाध लिए जात ।

परन्तु जाहिस्ता-आहिस्ता ताजा घटना की चचा कम होने लगी । लोग
के अन्दर नाना और वाली के प्रति घणा की भावना का स्थान अपेक्षा न लेना

गुरु वर दिया। वाली टाडा उडमुन के अडडे पर मेहनत मजदूरी करन लगा। वह सूर्योदय से पूव ही गांव से चला जाता और रात गए वापस आता। जानो भी कामकाज के लिए गली मुहल्ले मे आने-जाने लगी।

कुछ दिन गुजर गए तो जस्तो ने जानो की मँगनी की नय सिरै से बातचीत आरम्भ कर दी। वह प्रीतो के घर उसके उसी रिश्तदार लडके का रिश्ता मागने गई जो वाना था। लेकिन प्रीतो न उसे ठुकरा दिया। वह नाक सिक्कोडती हुई बोली

‘अनजाने मे तो मक्खी निाठी जा सकती है लेकिन आखा स देखकर कौन निगलेगा। जो लडकी आज कुडमाई छोड सकती है बल वह शादी भी ताड सकती है।’

प्रीतो की जली बुटी बातें सुनकर जस्ता घर लौट जाई और उसने जानो को बहुत पीटा और स्वय भी खूब रोई। वह उसक लिए कवल वर चाहती थी। अब इस बात की चिंता नहीं थी कि वह वाना है या लँगडा, सूला है या अपाहिज। आखिरकार उसे एक तीन बच्चा का रडवा वाप मिल गया जिसे जानो के साथ विवाह क लिए मनाया जा सकता था।

जस्तो उसके बारे म बातचीत चला रही थी कि एक दिन चौधरी मुशी की पत्नी ने बुला भेजा। चौधरानी उसे एक जार के जाकर गोपनीय स्वर म बोली

‘नी जस्तो, तरी लडकी का कही पाव ता भारी नहीं है ?’

क्या ? जरसो का मुह खुला का खुला रह गया।

कल वह यहाँ काम करन आई तो इस तरह उलटिया करन लगी जस लडकिया पहली बार गभवती हान पर करती है। मैंने पूछा तो कहने लगी कि उमका जी खराब है और पेट मे गडबड की वजह से उसे कई बार उलटी आ जाती है मुझे शक है तुम उससे पता करना। चौधरानी समझाती हुई फिर बोली

‘लडकी पराया धन होती ह। अगर मरा शक ठीक निकला तो बहुत बुरी बात है। लडकी सारी उन्न के लिए दागी (दागदार) हो जाएगी।’

चौधरानी ज्यादा पूछताछ करने लगी तो जस्तो वापस आ गई। शोध आर भय से उसका सारा शरीर काँप रहा था। वह गिरती-मडती अपन घर पहुँची और सिर पकडकर बठ गई। वह जानो को घर का काम-काज करते हुए बहुत ध्यान से देखती रही। उसे समझ म नहा आ रहा था कि इस बारे म जानो स किस तरह पूछे। वह चौबीस घटे इसी चिन्ता म घुलती रहती। अगर

घरती धन न अपना

पानो सारमुन गर्भरानी हुई तो इगता बना माना । जग कोई विवाह तहां करेगा और ये गली मुहल्ले म मूं लिया । क ताकि तहां रटग । मगू का भा बार्द लानी दो क लिए तेपार तहीं हागा ।

रात को पाता सो गई ता जग्गो उठर उगारी गीयो आ बटी और उगता पट टटात्ता मुन पर लिया । पानो को ओंघ गल गई और बट हैरानो स अपनी मां को पूरती हुई बोली

मां क्या है ?

जसो ने पढ़त ता रफर स पूछा की कोशित की लकिन जव पानो की समझ म बात नहीं आई ता उसा सीधी तरटू पूछ लिपा ।

पानो का रग उठ गया और बट गहरी नि ता म डूबी हुई बोली
'मां, मुने पात नहीं है ।

जसो उम दुलारती हुई बाणी

पुतरा इसम सबकी भयार्द है । इमी म सबकी इखन है कि तू साफ साफ बता दे ।' जसो साथ ही साथ परमात्मा स प्रायना कर रही थी नि चौधरानी का सदेह निराधार सिद्ध हो ।

पानो कुछ बतान म असपल रही तो जसो चोज चोजतर प्रश्न पूछने लगी ताकि उसके उत्तरा से किसी परिणाम पर पहुंच सके । धीरे धीरे जसो ने उससे मासिन घम के बारे म पूछा और पानो का उत्तर पाकर कई बर्षों के अपने अनुभव ने उसे बता लिया कि चौधरानी का सदेह ठीक है । वह चौखकर बोली

सिरमुनि ए तून अनय कर दिया । तू पदा होते ही मर जाती तो अच्छा था ।'

जसो रोती हुई कभी पानो को दुहल्यडें मारती और कभी अपना सिर पीटना गुरू कर देती ।

वह इस मामले के बारे म जितना ज्यादा सोचती उतना ज्यादा ही उसे भय महमूस होने लगता । कई बार उसके मन म विचार जाता कि उसका विवाह काली के साथ कर दे लेकिन यह सोचकर ही वह सिहर उठती कि अपने ही गांव, अपने ही मुहल्ले, अपनी ही गली और अपने ही गोत्र के लडके से कसे विवाह कर सकती है । ऐसा आज तज कभी नहीं हुआ है । मुहल्ले वाले यह सुनते ही खा जाएंगे और उन्हें इलाक म ता कथा, शमशान भूमि मे भी जगह नहीं मिलेगी ।

जसो के सामने दूसरी बड़ी समस्या थी कि मगू को बता द या इस बात

को अपन तक ही रहे। जानो को उठने-बठते देखकर वह रो पड़ती। अगर विवाह के पश्चात् वह गभवती हाती तो लोग उसके घर बघाई देने आते। वह स्वयं लोगो को बताती कि उसकी बेटी मा बनने वाली है। गली मुहल्ले की स्त्रिया उसका दिल बहलाती और उससे छेड़ छाड़ करती। इसके समुराल कपडे भेजत।

ज्ञानो अपनी जगह पर बहुत ही ब्यादा चिन्तित थी। उसे मानूम था कि इस गाँव मे रहत हुए काली के साथ उसका विवाह नहीं हो सकेगा। उसके लिए ता काली से मिलना भी बहुत कठिन हो गया था। वह बहुत रात गए आता और सुबह सवेरे ही निकल जाता था। उसे समझ मे नहीं आ रहा था कि किस तरह उसे यह खबर पहुँचाए कि वह बहुत मुश्किल मे फँस गई है।

जस्तो न निणय किया कि अभी वह मगू को कुछ नहीं बताएगी। उसे चौधरानी न फिर बुलाया तो वह उसे कह आई कि उसका सदेह निराधार है। परन्तु यह कहत हुए उसकी ज़बान काप गई और चौधरानी का सदेह और भी पक्का हो गया। उसने चमादडी की अय स्त्रिया से बात कर दी। उनकी भी जिज्ञासा जाग उठी और वे जानो को आते जाते बहुत ध्यान से देखने लगी।

उसने जानो का गम चीजा का वह कान्ठ पिलाना शुरु कर दिया जा पशुआ को सर्दी लगने पर दिया जाता है। जानो कडवा और कसला काढा भी चाव से पीती रही। जस्तो ने उसे सख्त हृदयत कर दी कि वह घर से बाहर और किसी के सामन पेशाब न करे। वह जितनी बार पेशाब करती जस्तो ध्यान से उसका निरीक्षण करती और उसम रक्न की आभेजश न पाकर निराश हा जाती।

तीन दिन तक काढा पीने के बाद जानो का पेट सख्त खराब हा गया और उसे दस्त आन लगे। जस्तो की निराशा आशा मे बदल गई। जाना का कई बार रात को भी बाहर जाना पडता। जस्तो दो चार बार उसके साथ गई लेकिन बाद मे जानो अकेली ही जाने लगी।

जानो रात को खेता से वापस आ रही थी कि काली के घर मे उसे रोशनी दिखाई दी। वह वे शिझक उसके द्वार की ओर वल गई। पहली ही दस्तक पर उसने द्वार छाल लिया। जानो का बहुत कमजोर, परेशान और हताश देखकर काली का कलजा धक स रह गया। उसका उडा हुआ यौवन और रगरूप दख कर जानो को भी बहुत दुःख पहुँचा।

जानो उसके निपट आ गई और कुछ समय तक दोना सामोश बठे रहे।

घरती धन न अपना

पहले वे मिलते तो अपन सब दुःख-दुःख भूलकर खुशी में हूब जात थे लेकिन आज दोनों का दुःख पहले से बहुत ज्यादा बढ़ गया। जानो नदरें झुकाए धठी थी। काली ने साहस करते उसका चेहरा ऊपर उठाया तो उमकी आँवा में छलन रहे आँसू गाला पर बहन लग। वह आँसू पाछनी हुई याचना भरे स्वर में बोली

‘मुझे यहाँ से ले चलो। बात बहुत बिगड गई है।’

जानो ने काली को अपने गम के बारे में बताया तो उसकी आँखें फल गई। वह भय से काँपने लगा। धीरे धीरे उसने अपने आप पर कानू पा लिया और अपनी आवाज को सशक्त बनाने का प्रयास करता हुआ बोला, मैं एक दो दिन में कुछ-न कुछ करूँगा।’ वहनर काली साच में पड गया और फिर जाना का सिर सहलाता हुआ बोला

‘तू ईसाई बनने के लिए तयार है ना?’

‘तरे साथ तू जो बहेगा बन जाऊँगी लेकिन मुझे यहाँ से निकाल ले।’

अच्छा, कल बताऊँगा, तू मुझे पहरा शुरू हाने के समय तकिए से परे मिलना। मैं तुम्हारा वही इतजार करूँगा।

काली सुबह उठत ही पादरी के पास गया। वह हमशा की तरह प्रसन्न भाव से मिला और इधर उधर की बातें करने के बाद काली से उत्साह स्वर में बोला

‘यह गाव बहुत खराब है। यहाँ के लोग के ख्यालात बहुत गदे हैं। अच्छे भले आदमी में कीड़े निकालत हैं। यीसू मसीह इन पर रहम करें।’ पादरी ने छाती पर हाथ से त्रास बनाकर कहा।

काली पादरी के मुह से सान्त्वना भरे शब्द सुनकर धीमे स्वर में अपने मन की बात बताने लगा। पादरी की सहानुभूति उससे बराबर बढ़ती जा रही थी। काली ने जब ईसाई धर्म ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की तो पादरी का चेहरा खिल उठा और वह प्रसन्नभाव से बोला

मुझे यकीन था कि एक-न एक दिन तरे अंदर यीसू मसीह का प्रेम जायेगा और तुम उस मुकद्दस वाप के कदमों में जा गिरोगे।

मैं अकेला ही ईसाई नहीं बनूँगा, मेरे साथ जानो भी ईसाई बनेगी।

‘उसकी माँ और भाई भी?’ पादरी ने उत्सुकता से पूछा।

व नहीं बनेंगे। ईसाई बनने के बाद मैं और जानो शादी करेंगे। ईसाई धर्म में एसी शादी की मनाही तो नहीं है?’

नहीं मनाही तो नहीं है लेकिन जानो की उम्र छोटी है, वह नाजालिग

है वह अपनी माँ की इजाजत के बिना अपना धम नहीं बदल सकती ।'

पादरी की बात सुनकर काली बहुत उदास हो गया और उसके घुटना की ओर मुक्ता हुआ याचना भरे स्वर में बोला

'पादरी जी, हमारी मदद करो हम कोई रास्ता बताओ घर से भागते हैं तो पुलिस पीछा करेगी फिर भागकर जाएंगे कहा ?' काली की आवाज में आसू छलकने लगे । पादरी उसके सिर पर हाथ रखता हुआ बोला

'मैं इस मामले में तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता तुम्हारे लिए सिर्फ दुआ माँग सकता हूँ ।'

काली पादरी के घर से सीधा टाडा उड़मुड़ चला गया । वह सारा दिन अड्डे के साथ आमा के बाग में लेटा सोच में डूबा रहा । पानो को साथ लेकर भाग जान की बात साचता तो उसकी जाँखों के सामने पुलिस के सिपाहियों की सख्त शकलें घूम जाती और कानों में उनकी गालियाँ और मार गूजने लगती और उसका साहम टूट जाता । कभी वह चाहता कि अवेला ही गाव छोड़कर भाग जाए लेकिन इस बात के लिए भी उसका मन न मानता ।

रात को वह अनमना सा तकिए से परे फमल में बठा पानो की प्रतीक्षा करता रहा । उसका दिल धन धक कर रहा था । उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या उत्तर देगा । इस कठोर समस्या का कैसे समाधान करेगा । पत्ता भी हिलता तो उसके कान घड़े हो जाते और सास रुकने लगती । गाव में पहरा शुरू हो गया लेकिन जानो नहीं आई । वह कुछ समय तक दुबका बठा रहा । पहरेदार गाँव के दूसरी ओर पहुँच गया था लेकिन पानो अभी तक नहीं आई थी । वह फसल से बाहर आ गया और दब पाव गाव की ओर चलने लगा । वह पानो के द्वार के सामने कुछ क्षणों के लिए रुक गया और वहाँ बिलकुल खामोशी पानर जाने बड गया । घाट पर शेट ही उम इस चिन्ता में घेर लिया कि पता नहीं पानो क्या नहीं आई । वह बचन करके पीछे हटने वाली तो नहीं है । वह सारी रात सोता जागता इसी साच में डूबा रहा ।

सात दिन तक काला पिलाने के बाद भी पानो को कोई फायदा नहीं हुआ तो जस्तो बौखला गई । उसने पानो को बहुत पीटा और स्वयं भी आठ-आठ आँसू रोई । वह कोठरी में पडी ऐसी विलाप करती रही जैसे उसका युवक देठा भर पया हो । उसने भगू को चौधरी की हवली से बुला भेजा और उसे कोठरी में ले जाकर द्वार बन्द कर दिया और अपनी छाती पीटती हुई बोली, 'पुत्ररा अनय हो गया है ।' फिर वह भगू के कान में खुमर फुमर करने लगी ।

भगू उसकी बात सुनकर भिन्ना गया और दाँत पीसना हुआ बोला, 'मैं

घरती धन न अपना

दोनो को जान से मार दूंगा।' जस्तो उसके मुह पर हाथ रखती हुई दबी आवाज म बोली

शोर क्यों मचाता है। इज्जत पहले ही चराब हा गई है अर मिट्टी भी खराब करना चाहता है। अपनी ही चीज छोटी थी। दूसरे को दोष किस बात का।

मगू कुछ शांत हो गया तो जस्तो उदास स्वर म बोली

मैंने सब ओढ़ पोढ़ (टोटेके) करके दख लिए हैं उनसे कुछ नहीं हुआ। मुहल्ले म भी लोगो को सदेह हो गया है। मुझसे अभी तब किसी न कहा तो नहीं लेकिन आपस म खुसर फुसर जरूर करती है। तू वही स मुझे सखिया (जहर)ला दे, मैं उसको दे दूंगी। यह मर गई तो सारी बात खत्म हो जाएगी। अगर इस हाल मे जिंदा रही ता तुम्ह भी कोई लडकी नहीं देगा।

यह सुझाव देकर जस्तो रोने लगी। मगू सोच म पड गया और फिर उठ कर बाहर चला गया।

तीन दिन के बाद मगू ने अपनी मा को सखिया की डलिया ला दी। जस्तो उस पुडिया को हाथ म पकडे बहुत देर तक बठी रोती रही। कई बार उसके जी म आया कि उस पुडिया को नाली मे फेंक दे लेकिन जब यह सोचती कि सान आठ महीने के बाद उसकी बँवारी बेटी के बच्चा जन्म लेगा तो वह काँप जाती।

उसने जानो को तीन दिन जोर भी ज़्यादा सखन काढा लिया। वह दिन रात परमात्मा से प्रार्थना करती कि जानो का गभ गिर जाए। उस पूरी आशा थी कि तीसरे दिन काढा जरूर असर करेगा लेकिन वह दिन गुजरने के बाद भी जानो अच्छी भली रही ता जस्तो ने सखिया देने का फसला कर लिया। उसने मगू को बतल दिया। जस्तो खामोशी से रोती हुई सखिए की डलिया का गुड म लपट कर उँगलियों मे माल करती रही।

साय को मगू घर आया और जानो को राटी पकाता देखकर उसकी आखा म आंसू छलक आए। वह दीए की रोशनी से उठकर अँधेरे म जा बठा और एकटक उसकी आर देखता रहा। उसने जानो के हाथ से लेकर रोटी खाई। आज शायद मगू की जिंदगी म पहला दिन था कि जाना को उमने माली मलोच नहीं किया। उसन माचा कि वह घर पर ही सायगा लेकिन बाद म इराना बदल लिया।

जस्तो जानो क बहुत ही चाब लाड कर रही थी। उस पुतर बहरर पुकार रही थी। जानो की समझ म कुछ नहीं आ रहा था कि आज मा क

व्यवहार म तबदीली क्या आ गई है । वह खुश थी कि उसकी मा और भाई दोनों क्रोध म नहीं हैं ।

जस्मो ने अपने आप जानो की खाट आगन म बिछाई और जब वह साने लगी तो उसके हाथ पर गोली रखकर पापी का गिलास देकर वापसी आवाज म बोली

‘ले पुतरा खा ले, इससे आराम । जस्मो आगे कुछ न कह सकी और मुह मे पल्लू लेकर रोने लगी ।

पानो न चुपचाप गाली खा ली । कुछ समय तक वह आराम से लेटी रही । फिर उम महसूस हुआ जस उसके पेट म कोई तज चीज काट रही हो । उसका सारा शरीर एँठने लगा । वह खाट पर पडी तडपन लगी और जस्मो उसके इद गिद घूमती हुई जाँसू बहाती रही ।

गरी के बाहर चौथा पहग आया ता नाना को जार की उलटी आई । जस्मो अपना रोना पीटना भूल गई और दीवा जलाकार नाना पर झुक गई । वह बिल्कुल बेहोश पडी थी और उसकी मास उखड़ गई थी । थोड़ी ही दर के बाद उसे एक और उलटी आइ और वह खाट पर लुत्क गई ।

जस्सा ने अपना सिर पीट लिया और उमक साथ लिपटी हुई विलाप करती रही । आखिरी पहर से पहले मगू भी घर जा गया और माँ को रोता देखकर वह समझ गया कि नानो अपनी जिंदगी का दाग साथ लेकर हमेशा के लिए इस ससार मे चली गई है । उसे देखने ही जस्सो फूट पडी । अब तक वह थोडा बहुत समय बनाए हुए थी लेकिन मगू के आने से जस उसे छुट्टी मिल गई और वह अपनी चीख को दमती हुई निढाल-सी हो गई । मगू नानो के ऊपर झुक गया और उसका चेहरा अपने आसुआ से नहला दिया । जब उसे याद आया कि यह सब वाली की वजह से हुआ है तो उसके अंदर बदला लन की प्रबल भावना जाग उठी । वह लाठी उठाकर गली म आ गया । लेकिन जस्सो ने गिरते पत्त उसे आ पकड़ा और बहुत धीमी और कमजोर आवाज मे बोली

पुतरा, पहले इस काम को सहेज ले । उसे बात म देय लेंगे । वह इस गरी म जिंदा नहीं रह सकता । जस अपनी कोख जाई घटी को जहर दे सकती है वह उसे भी जीता जागता नहीं रहने दगी ।’

माँ-बेटा अंदर आ गए । जस्सो ने खून के सग चिह्न मिटा दिए और पश पर लेप कर लिया । जब पी पक गई तो उसने आगन म खड़े होकर दहाड़ मारी

दोना को जान से मार दूंगा।' जस्सो उसके मुह पर हाथ रखती हुई दबी आवाज में बोली

'शोर क्या मचाता है। इज्जत पहले ही खराब हो गई है अब मिट्टी भी खराब करना चाहता है। अपनी ही चीज खोटी थी। दूसरे को दोष किस बात का।'

मगू कुछ शांत हो गया तो जस्सो उदास स्वर में बोली

मैंने सब ओढ़ पोढ़ (टोटके) करके देख लिए हैं उनसे कुछ नहीं हुआ। मुहल्ले में भी लोगो को सदेह हो गया है। मुझसे अभी तक किसी ने कहा तो नहीं लेकिन आपस में खुसर फुसर जरूर करती हैं। तू कहीं से मुझे सखिया (जहर) ला दे, मैं उसको दे दूंगी। यह मर गई तो सारी बात खत्म हो जाएगी। अगर इस हाल में जितना रही तो तुम्हें भी कोई लडकी नहीं दगा।

यह सुझाव दखर जस्सो राने लगी। मगू सोच में पड़ गया और फिर उठ कर बाहर चला गया।

तीन दिन के बाद मगू ने अपनी माँ का सखिया की डलिया ला दी। जस्सो उस पुडिया को हाथ में पकड़ बहुत देर तक बठी रोती रही। कई बार उमके जी में आया कि उस पुडिया को नाली में फेंक दे लेकिन जब यह सोचती कि सान-आठ महीने का बच्चा उमकी कंसारी पंगी के बच्चा जन्म लगा तो वह वापस जाती।

उमने जानो का तीन दिन और भी खराब सख्त बाग किया। वह दिन रात परमात्मा में प्रार्थना करती कि पापों का मम गिर जाए। उम पूरी आशा थी कि सामर दिन काड़ा उखर अखर करेगा लेकिन वह दिन गुजरने के बाद भी जाना अच्छी भली नहीं तो जम्मा ने सखिया दन का फगला कर दिया। उमने मगू का बना दिया। जस्सा घामागी से रोती हुई सखिया की डलिया को मुठ में लपट कर उँगलिया में मोड़ करती रती।

साथ ही मगू घर आया और जाना का रानो पराना दखर उमका आँधा में आँधू छत्र आण। वह दीण की रागनी में उठकर जेधरे में जा बठा और एकदम उमकी आर दखता रना। उमने जाना के हाथ में लखर राना धाई। आज पाप मगू की डलिया में पड़ला दिन था कि जाना का उम का गागी-गगीन नृत्य किया। उमने माना कि वह घर पर ही मापका दिन बाग में इराना बग किया।

जम्मा जाना के बटन ही धाव लाव कर रना था। उम पुनर बखर पुनर रना था। जाना का समझ में कुछ नगा था रना था कि आज मैं के

यवहार म तवदीली क्या आ गई है । वह खुश थी कि उसकी मा और भाई दोनो त्रौव म नही है ।

जस्तो ने अपने आप नानो की खाट आगन म बिछाई और जब वह सोने लगी तो उसके हाथ पर गोली रखकर पापी का गिलास देकर बापती आवाज म बोली

‘ले पुतरा, खा ते इससे आराम ।’ जस्तो आगे कुछ न कह सकी और मुह म पल्लू लेकर रोने लगी ।

नानो ने चुपचाप गोली खा ली । कुछ समय तक वह आराम से लेटी रही । फिर उस महमूस हुआ जम उसके पेट म वाद तेज चीख काट रही हो । उसका सारा शरीर ँँठने लगा । वह खाट पर पडी तडपने लगी और जस्तो उसके इद गिद घूमती हुई आसू बहाती रही ।

गली के बाहर चौथा पहरा आया तो नाना की जोर की उलटी आई । जस्तो अपना रोना पीटना भूल गइ और दीया जलाकार नानो पर चुक गई । वह बिलकुल बहोश पडी थी और उसकी मास उखड गई थी । घोडी ही देर के बाद उस एन जोर उलटी जाई और वह खाट पर लुत्क गई ।

जस्मा न अपना सिर पीट लिया और उसके साथ लिपनी हुई विलाप करती रही । आखिरी पहरे से पहले मगू भी घर आ गया और मा का रोता देखकर वह समझ गया कि नानो अपनी जिंदगी का दाग साथ लेकर हमेशा के लिए इस समार से चली गइ है । उसे देखते ही जस्तो फूट पडी । अब तक वह थोडा-बहुत सयम बनाए हुए थी तैकिन मगू क आन से जस उसे छुट्टी मिल गई और वह अपनी चीख को दधाती हुई निडाल-भी हो गई । मगू जानो के उपर चुक गया और उसका बेहरा अपने आसुआ से नहला दिया । जब उसे याद आया कि यह सब काली की वजह से हुआ है तो उसके अंदर बदला लेने की प्रबल भावना जाग उठी । वह लाठी उठाकर गली म आ गया । लेकिन जस्सा न गिरते पन्त उमे आ परदा और बहुत धीमी और कमजोर आवाज म बोली

पुतरा पहले इस काम का सहेज ले । उसे वात् म देख लेंगे । वह इस गली म जिंदा नही रह सकता । जा मां अपनी कोष जाई बनी को जहर दे सकती है वह उसे भी जीता जागता नही रहने दगी ।

मां-बेटा अंदर आ गए । जस्सा ने खून के सत्र चिह्न मिग लिए और पश पर लेप कर लिया । जब पौ फट गई तो उमन आंगन म खडे होकर दहाड मारी

‘हाय वे लोग, मैं लुट गई ।’ फिर उसकी चीखें सारे गांव पर छा गई ।

लोगों को पता था कि यह चीखें जस्सो की हैं और यह भी मालूम था कि वह क्या रो रही है । गांव में हर प्रेम की मारी मुटियार का गमबती होना के बाद यही हाल होता था और ऐसी मुटियार की माँ की चीखें बहुत ही कर्णाभरी होती थी क्योंकि उनमें उसके अपने पाप का पछतावा भी शामिल होता था ।

थोड़ी ही देर में मुहल्ले की सब स्त्रियाँ जस्सो के घर पहुँच गई । मंद शमशान भूमि में लकड़ियाँ पहुँचाने लगी । ताया बसता मगू को जल्दी से जल्दी अर्थाँ निकालने के लिए जोर दे रहा था । केवल जस्सो रो रही थी । अन्य स्त्रियाँ उसे चुप करा रही थी । वे जानो को छूती हुई एक डूमरी को कन खिया से समझा रही थी कि जानो को जहर देकर मारा गया है लेकिन किसी ने यह बात अपने हाँथ पर नहीं आने दी । जानो की मौत का कारण न तो किसीने पूछा और न ही किसीने बताया ।

सूर्योदय के थोड़ी देर बाद ही जानो की अर्थाँ शमशान भूमि पहुँचा दी गई । कोई रीति रिवाज नहीं किए गए लेकिन मुहल्ले के हर व्यक्ति ने उसकी अर्थाँ को बधा दिया ताकि वह चुड़ैल बनने के बाद उन्हें परेशान और तंग न करे ।

उसकी अर्थाँ को आग लगाकर सब लोग अपने-अपने काम-काज पर चले गए । कोई सफ नहीं बिछा । किसी ने जानो के गुणों का वर्णन नहीं किया । सब भयभीत और उदास थे । जस्सो के पास केवल धके हूकमा बठी थी और वह भी उसे दिलासा देने की बजाय परमात्मा को याद करती हुई सजके लिए सदबुद्धि की कामना कर रही थी ।

काली के घर पर ताला पड़ा था । जस्सो की पहली चीख सुनने के बाद लोग ने काली को नहीं देखा था, न घर में, न गली में, न सेना में । वह ऐसे चुप हो गया था जस उसे जमीन निगल गई हो ।

कुछ लोग ने रात को यह धरकर फलाइ कि उड़ने वाली को सूर्यास्त के समय जानो की चिता के पास बैठे देखा था । वह उसकी गम राख पर झुका हुआ था और जब वे उगकी ओर बने तो वह खड़ी फसल में छिप गया और फिर उमका कुछ पता नहीं चला ।

तीन मास तक प्रीतो प्रतिदिन मुबह सवेर खबर सुनाती रही कि काली रात को भी नहीं आया। लोग कुछ दिन तब तो इस खबर को दिलचस्पी से सुनते रहे लेकिन जानो की याद परामोश होने के साथ साथ काली के बारे में भी उनकी जिन सा घटती गई।

एक बार कोई खबर लाया कि भोगपुर और चुलाग के स्टेशन के बीच रेल के फाटक से थोड़ी दूर परे रेलगाडी के पहिए किसी युवक के सिर और चेहरे के ऊपर से गुजरे हैं और मृतक का पहचानना मुश्किल है लेकिन सुना है कि मृतक का घड काली में मिलता जुलता है।

इसके बाद खबर फनी कि तीन कास दूर तक एक अघे कुएँ से सडी हुई लाश मिली है। कहत है कि उसका हुलिया काली जमा था। लोग ने दोना खबरें सुनी लेकिन किसी ने पडताल करने की आवश्यकता नहीं समझी।

खेतों में सरसा खिल गई थी और गहू की फसल जमीन से एक हाथ ऊपर उठ आई थी। गने के बलन चलने लग थ। खडे पानी पर कुहरा जमना शुरू हो गया था। लोग अलावा के गिद बडे सर्दियों के मौसम का कोमते हुए गर्मी के मौसम की प्रशंसा करत थे।

मगू की भस रात को सर्दी में ठिठुरती थी। एक दिन आकाश पर बादल छा गए और हल्की हल्की बूदानाशी होने लगी। मगू हाथ में लाठी पकडे काली की डयाली के सामने आ खडा हुआ। उसने आग बढकर ताले का हिलाया। उसमें जग लग गया था। उसने गाली दत हुए लाठी के सुम से ताला तोड दिया और साकल खोलकर भस का रस्मा कोन में पडी चक्की के हत्थे से बाघर दरवाजा फिर बन्द कर दिया।